दादू दयाल की बानी

(साखी, जीवन-चरित सहित)

[भाग १]

प्रकाशक

बेलवेडियर प्रेस, प्रयाग।

मूल्य १॥)

सूची अंगों की

॥ इति ॥

दादू दयाल का जीवन-चरित्र

सुंदरदास जी के विषय मेँ दो कथाएँ जिन मेँ से एक तो दादू दयाल के जीवन-चरित्र के पृष्ठ २ की अंतिम तीन पंक्तियोँ से पृष्ठ ३ की पहिली १० पंक्तियोँ तक और दूसरी पृष्ठ ७ की पाँचवीँ पंक्ति से अट्ठारहीँ तक छपी हैँ केवल गप निकलीँ क्योँकि सुंदरदास जी के जीवन-चरित्र से (जिसे पंडित हरिनारायण पुरोहित बी०ए० आकौन्टन्ट जेनरल जयपुर राज ने बहुत खोज और बड़े प्रमाणिक ग्रंथोँ से लिखा है और जिसके सार को हमने सुंदरबिलास ग्रंथ के आदि मेँ छापा है) सिद्ध होता है कि जब सुंदरदास जी केवल सात बरस के बालक थे तभी दादू दयाल परम धाम को सिधारे, उनके जीवन समय मेँ सुंदरदास जी ने कोई ग्रंथही नहीँ बनाया। दूसरे "सुंदर शृंगार" ग्रंथ जिसमेँ यह पद है "सुंदर कोप नहीँ सुपने" आगरे वाले सुंदर कवि का बनाया हुआ है न कि महात्मा सुंदरदासजी का, और यह भी संवत १६८८ मेँ अर्थात दादूजी के शरीर त्याग करने के २८ बरस पीछे बना। हमने पहिली कथा दो दादूपंथी साधुओँ से सुनकर और दूसरी महामहोपाध्याय पं० सुधाकर द्विवेदी जी की सम्पादित तथा काशी नागरी-प्रचारणी सभा की प्रकाशित "दादू दयाल का सबद" नामक पुस्तक की भूमिका से ली थी। अब यह दोनोँ कथाएँ रद की जाती हैँ।

बिक्रमी सम्बत
साहिब के गुप्त
र को बतलाते
ामस ने निर्णय
ानपुर ठहराया
ो बातेँ ऐसी हैँ
ीँ है और दादू
की बोल चाल
नेक सुरुची या
ोसी कि कबीर
ै दादू जी की
। उन को गुज-
ता है जो मोठ
ला कर प्रमाण
और महाबली
ास ने इन की
। हम को इस
वश्यकता जान
और भक्त की
ोची जाति के
- जाति पाँति

पूछे नहिँ कोइ। हरि को भजे सो हरि का होइ।—जो आँख खोल कर देखा जावे तो विशेष कर पिछले संत और साध जैसे कबीर साहिब रैदास जी इत्यादि; और भक्त जैसे वाल्मीक (डोमड़ा, श्री कृष्णावतार के समय में) और दूसरे वाल्मीक (बहेलिया, संस्कृत रामायण के ग्रन्थ करता) और सदना (कसाई); और जोगेश्वर ज्ञानी जैसे नारद और व्यास आदि ने नीची ही जाति में जन्म लिया जिनकी कीर्त्ति का झंडा आज तक संसार में फहरा रहा है और सदा फहराता रहेगा।

दादू पंथी दादू दयाल के प्रगट होने का भेद इस तरह बतलाते हैँ कि एक टापू में कुछ योगी भगवत भजन करते थे, उन में से एक योगी को आकाश-बाणी द्वारा आज्ञा हुई कि तुम भारतवर्ष में जाकर जीवों को चितावो। इस आज्ञा के अनुसार वह योगिराज बिचरते हुए जब अहमदाबाद में पहुँचे तो वहाँ लोदीराम नागर ब्राह्मण से भेँट हुई जिस को बेटे की बड़ी अभिलाषा थी; उसने योगी से बर माँगा कि हम को लड़का हो। योगी ने कहा कि बड़े तड़के साबरमती नदी के तट पर जाव वहाँ तुम्हारी इच्छा पूरण होगी। जब लोदी-राम जो दूसरे दिन सवेरे वहाँ पहुँचे तो एक बच्चा नदी में बहता हुआ मिला जिसे लोदीराम निकाल कर घर लाये और पाला। (यह कथा कबीर साहिब की उत्पत्ति की कथा से पूरी भाँति से मिलती है जिन्हेँ काशी के लहरतारा नामक तलाव में बहते हुए नीरू जुलाहे ने पाया था और अपना बेटा बनाया) दादू पंथियोँ का निश्चय है कि उन्हीं योगी जी ने योग बल से अपनी काया बदल कर बच्चे का रूप धारण कर लिया और दादू दयाल बने, इसके प्रमाण में यह साखी दादू जी की बतलाते हैँ—

> सबद बँधाना साह के, ता थैँ दादू आया।
> दुनियाँ जीवी बापुड़ी, सुख दरसन पाया॥

जो कहावत आम तौर पर दादू साहिब के धुनिया होने की मशहूर है वह भी बे बुनियाद नहीं मालूम होती। हिन्दी साहित्य सम्मेलन में लिखा है कि यह बात जो प्रसिद्ध है कि दादू साहिब धुनिया थे उसका कहीं कहीं लेख भी पाया जाता है और दादू पंथी स्वीकार करते हैँ कि कुछ दिन दादू जी ने साँभर या आमेर में लोक दिखावे के लिये धुना का उद्यम किया था जिस में लोग उन को घृणा से देखेँ और पास न आवैँ। दो एक दादू पंथी ऐसा कहते हैँ कि दादू जी रुई का ब्योपार रुपया उधार लेकर करते थे और उनके महाजनों का नाम जिन से वह रुपया उधार लेते थे सुंदरदास व निश्चलदास था। एक बार दादूजी

को इस बनिज में भारी टोटा पड़ा जिस पर महाजनों ने उन से कड़ा तगादा अपने रुपये का किया। दादू जी ने जवाब दिया कि भाई हम तो भिख-मंगे होगये रुपया कहाँ से लावें-जो रुई धरी है ले लो। इस पर दोनों महाजनों ने जो भाई भाई थे चिढ़ कर जवाब दिया कि रुई में आग लगा दो हमारे किस काम की! दादू दयाल ने यह सुनते ही रुई में आग लगा दी जब वह जल कर राख हो गई तो उस में से सुच्चे सोने का एक पासा झलका जो महाजनों के लहने से कहीं विशेष मालियत का था। वह दोनों यह चमत्कार देख कर अच-रज में आकर महात्मा जी के चरणों पर गिरे और उन्हें अपना गुरू धारण किया। उन के प्रताप से यह दोनों मुख्य चेलों में गिने जाते हैं और सुंदरदास जी की कविता जगत प्रसिद्ध है।

॥ गुरू ॥

पंडित सुधाकर द्विवेदी जी ने लिखा है कि दादू जी के गुरू कमाल थे जो कबीर साहिब के मुख्य चेलों में से थे और जिन को कितने लोग कबीर साहिब का बेटा बतलाते हैं। दादू साहिब की बाणी में कहीं से उन के गुरू का नाम नहीं खुलता परंतु कबीर साहिब की उन्होंने जगह जगह महिमा की है और कहीं कहीं साखियाँ भी कबीर साहिब की दी हैं जिन्हें क्षेपक न कहना चाहिये, पर उन के कमाल के शिष्य होने का प्रमाण कहीं नहीं मिलता। पं० सुधाकर जी के अनुसार दादू नाम कमाल का ही धरा हुआ है क्योंकि दादू जी छोटे बड़े सब को "दादा" पुकारा करते थे इस लिये कमाल ने उन का नाम दादू रक्खा।

जनगोपाल ने लिखा है कि दादू जी की अवस्था ग्यारह बरस की होने पर परम पुरुष ने एक बूढ़े साधू के भेष में उन को दर्शन दिया जब कि दादू जी लड़कों में खेल रहे थे और उन को पान का एक बीड़ा खिलाकर मस्तक पर हाथ धरा और परमार्थ का गुप्त भेद देना चाहा जिसे बाल बुद्धि से दादू जी ने न लिया। सात बरस पीछे वही बूढ़े बाबा फिर मिले और दादू जी की बहिर्मुख वृत्ति को दया दृष्टि से अंतरमुख करके उपदेश दिया। उसी दिन से दादू जी भगवत भजन में तत्पर हो गये और इसी लिये जन गोपाल ने दादू साहिब के गुरू का नाम "वृद्ध बाबा" लिखा है जो सुंदरदास जी के लिखे हुए नाम "वृद्धानन्द" से मिलता है। पं० जगजीवन जी के लेख के अनुसार भी साक्षात परमेश्वर ही दादू साहिब के गुरू थे और इस के प्रमाण में उन्हों ने यह साखी दादू साहिब की दी है–

[दादू] गैब माहिं गुरदेव मिल्या। पाया हम परसाद।
मस्तकि मेरे कर धर्‍या। दृष्या अगम अगाध॥

॥ दयाल का बिशेषण ॥

दादू जी का क्षमा और दया का अंग इतना बड़ा था कि दादू "दयाल" के नाम से लोग उन को पुकारने लगे। इस के दृष्टांन्त में कहा जाता है कि एक बार एक क़ाज़ी जिसकी गोष्ठी दादू जी के साथ हो रही थी ऐसा झुँझला उठा कि उन के मुँह पर एक घूँसा मारा परंतु दादू जी क्रोध करने के बदले बड़ी शांति से मुँह आगे करके बोले कि भाई एक और मार ले जिस पर क़ाज़ी बहुत लज्जित हुआ। ऐसे हा किसी समय में वह समाधि में बैठे थे, कुछ ब्राह्मणों ने जो उन से बिरोध रखते थे उन को ईंटों से घेर कर बंद कर दिया। जब उन की आँख खुली तो निकलने का रास्ता न पाकर फिर ध्यान में बैठ गये और इस अवस्था में कई दिन तक रहे। अंत को आस पास के सभ्य जनों को यह हाल मिला तो उन्होंने आकर ईंटों को हटाया और बदमाशों को दंड देना चाहा परंतु दयाल जी ने यह कह कर बरजा कि ऐसे लोग जिन की करतूत से हमारा भगवंत के चरणों से अधिक काल तक मेला रहा वह धन्यबाद पाने के योग्य हैं न कि दंड के!

॥ अकबर शाह सहकाली ॥

दादू साहिब का जीवन पूरा पूरा अकबर बादशाह के राज्य समय में था। अकबर के पैदा होने के एक बरस पीछे अर्थात बिक्रमी सम्बत १६०१ में इन्होंने जन्म लिया और उस के मरने के दो बरस पहिले अर्थात १६६० के जेठ बदी अष्टमी शनिवार को अट्ठावन बरस ढाई महीने की अवस्था में चोला छोड़ा। कहते हैं कि सम्बत १६४२ में दादू दयाल की मुलाक़ात फ़तेहपुर सीकरी में अकबर शाह के साथ पहिले पहिल हुई जिस में अकबर ने उन से सवाल किया कि ख़ुदा की ज़ात, अंग, वजूद और रंग क्या है, इस पर दादू जी ने यह जवाब दिया—

[दादू] इसक अलह की जाति है, इसक अलह का अंग।
इसक अलह औजूद है, इसक अलह का रंग॥

(देखो बिरह अंग की साखी न० १५२ पृष्ठ ४४)

॥ रामत (देशाटन) ॥

दादू साहिब के पहिले २९ बरस का हाल नहीं मिलता पर सम्बत १६३० में वह साँभर आये और वहाँ अनुमान छः बरस रहे। फिर आँबेर को गये जो जैपुर राज्य की पुरानी राजधानी थी और वहाँ चौदह बरस के लगभग रहे। सम्बत १६५० से १६५९ तक जैपुर, मारवाड़, बीकानेर आदि राज्यों के अनेक स्थानों में बिचरते रहे और फिर सं० १६५९ में नराना में जो जैपुर से २० कोस पर है

आकर ठहर गये। वहाँ से तीन चार कोस भराने की पहाड़ी है-यहाँ भी दादू दयाल कुछ काल तक रहे और यहीं सं० १६६० में चोला छोड़ा इस लिये यह स्थान बहुत पुनीत समझा जाता है, बहुधा साधू वहाँ यात्रा को जाते हैं और कितने साधुओं के फूल भी वहाँ गाड़े जाते हैं।

॥ अखाड़े ॥

इस सम्प्रदाय के बावन प्रसिद्ध अखाड़े हैं और हर एक का महंत अलग है। यह अखाड़े विशेष कर जैपुर राज्य में हैं और कुछ अलवर, मारवाड़, मेवाड़, बीकानेर आदि राज्यों में और पंजाब व गुजरात आदि देशों में हैं। काशी में भी दादू पंथियों का एक अखाड़ा है। सब महंतों के मुखिया नराना में रहते हैं जहाँ दादू दयाल ने अपने पिछले दिनों में निवास किया था।

॥ भेषों के चिन्ह और रीति और रहनी ॥

इस पंथ में दो प्रकार के साधू पाये जाते हैं एक भेषधारी बिरक्त जो गेरुआ वस्त्र पहिनते हैं और पठन पाठन कथा कीर्तन जप भजन में अपना पूरा समय लगाते ह ; दूसरे नागा जो सपेद सादे कपड़े पहिनते हैं और लेन देन खेती फ़ौज की नौकरी वैद्यक आदि ब्यौहार रुपया कमाने के लिये करते हैं। नागों की फ़ौज जैपुर राज्य की मशहूर है जिस में दसहज़ार नागा से कम न होंगे।

दोनों प्रकार के साधू ब्याह नहीं करते, गृहस्थों के लड़कों को चेला मूड़ कर अपना बंस और पंथ चलाते हैं।

दादू-पंथी साधू कबीर पंथियों की तरह न तो माथे पर तिलक लगाते और न गले में कंठी पहिनते पर प्रायः हाथ में सुमिरनी रखते हैं। यह लोग सिर पर टोपा या मुरायठ पहिनते हैं और आते जाते समय एक दूसरे से "सत्त राम" कहते हैं। मुरदे को यह लोग चिता लगा कर जला देते हैं पर यह चाल नई निकली है प्राचीन रीति के अनुसार मुरदे को अरथी या बिमान पर रख कर जंगल में छोड़ आते थे जिस में पशु पंछी उस का अहार करें। दादू दयाल ने इसी चाल को अपने उपदेश में उत्तम कहा है—

हरि भज साफल जीवना, पर उपगार समाइ।
दादू मरणा तहँ भला, जहँ पशु पंछी खाइ॥

साध सूर सोहैं मैदाना।
उनको नाहीं गोर मसाना॥

॥ मुख्य तीर्थ ॥

नराना में जहाँ दादू-पंथियों की मुख्य गद्दी है एक दर्शनीय मंदिर दादू द्वारा के नाम का है। यहाँ दादू दयाल के रहने और बैठने के निशान अब तक मौजूद हैं और उनके पहिरने के कपड़े हैं और पोथियाँ जिन की पूजा होती है।

॥ मेला ॥

नराना में फागुन सुदी चौथ से (जिस दिन दादू दयाल वहाँ पहिली बार आये थे) द्वादशी तक नौ दिन भारी मेला हर साल होता है।

॥ इष्ट और मत शिक्षा ॥

दादू साहिब कबीर साहिब की तरह निर्गुण के उपासक थे पर इन का इष्ट ब्रह्मांड का धनी निरंजन निराकार परमेश्वर था उसी को सब में रमने वाला राम कह कर सुमिरन भजन कराते थे। उन के मति की शिक्षा नीचे लिखे हुए बिषयों पर थी—

(१) परमेश्वर की महिमा और उसका सच्चिदानन्द स्वरूप।
(२) उसकी निर्गुण आराधना और अनन्य भक्ति।
(३) उसकी परम उपासना और उसका अजपा जाप।
(४) मन को परम रूप में स्थिर करने के साधन।
(५) परम रूप का ध्यान और धारणा और समाधि।
(६) अनहद बाजे का श्रवण और उसमें मग्न होना।
(७) अमृत बिंदु का पान और परमानंद की प्रीति।
(८) परमेश्वर से अरस परस मिलाप—ब्रह्म का साक्षातकार।

॥ समाज संशोधन ॥

दादू दयाल केवल परमार्थी शिक्षक न थे बरन संसारी चाल व्यवहार और जाति भेद में भी उन्होंने बहुत सुधार किया।

॥ चमत्कार ॥

लिखा है कि एक साल दादू दयाल आँधी नामक गाँव में चौमासे की ऋतु में थे जहाँ बर्षा न होने के कारण जीवों को अति बिकल देखकर उन की माँग पर भगवंत से प्रार्थना करके दादू जी ने जल बरसाया और अकाल को दूर

किया, इसके प्रमाण में यह साखी बतलाते हैं [देखो पृष्ठ ४५, बिरह अंग की १५७ वीं साखी]

> आज्ञा अपरंपार की, बसि अंबर भरतार।
> हरे पटम्बर पहिरि करि, धरती करै सिँगार॥

दादू दयाल की महिमा की एक कथा हँसी की मशहूर है जो मनोरंजक होने से यहाँ दी जाती है—

कहते हैं कि उनके शिष्य सुंदरदास जी जिन के कवि होने का ज़िकर पहिले आचुका है कुछ दिनों तक लगातार रात को सुपना देखते थे कि कोई उन को जूते मार रहा है। अंत को घबरा कर अपने गुरू से हाल कहा। उन्होंने फ़र्माया कि तू बहुत अंडबंड काव्य किया करता है मालूम होता है कि किसी काव्य में तेरे आग पड़ गई और आज्ञा को कि हाल में जो कविता की हो सब लाकर सुना। जब वह सुनाने लगे तो एक जगह यह निकला—

"सुंदर कोप नहीं सुपने"

दादू जी बोल उठे कि यही पद तेरे जूते खाने का कारण है क्योंकि इस में पदच्छेद से "सुंदर को पनहीं सुपने" ऐसा पाठ निकलता है इसी से तुझे सुपने मे पनहीं अर्थात जूती लगती है—तू "कोप" की जगह "कोह" बना दे—[कोह क्रोध का अपभ्रंश है] सुंदरदास जो ने ऐसा ही किया तो उस दिन से सुपने में जूते लगना बंद हो गया।

॥ बहु भाषा बोध ॥

दादू दयाल कुछ विशेष पढ़े लिखे न थे यद्यपि उन की साखियों और पदों में अनेक भाषाओं के शब्द मिलते हैं और कितनी ही साखी और पद ठेठ फ़ारसी में हैं। गुजराती तो उन की मातृ भाषा थी ही और मारवाड़ में भी बहुत काल तक रहे थे सो वहाँ की भाषाओं का जानना अचरज नहीं है परंतु उन की बाणी से पंजाबी सिंधी, मरहठी और बृज भाषा की भी अच्छी जानकारी पाई जाती है। जहाँ जहाँ ऐसे शब्द आये हैं उन के अर्थ भर मक़दूर तहक़ीक़ात करके नोट में दे दिये गये हैं। दादू साहिब ने अपनी बाणी कभी अपने हाथ से नहीं लिखी, उन के पास रहने वाले शिष्य जो कुछ उन के मुख से निकलता था लिख लिया करते थे।

दादू दयाल की बानी

भाग १—साखी

१—गुरुदेव को अंग

॥ वंदना ॥

दादू नमो नमो निरंजनं, नमस्कार गुर देवतः ।
वंदनं सर्व साधवा, प्रणामं पारंगतः* ॥ १ ॥
परब्रह्म परापरं†, सो मम देव निरंजनं ।
निराकारं निर्मलं, तस्य दादू बन्दनं ॥ २ ॥

॥ गुरु महिमा ॥

(दादू) गैब माहिँ गुरदेव मिल्या, पाया हम परसाद ।
मस्तक मेरे कर धर्‌या, देख्या अगम अगाध ॥ ३ ॥
दादू सतगुर सहज मैँ, कीया बहु उपगार‡ ।
निरधन धनवँत करि लिया, गुर मिलिया दातार ॥ ४ ॥
(दादू) सतगुर सूँ सहजैँ मिल्या, लीया कंठ लगाइ ।
दाया भई दयाल की, तब दीपक दिया जगाइ ॥ ५ ॥
दादू देव दयाल की, गुरू दिखाई बाट ।
ताला कूँची लाइ करि, खोले सबै कपाट ॥ ६ ॥
(दादू) सतगुर अंजन बाहि करि, नैन पटल सब खोले ।
बहरे कानौँ सुणने लागे, गूँगे मुख सूँ बोले ॥ ७ ॥

---

*माया देश के पार पहुँचे हुए । †कारण भाव से परे । ‡उपकार ।

॥ संपादक की सूचना ॥

इस पुस्तक को हम ने दो प्राचीन लिपियोँ से छापा है-एक तो हम को बाबू सत्यनारायण प्रसाद जो स्वर्ग बाशी काशी राज के तहसीलदार ने अनुमान दस बरस हुए दी थी और दूसरी मास्टर बनवारीलाल जो प्रयाग निवासी से मिली इस लिये हम इन दोनोँ महाशयोँ को अनेक धन्यबाद देते हैँ। इन के सिवाय तीन पुस्तकेँ काशी, लाहौर और अजमेर के छापे की हम को मिलीँ जिन मेँ से पहिली दो तो बहुत ही अशुद्ध थीँ परंतु तीसरी पंडित चंद्रिका प्रसाद की छापी हुई पुस्तक से (यद्यपि कितने एक स्थान मेँ उस के पाठ और टीका से हम ने सम्मति नहीँ की है) अधिक सहायता मिली जिस के लिये उन को भी धन्यबाद देते हैँ। जीवन-चरित्र के लिखने मेँ हम को उन के एक लेख से जो 'प्रथम हिन्दी साहित्य सम्मेलन" पत्रिका मेँ छपा था बहुत मदद मिली।

हम दादू दयाल की बाणी को दो भाग मेँ छाप रहे हैँ क्योँकि पहिले तो साखियोँ का पदोँ से अलग रखना जब कि हर एक की संख्या बड़ी है उचित जान पड़ता है, दूसरे इस रीति से पढ़ने वालोँ को भी हर तरह का सुबीता होगा।

थोड़ी सी साखियाँ ऐसी हैँ जो दूसरे अंग मेँ दुहराई हुई हैँ परंतु जो कि यह ढंग सर्व हस्त-लिखित और छपी पुस्तकोँ मेँ पाया गया इस लिये हम ने भी उसी अनुसार इस पुस्तक मेँ रक्खा है अर्थात जहाँ किसी एक अंग मेँ आई हुई साखी फिर दूसरे अंग मेँ दी है वहाँ पहिले मेँ अंग का और उस साखी का नम्बर (ब्राकट) मेँ दे दिया है—जैसे "परचा" के अंग नं० ४ की साखियाँ १४५ व १४६ वही हैँ जो बिरह अंग नं० ३ के नं० ७० और ६६ मेँ आचुकी थीँ इस लिये जहाँ वह कड़ियाँ दोहराई गई हैँ अर्थात चौथे अंग की १४५ वीँ साखी के सामने (३-७०) और १४६ वीँ के आगे (३-६६) छाप दिया गया है--देखो पृष्ठ ६१ ॥

दादू दयाल की बानी

भाग १—साखी

१—गुरुदेव को अंग

॥ बंदना ॥

दादू नमो नमो निरंजनं, नमस्कार गुर देवत: ।
बंदनं सर्ब साधवा, प्रणामं पारंगत:* ॥ १ ॥
परब्रह्म परापरं†, सो मम देव निरंजनं ।
निराकारं निर्मलं, तस्य दादू बन्दनं ॥ २ ॥

॥ गुरु महिमा ॥

(दादू) गैब माहिँ गुरदेव मिल्या, पाया हम परसाद ।
मस्तक मेरे कर धस्या, देख्या अगम अगाध ॥ ३ ॥
दादू सतगुर सहज मैँ, कीया बहु उपगार‡ ।
निरधन धनवँत करि लिया, गुर मिलिया दातार ॥ ४ ॥
(दादू) सतगुर सूँ सहजैँ मिल्या, लीया कंठ लगाइ ।
दाया भई दयाल की, तब दीपक दिया जगाइ ॥ ५ ॥
दादू देव दयाल की, गुरू दिखाई बाट ।
ताला कूँची लाइ करि, खोले सबै कपाट ॥ ६ ॥
(दादू) सतगुर अंजन बाहि करि, नैन पटल सब खोले ।
बहरे कानौँ सुणने लागे, गूँगे मुख सूँ बोले ॥ ७ ॥

---

*माया देश के पार पहुँचे हुए । †कारण भाव से परे । ‡उपकार ।

सतगुर दाता जीव का, स्रवन सीस कर नैन ।
तन मन सौंज सँवारि सब, मुख रसना अरु वैन ॥ ८ ॥
राम नाम उपदेस करि, अगम गवन यहु सैन ।
दादू सतगुर सब दिया, आप मिलाये ऐन ॥ ९ ॥
सतगुर कीया फेरि करि, मन का औरै रूप ।
दादू पंचौं पलटि करि, कैसे भये अनूप ॥ १० ॥
साचा सतगुर जे मिलै, सब साज सँवारै ।
दादू नाव चढ़ाइ करि, ले पार उतारै ॥ ११ ॥
(दादू) सतगुर पसु माणस* करै, माणस थैं† सिध सोइ ।
दादू सिध थैं देवता, देव निरंजन होइ ॥ १२ ॥
दादू काढ़े काल मुख, अंधे लोचन देइ ।
दादू ऐसा गुर मिल्या, जीव ब्रह्म करि लेइ ॥ १३ ॥
दादू काढ़े काल मुख, स्रवनहुँ सब्द सुनाइ ।
दादू ऐसा गुर मिल्या, मिरतक लिये जिलाइ ॥ १४ ॥
दादू काढ़े काल मुख, गूँगे लिये बोलाइ ।
दादू ऐसा गुर मिल्या, सुख मैं रहे समाइ ॥ १५ ॥
दादू काढ़े काल मुख, मिहर दया करि आइ ।
दादू ऐसा गुर मिल्या, महिमा कही न जाइ ॥ १६ ॥
सतगुर काढ़े केस गहि, डूबत इहि संसार ।
दादू नाव चढ़ाइ करि, कीये पैली पार‡ ॥ १७ ॥
भवसागर मैं डूबताँ, सतगुर काढ़े आइ ।
दादू खेवट गुर मिल्या, लीये नाव चढ़ाइ ॥ १८ ॥
दादू उस गुरदेव की, मैं बलिहारी जाउँ ।
जहँ आसण अमर अलेख था, ले राखे उस ठाउँ ॥ १९ ॥

---

* मनुष्य । † से । ‡ पल्ली पार ।

॥ आतम बोध ॥

आतम माहैं ऊपजै, दादू पंगुल ज्ञान ।
किरतिम* जाइ उलंघि करि, जहाँ निरंजन थान ॥२०॥

आतम बोध बंझ† का बेटा, गुरमुख उपजै आइ ।
दादू पंगुल पंच बिन, जहाँ राम तहँ जाइ ॥ २१ ॥

॥ अनहद शब्द ॥

साचा सहजैं ले मिलै, सबद गुरू का ज्ञान ।
दादू हम कूँ ले चल्या, जहँ प्रीतम (का) अस्थान ॥ २२ ॥

दादू सबद बिचारि करि, लागि रहै मन लाइ ।
ज्ञान गहै गुरदेव का, दादू सहजि समाइ ॥ २३ ॥

(दादू कहै) सतगुर सबद सुणाइ करि, भावै जीव जगाइ ।
भावै अंतर आप कहि, अपने अंग लगाइ ॥ २४ ॥

(दादू) बाहर सारा देखिये, भीतर कीया चूर ।
सतगुर सबदौं मारिया, जाण न पावै दूर ॥ २५ ॥

(दादू) सतगुर मारे सबद सौं, निरखि निरखि निज ठौर ।
राम अकेला रहि गया, चीत‡ न आवै और ॥ २६ ॥

दादू हम कूँ सुख भया, साध सबद गुर ज्ञाण ।
सुधि बुधि सोधी समझि करि, पाया पद निरबाण ॥२७॥

(दादू) सबद बान गुर साधि के, दूरि दिसंतरि जाइ ।
जेहि लागे सो ऊबरे, सूते लिये जगाइ ॥ २८ ॥

सतगुर सबद मुख सौं कह्या, क्या नेड़े क्या दूर ।
दादू सिष स्रवनहुँ सुण्या, सुमिरण लागा सूर ॥ २९ ॥

---

* कृत्रिम । † बाँझ । ‡ चित्त ।

॥ करनी ॥

सबद दूध घृत राम रस, मथि करि काढ़े कोइ ।
दादू गुर गोबिंद बिन, घट घट समझि न होइ ॥ ३० ॥
सबद दूध घृत राम रस, कोइ साध बिलोवणहार ।
दादू अमृत काढ़ि ले, गुरमुखि गहै विचार ॥ ३१ ॥
घीव दूध मैं रमि रह्या, ब्यापक सबही ठौर ।
दादू बकता बहुत हैं, मथि काढ़ैं ते और ॥ ३२ ॥
कामधेनु घट घीव है, दिन दिन दुरबल होइ ।
गोरू[*] ज्ञान न ऊपजै, मथि नहिं खाया सोइ ॥ ३३ ॥
साचा समरथ गुर मिल्या, तिन तत दिया बताइ ।
दादू मोट[†] महा बली, घट घृत मथि करि खाइ ॥ ३४ ॥
मथि करि दीपक कीजिये, सब घट भया प्रकास ।
दादू दीया[‡] हाथ करि, गया निरंजन पास ॥ ३५ ॥
दीयै[‡] दीया कीजिये, गुरमुख मारग जाइ ।
दादू अपणे पीव का, दरसण देखै आइ ॥ ३६ ॥
दादू दीया[‡] है भला, दिया करौ सब कोइ ।
घर मैं धर्‍या न पाइये, जे कर दिया न होइ ॥ ३७ ॥
(दादू) दीये का गुण ते लहैं[§], दीया मोटी[||] बात ।
दीया जग मैं चाँदना, दीया चालै साथ ॥ ३८ ॥
निर्मल गुर का ज्ञान गहि, निर्मल भगति बिचार ।
निर्मल पाया प्रेम रस, छूटे सकल बिकार ॥ ३९ ॥
निर्मल तन मन आतमा, निर्मल मनसा सार ।
निर्मल प्राणी पंच करि, दादू लंघे पार ॥ ४० ॥

---

[*] गाय । [†] बड़ा । [‡] "दीया" या दीवा चिराग़ को कहते हैं जिस का अभिप्राय "ज्ञान" है, और साखी ३७ व ३८ मैं "दान" का भी अलंकार है । [§] लखैं । [||] बड़ी ।

परा परी पासैं रहै, कोई न जाणे ताहि ।
सतगुर दिया दिखाइ करि, दादू रह्या ल्यौ* लाइ ॥४१॥

॥ जिज्ञासा ॥

प्रश्न—जिन हम सिरजे† सो कहाँ, सतगुर देहु दिखाइ ।
उत्तर-दादू दिल अरवाह‡ का, तहँ मालिक ल्यौ* लाइ ॥४२॥
मुझ ही मैं मेरा धणी, पड़दा खोलि दिखाइ ।
आतम सौं परआत्मा§, परगट आणि मिलाइ ॥४३॥
भरि भरि प्याला प्रेम रस, अपणे हाथ पिलाइ ।
सतगुर के सदिकै‖ किया, दादू बलि बलि जाइ ॥४४॥
सरवर भरिया दह दिसा, पंखी¶ प्यासा जाइ ।
दादू गुर परसाद बिन, क्यौं जल पीवै आइ ॥४५॥
मानसरोवर माहिं जल, प्यासा पीवै आइ ।
दादू दोस न दीजिये, घर घर कहण न जाइ ॥४६॥

॥ गुरु लक्षण ॥

दादू गुर गरुवा** मिलै, ता थैं सब गमि होइ ।
लोहा पारस परसताँ, सहज समाना सोइ ॥ ४७ ॥
दीन गरीबी गहि रह्या, गरुवा गुर गंभीर ।
सूषिम†† सीतल सुरति मति, सहज दया गुर धीर ॥ ४८ ॥
सोधी दाता पलक मैं, तिरै‡‡ तिरावन जोग ।
दादू ऐसा परम गुर, पाया केहिं संजोग ॥ ४९ ॥
(दादू) सतगुर ऐसा कीजिये, राम रस्स माता ।
पार उतारै पलक मैं, दरसन का दाता ॥ ५० ॥

---

* लौ । † पैदा किया । ‡ "अरवाह" बहुबचन अरबी शब्द 'रूह" का है जिस का अर्थ जीवात्मा है—आलमे-अरवाह ब्रह्मांड को कहते हैं । § परमात्मा । ‖ निछावर । ¶ पत्ती । ** भारी, पूरा । †† सूक्ष्म । ‡‡ तारै ।

देवै किरका* दरद का, टूटा जोड़ै तार ।
दादू साधै सुरति को, सो गुर पीर हमार ॥ ५१ ॥
दादू घाइल ह्वै रहे, सतगुर के मारे ।
दादू अंग लगाइ करि, भवसागर तारे ॥ ५२ ॥
दादू साचा गुर मिल्या, साचा दिया दिखाइ ।
साचे कूँ साचा मिल्या, साचा रह्या समाइ ॥ ५३ ॥
साचा सतगुर सोधि ले साचे लीजै साध ।
साचा साहिब सोधि करि, दादू भगति अगाध ॥ ५४ ॥
सनमुख सतगुर साध सूँ, साईं सूँ राता ।
दादू प्याला प्रेम का, महा रसि माता ॥ ५५ ॥
साईं सूँ साचा रहै, सतगुर सूँ सूरा ।
साधू सूँ सनमुख रहै, सो दादू पूरा ॥ ५६ ॥
सतगुर मिलै तो पाइये, भगति मुकति भंडार ।
दादू सहजैं देखिये, साहिब का दीदार ॥ ५७ ॥
(दादू) साईं सतगुर सेविये, भगति मुकति फल होइ ।
अमर अभय पद पाइये, काल न लागै कोइ ॥ ५८ ॥

॥ गुरू बिन ज्ञान नहीं ॥

इक लख चंदा आणि घर, सूरज कोटि मिलाइ ।
दादू गुर गोबिंद बिन, तौ भी तिमर न जाइ ॥ ५९ ॥
अनेक चंद उदय करै, असंख सूर परकास ।
एक निरंजन नाँव बिन, दादू नहीं उजास ॥ ६० ॥
(दादू) कदि यहु आपा जाइगा, कदि यहु बिसरै और ।
कदि यहु सूषिम होइगा, कदि यहु पावै ठौर ॥ ६१ ॥

---

* किनका ।

(दादू) बिषम दुहेला जीव कूँ, सतगुर थैं आसान ।
जब दरवै तब पाइये, नेड़ा ही अस्थान ॥ ६२ ॥

॥ गुरु ज्ञान ॥

(दादू) नैन न देखैं नैन कूँ, अंतर भी कुछ नाहिं ।
सतगुर दरपन करि दिया, अरस परस मिलि माहिं ॥६३॥
घट घट रामहिं रतन है, दादू लखै न कोइ ।
सतगुर सबदौं पाइये, सहजैं ही गम होइ ॥ ६४ ॥
जबहीं कर दीपक दिया, तब सब सूझन लाग ।
यूँ दादू गुर ज्ञान थैं, राम कहत जन जाग ॥ ६५ ॥

॥ अजपा जाप ॥

(दादू) मन माला तहँ फेरिये, जहँ दिवस न परसै रात ।
तहाँ गुरू बाना दिया, सहजैं जपिये तात ॥ ६६ ॥
(दादू) मन माला तहँ फेरिये, जहँ प्रीतम बैठे पास ।
अगम गुरू थैं गम भया, पाया नूर निवास ॥ ६७ ॥
(दादू) मन माला तहँ फेरिये, जहँ आपै एक अनंत ।
सहजैं सो सतगुर मिल्या, जुग जुग फाग बसंत ॥ ६८ ॥
(दादू) सतगुर माला मन दिया, पवन सुरति सूँ पोइ ।
बिन हाथौं निस दिन जपै, परम जाप यूँ होइ ॥ ६९ ॥
(दादू) मन फकीर माहैं हुआ, भीतर लीया भेख ।
सबद गहै गुरदेव का, माँगै भीख अलेख ॥ ७० ॥
(दादू) मन फकीर सतगुर किया, कहि समझाया ज्ञान ।
निहचल आसणि बैसि करि, अकल* पुरुस का ध्यान ॥७१॥

---

* अमर ।

(दादू) मन फकीर जग थैं रह्या, सतगुर लीया लाइ ।
अहि निसि लागा एक सूँ, सहज सुन्न रस खाइ ॥ ७२ ॥
(दादू) मन फकीर ऐसे भया, सतगुर के परसाद ।
जहँ का था लागा तहाँ, छूटे बाद बिबाद ॥ ७३ ॥
ना घरि रहा न बन गया, ना कुछ किया कलेस ।
दादू मन हीं मन मिल्या, सतगुर के उपदेस ॥ ७४ ॥
(दादू) यहु मसीत* यहु देहुरा†, सतगुर दिया दिखाइ ।
भीतरि सेवा बंदगी, बाहरि काहे जाइ ॥ ७५ ॥
(दादू) मंझे चेला मंझि गुर, मंझे ही उपदेस ।
बाहरि ढूँढै बावरे, जटा बँधाये केस ॥ ७६ ॥

॥ भरमी मन का दमन ॥

मन का मस्तक मूँडिये, काम क्रोध के केस ।
दादू बिषै बिकार सब, सतगुर के उपदेस ॥ ७७ ॥
दादू पड़दा भरम का, रहा सकल घटि छाइ ।
गुरु गोबिंद किरपा करैं, तौ सहजैं हीं मिटि जाइ ॥७८॥

॥ सूक्ष्म मार्ग ॥

(दादू) जेहि मति साधू ऊधरै, सो मति लीया सोध ।
मन लै मारग मूल गहि, यहु सतगुर का परमोध ॥७९॥
(दादू) सोई मारग मन गह्या, जेहिँ मारग मिलिये जाइ ।
बेद कुरानूँ ना कह्या, सो गुर दिया दिखाइ ॥ ८० ॥

॥ जीव की बेबसी—मन के रोकने का जतन गुरु-सरन ॥

मन भुवंग यहु बिष भर्या, निरबिष क्योंहि न होइ ।
दादू मिल्या गुर गारुड़ी‡, निरबिष कीया सोइ ॥ ८१ ॥

---

* मसजिद । † मंदिर । ‡ साँप का ज़हर झाड़ने वाला, गुनी ।

एता कीजै आप थैं, तन मन उनमुनि लाइ ।
पंच समाधी राखिये, दूजा सहज सुभाइ ॥ ८२ ॥
(दादू) जीव जँजालैाँ पड़ि गया, उलझ्या नौ मण सूत ।
कोइ इक सुलझै सावधान, गुर बायक* अवधूत† ॥ ८३ ॥
चंचल चहुँ दिसि जात है, गुर बायक* सूँ बंधि ।
दादू संगति साध की, पारब्रह्म सूँ संधि‡ ॥ ८४ ॥
गुर अंकुस माणै नहीं, उद्मत§ माता|| अंध ।
दादू मन चेतै नहीं, काल न देखै फंध ॥ ८५ ॥
(दादू) मार्‍याँ बिन मानै नहीं, यह मन हरि की आन ।
ज्ञान खड़ग गुरदेव का, ता सँग सदा सुजान ॥ ८६ ॥
जहाँ थैं मन उठि चलै, फेरि तहाँ ही राखि ।
तहँ दादू लय लीन करि, साध कहैं गुर साखि ॥ ८७ ॥
(दादू) मनहीं सूँ मल ऊपजै, मनहीं सूँ मल धोइ ।
सीख चलै गुर साध की, तौ तूँ निर्मल होइ ॥ ८८ ॥
(दादू) कच्छिब¶ अपने करि लिये, मन इन्द्री निज ठौर ।
नाँइ** निरंजन लागि रहु, प्राणी परिहरि†† और ॥ ८९ ॥
मन के मते सब कोइ खेलै, गुरमुख बिरला कोइ ।
दादू मन की मानै नहीं, सतगुर का सिष सोइ ॥ ९० ॥
सब जीवन कूँ मन ठगै, मन कूँ बिरला कोइ ।
दादू गुर के ज्ञान सूँ, साईं सनमुख होइ ॥ ९१ ॥
(दादू) एक सूँ लयलीन हूणाँ, सबै सयानप येह ।
सतगुर साधू कहत हैं, परम तत्त जपि लेह ॥ ९२ ॥

---

*बायक=वाक्य । †त्यागी, नागा । ‡मेला । §क्रोधी । ||मतवाला । ¶कछुवा ।
**नाम । †† त्याग कर ।

सतगुर सबद बिबेक बिन, संजम रह्या न जाइ ।
दादू ज्ञान बिचार बिन, बिषै हलाहल खाइ ॥९३॥
घर घर घट कोल्हू चलै, अमी महा रस जाइ ।
दादू गुर के ज्ञान बिन, बिषै हलाहल खाइ ॥ ९४ ॥

॥ मनमुख अंग का निषेध ॥

सतगुर सबद उलंघि करि, जिनि कोई सिष जाइ ।
दादू पग पग काल है, जहाँ जाइ तहँ खाइ ॥ ९५ ॥
सतगुर बरजै सिष करै, क्यौँ करि बंचै काल ।
दह दिसि देखत बहि गया, पानी फोड़ी पाल ॥ ९६ ॥
(दादू) सतगुर कहै सो सिष करै, सब सिधि कारज होइ ।
अमर अभय पद पाइये, काल न लागै कोइ ॥ ९७ ॥
(दादू) जे साहब कूँ भावै नहीं, सो हम थैं जिनि होइ ।
सतगुर लाजै आपणा, साध न मानै कोइ ॥ ९८ ॥
(दादू) हूँ की ठाहर है कहौ, तन की ठाहर तूँ ।
री की ठाहर जी कहौ, ज्ञान गुरू का यूँ ॥ ९९ ॥*
(दादू) पंच सवादी† पंच दिसि, पंचे पंचौँ बाट ।
तब लग कहा न कीजियें, गहि गुरू दिखाया घाट ॥१००॥
दादू पंचौँ एक मति, पंचौँ पूरया साथ ।
पंचौँ मिलि सनमुख भये, तब पंचौँ गुर की बात ॥१०१॥
(दादू) ताता लोहा तिणे‡ सौँ, क्यौँ करि पकड्या जाइ ।
गहन गती सूझै नहीं, गुर नहिँ बूझै आइ ॥ १०२ ॥

---

*किसी गवैये को समझौती देने के लिये यह साखी कही गई थी। †रस लेने वाली अर्थात ज्ञान इंद्रियाँ। ‡तिनका सा नन्हा।

॥ गुरुमुख अंग की महिमा ॥

(दादू) औगुण गुण करि मानै गुर के, सोई सिष्य सुजाण।
सतगुर औगुण क्यौं करै, समझै सोई सयाण ॥ १०३ ॥
सोने सेती बैर क्या, मारै घन के घाइ* ।
दादू काटि कलंक सब, राखै कंठि लगाइ ॥ १०४ ॥
पाणी माहीं राखिये, कनक कलंक न जाइ ।
दादू गुर के ज्ञान सौं, ताइ अगनि मैं वाहि ॥ १०५ ॥
(दादू) माहैं मीठा हेत करि, ऊपर कड़वा राखि ।
सतगुर सिष कूँ सीख दे, सब साधौं की साखि ॥ १०६ ॥
(दादू कहै) सिष्य भरोसै आपणे, ह्वै बोलौ हुसियार ।
कहैगा सो बहैगा, हम पहली करैं पुकार ॥१०७॥
(दादू) सतगुर कहै सो कीजिये, जे तूँ सिष्य सुजाण ।
जहँ लाया तहँ लागि रहु, बूझै कहा अजाण ॥ १०८ ॥
गुर पहली मन सौं कहै, पीछे नैन की सैन ।
दादू सिष समझै नहीं, कहि समझावे बैन ॥ १०९ ॥
कहे लखै सो मानवी†, सैन लखै सो साध ।
मन की लखै सो देवता, दादू अगम अगाध ॥ ११० ॥

॥ साकट निकृष्ट जीव ॥

(दादू) कहि कहि मेरी जीभ रहि, सुणि सुणि तेरे कान ।
सतगुर बपुरा क्या करै, जो चेला मूढ़ अजान ॥१११॥
एक सबद सब कुछ कह्या, सतगुर सिष समझाइ ।
जहँ लाया तहँ लागै नहीं, फिरि फिरि बूझै आइ ॥११२॥
ज्ञान लिया सब सीखि सुणि, मन का मैल न जाइ ।
गुरू बिचारा क्या करै, सिष बिषै हलाहल खाइ ॥११३॥

---

*घाव, चोट। †जीव या साधारण मनुष्य।

सतगुर की समझै नहीं, अपणै उपजै नाहिं ।
तौ दादू क्या कीजिये, बुरी बिथा मन माहिं ॥११४॥

॥ अनाड़ी और पाखंडी गुरू ॥

गुर अपंग पग पंख बिन, सिष साखा का भार ।
दादू खेवट नाव बिन, क्यूँ उतरैंगे पार ॥ ११५ ॥
दादू संसा जीव का, सिष साखा का साल ।
दोनौं कूँ भारी पड़ी, ह्वैगा कौण हवाल ॥ ११६ ॥
अंधे अंधा मिलि चले, दादू बांधि कतार ।
कूप पड़े हम देखताँ, अंधे अंधा लार ॥ ११७ ॥
सोधी नहीं सरीर की, औरौं कूँ उपदेस ।
दादू अचरज देखिया, ये जाहिंगे किस देस ॥ ११८ ॥
(दादू) सोधी नहीं सरीर की, कहैं अगम की बात ।
जान* कहावैं बापुड़े, आवध लीये हाथ* ॥ ११९ ॥
(दादू) माया माहैं काढ़ि करि, फिरि माया मैं दीन्ह ।
दोऊ जन समझैं नहीं, एकौ काज न कीन्ह ॥ १२० ॥
(दादू) कहै सो गुर किस काम का, गहि भरमावै आन ।
तत्त बतावै निर्मला, सो गुर साध सुजान ॥ १२१ ॥
तू मेरा हूँ तेरा, गर सिष कीया मंत ।
दोनौं भूले जात हैं, दादू बिसरया कंत ॥ १२२ ॥
दुहि दुहि पीवै ग्वाल गुर, सिष है छेली† गाइ ।
यहु अवसर यौं हीं गया, दादू कहि समझाइ ॥ १२३ ॥
सिष गोरू गुर ग्वाल है, रच्छा करि करि लेइ ।
दादू राखै जतन करि, आणि धणी कूँ देइ ॥ १२४ ॥

*बेचारे अपने को सुजान कहते हैं पर मौत की ख़बर नहीं । †छेरी, बकरी ।

झूठे अंधे गुर घने, भरम दिढ़ावैं आइ ।
दादू साचा गुर मिलै, जीव ब्रह्म ह्वै जाइ ॥ १२५ ॥

झूठे अंधे गुर घणे, बंधे बिषय बिकार ।
दादू साचा गुरु मिलै, सनमुख सिरजनहार ॥ १२६ ॥

झूठे अंधे गुर घणे, भरम दिढ़ावैं काम ।
बंधे माया मोह सौं, दादू मुख सौं राम ॥ १२७ ॥

झूठे अंधे गुर घणे, भटकैं घर घर बारि ।
कारज को सीझै नहीं, दादू माथै मारि ॥ १२८ ॥

(दादू) भगत कहावैं आप कूँ, भगति न जाणैं भेव ।
सुपने हीं समझैं नहीं, कहाँ बसै गुरदेव ॥ १२९ ॥

॥ कर्म भर्म का निषेध ॥

भरम करम जग बंधिया, पंडित दिया भुलाइ ।
दादू सतगुर ना मिलै, मारग देइ दिखाइ ॥ १३० ॥

(दादू) पंथ बतावैं पाप का, भरम करम बेसास* ।
निकट निरंजन जे रहै, क्यौं न बतावै तास ॥ १३१ ॥

दादू आपा उरझैं उरझिया, दीसै सब संसार ।
आपा सुरझैं सुरझिया, यहु गुर ज्ञान बिचार ॥ १३२ ॥

॥ गुरुमुख कसौटी ॥

साधू का अँग निर्मला, ता मैं मल न समाइ ।
परम गुरू परगट कहै, ता थैं दादू ताइ ॥ १३३ ॥

॥ सुमिरन ॥

राम नाम गुर सबद सौं, रे मन पेल भरम ।
निहकरमी सौं मन मिल्या, दादू काटि करम ॥ १३४ ॥

---

* बिश्वास ।

॥ सूक्ष्म मार्ग ॥

(दादू) बिन पाइन का पंथ है, क्यौं करि पहुँचै प्राण ।
बिकट घाट औघट खरे, माहिं सिखर असमान ॥ १३५ ॥
मन ताजी[*] चेतन चढ़ै, ल्यौ[†] की करै लगाम ।
सबद गुरू का ताजणाँ,[‡] कोइ पहुँचै साध सुजान ॥ १३६ ॥

॥ स्वार्थी परमार्थी ॥

साधौं सुमिरण सो कह्या, (जेहि) सुमिरण आपा भूल[§] ।
दादू गहि गम्भीर गुर, चेतन आनँद मूल ॥ १३७ ॥
(दादू) आप सुवारथ सब सगे, प्राण सनेही नाहिं ।
प्राण सनेही राम है, कै साधू कलि माहिं ॥ १३८ ॥
सुख का साथी जगत सब, दुख का नाहीं कोइ ।
दुख का साथी साइयाँ, दादू सतगुर होइ ॥ १३९ ॥
सगे हमारे साध हैं, सिर पर सिरजनहार ।
दादू सतगुर सो सगा, दूजा धुंध बिकार ॥ १४० ॥
दादू के दूजा नहीं, एकै आतम राम ।
सतगुर सिर पर साध सब, प्रेम भगति बिसराम ॥ १४१ ॥

॥ गुरु भृंगी ॥

दादू सुधि बुधि आतमा, सतगुर परसै आइ ।
दादू भृंगी कीट ज्यौं, देखत ही ह्वै जाइ ॥ १४२ ॥
दादू भृंगी कीट ज्यौं, सतगुर सेती होइ ।
आप सरीखे करि लिये, दूजा नाहीं कोइ ॥ १४३ ॥
(दादू) कच्छिब राखै दृष्टि मैं, कुंजौं के मन माहिं[‖] ।
सतगुर राखै आपणाँ, दूजा कोई नाहिं ॥ १४४ ॥

---

[*]घोड़ा। [†]लौ। [‡]कोड़ा। [§]सुमिरन उस का नाम है जिस से आपा का नाश हो।
[‖]कछुवा अपने बच्चौं को दृष्टि से और कुंज चिड़िया सुरति से पालती है।

बच्चा के माता पिता, दूजा नाहीं कोइ ।
दादू निपजै भाव सौं, सतगुर के घट होइ ॥ १४५ ॥

॥ भरोसा ॥

एकै सबद अनंत सिष, जब सतगुर बोलै ।
दादू जड़े कपाट सब, दे कूँची खोलै ॥ १४६ ॥
बिनही कीया होइ सब, सनमुख सिरजनहार ।
दादू करि करि को मरै, सिष साखा सिर भार ॥ १४७ ॥
सूरज सनमुख आरसी, पावक किया प्रकास ।
दादू साईं साध बिच, सहजैं निपजै दास ॥ १४८ ॥

॥ मन इन्द्री निग्रह ॥

(दादू) पंचौं ये परमोधि ले, इन हीं कूँ उपदेस ।
यहु मन अपणा हाथ करि, तौ चेला सब देस ॥ १४९ ॥
अमर भये गुर ज्ञान सौं, केते यहि कलि माहिँ ।
दादू गुर के ज्ञान बिन, केते मरि मरि जाहिँ ॥ १५० ॥
औषधि खाइ न पछि* रहै, बिषम ब्याधि† क्यौं जाइ ।
दादू रोगी बावरा, दोस बैद कूँ लाइ ॥ १५१ ॥
बैद बिथा कहै देखि करि, रोगी रहै रिसाइ ।
मन माहीं लीये रहै, दादू ब्याधि न जाइ ॥ १५२ ॥
(दादू) बैद बिचारा क्या करै, रोगी रहै न साच ।
खाटा मीठा चरपरा, माँगै मेरा बाच‡ ॥ १५३ ॥

॥ गुरु उपदेश ॥

दुर्लभ दरसन साध का, दुर्लभ गुर उपदेस ।
दुर्लभ करिबा कठिन है, दुर्लभ परस अलेख ॥ १५४ ॥

---

*पथ से, परहेज़ के साथ । †भारी रोग । ‡बच्चा ।

(दादू) अबिचल मंत्र अमर मंत्र अछय मंत्र,
अभय मंत्र राम मंत्र निज सार ।
सजीवन मंत्र सबीरज मंत्र सुंदर मंत्र,
सिरोमणि मंत्र निरमल मंत्र निराकार ॥
अलख मंत्र अकल मंत्र अगाध मंत्र अपार मंत्र,
अनंत मंत्र राया ।
नूर मंत्र तेज मंत्र जोति मंत्र प्रकास मंत्र,
परम मंत्र पाया।
उपदेस दष्या* दादू गुर राया ॥१५५॥

दादू सब ही गुर किये, पसु पंखी बनराय ।
तीन लोक गुण पंच सूँ, सब ही माहिँ खुदाइ ॥१५६॥
जे पहली सतगुर कह्या, सो नैनहुँ देख्या आइ ।
अरस परस मिलि एक रस, दादू रहे समाइ ॥ १५७ ॥

॥ इति गुरुदेव को अंग समाप्त ॥

*गुर दीक्षा। साखी १५५ में जो मंत्रों के नाम लिखे हैं वह भगवंत के गुण-वाचक हैं।

२—सुमिरन को अंग

॥ बंदना ॥

(दादू) नमो नमो निरंजनं, नमस्कार गुरदेवतः ।
बंदनं सर्व साधवा, प्रणामं पारंगतः ॥ १ ॥
एकै अच्छर पीव का, सोई सत करि जाणि ।
राम नाम सतगुर कह्या, दादू सो परवाणि* ॥ २ ॥
पहली स्रवन दुती रसन, तृतिये हिरदे गाइ ।
चतुर्दसी चिंतन† भया, तब रोम रोम ल्यौ लाइ ॥ ३ ॥

॥ नाम महिमा ॥

दादू नीका नाँव है, तीन लोक तत सार ।
राति दिवस रटिबो करी, रे मन इहै बिचार ॥ ४ ॥
दादू नीका नाँव है, हरि हिरदै न बिसारि ।
मूरति मन माहैं बसै, साँसै साँस सँभारि ॥ ५ ॥
साँसै साँस सँभालताँ, इक दिन मिलिहै आइ ।
सुमिरण पैंड़ा सहज का, सतगुर दिया बताइ ॥ ६ ॥
दादू नीका नाँव है, सो तूँ हिरदै राखि ।
पाखँड परपँच दूर करि, सुनि साधू जन की साखि ॥७॥
दादू नीका नाँव है, आप कहै समझाइ ।
और आरँभ‡ सब छाड़ि दे, राम नाम ल्यौ लाइ ॥ ८ ॥
राम भजन का सोच क्या, करताँ होइ सो होइ ।
दादू राम सँभालिये, फिरि बूझिये न कोइ ॥ ९ ॥
राम तुम्हारे नाँव बिन, जे मुख निकसे और ।
तौ इस अपराधी जीव कौं, तीन लोक कत ठौर ॥१०॥
छिन छिन राम सँभालताँ, जे जिव जाइ त जाउ ।
आतम के आधार कौं, नाहीं आन उपाउ ॥ ११ ॥

---

*प्रमाण । † ब्र० वि० प्र० पुस्तक में "चेतनि" है । ‡ नया काम ।

एक महूरत मन रहै, नाँव निरंजन पास ।
दादू तब हीं देखताँ, सकल करम का नास ॥ १२ ॥
सहजै हीं सब होइगा, गुण इन्द्री का नास ।
दादू राम सँभालताँ, कटैं करम के पास* ॥ १३ ॥
राम नाम गुर सबद सौं, रे मन पेलि भरम ।
निहकरमी सौं मन मिल्या, दादू काटि करम ॥ १४ ॥
एक राम के नाँव बिन, जिव की जरनि न जाइ ।
दादू केते पचि मुए, करि करि बहुत उपाइ ॥ १५ ॥
एक राम की टेक गहि, दूजा सहज सुभाइ ।
राम नाम छाड़ै नहीं, दूजा आवै जाइ ॥ १६ ॥
दादू राम अगाध है, परिमित नाहीं पार ।
अबरण बरण न जाणिये, दादू नाँइ† अधार ॥ १७ ॥
दादू राम अगाध है, अबिगति लखै न कोइ ।
निर्गुण सर्गुण का कहै, नाँइ† बिलंबन‡ होइ ॥ १८ ॥
दादू राम अगाध है, बेहद लख्या न जाइ ।
आदि अंत नहिं जाणिये, नाँव निरंतर गाइ ॥ १९ ॥
दादू राम अगाध है, अकल अगोचर एक ।
दादू नाँइ† बिलंबिये,‡ साधू कहैं अनेक ॥ २० ॥
(दादू) एकै अल्लह राम है, समरथ साईं सोइ ।
मैदे के पकवान सब, खाताँ होइ सो होइ ॥ २१ ॥
सर्गुण निर्गुण ह्वै रहे, जैसा तैसा लीन ।
हरि सुमिरण ल्यौ लाइये, का जाणौं का कीन्ह ॥ २२ ॥

---

* फाँस । † नाम । ‡ मोहित होना, लीन होना ।

दादू सिरजनहार के, केते नाँव अनंत ।
चित आवै सो लीजिये, यौं साधू सुमिरैं संत ॥ २३ ॥
(दादू) जिन प्रान पिंड हम कौं दिया, अंतरि सेवैं ताहि ।
जे आवै औसान सिरि, सोई नाँव सँबाहि* ॥ २४ ॥

॥ चितावनी ॥

(दादू) ऐसा कौण अभागिया, कछू दिढ़ावै और ।
नाँव बिना पग धरन कूँ, कहौ कहाँ है ठौर ॥ २५ ॥
(दादू) निमिष न न्यारा कीजिये, अंतर थैं उरि नाम ।
कोटि पतित पावन भये, केवल कहताँ राम ॥ २६ ॥
(दादू) जे तैं अब जाण्यां नहीं, राम नाम निज सार ।
फिरि पीछैं पछिताहिगा, रे मन मूढ़ गँवार ॥ २७ ॥
दादू राम सँभालि ले, जब लग सुखी सरीर ।
फिरि पीछैं पछिताहिगा, जब तन मन धरै न धीर ॥२८॥
दुख दरिया संसार है, सुख का सागर राम ।
सुख सागर चलि जाइये, दादू तजि बेकाम ॥ २९ ॥
(दादू) दरिया यहु संसार है, राम नाम निज नाव ।
दादू ढील न कीजिये, यहु अवसर यहु डाव† ॥ ३० ॥
मेरे संसा को नहीं, जीवन मरन का राम ।
सुपिनैं हीं जिनि बीसरै, मुख हिरदै हरि नाम ॥ ३१ ॥
दादू दुखिया तब लगै, जब लग नाँव न लेहि ।
तब ही पावन परम सुख, मेरी जीवन येहि ॥ ३२ ॥
कछु न कहावै आप कूँ‡, साईं कूँ सेवै ।
दादू दूजा छाड़ि सब, नाँव निज लेवै ॥ ३३ ॥

---

*समाय । †दाव । ‡अपनी प्रशंसा की चाह न रक्खै ।

जे चित चिहुटै राम सूँ, सुमिरण मन लागै ।
दादू आतम जीव का, संसा सब भागै ॥ ३४ ॥
दादू पिव का नाँव ले, तौ मेटै सिर साल ।
घड़ी महूरत चालना, कैसी आवै काल्ह ॥ ३५ ॥
दादू औसर जीवतैं, कह्या न केवल राम ।
अंत काल हम कहैंगे, जम बैरी सूँ काम ॥ ३६ ॥
(दादू) ऐसे महँगे मोल का, एक साँस जे जाइ ।
चौदह लोक समान सो, काहे रेत मिलाइ ॥ ३७ ॥
सोई साँस सुजान नर, साईं सेती लाइ ।
करि साटा* सिरजनहार सूँ, महँगे मोल बिकाइ ॥ ३८ ॥
जतन करै नहिं जीव का, तन मन पवना फेर ।
दादू महँगे मोल का, द्वै दो बटी इक सेर† ॥ ३९ ॥
(दादू) रावत राजा राम का, कदे‡ न बिसारी नाँव ।
आतम राम सँभालिये, तौ सूबस§ काया गाँव ॥ ४० ॥
(दादू) अहनिसि सदा सरीर मैं, हरि चिंतत दिन जाइ ।
प्रेम मगन लय लीन मन, अंतर गति ल्यौ लाइ ॥४१॥
निमिष एक न्यारा नहीं, तन मन मंझि समाइ ।
एक अंग लागा रहै, ता कूँ काल न खाइ ॥ ४२ ॥
(दादू) पिंजर पिंड सरीर का, सुवटा‖ सहजि समाइ ।
रमिता सेती रमि रहै, बिमल बिमल जस गाइ ॥४३॥
अबिनासी सौं एक ह्वै, निमिष न इत उत जाइ ।
बहुत बिलाई क्या करै, जे हरि हरि सबद सुणाइ ॥४४॥

---

* सट्टा; एक वस्तु के दाम के बदले दूसरी वस्तु देना। † तन मन और साँस को फेर कर अभ्यास न करना गोया इस अनमोल जीवन को दो धोती और सेर भर अन्न के लिये बेच देना है। ‡ कधी, कभी। § अच्छा बासा। ‖ तोता।

(दादू) जहाँ रहूँ तहँ राम सूँ, भावै कंदलि* जाइ ।
भावै गिर परबत रहूँ, भावै गेह बसाइ ॥ ४५ ॥
भावै जाइ जलहरि† रहूँ, भावै सीस नवाइ‡ ।
जहाँ तहाँ हरि नाँव सूँ, हिरदे हेत लगाइ ॥ ४६ ॥

॥ चेतावनी ॥

(दादू) राम कहे सब रहत है, नख सिख सकल सरीर ।
राम कहे बिन जात है, समझी मनवाँ बीर ॥ ४७ ॥
(दादू) राम कहे सब रहत है, लाहा§ मूल सहेत ।
राम कहे बिन जात है, मूरख मनवाँ चेत ॥ ४८ ॥
(दादू) राम कहे सब रहत है, आदि अंत लौं सोइ ।
राम कहे बिन जात है, यहु मन बहुरि न होइ ॥ ४९ ॥
(दादू) राम कहे सब रहत है, जीव ब्रह्म की लार ।
राम कहे बिन जात है, रे मन हो हुसियार ॥ ५० ॥
हरि भजि साफिल|| जीवना, पर उपगार समाइ ।
दादू मरणा तहँ भला, जहँ पसु पंखी¶ खाइ ॥ ५१ ॥
(दादू) राम सबद मुख ले रहै, पीछे लागा जाइ ।
मनसा बाचा कर्मना, तेहि तत** सहज समाइ ॥ ५२ ॥
(दादू) रचि मचि लागे नाँव सूँ, राते माते होइ ।
देखैंगे दीदार कूँ, सुख पावैंगे सोइ ॥ ५३ ॥
(दादू) साइँ सेवैं सब भले, बुरा न कहिये कोइ ।
सारौं माहैं†† सो बुरा, जिस घट नाँव न होइ ॥ ५४ ॥
दादू जियरा राम बिन, दुखिया येहि संसार ।
उपजै बिनसै खपि मरै, सुख दुख बारम्बार ॥ ५५ ॥

---

* गुफा । † जल बास करूँ । ‡ उलटा लटकूँ । § लाभ । || साफलय = सुफल । ¶ पक्षी । ** तत्व । †† सभौं मैं ।

राम नाम रुचि ऊपजै, लेवै हित चित लाइ ।
दादू सोई जीयरा, काहे जमपुर जाइ ।। ५६ ।।
(दादू) नीकी बरियाँ* आइ करि, राम जपि लीन्हा ।
आतम साधन सोधि करि, कारज भल कीन्हा ।। ५७ ।।
(दादू) अगम बस्त पानैं पड़ी,† राखी मंझि छिपाइ ।
छिन छिन सोई सँभालिये, मति वै बीसरि जाइ ।। ५८ ।।

॥ नाम महिमा ॥

दादू उज्जल निर्मला, हरि रँग राता होइ ।
काहे दादू पचि मरै, पानी सेती धोइ ।। ५९ ।।
सरीर सरोवर राम जल, माहैं संजम सार ।
दादू सहजैं सब गये, मन के मैल बिकार ।। ६० ।।
(दादू) राम नामं जलं कृत्वा, स्नानं सदा जितः‡ ।
तन मन आतम निर्मलं, पंच भूपापंगतः§ ।। ६१ ।।
(दादू) उत्तम इंद्री निग्रहं, मुच्यते‖ माया मनः ।
परम पुरुष पुरातनं, चिंतते सदातनः¶ ।। ६२ ।।
दादू सब जग बिष भख्या, निर्बिष बिरला कोइ ।
सोई निर्बिष होइगा, (जा के) नाँव निरंजन होइ ।।६३।।
दादू निर्बिष नाँव सौं, तन मन सहजैं होइ ।
राम निरोगा करैगा, दूजा नाहीं कोइ ।। ६४ ।।
ब्रह्म भगति जब ऊपजै, तब माया भगति बिलाइ ।
दादू निर्मल मल गया, ज्यूँ रबि तिमिर नसाइ ।। ६५ ।।

---

*बिरियाँ=समय । † हाथ लगी । ‡ नागरी प्रचारनी सभा की पुस्तक में "मतिः" है । § पंच भूप अपंगतः अर्थात पाँचो इंद्रियाँ जो राजा के समान बलवान हैं अपंग या पंगुल यानी निर्बिल हो गईं । ‖ छूट जाना । ¶ नित्य प्रति ।

दादू विषै बिकार सौं, जब लग मन राता ।
तब लग चीत न आवई, त्रिभवन-पति दाता ॥ ६६ ॥
(दादू) का जाणौं कब होइगा, हरि सुमिरन इक-तार ।
का जाणौं कब छाड़ि है, यहु मन बिषै बिकार ॥ ६७ ॥
है सो सुमिरण होता नहीं, नहीं सु कीजै काम ।
दादू यहु तन यौं गया, क्यूँ करि पइये राम ॥ ६८ ॥
दादू राम नाम निज मोहनी, जिन मोहे करतार ।
सुर नर संकर मुनि जना, ब्रह्मा सृष्टि बिचार ॥ ६९ ॥
(दादू) राम नाम निज औषधी, काटै कोटि बिकार ।
बिषम ब्याधि थैं ऊबरै, काया कंचन सार ॥ ७० ॥
(दादू) निर्बिकार निज नाँव ले, जीवन इहै उपाइ ।
दादू कृत्रिम काल है, ता के निकट न जाइ ॥ ७१ ॥

॥ सुमिरन बिधि ॥

मन पवना गहि सुरति सौं, दादू पावै स्वाद ।
सुमिरण माहैं सुख घणा, छाड़ि देहु बकबाद ॥ ७२ ॥
नाँव सपीड़ा* लीजिये, प्रेम भगति गुन गाइ ।
दादू सुमिरण प्रीति सौं, हेत सहित ल्यौ लाइ ॥ ७३ ॥
प्रान कँवल मुखि राम कहि, मन पवना मुखि राम ।
दादू सुरति मुख राम कहि, ब्रह्म सुन्न निज ठाम ॥७४॥
(दादू) कहता सुणता राम कहि, लेता देता राम ।
खाता पीता राम कहि, आत्म कँवल बिसराम ॥ ७५ ॥
ज्यूँ जल पैसे दूध मैं, ज्यूँ पाणी मैं लौण† ।
ऐसैं आतम राम सौं, मन हठ साधै कौण ॥ ७६ ॥

---

* दर्द के साथ । † नोन ।

(दादू) राम नाम मैं पैसि करि, राम नाम ल्यौ लाइ ।
यहु इकंत त्रय लोक मैं, अनत काहे कौं जाइ ॥ ७७ ॥

ना घर भला न बन भला, जहाँ नहीं निज नाँव ।
दादू उनमुनि मन रहै, भला न सोई ठाँव ॥ ७८ ॥

(दादू) निर्गुणं नामं मई, हृदय भाव प्रबर्तितं ।
भर्मं कर्मं कलि बिषं, माया मोहं कंपितं ॥ ७९* ॥

कालं जालं सोचितं, भयानक जम किंकरं ।
हर्षं मुदितं सतगुरं, दादू अविगति दर्शनं ॥ ८०* ॥

(दादू) सब सुख सरग पयाल† के, तोल तराजू वाहि ।
हरि सुख एक पलक्क का, ता सम कह्या न जाइ ॥ ८१ ॥

(दादू) राम नाम सब को कहै, कहिबे बहुत बिमेक ।
एक अनेकौं फिरि मिले, एक समाना एक ॥ ८२ ॥

दादू अपणी अपणी हद्द मैं, सब को लेवै नाँव ।
जे लागे बेहद्द सौं, तिन की बलि मैं जाँव ॥ ८३ ॥

कौण पटंतर‡ दीजिये, दूजा नाहीं कोइ ।
राम सरीखा राम है, सुमिर्‍याँ ही सुख होइ ॥ ८४ ॥

अपणी जाणै आप गति, और न जाणै कोइ ।
सुमिरि सुमिरि रस पीजिये, दादू आनँद होइ ॥ ८५ ॥

(दादू) सब ही बेद पुरान पढ़ि, मेटि नाँव निरधार ।
सब कुछ इन ही माहिँ है, क्या करिये बिस्तार ॥ ८६ ॥

---

* नं० ७६ और ८० साखियों का अर्थ यह है कि निर्गुन नाम में जब चित्त लग जाता है तब भ्रम (मिथ्या ज्ञान), कर्म (पुन्य पाप), कलि बिष (सांसारिक दोष) माया, मोह, काल (समय-कृत बंधन), जाल (बंधन), शोक और मृत्यु का भय, ये सब हट जाते हैं; और हर्ष, आनन्द, सतगुरु और शब्दज्ञान प्राप्त होते हैं। † पाताल। ‡ उपमा।

पढ़ि पढ़ि थाके पंडिता, किनहुँ न पाया पार ।
कथि कथि थाके मुनि जना, दादू नाँइ* अधार ॥ ८७ ॥
निगम हिँ अगम बिचारिये, तऊ पार न आवै ।
ता थैं सेवक क्या करैं, सुमिरन ल्यौ लावै ॥ ८८ ॥
(दादू) अलिफ एक अल्लाह का, जे पढ़ि करि जाणै कोइ ।
कुरान कतेबा इलम सब, पढ़ि करि पूरा होइ ॥ ८९ ॥
दादू यहु तन पिंजरा, माहीं मन सूवा ।
एकै नाँव अलाह का, पढ़ि हाफिज हूवा ॥ ९० ॥
नाँव लिया तब जाणिये, जे तन मन रहै समाइ ।
आदि अंत मध एक रस, कबहूँ भूलि न जाइ ॥ ९१ ॥

॥ बिरह पतिब्रत ॥

(दादू) एकै दसा अनन्य† की, दूजी दसा न जाइ ।
आपा भूलै आन सब, एकइ रहै समाइ ॥ ९२ ॥
दादू पीवै एक रस, बिसरि जाइ सब और ।
अविगति यहु गति कीजिये, मन राखो येहि ठौर ॥९३॥
आतम चेतन कीजिये, प्रेम रस्स पीवै ।
दादू भूलै देह गुण, ऐसैं जन जीवै ॥ ९४ ॥
कहि कहि केते थाके दादू, सुणि सुणि कहु क्या लेइ ।
लूण मिलै गलि पाणियाँ, ता सनि‡ चित यौं देइ ॥९५॥
दादू हरि रस पीवताँ, रती बिलंब न लाइ ।
बारंबार सँभालिये, मति वै बीसरि जाइ ॥ ९६ ॥
(दादू) जागत सुपना ह्वै गया, चिंतामणि जब जाइ ।
तब हीं साचा होत है, आदि अंत उर लाइ ॥ ९७ ॥

---

* नाम । † केवल एक की भक्ति या सरन जिसमें दूसरे का ध्यान या सहारा नाम मात्र को न हो । ‡ से ।

नाँव न आवै तब दुखी, आवै सुख संतोष ।
दादू सेवक राम का, दूजा हरष न सोक ॥ ९८ ॥
मिलै तो सब सुख पाइये, बिछुरे बहु दुख होइ ।
दादू सुख दुख राम का, दूजा नाहीं कोइ ॥ ९९ ॥
दादू हरि का नाँव जल, मैं मीन ता माहिँ ।
संग सदा आनँद करै, बिछुरत ही मरि जाहि ॥ १०० ॥
दादू राम बिसारि करि, जीवैं केहिं आधार ।
ज्यूँ चातृक जल बूँद कौं, करै पुकार पुकार ॥ १०१ ॥
हम जीवैं इहि आसरै, सुमिरण के आधार ।
दादू छिटकै हाथ थैं, तौ हम कौं वार न पार ॥१०२ ॥
(दादू) नाँव निमति* रामहिँ भजै, भगति निमति भजि सोइ।
सेवा निमति साइँ भजै, सदा सजीवनि होइ ॥ १०३ ॥
(दादू) राम रसाइन नित चवै†, हरि है हीरा साथ ।
सो धन मेरे साइयाँ, अलख खजीना‡ हाथ ॥ १०४ ॥
हिरदे राम रहै जा जन के, ता कौं ऊरा§ कौण कहै ।
अठ सिधि नौनिधि ता के आगे, सनमुख सदा रहै ॥१०५॥
बंदित तीनौं लोक बापुरा, कैसैं दरस लहै ।
नाँव निसान सकल जग ऊपरि, दादू देखत है ॥ १०६ ॥
दादू सब जग नीधना, धनवंता नहिँ कोइ ।
सो धनवंता जानिये, (जा के) राम पदारथ होइ ॥१०७॥
संगहिँ लागा सब फिरै, राम नाम के साथ ।
चिंतामणि हिरदे बसै, तौ सकल पदारथ हाथ ॥१०८॥

* निमित्त। † चुवै। ‡ ख़ज़ाना। § ऊरा=वरे, पीछे। एक लिपि मैं "कूरा" है और एक मैं "ऊना"।

दादू आनँद आतमा, अबिनासी के साथ ।
प्राणनाथ हिरदे बसै, तौ सकल पदारथ हाथ ॥ १०९ ॥

(दादू) भावै तहाँ छिपाइये, साच न छाना होइ ।
सेस रसातल गगन ध्रू,* परगट कहिये सोइ ॥ ११० ॥

(दादू) कहँ था नारद मुनि जना, कहाँ भगत प्रहलाद ।
परगट तीनिउँ लोक मैं, सकल पुकारैं साध ॥ १११ ॥

(दादू) कहँ सिव बैठा ध्यान धरि, कहाँ कबीरा नाम ।
सो क्यौं छाना होइगा, जे रे कहैगा राम ॥ ११२ ॥

(दादू) कहाँ लीन सुकदेव था, कहँ पीपा रैदास ।
दादू साचा क्यौं छिपै, सकल लोक परकास ॥११३॥

(दादू) कहँ था गोरख भरथरी, अनंत सिधौं का मंत ।
परगट गोपीचंद है, दत्त कहैं सब संत ॥ ११४ ॥

अगम अगोचर राखिये, करि करि कोटि जतन ।
दादू छाना क्यौं रहै, जिस घटि राम रतन ॥ ११५ ॥

दादू सरग पयाल मैं, साचा लेवै नाँव ।
सकल लोक सिर देखिये, परगट सब ही ठाँव ॥ ११६ ॥

सुमिरन का संसा रह्या, पछितावा मन माहिं ।
दादू मीठा राम रस, सगला पीया नाहिं ॥ ११७ ॥

दादू जैसा नाँव था, तैसा लीया नाहिं ।
हौस रही यहु जीव मैं, पछितावा मन माहिं ॥ ११८ ॥

॥ नाम बिसारने का दंड ॥

दादू सिर करवत† बहै, बिसरै आतम राम ।
माहिं कलेजा काटिये, जीव नहीं बिस्राम ॥ ११९ ॥

---

* ध्रू तारा । † करोत=आरा ।

दादू सिर करवत बहै, राम रिदे थी[*] जाइ ।
माहिँ कलेजा काटिये, काल दसौं दिसि खाइ ॥ १२० ॥

दादू सिर करवत बहै, अंग परस नाहिँ होइ ।
माहिँ कलेजा काटिये, यहु बिथा न जाणै कोइ ॥ १२१ ॥

दादू सिर करवत बहै, नैनहुँ निरखै नाहिँ ।
माहिँ कलेजा काटिये, साल रह्या मन माहिँ ॥ १२२ ॥

जेता पाप सब जग करै, तेता नाँव बिसारैँ होइ ।
दादू राम सँभालिये, तौ एता डारै धोइ ॥ १२३ ॥

(दादू) जब ही राम बिसारिये, तब ही मोटी मार ।
खंड खंड करि नाखिये,[†] बीज पड़ै तेहि बार ॥ १२४ ॥

(दादू) जब ही राम बिसारिये, तब ही झंपै[‡] काल ।
सिर ऊपरि करवत बहै, आइ पड़ै जम जाल ॥ १२५ ॥

(दादू) जब ही राम बिसारिये, तब ही कंध[§] बिनास ।
पग पग परलय पिंड पड़ै, प्राणी जाइ निरास ॥ १२६ ॥

(दादू) जब ही राम बिसारिये, तब ही हाना[||] होइ ।
प्राण पिंड सरबस गया, सुखी न देख्या कोइ ॥ १२७ ॥

॥ नाम रत्न-कोष ॥

साहिब जी के नाँव माँ, बिरहा पीड़ पुकार ।
तालाबेली[¶] रोवणाँ, दादू है दीदार ॥ १२८ ॥

॥ सुमिरन विधि ॥

साहेब जी के नाव माँ, भाव भगति बेसास[**] ।
लै समाधि लागा रहै, दादू साईँ पास ॥ १२९ ॥

---

*से । †डालिये । ‡झपटै । §कंद=बिलाप, शोक । ||हानि, घाटा । ¶तड़प, बेकली । **विश्वास ।

साहेब जी के नाँव माँ, मति बुधि ज्ञान बिचार ।
प्रेम प्रीति इस्नेह सुख, दादू जोति अपार ।। १३० ।।
साहेब जी के नाँव माँ, सभ कुछ भरे भँडार ।
नूर तेज अनंत है, दादू सिरजनहार ।। १३१ ।।
जिस मैं सब कुछ सो लिया, नीरंजन का नाउँ ।
दादू हिरदे राखिये, मैं बलिहारी जाउँ ।। १३२ ।।

इति सुमिरन को अंग समाप्त ।। २ ।।

३—बिरह को अंग

॥ बिरह व्यथा ॥

(दादू) नमो नमो निरंजनं, नमस्कार गुरु देवत: ।
बंदनं सर्व साधवा, प्रणामं पारंगत: ॥ १ ॥
रतिवंती आरति करै, राम सनेही आव ।
दादू अवसर अब मिलै, यहु बिरहिनि का भाव ॥ २ ॥
पीव पुकारै बिरहिनी, निस दिन रहै उदास ।
राम राम दादू कहै, तालाबेली* प्यास ॥ ३ ॥
मन चित चातृक ज्यूँ रटै, पिव पिव लागी प्यास ।
दादू दरसन कारने, पुरवहु मेरी आस ॥ ४ ॥
(दादू) बिरहिनि दुख कासनि† कहै, कासनि देइ सँदेस ।
पंथ निहारत पीव का, बिरहिनि पलटे केस‡ ॥ ५ ॥
(दादू) बिरहिनि दुख कासनि कहै, जानत है जगदीस ।
दादू निस दिन बहि रहै, बिरहा करवत सीस§ ॥ ६ ॥
सबद तुम्हारा ऊजला, चिरिया‖ क्यौं कारी ।
तुही तुही निस दिन करौं, बिरहा की जारी ॥ ७ ॥
बिरहिनि रोवै रात दिन, झूरै मनहीं माहिं ।
दादू औसर चलि गया, प्रीतम पाये नाहिं ॥ ८ ॥
(दादू) बिरहिनि कुरलै कुंज ज्यूँ¶, निस दिन तलफत जाइ ।
राम सनेही कारणै, रोवत रैनि बिहाइ ॥ ९ ॥
पासैं बैठा सब सुनै, हम कौं ज्वाब न देइ ।
दादू तेरे सिर चढ़ै, जीव हमारा लेइ ॥ १० ॥

---

* ब्याकुलता । † किस से । ‡ बाल सपेद हो गये । § बिरह की पीर रात दिन आरा सिर पर चला रही है । ‖ चिड़िया का अभिप्राय "मति" से है । ¶ जैसे कुंज चिड़िया कुरेल करती या चिल्लाती है ।
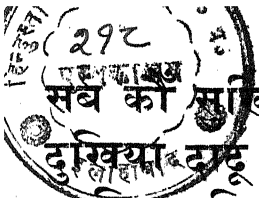
सब कौं सुखिया देखिये, दुखिया नाहीं कोइ ।
दुखिया दादू दास है, ऐन* परस नहिं होइ ॥ ११ ॥
साहिब मुखि बोलै नहीं, सेवक फिरै उदास ।
यहु बेदन† जिय मैं रहै, दुखिया दादू दास ॥ १२ ॥
पिव बिन पल पल जुग भया, कठिन दिवस क्यूँ जाइ ।
दादू दुखिया राम बिन, काल रूप सब खाइ ॥ १३ ॥
दादू इस संसार मैं, मुझ सा दुखी न कोइ ।
पीव मिलन के कारणे, मैं जल भरिया रोइ ॥ १४ ॥
ना वहु मिलै न मैं सुखी, कहु क्यूँ जीवन होइ ।
जिन मुझ कौं घायल किया, मेरी दारू‡ सोइ ॥ १५ ॥
दरसन कारन बिरहिनी, बैरागिन होवै ।
दादू बिरह बियोगिनी, हरि मारग जोवै ॥ १६ ॥
अति गति आतुर मिलन कौं, जैसे जल बिन मीन ।
सो देखै दीदार कौं, दादू आतम लीन ॥ १७ ॥
राम बिछोही बिरहिनी, फिरि मिलन न पावै ।
दादू तलफै मीन ज्यूँ, तुझ दया न आवै ॥ १८ ॥

॥ बिरह लगन ॥

(दादू) जब लग सुति सिमटै नहीं, मन निहचल नहिं होइ ।
तब लग पिव परसै नहीं, बड़ी बिपति यह मोहिं ॥ १९ ॥
ज्यूँ अमली के चित अमल है, सूरे के संग्राम ।
निरधन के चित धन बसै, यौं दादू के राम ॥ २० ॥
ज्यूँ चातक के चित जल बसै, ज्यूँ पानी बिन मीन ।
जैसे चंद चकोर है, ऐसैं (दादू) हरि सौं कीन्ह ॥ २१ ॥

---

* आँख नहीं लगती । † पीड़ा । ‡ दवा ।

ज्यूँ कुंजर के मन बसै, अनलपंखि आकास ।
यूँ दादू का मन राम सौं, यूँ बैरागी बनखँड बास ॥२२॥
भँवरा लुबधी बास का, मोह्या नाद कुरंग ।
यौं दादू का मन राम सौं, (ज्यूँ) दीपक जोति पतंग ॥२३॥
स्रवना राते नाद सौं, नैना राते रूप ।
जिभ्या राती स्वाद सौं, (त्यौं) दादू एक अनूप ॥ २४ ॥
देह पियारी जीव कौं, निस दिन सेवा माहिं ।
दादू जीवन मरण लौं, कब हूँ छाड़ी नाहिं ॥ २५ ॥
देह पियारी जीव कौं, जीव पियारा देह ।
दादू हरि रस पाइये, जे ऐसा होइ सनेह ॥ २६ ॥
दादू हर दम माहिं दिवान*, सेज हमारी पीव है ।
देखौं सो सुबहान†, ये इसक‡ हमारा जीव है ॥ २७ ॥
दादू हर दम माहिं दिवान, कहूँ दरूनै§ दरद सौं ।
दरद दरूनै जाइ, जब देखौं दीदार कौं ॥ २८ ॥

॥ बिरह बिनती ॥

दादू दरूनै दरदवंद, यहु दिल दरद न जाइ ।
हम दुखिया दीदार के, मिहरबान दिखलाइ ॥ २९ ॥
मूए पीड़ पुकारताँ, बैद न मिलिया आइ ।
दादू थोड़ी बात थी, जे टुक दरस दिखाइ ॥ ३० ॥
(दादू) मैं भिष्यारी मंगिता, दरसन देहु दयाल ।
तुम दाता दुखभंजिता, मेरी करहु सँभाल ॥ ३१ ॥

---

* अंतर के दर्द से बावला हो रहा हूँ । † ख़ुदा की पाक ज़ात । ‡ प्रेम । §अंतरी ।

॥ छिन बिछोह ॥

क्या जीये मैं जीवणाँ, बिन दरसन बेहाल ।
दादू सोई जीवणाँ, परगट परसन लाल* ॥ ३२ ॥
येहि जग जीवन सो भला, जब लग हिरदे राम ।
राम बिना जे जीवना, सो दादू बेकाम ॥ ३३ ॥
दादू कहु दीदार की, साईं सेती बात ।
कब हरि दरसन देहुगे, यहु अवसर चलि जात ॥ ३४ ॥
बिथा तुम्हारे दरस की, मोहिं ब्यापै दिन रात ।
दुखी न कीजे दीन कौं, दरसन दीजै तात ॥ ३५ ॥
(दादू) इस हियड़े ये साल, पिव बिन क्यौंहि न जाइसी ।
जब देखौं मेरा लाल, तब रोम रोम सुख आइसी ॥३६॥
तूँ है तैसा परकास करि, अपना आप दिखाइ ।
दादू कौं दीदार दे, बलि जाऊँ बिलँब न लाइ ॥ ३७ ॥
(दादू) पिव जी देखै मुज्झ कौं, हौं भी देखौं पीव ।
हौं देखौं देखत मिलै, तौ सुख पावै जीव ॥ ३८ ॥
(दादू कहै) तन मन तुम परि वारणै†, करि दीजै कै बार ।
जे ऐसी बिधि पाइये, तौ लीजै सिरजनहार ॥ ३९ ॥
दीन दुनी सदकै† करौं, टुक देखण दे दीदार ।
तन मन भी छिन छिन करौं, भिस्त दोजग‡ भी वार ॥४०॥
(दादू) हम दुखिया दीदार के, तूँ दिल थैं दूरि न होइ ।
भावै हम कौं जालि दे, हूणाँ है सो होइ ॥ ४१ ॥
(दादू कहै) जो कुछ दिया हमकौं, सो सब तुमहीं लेहु ।
तुम बिन मन मानै नहीं, दरस आपणा देहु ॥ ४२ ॥

---

* जीवन फल यही है कि प्रीतम से मिलाप हो [त्रिकुटी का गुरु स्वरूप लाल रंग का है]। †न्योछावर । ‡स्वर्ग और नर्क ।

दूजा कुछ माँगौं नहीं, हम कौं दे दीदार ।
तूँ है तब लग एकटग*, दादू के दिलदार ॥ ४३ ॥
(दादू कहै) तूँ है तैसी भगति दे, तूँ है तैसा प्रेम ।
तूँ है तैसी सुरति दे, तूँ है तैसा खेम† ॥ ४४ ॥
(दादू कहै) सदिकै‡ करौं सरीर कौं, बेर बेर बहु भंत§ ।
भाव भगति हित प्रेम ल्यौ, खरा पियारा कंत ॥ ४५ ॥
दादू दरसन की रली||, हम कौं बहुत अपार ।
क्या जाणौं कब हीं मिलै, मेरा प्राण अधार ॥ ४६ ॥
दादू कारण कंत के, खरा दूखी बेहाल ।
मीरा¶ मेरा मिहर करि, दे दरसन दरहाल ॥ ४७ ॥
तालाबेली प्यास बिन, क्यौं रस पीया जाइ ।
बिरहा दरसन दरद सौं, हम कौं देहु खुदाय** ॥ ४८ ॥
तालाबेली पीड़ सौं, बिरहा प्रेम पियास ।
दरसन सेती दीजिये, बिलसै दादू दास ॥ ४९ ॥
(दादू कहै) हम कौं अपणाँ आप दे, इस्क मुहब्बत दर्द ।
सेज सुहाग सुख प्रेम रस, मिलि खेलैं लापर्द†† ॥ ५० ॥
प्रेम भगति माता रहै, तालाबेली अंग ।
सदा सपीड़ा‡‡ मन रहै, राम रमै उन संग ॥ ५१ ॥
प्रेम मगन रस पाइये, भगति हेत रुचि भाव ।
बिरह बिसास§§ निज नाँव सौं, देव दया करि आव ॥ ५२ ॥
गई दसा सब बाहुड़ै||||, जे तुम प्रगटहु आइ ।
दादू ऊजड़ सब बसै, दरसन देहु दिखाइ ॥ ५३ ॥

---

* एकटक, निरंतर । † कुशल । ‡ निछावर । § भाँति से, रीति से । || लालसा, चाह । ¶ मालिक । ** खुदा, ईश्वर । †† बेपर्दे । ‡‡ दर्द से भरा । §§ विश्वास, प्रतीत । |||| पलट आवै ।

हम कसिहैं[*] क्या होइगा, बिड़द[†] तुम्हारा जाइ ।
पीछैं हीं पछिताहुगे, ता थैं प्रगटहु आइ ॥ ५४ ॥
मीयाँ मैंडा आव घर, बाँढी वत्ताँ लोइ ।
दुखडे मुँहिडे गये, मराँ बिछोहै रोइ ॥ ५५[‡] ॥
है सो निधि नहिं पाइये, नहीं सो है भरपूर[§] ।
दादू मन मानै नहीं, ता थैं मरिये झूरि ॥ ५६ ॥
जिस घट इस्क अलाह का, तिस घट लोहि[‖] न मास ।
दादू जियरे जक[¶] नहीं, सिसकै साँसै साँस ॥ ५७ ॥
रत्ती रब[**] ना बीसरै, मरै सँभालि सँभालि ।
दादू सुहदा थीर है, आसिक अल्लह नालि[††] ॥ ५८ ॥

॥ कसौटी ॥

दादू आसिक रब्ब दा, सिर भी डेवै लाहि ।
अल्लह कारणि आप कौं, साँडे अंदरि भाहि ॥ ५९[‡‡] ॥
भोरे भोरे तन करै, वंडै करि कुरबाण ।
मीठा कौड़ा ना लगै, दादू तौहू साण ॥ ६०[§§] ॥
जब लग सीस न सौंपिये, तब लग इसक न होइ ।
आसिक मरणै ना डरै, पिया पियाला सोइ ॥ ६१ ॥

---

*कसने या साँसत करने से । †प्रण । ‡हे मेरे मियाँ (मालिक) मेरे घर आव, अर्थात मेरे मन में बास कर, मैं दुहागिन लोक में फिरती हूँ, मेरे दुख बढ़ गये हैं और तेरे बियोग से मैं मरती हूँ—पं० चंद्रिका प्रसाद ।

§ " है " अर्थात " सत्य " जो अविनाशी है—" नहीं " अर्थात "असत्य" वा " माया " जो नाशमान है । ‖लोहू । ¶धोखा, डर । **साहिब । ††साथ ।

‡‡मालिक का प्रेमी अपने सिर (आपा) को उतार कर उसके सन्मुख धरदे और प्रीतम के लिये अपने (आपा) को [बिरह की] आग में जला दे ।

§§अपने तन की प्रीतम के आगे बोटी बोटी कर के कुरबानी करै और बाँट दे फिर भी वह मधुर प्रीतम कड़वा न लगै—तब वह तुझे मिलै [साण= साथ] ।

तैं डीनौं ई सभु, जे डीये दीदार के ।
उंजे लहदी अभु, पसाई दो पाण के ॥ ६२* ॥
बिछ्नौं सभौ डूरि करि, अंदर बिया न पाइ ।
दादू रता हिक दा, मन मोहब्बत लाइ ॥ ६३† ॥
इसक मोहब्बत मस्त मन, तालिब दर दीदार ।
दोस्त दिल हरदम हजूर, यादगार हुसियार ॥ ६४ ॥
(दादू) आसिक एक अलाह के, फारिग‡ दुनिया दीन ।
तारिक§ इस औजूद थैं, दादू पाक अकीन ॥ ६५ ॥
आशिक़ाँ रह क़ब्ज़ कर्दः, दिल व जाँ रफ़्तंद ।
अलह आले नूर दीदम, दिले दादू बंद ॥ ६६|| ॥
दादू इसक अवाज सौं, ऐसैं कहै न कोइ ।
दर्द मुहब्बत पाइये, साहिब हासिल होइ ॥ ६७¶ ॥
कहँ आसिक अल्लाह के, मारे अपने हाथ ।
कहँ आलम औजूद सौं, कहै जबाँ की बात** ॥ ६८ ॥

---

*जो तुम अपना दीदार दोगे तो सब कुछ दे चुके—अपना रूप दिखाओ जिस से सब लालसा पूरी हो जाय ।

†बीच के सब [परदे] दूर कर, अंतर में बिया=दूसरे को धसने न दे, दादू दिली इश्क़ के साथ एक ही से राता माता है ।

‡छुट्टी पाये हुए । § छोड़े हुए, बिलग ।

||इस साखी का सम्बन्ध पहली साखी नं० ६५ से है यानी [वह प्रेम मार्ग जिसमें लोक परलोक दोनों की परवाह नहीं रहती और आपा बिसर जाता है] ऐसे मार्ग को जिन गहिरे प्रेमियों ने गहा और उनके मन और सुरत उस में धसे तो मालिक का प्रचंड प्रकाश और आला नूर उन को दरसता है जिससे वह फिर नहीं हट सकते ।

¶प्रेम प्रेम मुख (आवाज़) से कहने से काज नहीं सरता, जब दर्द अर्थात् तपन रूपी बिरह से प्रेम प्राप्त हो तब मालिक से मेला हो [देखो आगे की साखी]।

**इश्क़ मजाज़ी और इश्क़ हक़ीक़ी अर्थात् वाच्य और लक्ष प्रेम में ज़मीन आसमान का फ़र्क़ है ।

दादू इसक अलाह का, जे कबहूँ प्रगटै आइ ।
(तौ) तन मन दिल अरवाह* का, सब पड़दा जलि जाइ ॥६९॥
अरवाह सिजदा कुनंद, वजूद रा चि कार ।
दादू नूर दादनी, आशिकाँ दीदार ॥ ७०† ॥
बिरह अगिन तन जालिये, ज्ञान अगिनि दौं लाइ ।
दादू नख सिख परजलै‡, तब राम बुझावै आइ ॥७१॥
बिरह अगिनि मैं जालिबा, दरसन के ताईं ।
दादू आतुर रोइबा, दूजा कुछ नाहीं ॥ ७२ ॥
साहिब सौं कुछ बल नहीं, जिनि§ हठ साधै कोइ ।
दादू पीड़ पुकारिये, रोताँ होइ सो होइ ॥ ७३ ॥
ज्ञान ध्यान सब छाड़ि दे, जप तप साधन जोग ।
दादू बिरहा ले रहै, छाड़ि सकल रस भोग ॥ ७४ ॥
जहँ बिरहा तहँ और क्या, सुधि बुधि नाठे‖ ज्ञान ।
लोक वेद मारग तजे, दादू एकै ध्यान ॥ ७५ ॥
बिरही जन जीवै नहीं, जे कोटि कहैं समझाइ ।
दादू गहिला¶ ह्वै रहै, कै तलफि तलफि मरि जाइ ॥७६॥
दादू तलफै पीड़ सौं, बिरही जन तेरा ।
ससकै साईं कारणे, मिलि साहिब मेरा ॥ ७७ ॥
पड़या पुकारे पीड़ सौं, दादू बिरही जन ।
राम सनेही चित बसै, और न भावै मन ॥ ७८ ॥

---

*अरवाह अरबी भाषा में रूह का बहुबचन है अर्थात जीवात्मा या सुरति ; सुरति पर तन पिंडी मन और निज मन के ख़ोल चढ़े हैं।

†दंडवत चेतन्य सुरति से करना चाहिये न कि मायक तन से, सो भक्तों की अंतर दृष्टि को प्रकाश देने वाला (नूर दादनी) भगवंत का दर्शन (दीदार) है-[इस साखी का अर्थ पं० चंद्रिका प्रसाद का दिया हुआ ठीक नहीं जान पड़ता]

‡ भभक कर जलै । § मत । ‖ नष्ट हो गये । ¶ मूर्ख, बावला ।

जिस घटि बिरहा राम का, उस नींद न आवै ।
दादू तलफै बिरहिनी, उस पीड़ जगावै ॥ ७९ ॥
सारा सूरा नींद भरि, सब कोई सोवै ।
दादू घायल दरदवँद, जागै अरु रोवै ॥ ८० ॥
पीड़ पुराणी ना पड़ै, जे अंतर बेध्या होइ ।
दादू जीवन मरन लौं, पड़्या पुकारै सोइ ॥ ८१ ॥
दादू बिरही पीड़ सौं, पड़्या पुकारै मीत ।
राम बिना जीवै नहीं, पीव मिलन की चीत* ॥ ८२ ॥
जे कबहूँ बिरहिनि मरै, तौ सुरति बिरहिनी होइ ।
दादू पिव पिव जीवताँ, मुवा भी टेरै सोइ ॥ ८३ ॥
(दादू) अपनी पीड़ पुकारिये, पीड़ पराई नाहिं ।
पीड़ पुकारै सो भला, जा के करक कलेजे माहिं ॥८४॥
ज्यूँ जीवत मिरतक कारणै, गति करि नाखै† आप ।
यौं दादू कारणि राम के, बिरही करै बिलाप ॥८५॥
तलफि तलफि बिरहिनि मरै, करि करि बहुत बिलाप ।
बिरह अगिनि मैं जलि गई, पीव न पूछै बात ॥ ८६ ॥
(दादू) कहाँ जावँ कौण पै पुकारौं, पीव न पूछै बात ।
पिव बिन चैन न आवई, क्यौं भरौं‡ दिन रात ॥ ८७ ॥
(दादू) बिरह बियोग न सहि सकौं, मो पै सह्या न जाइ ।
कोई कहौ मेरे पीव कौं, दरस दिखावै आइ ॥ ८८ ॥
(दादू) बिरह बियोग न सहि सकौं, निस दिन सालै मोहिं ।
कोई कहौ मेरे पीव कौं, कब मुख देखौं तोहिं ॥ ८९ ॥

* चिंता, फ़िकर । † डालै । ‡ कष्ट से बिताना या पूरा करना ।

(दादू) बिरह बियोग न सहि सकौं, तन मन धरै न धीर।
कोई कहै मेरे पीव कौं, मेटै मेरी पीर ॥ ९० ॥
(दादू कहै) साध दुखी संसार मैं, तुम बिन रह्या न जाइ।
औरौं के आनंद है, सुख सौं रैनि बिहाइ* ॥ ९१ ॥
दादू लाइक हम नहीं, हरि के दरसन जोग।
बिन देखे मरि जाहिंगे, पिव के बिरह बियोग ॥ ९२ ॥
दादू सुख साईं सौं, और सबै ही दुक्ख।
देखौं दरसन पीव का, तिस ही लागै सुक्ख ॥ ९३ ॥
चंदन सीतल चंद्रमा, जल सीतल सब कोइ।
दादू बिरही राम का, इन सौं कदे† न होइ ॥ ९४ ॥
दादू घायल दरदवंद, अंतरि करै पुकार।
साईं सुणै सब लोक मैं, दादू यहु अधिकार ॥ ९५ ॥
दादू जागै जगत गुर, जग सगला सोवै।
बिरही जागै पीड़ सौं, जे घाइल होवै ॥ ९६ ॥
बिरह अगिन का दाग दे, जीवत मिरतक गोर‡।
दादू पहिली घर किया, आदि हमारी ठौर ॥ ९७ ॥
(दादू) देखे का अचरज नहीं, अनदेखे का होइ।
देखे ऊपर दिल नहीं, अनदेखे कौं रोइ ॥ ९८ ॥
पहिली आगम बिरह का, पीछैं प्रीति प्रकास।
प्रेम मगन लैलीन मन, तहाँ मिलन की आस ॥ ९९ ॥
बिरह बियोगी मन भला, साईं का बैराग।
सहज सँतोषी पाइये, दादू मोटे§ भाग ॥ १०० ॥

---

* बीतती है। † कधी, कभी। ‡ क़बर। § बड़े।

(दादू) तृषा बिना तन प्रीति न उपजै, सीतल निकट जल धरिया ।
जनम लगै जिव पुणग* न पीवै, निर्मल दह दिसि भरिया१०१
(दादू) षुध्या† बिना तन प्रीति न उपजै, बहु बिधि भोजन नेरा‡ ।
जनम लगै जिव रती न चाखै, पाक पूरि बहुतेरा ॥१०२॥
(दादू) तपति§ बिना तन प्रीति न उपजै, संगहिं सीतल छाया ।
जनम लगै जिव जाणैं नाहीं, तरवर त्रिभुवन राया १०३
(दादू) चोट बिना तन प्रीति न उपजै, औषद‖ अंग रहंत ।
जनम लगै जिव पलक न परसै, बूटी अमर अनंत ॥१०४
(दादू) चोट न लागी बिरह की, पीड़ न उपजी आइ ।
जागि न रोवै धाह दे,¶ सोवत गई बिहाइ ॥ १०५ ॥
दादू पीड़ न ऊपजी, ना हम करी पुकार ।
ता थैं साहिब ना मिल्या, दादू बीती बार** ॥ १०६ ॥
अंदर पीड़ न ऊभरै, बाहर करै पुकार ।
दादू सो क्यौं करि लहै, साहिब का दीदार ॥ १०७ ॥
मन हीं माहैं झूरणाँ, रोवै मन हीं माहिं ।
मन हीं माहैं धाह†† दे, दादू बाहर नाहिं ॥ १०८ ॥
बिन हीं नैनौं रोवणाँ, बिन मुख पीड़ पुकार ।
बिन हीं हाथौं पीटना, दादू बारंबार ॥ १०९ ॥
प्रीति न उपजै बिरह बिन, प्रेम भगति क्यौं होइ ।
सब झूठे दादू भाव बिन, कोटि करै जे कोइ ॥ ११० ॥

---

* पुनिक, कदापि । † क्षुधा, भूख । ‡ पास । § तपन । ‖ दवा । ¶ धाड़ मारकर । ** समय । †† कराह ।

(दादू) बातौं बिरह न ऊपजै, बातौं प्रीति न होइ ।
बातौं प्रेम न पाइये, जिन रे पतीजे कोइ ॥ १११ ॥
दादू तौ पिव पाइये, कसमल[*] है सो जाइ ।
निरमल मन करि आरसी, मूरति माहिँ[†] लखाइ ॥११२॥
दादू तौ पिव पाइये, करि मंझे[†] बीलाप ।
सुनि है कबहूँ चित्त धरि, परघट होवै आप ॥ ११३ ॥
दादू तौ पिव पाइये, करि साईं की सेव ।
काया माहिँ लखायसी, घट ही भीतर देव ॥ ११४ ॥
दादू तौ पिव पाइये, भावै प्रीति लगाइ ।
हेजैँ[‡] हरी बुलाइये, मोहन मंदिर आइ ॥ ११५ ॥
(दादू) जा के जैसी पीड़ है, सो तैसी करै पुकार ।
को सूषिम[§] को सहज मैँ, को मिरतक तेहि बार ॥ ११६ ॥
दरदहि बूझै दरदवंद, जा के दिल होवै ।
क्या जाणै दादू दरद की, नींद भरि सोवै ॥ ११७ ॥
दादू अच्छर प्रेम का, कोई पढ़ेगा एक ।
दादू पुस्तक प्रेम बिन, केते पढ़ैँ अनेक ॥ ११८ ॥
दादू पाती प्रेम की, बिरला बाँचै कोइ ।
बेद पुरान पुस्तक पढ़ैँ, प्रेम बिना क्या होइ ॥ ११९ ॥
(दादू) कर बिन सर बिन कमान बिन, मारै खैँचि कसीस[‖]।
लागी चोट सरीर मैँ, नखसिख सालै सीस ॥ १२० ॥
(दादू) भलका मारै भेद सौँ, सालै मंझि पराण ।
मारणहारा जानि है, कै जेहि लागै बाण ॥ १२१ ॥

---

*मैल । † घट मैँ । ‡ ऐसी उतंग प्रीत से जैसी कि गाय को बछड़े के साथ होती है कि उसके सन्मुख आतेही पनिहा जाती है यानी थन मैँ दूध भर आता है । §सूक्ष्म । ‖कसकर, तानकर ।

(दादू) सो सर हम कौं मारिले, जेहि सर मिलिये जाइ ।
निस दिन मारग देखिये, कबहूँ लागै आइ ॥ १२२ ॥
जेहि लागी सो जागि है, बेध्या करै पुकार ।
दादू पिंजर पीड़ है, सालै बारम्बार ॥ १२३ ॥
बिरही ससकै* पीड़ सौं, ज्यौं घाइल रन माहिं ।
प्रीतम मारे बाण भरि, दादू जीवै नाहिं ॥ १२४ ॥
(दादू) बिरह जगावै दरद कौं, दरद जगावै जीव ।
जीव जगावै सुरति कौं, पंच पुकारै पीव ॥ १२५ ॥
दादू मारै प्रेम सौं, बेधै साध सुजाण ।
मारणहारे कौं मिलै, दादू बिरही बाण ॥ १२६ ॥
सहजैं मनसा मन सधै, सहजैं पवना सोइ ।
सहजैं पंचौं थिरि भये, जे चोट बिरह की होइ ॥ १२७ ॥
मारणहारा रहि गया, जेहि लागी सो नाहिं ।
कबहूँ सो दिन होइगा, यहु मेरे मन माहिं ॥ १२८ ॥
प्रीतम मारै प्रेम सौं, तिन कौं क्या मारै ।
दादू जारे बिरह के, तिन कौं क्या जारै ॥ १२९ ॥
दादू पड़दा पलक का, एता अंतर होइ ।
दादू बिरही राम बिन, क्यौं करि जीवै सोइ ॥ १३० ॥
काया माहैं क्यौं रह्या, बिन देखे दीदार
दादू बिरही बावरा, मरै नहीं तेहि बार ॥ १३१ ॥
बिन देखे जीवै नहीं, बिरहा का सहिनाण† ।
दादू जीवै जब लगैं, तब लग बिरह न जाण ॥ १३२ ॥
रोम रोम रस प्यास है, दादू करहि पुकार ।
राम घटा दल उमँगि करि, बरसहु सिरजनहार ॥१३३॥

---

*सिसकै=साँस भरै । †चिन्ह, निशान ।

प्रीत जो मेरे पीव की, पैठी पिंजर माहिँ ।
रोम रोम पिउ पिउ करै, दादू दूसर नाहिँ ॥ १३४ ॥
सब घट स्रवना सुरति सौँ, सब घट रसना बैन ।
सब घट नैना ह्वै रहे, दादू बिरहा ऐन ॥ १३५ ॥
रात दिवस का रोवणा, पहर पलक का नाहिँ ।
रोवत रोवत मिलि गया, दादू साहिब माहिँ ॥ १३६ ॥
(दादू) नैन हमारे बावरे, रोवैँ नहिँ दिन राति ।
साईं संग न जागहीं, पिव क्यौँ पूछै बात ॥ १३७ ॥
नैनहुँ नीर न आइया, क्या जानैँ ये रोइ ।
तैसे हीं करि रोइये, साहिब नैनहुँ जोइ ॥ १३८ ॥
(दादू) नैन हमारे ढीठ हैँ, नाले नीर न जाहिँ ।
सूके सराँ सहेत वै, करँक भये गलि माहिँ ॥ १३९* ॥
(दादू) बिरह प्रेम की लहरि मैँ, यह मन पंगुल होइ ।
राम नाम मैँ गलि गया, बूझै बिरला कोइ ॥ १४० ॥
(दादू) बिरह अगिनि मैँ जलि गये, मन के मैल बिकार ।
दादू बिरही पीउ का, देखैगा दीदार ॥ १४१ ॥
बिरह अगिनि मैँ जलि गये, मन के बिषै बिकार ।
ता थैँ पंगुल ह्वै रह्या, दादू दर दीदार ॥ १४२ ॥

---

*कहावत है कि असह दुख मेँ आँसू भी सूख जाते हैँ इसी मसल को दादू साहिब अलंकार मेँ फ़र्माते हैँ कि जैसे तलैया (सरा) के जीव मछली कछुए मेँढक आदि ऐसे निडर (ढीठ) या बेपरवाह होते हैँ कि तलैया से पानी के साथ बह कर नाले मेँ अपनी रक्षा नहीँ करते बल्कि तलैया ही मेँ पड़े रहते हैँ और उसी के साथ (सहित) सूख कर चमड़ा (करंक) बन जाते हैँ ऐसी ही दशा हमारी आँखोँ की है कि आँसू की धारा को त्याग कर जहाँ की तहाँ सूख या बैठ गईँ । यही भावार्थ और शब्दार्थ १३९ नं० की साखी का है न कि जैसा पं० चंद्रिका प्रसाद ने लिखा है ।

(दादू) जब बिरहा आया दरद सौं, तब मीठा लागा राम।
काया लागी काल ह्वै, कड़वे लागे काम ॥ १४३ ॥
जब राम अकेला रहि गया, तन मन गया बिलाइ ।
दादू बिरही तब सुखी, जब दरस परस मिलि जाइ ॥१४४॥
जे हम छाड़ैं राम कौं, तौ राम न छाड़ै ।
दादू अमली अमल थैं, मन क्यूँ करि काढ़ै ॥ १४५ ॥
बिरहा पारस जब मिलै, तब बिरहिनि बिरहा होइ ।
दादू परसै बिरहिनी, पिउ पिउ टेरै सोइ ॥ १४६ ॥
आसिक मासुक ह्वै गया, इसक कहावै सोइ ।
दादू उस मासूक का, अल्लहि आसिक होइ ॥ १४७ ॥
राम बिरहिनी ह्वै गया, बिरहिनि ह्वै गई राम ।
दादू बिरहा बापुरा, ऐसे करि गया काम ॥ १४८ ॥
बिरह बिचारा ले गया, दादू हम कौं आइ ।
जहँ अगम अगोचर राम था, तहँ बिरह बिना को जाइ ॥१४९
बिरहा बपुरा आइ करि, सोवत जगावै जीव ।
दादू अंग लगाइ करि, ले पहुँचावै पीव ॥ १५० ॥
बिरहा मेरा मीत है, बिरहा बैरी नाहिं ।
बिरहा को बैरी कहै, सो दादू किस माहिं ॥ १५१ ॥
(दादू) इसक अलह की जात है, इसक अलह का अंग ।
इसक अलह औजूद है, इसक अलह का रंग ॥ १५२ ॥
(दादू) प्रीतम के पग परसिये, मुझ देखण का चाव ।
तहँ ले सीस नवाइये, जहाँ धरे थे पाँव ॥ १५३ ॥
बाट बिरह की सोधि करि, पंथ प्रेम का लेहु ।
लै के मारग जाइये, दूसर पाँव न देहु ॥ १५४ ॥

बिरहा बेगा भगती सहज मैं, आगे पीछे जाइ ।
थोड़े माहैं बहुत है, दादू रहु ल्यौ लाइ ॥ १५५ ॥
बिरहा बेगा ले मिलै, तालाबेली पीर ।
दादू मन घाइल भया, सालै सकल सरीर ॥ १५६ ॥

॥ बिरह बिनती ॥

आज्ञा अपरंपार की, बसि अंबर भरतार ।
हरे पटम्बर पहिरि करि, धरती करै सिंगार ॥ १५७ ॥
बसुधा सब फूलै फलै, पिरथी अनँत अपार ।
गगन गरिज जल थल भरै, दादू जैजैकार ॥ १५८ ॥
काला मुँह करि काल का, साईं सदा सुकाल ।
मेघ तुम्हारे घरि घणाँ, बरसहु दीनदयाल ॥ १५९ ॥

॥ इति बिरह को अंग समाप्त ॥ ३ ॥

[साखी १५७-१५६] आँधी नामक गाँव मैँ दादू साहिब चौमासे के ऋतु मैँ रहे थे वहाँ बर्षा न होने से लोगोँ की प्रार्थना पर यह तीनोँ साखियाँ बना कर बिन्ती की कि जिस पर बरषा हुई और अकाल जाता रहा ।

४—परचा को अंग

(दादू) नमो नमो निरंजनं, नमस्कार गुरु देवतः ।
बंदनं सर्ब साधवा, प्रणामं पारंगतः ॥ १ ॥
(दादू) निरंतर पिउ पाइया, तहँ पंखी उनमन जाइ ।
सप्तौं मंडल भेदिया, अष्टैं* रह्या समाइ ॥ २ ॥
(दादू) निरंतर पिउ पाइया, जहँ निगम न पहुँचै बेद ।
तेज सरूपी पिउ बसै, कोइ बिरला जानै भेद ॥ ३ ॥
(दादू) निरंतर पिउ पाइया, तीन लोक भरपूरि ।
सब सेजौं साईं बसै, लोग बतावैं दूरि ॥ ४ ॥
(दादू) निरंतर पिउ पाइया, जहँ आनँद बारह मास ।
हंस सौं परम हंस खेलै, तहँ सेवग स्वामी पास ॥ ५ ॥
(दादू) रँग भरि खेलौं पिउ सौं, तहँ बाजै बेन रसाल ।
अकल पाट परि बैठा स्वामी, प्रेम पिलावै लाल ॥ ६ ॥
(दादू) रँग भरि खेलौं पिउ सैं, सेती दीनदयाल ।
निसु बासर नहिं तहँ बसै, मानसरोवर पाल ॥ ७ ॥
(दादू) रँग भरि खेलैं पीउ सौं, तहँ कबहुँ न होय बियोग ।
आदि पुरुस अंतरि मिल्या, कुछ पूरबले संजोग ॥ ८ ॥
(दादू) रँग भरि खेलैं पीउ सौं, तहँ बारह मास बसंत ।
सेवग सदा अनंद है, जुग जुग देखौं कंत ॥ ९ ॥
(दादू) काया अंतर पाइया, त्रिकुटी के रे तीर ।
सहजैं आप लखाइया, ब्यापा सकल सरीर ॥ १० ॥
(दादू) काया अंतर पाइया, निरंतर निरधार ।
सहजैं आप लखाइया, ऐसा समरथ सार ॥ ११ ॥

---

*सप्त लोक के परे ब्रह्म का आठवाँ मंडल है ।

(दादू) काया अंतर पाइया, अनहद बेन बजाइ।
सहजैं आप लखाइया, सुन्न मँडल मैं जाइ ॥ १२ ॥

(दादू) काया अंतर पाइया, सब देवन का देव।
सहजैं आप लखाइया, ऐसा अलख अभेव ॥ १३ ॥

(दादू) भँवर कँवल रस बेधिया, सुख सरवर रस पीव।
तहँ हंसा मोती चुणैं, पिउ देखे सुख जीव ॥ १४ ॥

(दादू) भँवर कँवल रस बेधिया, गहे चरण कर हेत।
पिउ जी परसत ही भया, रोम रोम सब सैत ॥ १५ ॥

(दादू) भँवर कँवल रस बेधिया, अनत न भरमै जाइ।
तहाँ बास बिलंबिया, मगन भया रस खाइ ॥ १६ ॥

(दादू) भँवर कँवल रस बेधिया, गही जो पिउ की ओट।
तहाँ दिल भँवरा रहै, कौण करै सर चोट ॥ १७ ॥

॥ जिज्ञासा ॥

(दादू) खोजि तहाँ पिउ पाइये, सबद उपन्नै* पास।
तहाँ एक एकांत है, तहाँ जोति परकास ॥ १८ ॥

(दादू) खोजि तहाँ पिउ पाइये, जहँ चंद न ऊगै सूर।
निरंतर निरधार है, तेज रह्या भरपूर ॥ १९ ॥

(दादू) खोजि तहाँ पिउ पाइये, जहँ बिन जिभ्या गुण गाइ।
तहँ आदि पुरस अलेख है, सहजैं रह्या समाइ ॥ २० ॥

(दादू) खोजि तहाँ पिउ पाइये, जहँ अजरा अमर उमंग।
जरा मरण भौ भाजसी, राखै अपणै संग ॥ २१ ॥

---

*उत्पन्न होता है।

दादू गाफिल छो वतै, मंझे रब्ब निहार ।
मंझेई पिउ पाण जौ, मंझेई बीचार ॥ २२* ॥
दादू गाफिल छो वतै, आहै मंझि अलाह ।
पिरी पाण जौ पाण सैँ, लहै सभोई साव† ॥ २३ ॥
दादू गाफिल छो वतै, आहे मंझि मुकाम ।
दरगह मैँ दीवाण तत, पसे न बैठौ पाण‡ ॥ २४ ॥
दादू गाफिल छो वतै, अंदर पिरी§ पस|| ।
तखत रबाणी बीच मैँ, पेरे तिन्हीं वस¶ ॥ २५ ॥
हरि चिंतामणि चिंतताँ, चिंता चित की जाइ** ।
चिंतामणि चित मैँ मिल्या, तहँ दादू रह्या लुभाइ†† ॥ २६॥
अपने नैनहुं आप कौँ, जब आतम देखै ।
तहँ दादू परआत्मा, ताही कूँ पेखै ॥ २७ ॥

॥ नाद ॥

(दादू) बिन रसना जहँ बोलिये, तहँ अंतरजामी आप ।
बिन स्रवनहुं साईं सुनै, जे कुछ कीजे जाप ॥ २८ ॥
ज्ञान लहर जहँ थैँ उठै, बाणी का परकास ।
अनभै जहँ थैँ ऊपजै, सबदैँ किया निवास ॥ २९ ॥
सो घर सदा बिचार का, तहाँ निरंजन वास ।
तहँ तूँ दादू खोजि ले, ब्रह्म जीव के पास ॥ ३० ॥

---

*ग़ाफ़िल इधर उधर क्या फिरता है अपने अंतरही मैँ प्रीतम को देख, तेरा प्रीतम तेरे घट मैँ आप बिराजता है वहीँ उस को पहिचान। †प्रीतम अपने ही आप सब स्वाद (साव) ले रहा है । ‡तेरे घट ही (दरगह) मैँ वह सार वस्तु अर्थात भगवंत आप बिराजमान है पर तुझे नहीँ दीखता । §प्रीतम । ||देख । ¶ भगवंत का सिंहासन तेरे घट मैँ है तिन्हीँ के चरनोँ मैँ बासाकर । "पेरे" का अर्थ पं० चन्द्रिका प्रसाद ने "समीप" लिखा है परंतु असल मैँ "पैर" या "चरन" है । **हरि चिंतामणि का चिंतवन करने से चित्त की सकल चिंता जाती रहती है । ††एक लिपि मैँ "लुभाइ" की जगह "समाइ" है ।

जहँ तन मन का मूल है, उपजै ओअंकार ।
अनहद सेझा[*] सबद का, आतम करै बिचार ॥ ३१ ॥
भाव भगति लै ऊपजै, सो ठाहर निज सार ।
तहँ दादू निधि पाइये, निरंतर निरधार ॥ ३२ ॥
एक ठौर सूझै सदा, निकट निरंतर ठाँउ ।
तहाँ निरंतर पूरि ले, अजरावर[†] तेहि नाँउ ॥ ३३ ॥
साधू जन क्रीला[‡] करैं, सदा सुखी तेहि गाँव ।
चलु दादू उस ठौर की, मैं बलिहारी जाँव ॥ ३४ ॥
दादू पस पिरनि खे, वेही मंझि कलूब ।
बैठो आहै विच्च मैं, पाण जो महबूब ॥ ३५[§] ॥
नैनहुँ वाला निरखि करि, दादू घालै हाथ ।
तब हौं पावै रामधन, निकट निरंजन नाथ ॥ ३६ ॥
नैनहुँ बिन सूझै नहीं, भूला कतहूँ जाइ ।
दादू धन पावै नहीं, आया मूल गँवाइ ॥ ३७ ॥
जहँ आतम तहँ राम है, सकल रह्या भरपूर ।
अंतरगति ल्यौ लाइ रहु, दादू सेवग सूर ॥ ३८ ॥

॥ अंतर दृष्टि ॥

पहली लोचन दीजिये, पीछै ब्रह्म दिखाइ ।
दादू सूझै सार सब, सुख मैं रहै समाइ ॥ ३९ ॥
आँधो[‖] के आनंद हुआ, नैनहुँ सूझन लाग ।
दरसन देखै पीव का, दादू मोटे भाग ॥ ४० ॥

---

*सोत, निकास। †जिसको बुढ़ापा न आवे, अमर। ‡बिलास। §पं० चंद्रिका प्रसाद ने इस साखी के अर्थ ठीक नहीं किये हैं—"पिरी" वा "पिरनि" का अर्थ "प्रीतम" है, न कि "परमेश्वर" और "वेही" के अर्थ "बैठ कर" हैं जिसे पं० चं० प्र० ने "पेही = पीव" लिखा है। सारांश इस साखी का यह है कि अपने घट में बैठ कर अर्थात ध्यान धर कर अपने प्रीतम को देख (पस), वह आप रूप वहाँ बिराजमान है। ‖अंधा।

(दादू) मिहीं महल बारीक है, गाँउ न ठाँउ न नाँउ ।
ता सौं मन लागा रहै, मैं बलिहारी जाँउ ॥ ४१ ॥
(दादू) खेल्या चाहै प्रेम रस, आलम* अंग लगाइ ।
दूजे कौं ठाहर† नहीं, पुहपु न गंध समाइ‡ ॥ ४२ ॥

॥ अहं निषेध ॥

नाहीं ह्वै करि नाउँ ले, कुछ न कहाई रे ।
साहिब जी के सेज पर, दादू जाई रे ॥ ४३§ ॥
जहाँ राम तहँ मैं‖ नहीं, मैं तहँ नाहीं राम ।
दादू महल बारीक है, द्वै को नाहीं ठाम ॥ ४४ ॥
मैं नाहीं तहँ मैं गया, एकै दूसर नाहिं ।
नाहीं कौं ठाहर घणो, दादू निज घर माहिं ॥ ४५ ॥
मैं नाहीं तहँ मैं गया, आगे एक अलाव¶ ।
दादू ऐसी बंदगी, दूजा नाहीं आव ॥ ४६ ॥
दादू आपा जब लगैं**, तब लग दूजा होइ ।
जब यहु आपा मिटि गया, तब दूजा नाहिं कोइ ॥ ४७ ॥
(दादू) मैं नाहीं तब एक है, मैं आई तब दोइ ।
मैं तैं पड़दा मिटि गया, तब ज्यूँ था त्यूँहीं होइ ॥ ४८ ॥
दादू है कौं भय घणा, नाहीं कौं कुछ नाहिं ।
दादू नाहीं ह्वै रहउ, अपणे साहिब माहिं ॥ ४९ ॥

॥ निरंजन धाम ॥

(दादू) तीनि सुन्नि आकार की, चौथी निरगुण नाम ।
सहजे सुन्नि मैं रमि रह्या, जहाँ तहाँ सब ठाम ॥ ५० ॥

---

*जक्त, दुनियाँ । †ठौर, गुंजाइश । ‡अर्थात एक फूल मैं दूसरो बास नहीं समा सकती । §दीन अंग से बिना दिखावे के नाम का सुमिरन करे तो मालिक की सायुज्य भक्ति प्राप्त हो अर्थात उस से साक्षात मेला हो । ‖ममता । ¶अल्लाह । **तक ।

पाँच तत्त के पाँच हैं, आठ त्तत के आठ ।
आठ तत्त का एक है, तहाँ निरंजन हाट ॥ ५१ ॥
(दादू) जहँ मन माया ब्रह्म था, गुण इंद्री आकार ।
तहँ मन बिरचै सबनि थैं, रचि रहु सिरजनहार ॥ ५२ ॥
काया सुन्नि पंच का बासा, आतम सुन्नि प्रान परकासा ।
परम सुन्नि ब्रह्म सौं मेला, आगे दादू आप अकेला ॥ ५३ ॥
(दादू) जहाँ थैं सब ऊपजे, चंद सूर आकास ।
पानी पवन पावक किये, धरती का परकास ॥ ५४ ॥
काल करम जिव ऊपजे, माया मन घट साँस ।
तहँ रहिता रमिता राम है, सहज सुन्नि सब पास ॥ ५५ ॥
सहज सुन्नि सब ठौर है, सब घट सबही माहिँ ।
तहाँ निरंजन रमि रह्या, कोइ गुण ब्यापै नाहिँ ॥ ५६ ॥
(दादू) तिस सरवर के तीर, सो हंसा मोती चुणैं ।
पीवैं नीझर नीर, सो है हंसा सो सुणैं ॥ ५७ ॥
(दादू) तिस सरवर के तीर, जप तप संजम कीजिये ।
तहँ सनमुख सिरजनहार, प्रेम पिलावै पीजिये ॥ ५८ ॥
(दादू) तिस सरवर के तीर, संगी* सबै सुहावणे ।
तहँ बिन कर बाजै बेन, जिभ्या-हीणे† गावणे ॥ ५९ ॥
(दादू) तिस सरवर के तीर, चरण कँवल चित लाइया ।
तहँ आदि निरंजन पीव, भाग हमारे आइया ॥ ६० ॥
(दादू) सहज सरोवर आतमा, हंसा करैं कलोल ।
सुख सागर सूभर भर्या, मुक्ताहल मन मोल ॥ ६१ ॥

---

*हंस और प्रेमी सुरतैं । † बिना जीभ के ।

(दादू) हरि सरवर पूरन सबै, जित तित पाणी पीव ।
जहाँ तहाँ जल अंचताँ*, गई तृषा सुख जीव ॥ ६२॥
सुख सागर सूभर भर्‍या, उज्जल निर्मल नीर ।
प्यास बिना पीवै नहीं, दादू सागर तीर ॥ ६३ ॥
सुन्न सरोवर हंस मन, मोती आप अनंत ।
दादू चुगि चुगि चंच† भरि, यौं जन जीवैं संत ॥ ६४ ॥
सुन्न सरोवर मीन मन, नीर निरंजन देव ।
दादू यहु रस विलसिये, ऐसा अलख अभेव ॥ ६५ ॥
सुन्न सरोवर मन भँवर, तहाँ कँवल करतार ।
दादू परिमल पीजिये, सनमुख सिरजनहार ॥ ६६ ॥
सुन्न सरोवर सहज का, तहँ मरजीवा‡ मन ।
दादू चुणि चुणि लेइगा, भीतरि राम रतन ॥ ६७ ॥
दादू मंझि सरोवर बिमल जल, हंसा केलि कराहिं ।
मुकताहल§ मुकता चुगैं, तेहि हंसा डर नाहिं ॥ ६८ ॥
अखँड सरोवर अथग‖ जल, हंसा सरवर न्हाहिं ।
निर्भय पाया आप घर, इब¶ उड़ि अनत न जाहिं ॥६९॥
दादू दरिया प्रेम का, ता मैं झूलैं दोइ ।
इक आतम परआतमा, एकमेक रस होइ ॥ ७० ॥

---

* पीता । † चोंच । ‡ मरजीवा डुबकी लगाने वाले (गोतेखोर) को कहते हैं जो समुद्र से मोती निकालते हैं । पं० चं० प्र० के अर्थ "मुक्त, माया से निवृत्त" के ग़लत हैं । §मुकाहल का शब्द संस्कृत कोष में नहीं मिलता, संभव है कि यह "मुक्ताफल" का अपभ्रंश हो । संत बानी में मुक्ताहल और मुक्ता दोनों मोती के अर्थ में आये हैं । यहाँ पर इन दोनों शब्दों के अलंकार से मुक्ति रूपी मोती का अर्थ निकलता है-अर्थात मान सरोवर के हंस मुक्ति रूपी मोती चुगते हैं और काल कर्म से निडर हैं । ‖ अथाह । ¶ अब ।

दादू हिन दरियाव, मानिक मंझेई ।
टुबी डेई पाण मैं, डिठो हंझेई ॥ ७१* ॥
परआतम सौं आतमा, ज्यूँ हंस सरोवर माहिं ।
हिलि मिलि खेलै पीव सौं, दादू दूसर नाहिं ॥ ७२ ॥
दादू सरवर सहज का, ता मैं प्रेम तरंग ।
तहँ मन झूलै आतमा, अपणे साईं संग ॥ ७३ ॥

॥ पीव परिचय ॥

(दादू) देखौं निज पीव कौं, दूसर देखौं नाहिं ।
सबै दिसा सौं सोधि करि, पाया घट ही माहिं ॥ ७४ ॥
(दादू) देखौं निज पीव कौं, और न देखौं कोइ ।
पूरा देखौं पीव कौं, बाहर भीतर सोइ ॥ ७५ ॥
(दादू) देखौं निज पीव कौं, देखत ही दुख जाइ ।
हूँ तौ देखौं पीव कौं, सब मैं रह्या समाइ ॥ ७६ ॥
(दादू) देखौं निज पीव कौं, सोई देखण जोग ।
परगट देखौं पीव कौं, कहाँ बतावैं लोग ॥ ७७ ॥

॥ सर्व व्यापक ॥

दादू देखौं दयाल कौं, सकल रह्या भरपूरि ।
रोम रोम मैं रमि रह्या, तूँ जिनि जाणै दूरि ॥ ७८ ॥
दादू देखौं दयाल कौं, बाहरि भीतरि सोइ ।
सब दिसि देखौं पीव कौं, दूसर नाहीं कोइ ॥ ७९ ॥

---

* साखी नं० ७१ को जो अर्थ पं० चंद्रिका प्रसाद जी ने पहिनाये हैं सो अशुद्ध हैं। "हंझ" सिंध में एक चिड़िया का नाम है जिसे हंस कह सकते हैं. हंझ का अर्थ "संत" कदापि नहीं हो सकता । पूरी साखी का अर्थ यह है कि "इस दरिया अर्थात घट के भीतर रत्न (चेतन्य) है सो हंस (जीव) अपने आप में डुबकी लगाने से उसका दर्शन पा सकता है।

दादू देखौं दयाल कौं, सनमुख साँईं सार ।
जीधरि देखौं नैन भरि, तीधरि सिरजनहार ॥ ८० ॥
दादू देखौं दयाल कौं, रोकि रह्या सब ठौर ।
घटि घटि मेरा साइयाँ, तूँ जिनि जाणै और ॥ ८१ ॥
तन मन नाहीं मैं नहीं, नहिं माया नहिं जीव ।
दादू एकै देखिये, दह दिसि मेरा पीव ॥ ८२ ॥
(दादू) पाणी माहैं पैसि करि, देखै दृष्टि उघार ।
जला ब्यंब* सब भरि रह्या, ऐसा ब्रह्म बिचार ॥ ८३ ॥
सदा लीन आनंद मैं, सहज रूप सब ठौर ।
दादू देखै एक कौं, दूजा नाहीं और ॥ ८४ ॥
(दादू) जहँ तहँ साखी संग हैं, मेरे सदा अनंद ।
नैन बैन हिरदै रहैं, पूरण परमानंद ॥ ८५ ॥
जागत जगपति देखिये, पूरण परमानंद ।
सोवत भी साँईं मिलै, दादू अति आनंद ॥ ८६ ॥

॥ तेज पुंज ॥

दह दिसि दीपक तेज के, बिन बाती बिन तेल ।
चहुँ दिसि सूरज देखिये, दादू अद्भुत खेल ॥ ८७ ॥
सूरज कोटि प्रकास है, रोम रोम की लार ।
दादू जोति जगदीस की, अंत न आवै पार ॥ ८८ ॥
ज्यौं रवि एक अकास है, ऐसे सकल भरपूर ।
दादू तेज अनंत है, अल्लह आले† नूर ॥ ८९ ॥
सूरज नहिं तहँ सूरज देख्या, चंद नहीं तहँ चंदा ।
तारे नहिं तहँ झिलिमिलि देख्या, दादू अति आनंदा ॥९०॥
बादल नहिं तहँ बरसत देख्या, सबद नहीं गरजंदा ।
बीज‡ नहीं तहँ चमकत देख्या, दादू परमानंदा ॥ ९१ ॥

---

* बिम्ब, परछाहीं । † उच्च । ‡ बिजली ।

(दादू) जोती चमकै झिलिमिलै, तेज पुंज परकास ।
अमृत झरै रस पीजिये, अमर बेलि आकास ॥ ९२ ॥
(दादू) अबिनासी अँग तेज का, ऐसा तत्त अनूप ।
सो हम देख्या नैन भरि, सुंदर सहज सरूप ॥ ९३ ॥
परम तेज परगट भया, तहँ मन रह्या समाइ ।
दादू खेलै पीव सौं, नहिं आवै नहिं जाइ ॥ ९४ ॥
निराधार निज देखिये, नैनहुँ लागा बंद ।
तहँ मन खेलै पीव सौं, दादू सदा अनंद ॥ ९५ ॥
ऐसा एक अनूप फल, बीज बाकुला* नाहिँ ।
मीठा निर्मल एक रस, दादू नैनहुँ माहिँ ॥ ९६ ॥
हीरे हीरे तेज के, सो निरखे त्रय लोय† ।
कोइ इक देखै संत जन, और न देखै कोय ॥ ९७ ॥
नैन हमारे नूर माँ, तहाँ रहे ल्यौ लाइ ।
दादू उस दीदार कौं, निस दिन निरखत जाइ ॥ ९८ ॥
नैनहुँ आगैँ देखिये, आतम अंतर सोइ ।
तेज पुंज सब भरि रह्या, झिलिमिलि झिलिमिलि होइ ॥९९॥
अनहद बाजे बाजिये, अमरापुरी निवास ।
जोति सरूपी जगमगै, कोइ निरखै निज दास ॥ १०० ॥
परम तेज तहँ मन रहै, परम नूर निज देखै ।
परम जोति तहँ आतम खेलै, दादू जीवन लेखै ॥ १०१ ॥
(दादू) जरै सो जोति सरूप है, जरै सो तेज अनंत ।
जरै सो झिलिमिलि नूर है, जरै सो पुंज रहंत ॥१०२॥

---

*बुकला, छिलका । † लोय=लोयन, लोचन । त्रय लोय से अभिप्राय शिव नेत्र या तीसरे तिल से है जिस के खुलने पर दिव्य दृष्टि हो जाती है ।

दादू अलख अलाह का, कहु कैसा है नूर ।
दादू बेहद हद नहीं, सकल रह्या भरपूर ॥ १०३ ॥
वार पार नहिं नूर का, दादू तेज अनंत ।
कीमति नहिं करतार की, ऐसा है भगवंत ॥ १०४ ॥
निरसँधि नूर अपार है, तेज पुंज सब माहिं ।
दादू जोति अनंत है, आगै पीछै नाहिं ॥ १०५ ॥
खंड खंड निज ना भया, इकलस* एकै नूर ।
ज्यौं था त्यौंहीं तेज है, जोति रही भरपूर ॥ १०६ ॥
परम तेज परकास है, परम नूर नीवास ।
परम जोति आनंद मैं, हंसा दादू दास ॥ १०७ ॥
नूर सरीखा नूर है, तेज सरीखा तेज ।
जोति सरीखो जोति है, दादू खेलै सेज ॥ १०८ ॥
तेज पुंज की सुंदरी, तेज पुंज का कंत ।
तेज पुंज की सेज परि, दादू बन्या बसंत ॥ १०९ ॥
पुहुप प्रेम बरिषै सदा, हरि जन खेलैं फाग ।
ऐसा कौतिग† देखिये, दादू मोटे‡ भाग ॥ ११० ॥

॥ अमी वर्षा ॥

अंमृत धारा देखिये, पारब्रह्म बरिखंत ।
तेज पुंज झिलिमिलि झरै, को साधू जन पीवंत ॥१११॥
रस ही मैं रस बरखि है, धारा कोटि अनंत ।
तहँ मन निहचल राखिये, दादू सदा बसंत ॥११२॥

---

*एकसा, यकसाँ । †कौतुक । ‡बड़े ।

घन बादल बिन बरिखि है, नीझर निरमल धार ।
दादू भींजै आतमा, को साधू पीवनहार ॥ ११३ ॥
ऐसा अचरज देखिया, बिन बादल बरिखै मेह ।
तहँ चित चातृग* ह्वै रह्या, दादू अधिक सनेह ॥ ११४ ॥
महा रस मीठा पीजिये, अबिगत अलख अनंत ।
दादू निर्मल देखिये, सहजैं सदा झरंत ॥ ११५ ॥

॥ कामधेनु ॥

कामधेनु दुहि पीजिये, अकल† अनूपम एक ।
दादू पीवै प्रेम सौं, निर्मल धार अनेक ॥ ११६ ॥
कामधेनु दुहि पीजिये, ता कूँ लखै न कोइ ।
दादू पीवै प्यास सौं, महारस मीठा सोइ ॥ ११७ ॥
कामधेनु दुहि पीजिये, अलख रूप आनंद ।
दादू पीवै हेत सौं, सुषमन लागा बंद ॥ ११८ ॥
कामधेनु दुहि पीजिये, अगम अगोचर जाइ ।
दादू पीवै प्रीति सौं, तेज पुंज की गाइ ॥ ११९ ॥
कामधेनु करतार है, अमृत सरवै‡ सोइ ।
दादू बछरा दूध कौं, पीवै तौ सुख होइ ॥ १२० ॥
ऐसी एकै गाइ है, दूझै§ बारह मास ।
सो सदा हमारे संग है, दादू आतम पास ॥ १२१ ॥

॥ अक्षय वृक्ष ॥

तरवर साखा मूल बिन, धरती पर नाहीं ।
अबिचल अमर अनंत फल, सो दादू खाहीं ॥ १२२ ॥
तरवर साखा मूल बिन, धर अंबर न्यारा‖ ।
अबिनासी आनंद फल, दादू का प्यारा ॥ १२३ ॥

---

*एक पक्षी जिस का केवल स्वाँति बुंद आधार है। †अखंड, अद्वितीय। ‡आप से आप चुवै। §दुही जाय। ‖पृथ्वी और आकाश से न्यारा।

तरवर साखा मूल बिन, रज बीरज रहिता* ।
अजरा अमर अतीत फल, सो दादू गहिता ॥ १२४ ॥
तरवर साखा मूल बिन, उतपति परलय नाहिँ ।
रहिता रमिता राम फल, दादू नैनहुँ माहिँ ॥ १२५ ॥
प्राण तरोवर सुरति जड़, ब्रह्म भोमि ता माहिँ ।
रस पीवै फूलै फलै, दादू सूकै† नाहिँ ॥ १२६ ॥

(प्रश्न)

ब्रह्म सुन्नि तहँ क्या रहै, आतम के अस्थान ।
काया अस्थल क्या बसै, सतगुर कहै सुजान ॥ १२७ ॥

(उत्तर)

काया के अस्थल रहै, मन राजा पंच प्रधान ।
पचिस प्रकिरती तीन गुण, आपा गर्ब गुमान ॥ १२८ ॥
आतम के अस्थान हैँ, ज्ञान ध्यान बेसास‡ ।
सहज सील संतोष सत, भाव भगति निधि पास ॥१२९॥
ब्रह्म सुन्न तहँ ब्रह्म है, निरंजन निराकार ।
नूर तेज जहँ जोति है, दादू देखणहार ॥ १३० ॥

(प्रश्न)

मौजूद ख़बर माबूद ख़बर, अरवाह ख़बर औजूद ।
मुक़ाम चि चीज़ हस्त दादनी सजूद ॥ १३१§ ॥

---

*रहित, अलग । †सूखै । ‡विश्वास । §साखी १३१ में शिष्य गुरू से मुसलमानों की चार मंज़िलों—अर्थात शरीअत (कर्म कांड), तरीक़त (उपासना वा भक्ति), हक़ीक़त (ज्ञान) और मारिफ़त (बिज्ञान)—हर एक के घाट या मुक़ाम का निर्णय करने को प्रार्थना करता है कि कहाँ के धनी को दंडवत की जाय। जवाब आगे की साखियों में है।

॥ उत्तर ॥

॥ मौजूद मुक़ामे हस्त ॥

नफ़्स ग़ालिब किब्र क़ाबिज़, ग़ुस्सः मनी ऐश ।
दुई दरोग़ हिर्स हुज्जत, नामे नेकी नेस्त ॥ १३२* ॥
हैवान आलिम गुमराह ग़ाफ़िल, अव्वल शरीअत पंद ।
हलाल हराम नेको बदो, दर्स दानिशमंद ॥ १३३† ॥

॥ अरवाह मक़ामे हस्त ॥

इश्क़ इबादत बंदगी, यगानगी इख़लास ।
मेहर मुहब्बत ख़ैर ख़ूबी, नाम नेकी पास ॥ १३४‡ ॥

॥ माबूद मक़ामे हस्त ॥

यके नूर ख़ूबे ख़ूबाँ दीदनी हैराँ ।
अजब चीज़ ख़ुर्दनी प्याले मस्ताँ ॥ १३५§ ॥

---

*सा० १३२—शरीअत के बँधुओं की धुर मंज़िल उन की स्थूल देह ही ("मौजूद") है और उनके लक्षण यह हैं कि मन के बस, अहंकार का रूप, क्रोध अपनपौ और शारीरक सुख के गुलाम, द्वैत भाव झूठ लोभ और हुज्जत तकरार के रसिया, जिन के मन में नेकी या परोपकार नाम मात्र नहीं है। [पं० चं० प्र० के पाठ में "ऐश" की जगह "एस्त" है जो अशुद्ध नहीं कहा जा सकता परंतु हम को दूसरी लिपि का पाठ अच्छा लगा—दूसरी कड़ी के आख़िर हिस्से का अर्थ पंडितजी का ठीक नहीं है]।

†सा० १३३—संसारी नर-पशु शरीअत के बँधुए एक तो उसकी शिक्षा को लिये हुए अचेत भटकते हैं और दूसरे हलाल हराम नेकी बदी के जाल में जो विद्या बुद्धि वालों ने बिछा रक्खा है फँस रहे हैं।

‡सा० १३४—तरीक़त वालों को धुर मंज़िल उन की आत्मा ("अरवाह") है और उन का मार्ग प्रेमा-भक्ति, भजन सुमिरन, एक ही मालिक में निश्चय, और हर एक के साथ दया प्यार भलाई हमदर्दी और नेकी का है।

§सा० १३५—हक़ीक़त वालों का इष्ट उन का परमेश्वर ("माबूद") है जो ख़ूबों में ख़ूब और तेज का ऐसा पुंज है जिस को देख कर आँखें चकरा और झप जाती हैं और जो मस्तों अर्थात प्रेम नशे में चूर भक्तों के प्याले को अचरजी अमी रूप दारू है।

परम तेज तहँ मन गया, नैनहुँ देख्या आइ ।
सुख संतोष पाया घणा, जोतिहिं जोति समाइ ॥१४३॥
अरथ चारि अस्थान का, गुरु सिष कह्या समझाइ ।
मारग सिरजनहार का, भाग बड़े सो जाइ ॥ १४४ ॥
अरवाह सिजदा कुनंद, औजूद रा चि कार । (३--७०)
दादू नूर दादनी, आशिक़ाँ दीदार ॥ १४५ ॥
आशिक़ाँ रह क़ब्ज़ कर्द:, दिलो जाँ रफ़्तंद । (३--६६)
अलह आले नूर दीदम, दिले दादू बंद ॥ १४६ ॥
आशिक़ाँ मस्ताने आलम, खुरदनी दीदार ।
चंद दिह चे कार दादू, यारे मा दिलदार ॥ १४७* ॥

॥ साक्षातकार ॥

दादू दया दयाल की, सो क्यौं छानी† होइ ।
प्रेम पुलक‡ मुलकत§ रहै, सदा सुहागिनि सोइ ॥ १४८ ॥
बिगसि बिगसि दरसन करै, पुलकि पुलकि रस पान ।
मगन गलित माता रहै, अरस परस मिलि प्रान ॥१४९॥
(दादू) देखि देखि सुमिरन करै, देखि देखि लै लीन ।
देखि देखि तन मन बिलै‖, देखि देखि चित दीन ॥१५०॥
निरखि निरखि निज नाँव ले, निरखि निरखि रस पीव ।
निरखि निरखि पिव कौं मिलै, निरखि निरखि सुख जीव
॥ १५१ ॥

---

*साखी १४७--प्रेमी जन संसारी ऐश्वर्य को तुच्छ समझते हैं, उनकी प्रीत अपने प्रीतम से लगी है और उसी के दर्श अमी रस के आनन्द में संतुष्ट और मतवाले यानी दुनिया से बेख़बर रहते हैं। "दिह" का अर्थ फ़ारसी में गाँव यानी जायदाद है, पं० चं० प्र० की पुस्तक में "रह" दिया है जो अशुद्ध जान पड़ता है। †गुप्त, ढकी हुई। ‡प्रफुल्लित, मगन। §मुसकराती। ‖बिलाय जाय, लय हो जाय।

परम तेज तहँ मन गया, नैनहुँ देख्या आइ ।
सुख संतोष पाया घणा, जोतिहिं जोति समाइ ॥१४३॥
अरथ चारि अस्थान का, गुरु सिष कह्या समझाइ ।
मारग सिरजनहार का, भाग बड़े सो जाइ ॥ १४४ ॥
अरवाह सिजदा कुनंद, औजूद रा चि कार । (३--७०)
दादू नूर दादनी, आशिक़ाँ दीदार ॥ १४५ ॥
आशिक़ाँ रह क़ब्ज़ कर्दः, दिलो जाँ रफ़्तंद । (३--६६)
अलह आले नूर दीदम, दिले दादू बंद ॥ १४६ ॥
आशिक़ाँ मस्ताने आलम, खुरदनी दीदार ।
चंद दिह चे कार दादू, यारे मा दिलदार ॥ १४७[*]॥

॥ साक्षातकार ॥

दादू दया दयाल की, सो क्यौं छानी[†] होइ ।
प्रेम पुलक[‡] मुलकत[§] रहै, सदा सुहागिनि सोइ ॥ १४८ ॥
बिगसि बिगसि दरसन करै, पुलकि पुलकि रस पान ।
मगन गलित माता रहै, अरस परस मिलि प्रान ॥१४९॥
(दादू) देखि देखि सुमिरन करै, देखि देखि लै लीन ।
देखि देखि तन मन बिलै[‖], देखि देखि चित दीन ॥१५०॥
निरखि निरखि निज नाँव ले, निरखि निरखि रस पीव ।
निरखि निरखि पिव कौं मिलै, निरखि निरखि सुख जीव ॥ १५१ ॥

---

*साखी १४७--प्रेमी जन संसारी ऐश्वर्य को तुच्छ समझते हैं, उनकी प्रीत अपने प्रीतम से लगी है और उसी के दर्श अमी रस के आनन्द में संतुष्ट और मतवाले यानी दुनिया से बेख़बर रहते हैं। "दिह" का अर्थ फ़ारसी में गाँव यानी जायदाद है, पं० चं० प्र० की पुस्तक में "रह" दिया है जो अशुद्ध जान पड़ता है। †गुप्त, ढकी हुई। ‡प्रफुल्लित, मगन। §मुसकराती। ‖बिलाय जाय, लय हो जाय।

॥ आतम सुमिरण ॥

तन सौं सुमिरण सब करै, आतम सुमिरण एक ।
आतम आगैं एक रस, दादू बड़ा बिबेक ॥ १५२ ॥
(दादू) माटी के मोकाम का, सब को जानै जाप ।
एक आध अरवाह का, बिरला आपै आप ॥ १५३ ॥
(दादू) जब लगि असथल देह का, तब लगि सब व्यापै ।
निर्भै अस्थल आतमा, आगैं रस आपै ॥ १५४ ॥
जब नाहिं सुरत सरीर की, बिसरै सब संसार ।
आतम न जाणै आप कौं, तब एक रह्या निर्धार ॥१५५॥
तन सौं सुमिरण कीजिये, जब लगि तन नीका* ।
आतम सुमिरण ऊपजै, तब लागै फीका ।
(आगैं आपैं आप है, तहाँ क्या जीव का) ॥ १५६ ॥

॥ आतम दृष्टि ॥

चर्म दृष्टि देखै बहुत, आतम दृष्टी एकि ।
ब्रह्म दृष्टि परिचय भया, तब दादू बैठा देखि ॥ १५७ ॥
येई नैनाँ देह के, येई आतम होइ ।
येई नैनाँ ब्रह्म के, दादू पलटे दोइ ॥ १५८ ॥
घट परिचै सब घट लखै, प्राण परीचै प्राण ।
ब्रह्म परीचै पाइये, दादू है हैरान ॥ १५९ ॥

॥ अंतरी अराधना ॥

दादू जल पाषाण ज्यूँ, सेवै सब संसार ।
दादू पाणी लूण† ज्यूँ, कोइ बिरला पूजनहार ॥ १६० ॥
अलख नाँव अंतरि कहै, सब घटि हरि हरि होइ ।
दादू पाणी लूण ज्यूँ, नाँव कहीजै सोइ ॥ १६१ ॥

*जब तक शरीर में लाग है अर्थात तन-अभिमान है। †नोन।

छाड़ै सुरति सरीर कूँ, तेज पुंज मैं आइ ।
दादू ऐसैं मिलि रहै, ज्यूँ जल जलहि समाइ ॥ १६२ ॥
सूरति रूप सरीर का, पिव के परसैं होइ ।
दादू तन मन एक रस, सुमिरण कहिये सोइ ॥ १६३ ॥
राम कहत रामहि रह्या, आप बिसर्जन होइ ।
मन पवना पंचौं बिलै*, दादू सुमिरण सोइ ॥ १६४ ॥
जहँ आतम राम सँभालिये, तहँ दूजा नाहीं और ।
देही आगैं अगम है, दादू सूषिम ठौर ॥ १६५ ॥
पर आतम सौं आतमा, ज्यौं पाणी मैं लूँण ।
दादू तन मन एक रस, तब दूजा कहिये कूँण ॥ १६६ ॥
तन मन बिलै यौं कीजिये, ज्यौं पाणी मैं लूँण ।
जीव ब्रह्म एकै भया, तब दूजा कहिये कूँण ॥ १६७ ॥
तन मन बिलै यौं कीजिये, ज्यौं घृत लागे घाम ।
आत्म कमल तहँ बंदगी, जहँ दादू परगट राम ॥ १६८ ॥

॥ अंतरी सुमिरण ॥

कोमल कमल तहँ पैसि करि, जहाँ न देखै कोइ ।
मन थिर सुमिरण कीजिये, तब दादू दरसन होइ ॥१६९॥
नख सिख सब सुमिरण करै, ऐसा कहिये जाप ।
अंतरि बिगसै आतमा, तब दादू प्रगटै आप ॥ १७० ॥
अंतरगति हरि हरि करै, तब मुख की हाजत नाहिं ।
सहजैं धुनि लागी रहै, दादू मन हीं माहिं ॥ १७१ ॥
(दादू) सहजैं सुमिरण होत है, रोम रोम रमि राम ।
चित्त चहूँट्या† चित्त सौं, यौं लीजै हरि नाम ॥ १७२ ॥

---

*बिलाय जाय, लय हो जाय । †चिपका ।

दादू सुमिरण सहज का, दीन्हा आप अनंत ।
अरस परस उस एक सौं, खेलै सदा बसंत ॥ १७३ ॥
(दादू) सबद अनाहद हम सुन्या, नख सिख सकल सरीर ।
सब घटि हरि हरि होत है, सहजैं ही मन थीर ॥ १७४ ॥
हुण दिल लागा हिक साँ, मे कूँ एहा तात ।
दादू कंमि खुदाय दे, बैठा डीहैं राति ॥ १७५* ॥
(दादू) माला सब आकार की, कोइ साधू सुमिरै राम ।
करणीगर† तैं क्या किया, ऐसा तेरा नाम ॥ १७६ ॥
सब घट मुख रसना करै, रटै राम का नाँव ।
दादू पीवै राम रस, अगम अगोचर ठाँव ॥ १७७ ॥
(दादू) मन चित इस्थिर कीजिये, तौ नख सिख सुमिरण होइ।
स्रवन नेत्र मुख नासिका, पंचौं पूरे सोइ ॥ १७८ ॥

॥ साध महिमा ॥

आतम आसण राम का, तहाँ बसै भगवान ।
दादू दून्यूँ परसपर, हरि आतम का थान ॥ १७९ ॥
राम जपै रुचि साध कौं, साध जपै रुचि राम ।
दादू दून्यूँ एकटग,‡ यहु आरँभ यहु काम ॥ १८० ॥
जहाँ राम तहँ संत जन, जहँ साधू तहँ राम ।
दादू दून्यूँ एकठे,§ अरस परस बिसराम ॥ १८१ ॥
(दादू) हरि साधू यौं पाइये, अविगत के आराध ।
साधू संगति हरि मिलैं, हरि संगत थैं साध ॥ १८२ ॥

---

*मेरा दिल एक के साथ लग गया और इसी की फ़िकर है, दादू मालिक की सेवा में रात दिन बैठा रहता है। †कुदरत का रचनहार, करतार। ‡एक तार। §इकट्ठे।

(दादू) राम नाम सौं मिलि रहै, मन के छाडि बिकार ।
तौ दिल ही माहैं देखिये, दून्यूँ का दीदार ॥ १८३ ॥
साध समाणा राम मैं, राम रह्या भरपूरि ।
दादू दून्यूँ एक रस, क्यौंकरि कीजै दूरि ॥ १८४ ॥
(दादू) सेवग साईं का भया, तब सेवग का सब कोइ ।
सेवग साईं कौं मिल्या, तब साईं सरिखा होइ ॥ १८५ ॥

॥ सतसंग महिमा ॥

मिसरी माहैं मेलि करि, मोल बिकाना बंस* ।
यौं दादू महिँगा भया, पारब्रह्म मिलि हंस ॥ १८६ ॥
मीठे माहैं राखिये, सो काहे न मीठा होइ ।
दादू मीठा हाथि ले, रस पीवै सब कोइ ॥ १८७ ॥

॥ सतसंगति कुसंगति ॥

मीठे सौं मीठा भया, खारे सौं खारा ।
दादू ऐसा जीव है, यहु रंग हमारा ॥ १८८ ॥
मीठे मीठे करि लिये, मीठा माहैं बाहि ।
दादू मीठा ह्वै रह्या, मीठे माहिं समाइ ॥ १८९ ॥
राम बिना किस काम का, नहिं कौड़ी का जीव ।
साईं सरिखा ह्वै गया, दादू परसैं पीव ॥ १९० ॥

॥ पारख अपारख ॥

हीरा कौड़ी ना लहै, मूरखि हाथ गँवार ।
पाया पारिख जौहरी, दादू मोल अपार ॥ १९१ ॥
अंधे हीरा परखिया, कीया कौड़ी तोल ।
दादू साधू जौहरी, हीरे मोल न तोल ॥ १९२ ॥

*बाँस का पनच जो मिसरी के कुज्जे पर लगा रहता है ।

मोराँ कीया मेहर सौं, परदे थैं लापर्द* ।
राखि लिया दीदार मैं, दादू भूला दर्द ॥ १९३ ॥

(दादू) नैन बिन देखिबा, अंग बिन पेखिबा,
रसन बिन बोलिबा, ब्रह्म सेती ।
स्रवन बिन सुणिबा, चरण बिन चालिबा,
चित्त बिन चित्यबा, सहज एती ॥ १९४ ॥

॥ पतिव्रत ॥

दादू देख्या एक मन, सो मन सब ही माहिँ ।
तेहि मन सौं मन मानिया, दूजा भावै नाहिँ ॥ १९५ ॥
(दादू) जेहिँ घट दीपक राम का, तेहिँ घट तिमिरि न होइ ।
उस उजियारे जोति के, सब जग देखै सोइ ॥ १९६ ॥
दादू दिल अरवाह का, सो अपणा ईमान ।
सोई स्याबति† राखिये, जहँ देखै रहमान ॥ १९७ ॥
अल्लह आप इमान है, दादू के दिल माहिँ ।
सोई स्याबति राखिये, दूजा कोई नाहिँ ॥ १९८ ॥

॥ अनुभव ॥

प्राण पवन ज्यौं पातला, काया करै कमाइ ।
दादू सब संसार मैं, क्यौं ही गह्या न जाइ ॥ १९९ ॥
नूर तेज ज्यौं जोति है, प्राण प्यंड‡ यौं होइ ।
दिष्टि मुष्टि§ आवै नहीं, साहिब के बसि सोइ ॥ २०० ॥
काया सूषिम करि मिलै, ऐसा कोई एक ।
दादू आतम ले मिलैं, ऐसे बहुत अनेक ॥ २०१‖ ॥

---

*बेपरदा । †साबित, सावधान । ‡पिंड । §जिस को इन स्थूल इंद्रियों से देख या छू नहीं सकते । ‖काया को ऊपर लिखी रीति से सूक्ष्म करके मिलनेवाला कोई बिरला है परंतु काया के पात होने पर मिलने वाले बहुत हैं ।

आड़ा आतम तन धरै, आप रहै ता माहिं*।
आपण खेलै आप सौं, जीवन सेती नाहिं ॥ २०२ ॥
(दादू) अनभै थैं आनँद भया, पाया निर्भय नाँव ।
निहचल निर्मल निर्बाण पद, अगम अगोचर ठाँव ॥२०३॥
दादू अनभै बाणी अगम कौं, लेगइ संग लगाइ ।
अगह गहै अकहै कहै, अभेद भेद लहाइ ॥ २०४ ॥
जे कुछ बेद पुरान थैं, अगम अगोचर बात ।
सो अनभै साचा कहै, यहु दादू अकह कहात ॥ २०५ ॥
(दादू) जब घटि अनभै ऊपजै, तब किया करम का नास ।
भय भरम भागै सबै, पूरन ब्रह्म प्रकास ॥ २०६ ॥
(दादू) अनभै काटै रोग कौं, अनहद उपजै आइ ।
सेझे† का जल निर्मला, पीवै रुचि ल्यौ लाइ ॥ २०७ ॥
दादू बाणी ब्रह्म की, अनभै घट परकास ।
राम अकेला रहि गया, सबद निरंजन पास ॥ २०८ ॥
जे कबहूँ समझै आतमा, तौ दिढ़ गहि राखै मूल ।
दादू सेझा राम रस, अंमृत काया कूल‡ ॥ २०९ ॥
(दादू) मुझ ही माहैं मैं रहूँ, मैं मेरा घरबार ।
मुझ ही माहैं मैं बसूँ, आप कहै करतार ॥ २१० ॥
(दादू) मैं ही मेरा अरस§ मैं, मैं ही मेरा थान ।
मैं ही मेरी ठौर मैं, आप कहै रहमान ॥ २११ ॥

---

*तन के सामने (आड़े) आत्मा को रक्खै अर्थात तन की सुधि बिसरा दे और आप अत्मा ही में रत हो रहै। †सोत पोत। ‡राम रस तो सोत पोत अथवा झरना के समान है और काया कूल अर्थात नदी नाले के समान जिस में वह अमृत बहता है। §अर्श=नवाँ आसमान।

(दादू) मैं ही मेरे आसरे, मैं मेरे आधार ।
मेरे तकिये मैं रहूँ, कहै सिरजनहार ॥ २१२ ॥
(दादू) मैं ही मेरी जाति मैं, मैं ही मेरा अंग ।
मैं ही मेरा जीव मैं, आप कहै परसंग ॥ २१३ ॥
(दादू) सबै दिसा सो सारिखा*, सबै दिसा मुख बैन ।
सबै दिसा स्रवणहुँ सुणै, सबै दिसा कर नैन ॥ २१४ ॥
सबै दिसा पग सीस है, सबै दिसा मन चैन ।
सबै दिसा सनमुख रहै, सबै दिसा अँग ऐन ॥ २१५ ॥
बिन स्रवण हुँ सब कुछ सुणै, बिन नैनहुँ सब देखै ।
बिन रसना मुख सब कुछ बोलै, यहु दादू अचरज पेखै ॥२१६॥
सब अँग सब ही ठौर सब, सर्बंगी सब सार ।
कहै गहै देखै सुनै, दादू सब दीदार ॥ २१७ ॥
कहै सब ठौर गहै सब ठौर, रहै सब ठौर जोति परवानै ।
नैन सब ठौर बैन सब ठौर, ऐन सब ठौर सोई भल जानै॥
सीस सब ठौर स्रवन सब ठौर, चरन सब ठौर कोई यहु मानै।
अंग सब ठौर संग सब ठौर, सबै सब ठौर दादू ध्यानै ॥२१८॥
तेज ही कहणा तेज ही गहणा, तेज ही रहणा सारे ।
तेज ही बैना तेज ही नैना, तेज ही ऐन हमारे ॥
तेज ही मेला तेज ही खेला, तेज अकेला तेज ही तेज सँवारे।
तेज ही लेवै तेज ही देवै, तेज ही खेवै तेज ही दादू तारे॥२१९॥
नूरहि का धर नूरहि का घर, नूरहि का बर† मेरा ।
नूरहि मेला नूरहि खेला, नूर अकेला नूरहि माँझ बसेरा॥

---

*सब दिशा उस के लिये बराबर हैं। †पति ।

नूरहि का अँग नूरहि का सँग, नूरहि का रँग नेरा* ।
नूरहि राता नूरहि माता, नूरहि खाता दादू तेरा ॥२२०॥

॥ पिंडी (खाकी) और ब्रह्मांडी (नूरी) मन ॥

(दादू) नूरी दिल अरवाह का, तहाँ बसै माबूदं ।
तहँ बंदे की बंदगी, जहाँ रहै मौजूदं ॥ २२१ ॥
(दादू) नूरी दिल अरवाह का, तहँ खालिक भरपूरं ।
आले नूर अलाह का, खिदमतगार हजूरं ॥ २२२ ॥
(दादू) नूरी दिल अरवाह का, तहँ देख्या करतारं ।
तहँ सेवग सेवा करै, अनंत कला रवि सारं ॥ २२३ ॥
(दादू) नूरी दिल अरवाह का, तहाँ निरंजन बासं ।
तहँ जन तेरा एक पग, तेज पुंज परकासं ॥ २२४ ॥
(दादू) तेज कँवल दिल नूर का, तहाँ राम रहमानं† ।
तहँ करि सेवा बंदगी, जे तूँ चतुर सयानं ॥ २२५ ॥
तहाँ हजूरी बंदगी, नूरी दिल मैं होइ ।
तहँ दादू सिजदा करै, जहाँ न देखै कोइ ॥ २२६ ॥
(दादू) देही माहैँ दोइ दिल, इक खाकी इक नूर ।
खाकी दिल सूझै नहीं, नूरी मंझि हजूर ॥ २२७ ॥

॥ नमाज़ सिजदा ॥

(दादू) हौद‡ हजूरी दिल ही भीतर, गुस्ल§ हमारा सारं ।
उजू‖ साजि अलह के आगै, तहाँ निमाज गुजारं ॥२२८॥
(दादू)काया मसीत¶करि पंचजमाती**, मनही मुला इमामं।
आप अलेख इलाही आगै, तहँ सिजदा करै सलामं ॥२२९॥

---

*"नेरा"=पास, निकट। पं० चं० प्र० के पाठ मैँ "मेरा" है। †दयाल। ‡हौज़=कुंड। §स्नान। ‖वज़ू मुसलमानोँ मैँ नमाज़ पढ़ने के लिये करते हैँ जिस मैँ पहले तो पानी से दोनोँ हाथोँ को धोते हैँ, फिर कुल्ली करते हैँ फिर पेशानी (माथा) पूरा चिहरा बाँह और आख़िर मैँ पाँव को धोते हैँ। ¶मस्जिद। **पाँच फ़िर्क़े मुसलमानोँ के।

(दादू) सब तन तसबी* कहै करीमं, ऐसा कर ले जापं
रोज़ा एक दूर करि दूजा, कलमा आपै आपं ॥ २३० ॥
(दादू) अठे पहर अलह के आगै, इक टग रहिबा ध्यानं
आपै आप अरस के ऊपर, जहाँ रहै रहमानं ॥ २३१ ॥
अठे पहर इबादती, जीवन मरण निबाहि ।
साहिब दर सेवै खड़ा, दादू छाड़ि न जाइ ॥ २३२ ॥

॥ साध महिमा ॥

अठे पहर अरस मैं, ऊभो ई आहे ।
दादू पसे तिन खे अला, गाल्हाये ॥ २३३† ॥
अठे पहर अरस मैं, बेठा पिरी पसन्नि ।
दादू पसे तिन खे, जे दीदार लहन्नि ॥ २३४‡ ॥
अठे पहर अरस मैं, जिन्हीं रूह रहन्नि ।
दादू पसे तिन खे, गुझ्यूँ गाल्ही कन्नि ॥ २३५§ ॥
अठे पहर अरस मैं, लुडींदा आहिन ।
दादू पसे तिन खे, असा खबरि डिन्ह ॥ २३६‖ ॥
अठे पहर अरस मैं, वंजी जे गाहिन ।
दादू पसे तिन खे, किते ई आहिन ॥ २३७¶ ॥

---

*सुमिरनी ।

†साखी २३३—अल्लाह आठ पहर नवें आसमान (अर्श) में खड़ा ही है, जो उस को देखते हैं सो उस से बात चीत करते हैं।

‡सा० २३४—प्रीतम (पिरी) आठ पहर अर्श में बैठा देखता है, जो उस को देखते हैं उन को दर्शन मिलते हैं।

§सा० २३५—जिन की सुरति आठ पहर अर्श में रहती है वह उस को देखते हैं और उस से गुप्त बात चीत करते हैं।

‖सा० २३६—जो आठ पहर अर्श में भूल रहे हैं वह उस को देखते हैं और हम को ख़बर देते हैं।

¶सा० २३७—जो आठ पहर अर्श में जाकर रहते हैं जो उस को देखते हैं वह कितने (कहाँ ?) हैं।

॥ प्रेम पिलाया ॥

प्रेम पियाला नूर का, आसिक भरि दीया ।
दादू दर दीदार मैं, मतवाला कीया ॥ २३८ ॥
इसक सलोना आसिकाँ, दरगह थैं दीया ।
दर्द मोहब्बत प्रेम रस, प्याला भरि पीया ॥ २३९ ॥
दादू दिल दीदार दे, मतवाला कीया ।
जहँ अरस इलाही आप था, अपना करि लीया ॥२४०॥
दादू प्याला नूर दा, आसिक अरस पिवन्नि ।
अठे पहर अल्लाह दा, मुँह दिट्ठे जीवन्नि ॥ २४१ ॥
आसिक अमली साध सब, अलख दरीबे जाइ ।
साहिब दर दीदार मैं, सब मिलि बैठे आइ ॥ २४२ ॥
माते माते प्रेम रस, भरि भरि देइ खुदाइ ।
मस्तान मालिक करि लिये, दादू रहे ल्यौ लाइ ॥२४३॥

॥ अथाह भक्ति ॥

(दादू) भगति निरंजन राम की, अविचल अविनासी ।
सदा सजीवन आतमा, सहजैं परकासी ॥ २४४ ॥
(दादू) जैसा राम अपार है, तैसी भगति अगाध ।
इन दून्यूँ की मित* नहीं, सकल पुकारैं साध ॥ २४५ ॥
(दादू) जैसा अविगत राम है, तैसी भगति अलेख ।
इन दून्यूँ की मित नहीं, सहस मुखाँ कहै सेस ॥ २४६ ॥
(दादू) जैसा निर्गुण राम है, तैसी भगति निरंजन जाणि ।
इन दून्यूँ की मित नहीं, संत कहैं परवाणि† ॥ २४७ ॥
(दादू) जैसा पूरा राम है, तैसी पूरण भगति समान ।
इन दून्यूँ की मित नहीं, दादू नाहीं आन ॥२४८॥

---

* हद, अंदाज़ा । † प्रमाण ।

॥ निरंतर सेवा ॥

दादू जब लग राम है, तब लग सेवग होइ ।
अखंडित सेवा एक रस, दादू सेवग सोइ ॥ २४९ ॥

दादू जैसा राम है, तैसी सेवा जाणि ।
पावैगा तब करैगा, दादू सो परवाणि ॥ २५० ॥

(दादू) साईं सरीखा सुमिरन कीजै, साईं सरीखा गावै ।
साईं सरीखो सेवा कीजै, तब सेवग सुख पावै ॥२५१॥

(दादू) सेवग सेवा करि डरै, हम थैं कछू न होइ ।
तूँ है तैसी बंदगी, करि नहिं जाणै कोइ ॥ २५२ ॥

(दादू) जे साहिब मानै नहीं, तऊ न छाडौं सेव ।
यहि अवलंबनि* जीजिये, साहिब अलख अभेव ॥२५३॥

आदि अंत आगै रहै, एक अनूपम देव ।
निराकार निज निर्मला, कोई न जाणै भेव ॥ २५४ ॥

अबिनासी अपरंपरा, वार पार नहिं छेव† ।
सो तूँ दादू देखि ले, उर अंतरि करि सेव ॥ २५५ ॥

दादू भीतरि पैसि करि, घट के जड़ै कपाट ।
साईं की सेवा करै, दादू अविगत घाट ॥ २५६ ॥

घट परिचय सेवा करै, प्रत्तषि‡ देखै देव ।
अविनासी दर्सन करै, दादू पूरी सेव ॥ २५७ ॥

पूजणहारे पासि है, देही माहैं देव ।
दादू ता कौं छाडि करि, बाहरि माँडी सेव ॥ २५८ ॥

---

*आसरा, आधार । †अंत । ‡प्रत्यक्ष ।

॥ परचय ॥

दादू रमता राम सौं, खेलै अंतर माहिँ।
उलटि समाना आप मैं, सो सुख कतहूँ नाहिँ ॥ २५९ ॥
(दादू) जे जन बेधे प्रीत सौं, सो जन सदा सजीव।
उलटि समाने आप मैं, अंतर नाहीं पीव* ॥ २६० ॥
परघट खेलै पीव सौं, अगम अगोचर ठाँव।
एक पलक का देखणा, जिवन मरण का नाँव ॥ २६१ ॥
आतम माहैँ राम है, पूजा ता की होइ।
सेवा बंदन आरती, साध करैँ सब कोइ ॥ २६२ ॥
परचइ सेवा आरती, परचइ भोग लगाइ।
दादू उस परसाद की, महिमा कही न जाइ ॥ २६३ ॥
माहिँ निरंजन देव है, माहैँ सेवा होइ।
माहिँ उतारै आरती, दादू सेवग सोइ ॥ २६४ ॥
(दादू) माहैँ कीजै आरती, माहैँ पूजा होइ।
माहैँ सतगुरु सेविये, बूझै बिरला कोइ ॥ २६५ ॥
संत उतारैँ आरती, तन मन मंगलचार।
दादू बलि बलि वारणै†, तुम पर सिरजनहार ॥ २६६ ॥
दादू अबिचल आरती, जुग जुग देव अनंत।
सदा अखंडित एक रस, सकल उतारैँ संत ॥ २६७ ॥

॥ सौंज ॥

सति राम आत्मा बैश्नौ, सुबुधि भोमि संतोष थान।
मूल मंत्र मन माला, गुर तिलक सति संजम ॥
सील सुचया ध्यान धोवती, काया कलस प्रेम जल।
मनसा मंदिर निरंजन देव, आतमा पाती पुहुप प्रीति ॥

---

*अंतर=परदा—प्रीतम से फ़र्क़ या पर्दा नहीं रह गया। †बलिहारी।

चेतना चंदन नवधा नाँव, भाव पूजा मति पात्र ।
सहज समर्पण सबद घंटा, आनंद आरती दया प्रसाद ॥
अनिनि* एकदसा तीरथ सतसंग, दान उपदेस ब्रत सुमिरन ।
खट गुन ज्ञान अजपा जाप, अनभै आचार मरजादा राम ॥
फलदरसन अभि अंतरि, सदा निरंतर सति सौंज† दादू वर्तते ।
आत्मा उपदेस, अंतरगति पूजा ॥ २६८ ॥
पिव सौं खेलौं प्रेम रस, तौ जियरे जक‡ होइ ।
दादू पावै सेज सुख, पड़दा नाहीं कोइ ॥ २६९ ॥
सेवग बिसरै आप कौं, सेवा बिसरि न जाइ ।
दादू पूछै राम कौं, सो तत कहि समझाइ ॥ २७० ॥
ज्यौं रसिया रस पीवताँ, आपा भूलै और ।
यौं दादू रहि गया एक रस, पीवत पीवत ठौर ॥ २७१ ॥
जहँ सेवग तहँ साहिब बैठा, सेवग सेवा माहिं ।
दादू साईं सब करै, कोई जाणै नाहिं ॥ २७२ ॥
(दादू) सेवग साईं बस किया, सौंप्या सब परिवार ।
तब साहिब सेवा करै, सेवग के दरबार ॥ २७३ ॥
तेज पुंज को बिलसणा, मिलि खेलै इक ठाँव ।
भरि भरि पीवै राम रस, सेवा इस का नाँव ॥ २७४ ॥
अरस परस मिलि खेलिये, तब सुख आनँद होइ ।
तन मन मंगल चहुँ दिसि भये, दादू देखै सोइ ॥ २७५ ॥

॥ सुहाग ॥

मस्तक मेरे पाँव धरि, मंदिर माहैं आव ।
सइयाँ सोवै सेज पर, दादू चंपै पाँव ॥ २७६ ॥

---

*"अनन्य" अर्थात केवल एक जिस में दूसरे की गुंजाइश न हो । †आचार । ‡चैन, इतमीनान ।

ये चारिउँ पद पलँग के, साईं के सुख सेज ।
दादू इन पर बैसि करि, साईं सेतीं हेज* ॥ २७७ ॥
प्रेम लहरि की पालकी, आतम बैसै आइ ।
दादू खेलै पीव सौँ, यहु सुख कह्या न जाइ ॥ २७८ ॥

॥ सौँज ॥

(दादू) देव निरंजन पूजिये, पाती पंच चढ़ाइ ।
तन मन चंदन चरचिये, सेवा सुरति लगाइ ॥ २७९ ॥
भगति भगति सब को कहै, भगति न जाणै कोइ ।
दादू भगति भगवंत की, देह निरंतर होइ ॥ २८० ॥
देही माहैं देव है, सब गुण थैं न्यारा ।
सकल निरंतर भरि रह्या, दादू का प्यारा ॥ २८१ ॥
जीव पियारे राम कौँ, पाती पंच चढ़ाइ ।
तन मन मनसा सौँपि सब, दादू बिलम† न लाइ ॥२८२॥

॥ ध्यान ॥

सबद सुरति लै साजि चित, तन मन मनसा माहिँ ।
मति बुधि पंचौँ आतमा, दादू अनत न जाहिँ ॥ २८३ ॥
(दादू) तन मन पवना पंच गहि, ले राखै निज ठौर ।
जहाँ अकेला आप है, दूजा नाहीं और ॥ २८४ ॥
(दादू) यहु मन सुरति समेट करि, पंचअपूठे आणि‡ ।
निकट निरंजन लागि रहु, संगि सनेही जाणि ॥ २८५ ॥
मन चित मनसा आतमा, सहज सुरति ता माहिँ ।
दादू पंचौँ पूरि ले, जहँ धरती अंबर नाहिँ ॥ २८६ ॥
दादू भीगे प्रेम रस, मन पंचौँ का साथ ।
मगन भये रस मैं रहे, तब सनमुख त्रिभुवननाथ ॥२८७॥

---

*हेत । †देर । ‡मन और सुरति को समेट कर पंच इंद्रियाँ को पीछे (अपूठे) डाल दो ।

(दादू) सबदैं सबद समाइ ले, पर आतम सौं प्राण ।
यहु मन मन सौं बाँधि ले, चित्तैं चित्त सुजाण ॥२८८॥
(दादू) सहजैं सहज समाइ ले, ज्ञानैं बंध्या ज्ञान ।
सुत्रैं* सुत्र समाइ ले, ध्यानैं बंध्या ध्यान ॥ २८९ ॥
(दादू) दृष्टैं दृष्टि समाइ ले, सुरतैं सुरति समाइ ।
समझैं समझि समाई ले, लै सौं लै ले लाइ ॥ २९० ॥
(दादू) भावैं भाव समाइ ले, भगतैं भगति समान ।
प्रेमैं प्रेम समाइ ले, प्रीतैं प्रीति रस पान ॥ २९१ ॥
(दादू) सुरतैं सुरति समाइ रहु, अरु बैनहुँ सौं बैन ।
मन हीं सौं मन लाइ रहु, अरु नैनहुँ सौं नैन ॥ २९२ ॥
जहाँ राम तहँ मन गया, मन तहँ नैना जाइ ।
जहँ नैना तहँ आतमा, दादू सहजि समाइ ॥ २९३ ॥

॥ जीवन मुक्ति ॥

प्राण न खेलै प्राण सौं, मन ना खेलै मन ।
सबद न खेलै सबद सौं, दादू राम रतन ॥ २९४ ॥
चित्त न खेलै चित्त सौं, बैन न खेलै बैन ।
नैन न खेलै नैन सौं, दादू परघट ऐन ॥ २९५ ॥
पाक न खेलै पाक सौं, सार न खेलै सार ।
खूब न खेलै खूब सौं, दादू अंग अपार ॥ २९६ ॥
नूर न खेलै नूर सौं, तेज न खेलै तेज ।
जोति न खेलै जोति सौं, दादू एकै सेज† ॥ २९७ ॥
(दादू) पंच पदारथ मन रतन, पवणा माणिक होइ ।
आतम हीरा सुरति सौं, मनसा मोती पोइ ॥ २९८ ॥

---

* श्रोत्र=कान । † पलँग ।

अजब अनूपं हार है, साईं सरिखा सोइ ।
दादू आतम राम गलि,* जहाँ न देखै कोइ ॥ २९९ ॥
(दादू) पंचौं संगी संगि ले, आये आकासा ।
आसण अमर अलेख का, निर्गुण नित बासा ॥ ३०० ॥
प्राण पवन मन मगन है, सँगि सदा निवासा ।
परचा परम दयाल सौं, सहजैं सुख दासा ॥ ३०१ ॥
(दादू) प्राण पवन मन मणि बसै, त्रिकुटी केरे संधि ॥
पंचौं इंद्री पीव सौं, ले चरणौं बंधि ॥ ३०२ ॥
प्राण हमारा पीव सौं, यौं लागा सहिये ।
पुहप बास घृत दूध मैं, अब का सौं कहिये ॥ ३०३ ॥
पाहन लोह बिचि बासदेव, ऐसैं मिलि रहिये ।
दादू दीनदयाल सौं, संगहि सुख लहिये ॥ ३०४ ॥
(दादू) ऐसा बड़ा अगाध है, सूषिम जैसा अंग ।
पुहप बास थैं पातला, सो सदा हमारे संग ॥ ३०५ ॥
(दादू) जब दिल मिला दयाल सौं, तब अंतर कुछ नाहिं ।
ज्यौं पाला पाणी कौं मिल्या, त्यौं हरि जन हरि माहिं॥३०६॥
(दादू) जब दिल मिला दयाल सौं, तब सब पड़दा दूरि ।
ऐसै मिलि एकै भया, बहु दीपक पावक पूरि ॥ ३०७ ॥
(दादू) जब दिल मिला दयाल सौं, तब अंतर नाहीं रेख ।
नाना बिधि बहु भूषणाँ, कनक कसौटी एक ॥ ३०८ ॥
(दादू) जब दिल मिला दयाल सौं, तब पलक न पड़दा कोइ ।
डाल मूल फल बीज मैं, सब मिलि एकै होइ ॥ ३०९ ॥
फल पाका बेली तजी, छिटकाया मुख माहिं ।
साईं अपणा करि लिया, सो फिरि ऊगै नाहिं ॥ ३१० ॥

---

* गले मैं ।

(दादू) काया कटोरा दूध मन, प्रेम प्रीति सौं पाइ ।
हरि साहिब यहि बिधि अंचवै, बेगा बार न लाइ ॥३११॥
टगा टगी* जीवण मरण, ब्रह्म बराबरि होइ ।
परघट खेलै पीव सौं, दादू बिरला कोइ ॥ ३१२ ॥

॥ प्रेम प्याला ॥

दादू निवारा† ना रहै, ब्रह्म सरीखा होइ ।
लै समाधि रस पीजिये, दादू जब लगि दोइ ॥ ३१३ ॥
बेख़ुद ख़बर हुशियार बाशद, ख़ुद ख़बर पामाल ।
बेक़ीमती मस्तानः ग़लताँ, नूरे प्यालै ख़्याल ॥ ३१४‡ ॥
दादू माता प्रेम का, रस मैं रह्या समाइ ।
अंत न आवै जब लगैं, तब लगि पीवत जाइ ॥३१५॥
पीया तेता सुख भया, बाकी बहु बैराग ।
ऐसैं जन थाकै नहीं, दादू उनमन लाग ॥ ३१६ ॥
निकट निरंजन लागि रहु, जब लगि अलख अभेव ।
दादू पीवै राम रस, निहकामी निज सेव ॥ ३१७ ॥
राम रटनि छाडै नहीं, हरि लै लागा जाइ ।
बीचैं हीं अटकै नहीं, कला कोटि दिखलाइ§ ॥ ३१८ ॥
दादू हरि रस पीवताँ, कबहूँ अरुचि न होइ ।
पीवत प्यासा नित नवा‖, पीवणहारा सोइ ॥ ३१९¶ ॥

---

*एक तार, टकटकी । †न्यारा, दूर । ‡साखी ३१४ – दरअसल वही हुशियार (सचेत) है जो अपनी ख़बर से बेख़बर है यानी अपने तन मन की सुध बिसर गया है—जिस की अपने तन मन की ओर निगाह है (जो ख़ुद ख़बर है) वही बेहोश और ज़लील (पामाल) है–ऐसा अनमोल जन मालिक की याद के नशे के प्रकाश (नूर प्यालै ख़्याल) मैं मतवाला व झूमता रहता है । §अभ्यासी को रास्ते मैं बड़े मन-ललचावन चमत्कार व कौतुक दीख पड़ैंगे उन मैं अटकना न चाहिये । ‖नया । ¶हरि रस पीने से कभी अघाय नहीं; पीनेवाला उसी का नाम है जिसे हर घूंट के साथ नई प्यास जगै ।

(दादू) जैसे स्रवणाँ दोइ हैं, ऐसे हौंहिं अपार।
रामकथा रस पीजिये, दादू बारंबार ॥ ३२० ॥
जैसे नैनाँ दोइ हैं, ऐसे हौंहिं अनंत ।
दादू चंद चकोर ज्यौं, रस पीवै भगवंत ॥ ३२१ ॥
ज्यौं रसना मुख एक है, ऐसे हौंहिं अनेक ।
तौ रस पीवे सेस ज्यौं, यौं मुख मीठा एक ॥ ३२२ ॥
ज्यौं घटि आतम एक है, ऐसे हौंहिं असंख ।
भरि भरि राखै राम रस, दादू एकै अंक ॥ ३२३ ॥
ज्यौं ज्यौं पीवै राम रस, त्यौं त्यौं बढ़ै पियास ।
ऐसा कोई एक है, बिरला दादू दास ॥ ३२४ ॥
राता माता राम का, मतवाला महमंत ।
दादू पीवत क्यौं रहे,* जे जुग जाहिं अनंत ॥ ३२५ ॥
दादू निर्मल जोति जल, बरिषा बारह मास ।
तेहिं रस राता प्राणिया, माता प्रेम पियास ॥ ३२६ ॥
रोम रोम रस पीजिये, एती रसना होइ ।
दादू प्यासा प्रेम का, यौं बिन तृपति न होइ ॥ ३२७ ॥
तन गृह छाडै लाज पति, जब रस माता होइ ।
जब लगि दादू सावधान, कदे† न छाडै कोइ ॥ ३२८ ॥
आँगणि एक कलाल‡ के, मतवाला रस माहिं ।
दादू देख्या नैन भरि, ता के दुबिधा नाहिं ॥ ३२९ ॥
पीवत चेतन जब लगैं, तब लगि लेवै आइ ।
जब माता दादू प्रेम रस, तब काहे कौं जाइ ॥ ३३० ॥
दादू अंतर आतमा, पीवै हरि जल नीर ।
सौंज§ सकल लै उद्धरै, निर्मल होइ सरीर ॥ ३३१ ॥

---

* पीने से क्यों रुके । †कभी । ‡सतगुरु । §शौच=सफ़ाई ।

दादू मीठा राम रस, एक घूँट करि जाइ ।
पुणग* न पीछै कौं रहै, सब हिरदे माहिं समाइ ॥३३२
चिड़ी चंच भरि ले गई, नीर निघटि नहिं जाइ ।
ऐसा बासण ना किया, सब दरिया माहिं समाइ ॥३३३
दादू अमली राम का, रस बिन रह्या न जाइ ।
पलक एक पावै नहीं, तौ तबहि तलफि मरि जाइ ॥३३४
दादू राता राम का, पीवै प्रेम अघाइ ।
मतवाला दीदार का, माँगै मुक्ति बलाइ ॥ ३३५ ॥
उज्जल भँवरा हरि कँवल, रस रुचि बारह मास ।
पीवै निर्मल बासना, सो दादू निज दास ॥ ३३६ ॥
नैनहुँ सौं रस पीजिये, दादू सुरति सहेत ।
तन मन मंगल होत है, हरि सौं लागा हेत ॥ ३३७ ॥
पिवै पिलावै राम रस, माता है हुसियार ।
दादू रस पीवै घणाँ, औरौं का उपगार ॥ ३३८ ॥
नाना बिधि पिया राम रस, केती भाँति अनेक ।
दादू बहुत बिमेक† सौं, आतम अविगत एक ॥ ३३९ ॥
परचै का पय‡ प्रेम रस, जे कोई पीवै ।
मतवाला माता रहै, यौं दादू जीवै ॥ ३४० ॥
परचै का पय प्रेम रस, पीवै हित चित लाइ ।
मनसा बाचा कर्मना, दादू काल न खाइ ॥ ३४१ ॥
परचै पीवै राम रस, जुग जुग इस्थिर होइ ।
दादू अविचल आतमा, काल न लागै कोइ ॥ ३४२ ॥
परचै पीवै राम रस, सो अबिनासी अंग ।
काल मीच§ लागै नहीं, दादू साईं संग ॥ ३४३ ॥

*तनिक, कुछ । †बिबेक । ‡दूध । §मौत ।

परचै पीवै राम रस, सुख में रहै समाइ ।
मनसा बाचा कर्मना, दादू काल न खाइ ॥ ३४४ ॥
परचै पीवै राम रस, राता सिरजनहार ।
दादू कुछ ब्यापै नहीं, ते छूटे संसार ॥ ३४५ ॥
अमृत भोजन राम रस, काहे न बिलसै खाइ ।
काल बिचारा क्या करै, रमि रमि राम समाइ ॥ ३४६ ॥

॥ सजीवन ॥

(दादू) जिव अजया* बिघ† काल है, छेली जाया सोइ ।
जब कुछ बस नहिं काल का, तब मीनी‡ का मुख होइ ॥ ३४७
मन लौरू§ के पंख है, उनमन चढ़ै अकास ।
पग रहि पूरे साच के, रोपि॥ रह्या हरि पास ॥ ३४८ ॥
तन मन बिरष¶ बबूल का, काँटे लागे सूल ।
दादू माखण ह्वै गया, काहू का अस्थूल ॥ ३४९ ॥
दादू संखा** सबद है, सुनहा†† संसा‡‡ मारि ।
मन मींडक सौं मारिये, संक्या§§ सर्प निवारि ॥ ३५० ॥
दादू गाँभी॥॥ ज्ञान है, भंजन¶¶ है सब लोक ।
राम दूध सब भरि रह्या, ऐसा अमृत पोष ॥ ३५१ ॥
दादू झूठा जीव है, गढ़िया गोबिंद बैन ।
मंसा मँगी*** पंख सौं, सुरज सरीखे नैन ॥ ३५२ ॥
साईं दीया दत††† घणाँ, तिसका वार न पार ।
दादू पाया राम धन, भाव भगति दीदार ॥ ३५३ ॥

॥ इति परचा को अंग समाप्त ॥ ४ ॥

---

*बकरी । †भेड़िया । ‡मिन्नी, बिल्ली । §पक्षी । ॥जमाना, लगाना । ¶वृक्ष ।
**सिंह । ††कुत्ता । ‡‡संशय, चिंता । §§शंका=डर । ॥॥घी । ¶¶ भाजन=बरतन ।
***हरा । †††दात, बख़शिश ।

५—जरणा* को अंग

(दादू) नमो नमो निरंजनं, नमस्कार गुर देवतः ।
बंदनं सर्व साधवा, प्रणामं पारंगतः ॥ १ ॥
को साधू राखै राम धन, गुर बाइक बचन बिचार ।
गहिला दादू क्यौं रहै, मरकत हाथ गँवार ॥ २† ॥
(दादू) मन हीं माहैं समझि करि, मन हीं माहिं समाइ ।
मन हीं माहैं राखिये, बाहरि कहि न जणाइ ॥ ३ ॥
दादू समझि समाइ रहु, बाहरि कहि न जणाइ ।
दादू अद्भुत देखिया, तहँ ना को आवै जाइ ॥ ४ ॥
कहि कहि क्या दिखलाइये, साईं सब जाणै ।
दादू परघट का कहै, कुछ समझि सयाणै ॥ ५ ॥
दादू मन ही माहैं ऊपजै, मनहीं माहिं समाइ ।
मन हीं माहैं राखिये, बाहरि कहि न जणाइ ॥ ६ ॥
लै बिचार लागा रहै, दादू जरता जाइ ।
कबहूँ पेट न आफरै‡, भावै तेता खाइ ॥ ७ ॥
जिनि खोवै दादू राम धन, रिदै राखि जिनि जाइ ।
रतन जतन करि राखिये, चिंतामणि चित लाइ ॥ ८ ॥
सोई सेवग सब जरै, जेती उपजै आइ ।
कहि न जणावै और कौं, दादू माहिं समाइ ॥ ९ ॥
सोई सेवग सब जरै, जेता रस पीया ।
दादू गूझ§ गँभीर का, परकास न कीया ॥ १० ॥

---

* जरणा गुजराती भाषा में जरंबु शब्द से बना है, इस का अर्थ पचाना, हज़म करना, धारण करना, गुप्त रखना, शांति, क्षमा इत्यादि है–पं० चंद्रिका प्रसाद । † कोई बिरला साधू गुर बचन को बिचार कर नाम रूपी धन को सम्हाले रखता है; यह धन मूर्खों के पास नहीं टिकता जैसे गँवार के पल्ले रत्न [मरकत=पन्ना] । ‡ अफरै, फूलै । § गूढ़, गुप्त ।

सोई सेवग सब जरै, जे अलख लखावा ।
दादू राखै राम धन, जेता कुछ पावा ॥ ११ ॥
सोई सेवग सब जरै, प्रेम रस खेला ।
दादू सो सुख कस कहै, जहँ आप अकेला ॥ १२ ॥
सोई सेवग सब जरै, जेता घट परकास ।
दादू सेवग सब लखै, कहि न जणावै दास ॥ १३ ॥
अजर जरै रसना झरै, घटि माहिँ समावै ।
दादू सेवग सो भला, जे कहि न जणावै ॥ १४ ॥
अजर जरै रसना झरै, घट अपना भरि लेइ ।
दादू सेवग सो भला, जारै जाण न देइ ॥ १५ ॥
अजर जरै रसना झरै, जेता सब पीवै ।
दादू सेवग सो भला, राखै रस जीवै ॥ १६ ॥
अजर जरै रसना झरै, पीवत थाकै नाहिँ ।
दादू सेवग सो भला, भरि राखै घट माहिँ ॥ १७ ॥
जरणा जोगी जुगि जुगि जीवै, झरणा मरि मरि जाइ ।
दादू जोगी गुरमुखी, सहजैँ रहै समाइ ॥ १८ ॥
जरणा जोगी जुगि रहै, झरणा परलै होइ ।
दादू जोगी गुरमुखी, सहजि समाना सोइ ॥ १९ ॥
जरणा जोगी थिर रहै, झरणा घट फूटै ।
दादू जोगी गुरमुखी, काल थैँ छूटै ॥ २० ॥
जरणा जोगी जग-पती, अबिनासी अवधूत ।
दादू जोगी गुरमुखी, निरंजन का पूत ॥ २१ ॥
जरै सु नाथ निरंजन बाबा, जरै सु अलख अभेव ।
जरै सु जोगी सब की जीवनि, जरै सु जग मैँ देव ॥२२॥

जरै सु आप उपावनहारा, जरै सु जग-पति साईं ।
जरै सु अलख अनूप है, जरै सु मरणा नाहीं ॥ २३ ॥
जरै सु अविचल राम है, जरै सु अमर अलेख ।
जरै सु अविगत आप है, जरै सु जग मैं एक ॥ २४ ॥
जरै सु अविगत आप है, जरै सु अपरंपार ।
जरै सु अगम अगाध है, जरै सु सिरजनहार ॥ २५ ॥
जरै सु निज निरकार है, जरै सु निज निर्धार ।
जरै सु निज निर्गुण मई, जरै सु निज तत सार ॥ २६ ॥
जरै सु पूरण ब्रह्म है, जरै सु पूरणहार ।
जरै सु पूरण परम गुर, जरै सु प्राण हमार ॥ २७ ॥
(दादू) जरै सु जोति सरूप है, जरै सु तेज अनंत ।
जरै सु झिलिमिलि नूर है, जरै सु पुंज रहंत ॥ २८ ॥
(दादू) जरै सु परम प्रकास है, जरै सु परम उजास ।
जरै सु परम उदीत है, जरै सु परम बिलास ॥ २९ ॥
(दादू) जरै सु परम पगार है, जरै सु परम बिगास ।
जरै सु परम प्रभास है, जरै सु परम निवास ॥ ३० ॥
(दादू) एक बोल भूले हरी, सु कोइ न जाणै प्राण ।
औगुण मन आणै नहीं, और सब जाणै हरि जाण ॥३१॥
(दादू) तुम जीवौं के औगुण तजे, सु कारण कौण अगाध।
मेरी जरणा देखि करि, मति को सीखै साध ॥ ३२ ॥
पवना पानी सब पिया, धरती अरु आकास ।
चंद सूर पावक मिले, पंचौं एक गरास ॥ ३३ ॥
चौदह तीन्यूँ लोक सब, ठूँगे* साँसै साँस ।
दादू साधू सब जरै, सतगुर के बेसास† ॥ ३४ ॥

॥ इति जरणा को अंग समाप्त ॥ ५ ॥

* ठूँसे, निगले । † बिश्वास ।

६—हैरान को अंग

(दादू) नमो नमो निरंजनं, नमस्कार गुर देवतः ।
बंदनं सर्व साधवा, प्रणामं पारंगतः ॥ १ ॥
रतन एक बहु पारिखू, सब मिलि करैं बिचार ।
गूँगे गहिले बावरे, दादू वार न पार ॥ २ ॥
केते पारिख जौहरी, पंडित ज्ञाता ध्यान ।
जाण्या जाइ न जाणिये, का कहि कथिये ज्ञान ॥ ३ ॥
केते पारिख पचि मुए, कीमति कही न जाइ ।
दादू सब हैरान हैं, गूँगे का गुड़ खाइ ॥ ४ ॥
सब ही ज्ञानी पंडिता, सुर नर रहे उरझाइ ।
दादू गति गोबिंद की, क्यौं ही लखी न जाइ ॥ ५ ॥
जैसा है तैसा नाउँ तुम्हारा, ज्यौं है त्यौं कहि साईं ।
तूँ आपै जाणै आप कौं, तहँ मेरी गमि नाहीं ॥ ६ ॥
केते पारिख अंत न पावैं, अगम अगोचर माहीं ।
दादू कीमति कोइ न जाणै, खीर नीर की नाईं ॥ ७ ॥
जीव ब्रह्म सेवा करै, ब्रह्म बराबरि होइ ।
दादू जाणै ब्रह्म कौं, ब्रह्म सरीखा सोइ ॥ ८ ॥
वार पार को ना लहै, कीमति लेखा नाहिं ।
दादू एकै नूर है, तेज पुंज सब माहिं ॥ ९ ॥
हस्त पाँव नहिं सीस मुख, स्रवन नेत्र कहुँ कैसा ।
दादू सब देखै सुणै, कहै गहै है ऐसा ॥ १० ॥
पाया पाया सब कहैं, केतक देहुँ दिखाइ ।
कीमति किनहूँ ना कही, दादू रहु ल्यौ लाइ ॥ ११ ॥

अपना भंजन[*] भरि लिया, उहाँ उता ही जाणि ।
अपणी अपणी सब कहैं, दादू बिड़द[†] बखाणि ॥ १२ ॥

पार न देवै आपणा, गोप गूझ[‡] मन माहिं ।
दादू कोई ना लहै, केते आवैं जाहिं ॥ १३ ॥

गूँगे का गुड़ का कहूँ, मन जानत है खाइ ।
त्यौं राम रसाइण पीवताँ, सो सुख कह्या न जाइ ॥१४॥

(दादू) एक जीभ केता कहूँ, पूरण ब्रह्म अगाध ।
बेद कतेबाँ मिति[§] नहीं, थकित भये सब साध ॥ १५ ॥

दादू मेरा एक मुख, किरति अनंत अपार ।
गुण केते परिमिति[‖] नहीं, रहे बिचारि बिचारि ॥ १६ ॥

सकल सिरोमणि नाँउ है, तूँ है तैसा नाहिं ।
दादू कोई ना लहै, केते आवैं जाहिं ॥ १७ ॥

दादू केते कहि गये, अंत न आवै ओर ।
हम हूँ कहते जात हैं, केते कहसी होर[¶] ॥ १८ ॥

(दादू) मैं का जानूँ का कहूँ, उस बलिये[**] की बात ।
क्या जानूँ क्यौंहीं रहै, मो पै लख्या न जात ॥ १९ ॥

दादू केते चलि गये, थाके बहुत सुजान ।
बातौं नाँव न नीकलै, दादू सब हैरान ॥ २० ॥

ना कहिं दिट्ठा ना सुण्या, ना कोइ आखणहार ।
ना कोइ उत्तौं थीं फिर्‌या, ना उर वार न पार ॥ २१ ॥

नहीं मृतक नहिं जीवता, नहिं आवै नहिं जाइ ।
नहिं सूता नहिं जागता, नहिं भूखा नहिं खाइ ॥२२॥

---

*बरतन । †प्रतिज्ञा । ‡गुप्त और छिपा । §अंदाज़ । ‖नाप, तादाद, हद । ¶और । **बलवान ।

न तहाँ चुप नहिं बोलणाँ, मैं तैं नाहीं कोइ ।
दादू आपा पर नहीं, न तहाँ एक न दोइ ॥ २३ ॥
एक कहूँ तौ दोइ है, दोइ कहूँ तौ एक ।
यौं दादू हैरान है, ज्यौं है त्यौं हीं देख ॥ २४ ॥
देखि दिवाने ह्वै गये, दादू खरे सयान ।
वार पार कोइ ना लहै, दादू है हैरान ॥ २५ ॥
(दादू) करणहार जे कुछ किया, सोई हूँ करि जाणि ।
जे तूँ चतुर सयाना जानराइ*, तौ याही परवाणि ॥२६॥
(दादू) जिन मोहन बाजी रची, सो तुम पूछौ जाइ ।
अनेक एक थैं क्यौं किये, साहिब कहि समझाइ ॥२७॥
घट परिचै सब घट लखै, प्राण परीचै प्राण ।
ब्रह्म परीचै पाइये, दादू है हैराण ॥ २८ ॥ (४-१५९)
चर्म दृष्टि देखे बहुत, आतम दृष्टी एकि ।
ब्रह्म दृष्टि परिचै भया, दादू बैठा देखि ॥२९॥ (४-१५७)
येई नैनाँ देह के, येई आतम होइ ।
येई नैनाँ ब्रह्म के, दादू पलटे दोइ ॥ ३० ॥ (४-१५८)

॥ इति हैरान को अंग समाप्त ॥६॥

---

* जानकारों का राजा, भारी जनैया ।

७—लय को अंग

(दादू) नमो नमो निरंजनं, नमस्कार गुर देवतः ।
बंदनं सर्व साधवा, प्रणामं पारंगतः ॥ १ ॥

(दादू) लय लागी तब जाणिये, जे कबहूँ छूटि न जाइ ।
जीवत यौं लागी रहै, मूवाँ मंझि समाइ ॥ २ ॥

(दादू) जे नर प्राणी लय गता, सोई गत ह्वै जाइ ।
जे नर प्राणी लय रता, सो सहजैं रहै समाइ ॥ ३ ॥

सब तजि गुण आकार के, निहचल मन ल्यौ लाइ ।
आतम चेतन प्रेम रस, दादू रहै समाइ ॥ ४ ॥

तन मन पवना पंच गहि, निरंजन ल्यौ लाइ ।
जहँ आतम तहँ परआतमा, दादू सहजि समाइ ॥ ५ ॥

अर्थ अनूपम आप है, और अनरथ भाई ।
दादू ऐसी जानि करि, ता सौं ल्यौ लाई ॥ ६ ॥

ज्ञान भगति मन मूल गहि, सहज प्रेम ल्यौ लाइ ।
दादू सब आरंभ तजि, जिनि काहू सँग जाइ ॥ ७ ॥

पहिली था सो अब भया, अब सो आगैं होइ ।
दादू तीनौं ठौर की, बूझै बिरला कोइ ॥ ८ ॥

जोग समाधि सुख सुरति सौं, सहजैं सहजैं आव ।
मुक्ता द्वारा महल का, इहै भगति का भाव ॥ ९ ॥

सहज सुन्नि मन राखिये, इन दून्यूँ के माहिं ।
लय समाधि रस पीजिये, तहाँ काल भय नाहिं ॥ १० ॥

(दादू) बिन पाइन का पंथ है, क्यौंकरि पहुँचै प्राण । (१-१३५)
बिकट घाट औघट खरे, माहिं सिखर असमान ॥ ११ ॥

मन ताजी चेतन चढ़ै, ल्यौ की करै लगाम। (१-१३६)
सब्द गुरू का ताजणाँ, कोइ पहुँचै साध सुजान ॥ १२ ॥

प्रश्न–किहिं मारग ह्वै आइया, किहिं मारग ह्वै जाइ।
दादू कोई ना लहै, केते करैं उपाइ ॥ १३ ॥

उत्तर–सुन्नहिं मारग आइया, सुन्नहिं मारग जाइ।
चेतन पैंडा सुरति का, दादू रहु ल्यौ लाइ ॥ १४ ॥

(दादू) पारब्रह्म पैंडा दिया, सहज सुरति लै सार।
मन का मारग माहिं घर, संगी सिरजनहार ॥ १५ ॥

राम कहै जिस ज्ञान सौं, अमृत रस पीवै।
दादू दूजा छाडि सब, लै लागी जीवै ॥ १६ ॥

राम रसाइन पीवताँ, जीव ब्रह्म ह्वै जाइ।
दादू आतम राम सौं, सदा रहै ल्यौ लाइ ॥ १७ ॥

सुरति समाइ सनमुख रहै, जुगि जुगि जन पूरा।
दादू प्यासा प्रेम का, रस पीवै सूरा ॥ १८ ॥

(दादू) जहाँ जगत-गुर* रहत है, तहँ जे सुरति समाइ।
तौ इन हीं नैनौं उलटि करि, कौतिग† देखै आइ ॥ १९ ॥

अख्यूँ पसण खे पिरी, भीरे उलटौं मंझ।
जिते वेठो माँ पिरी, नीहारी दौ हंभ ॥ २०‡ ॥

दादू उलटि अपूठा§ आप मैं, अंतरि सोधि सुजाण।
सो ढिग तेरी बावरे, तजि बाहिर की बाणि‖ ॥ २१ ॥

सुरति अपूठी§ फेरि करि, आतम माहैं आण।
लागि रहै गुरदेव सौं, दादू सोई सयाण ॥ २२ ॥

---

* निरंजन। † कौतुक। ‡ आँखों को अंतर में फेर कर प्रीतम को देख, जहाँ मेरा प्रीतम बैठा है उस को हंस ही लख सकते हैं। § पीछे। ‖ सुभाव, आदत।

जहँ आतम तहँ राम है, सकल रह्या भरपूर ।
अंतरगति ल्यौ लाइ रहु, दादू सेवग सूर ॥ २३ ॥
(दादू) अंतरगति ल्यौ लाइ रहु, सदा सुरति सौँ गाइ ।
यहु मन नाचै मगन ह्वै, भावै ताल बजाइ ॥ २४ ॥
(दादू) गावै सुरति सौँ, बाणी बाजै ताल ।
यहु मन नाचै प्रेम सौँ, आगैँ दीनदयाल ॥ २५ ॥
(दादू) सब बातन की एक है, दुनिया थैँ दिल दूरि ।
साईं सेती संग करि, सहज सुरति लै पूरि ॥ २६ ॥
दादू एक सुरति सौँ सब रहै, पंचौँ उनमन लाग ।
यहु अनभै उपदेस यहु, यहु परम जोग बैराग ॥ २७ ॥
(दादू) सहजैँ सुरति समाइ ले, पारब्रह्म के अंग ।
अरस परस मिलि एक ह्वै, सनमुख रहिबा संग ॥ २८ ॥
सुरति सदा सनमुख रहै, जहाँ तहाँ लैलीन ।
सहज रूप सुमिरन करै, निहकर्मी दादू दीन ॥ २९ ॥
सुरति सदा स्याबति* रहै, तिन के मोटे भाग ।
दादू पीवै राम रस, रहै निरंजन लाग ॥ ३० ॥
दादू सेवा सुरति सौँ, प्रेम प्रीति सौँ लाइ ।
जहँ अबिनासी देव है, तहँ सुरति बिना को जाइ ॥३१॥
(दादू) ज्यौँ वै बरत गगन थैँ टूटै, कहाँ धरनि कहँ ठाम ।
लागी सुरति अंग थैँ छूटै, सो कत† जीवै राम ॥ ३२ ॥
सहज जोग सुख मैँ रहै, दादू निर्गुण जाणि ।
गंगा उलटी फेरि करि, जमुना माहैँ आणि ॥ ३३ ॥
परआतम सो आतमा, ज्यौँ जल उदक‡ समान ।
तन मन पाणी लौँण ज्यौँ, पावै पद निर्बाण ॥ ३४ ॥

---

*साबित=स्थिर । †कहाँ । ‡जल ।

मन हीं सौं मन सेविये, ज्यौं जल जलहि समाय ।
आतम चेतन प्रेम रस, दादू रहु ल्यौ लाइ ॥ ३५ ॥
छाड़ै सुरति सरीर कौं, तेज पुंज मैं आइ । (४-१६२)
दादू ऐसैं मिलि रहै, ज्यौं जल जलहि समाइ ॥ ३६ ॥
यौं मन तजै सरीर कौं, ज्यौं जागत सो* जाइ ।
दादू बिसरै देखतौं, सहजि सदा ल्यौ लाइ ॥ ३७ ॥
जिहि आसणि पहिली प्राण था, तेहि आसणि ल्यौ लाइ ।
जे कुछ था सोई भया, कछू न ब्यापै आइ ॥ ३८ ॥
तन मन अपणा हाथ करि, ताही सौं ल्यौ लाइ ।
दादू निर्गुण राम सौं, ज्यौं जल जलहि समाइ ॥ ३९ ॥
एक मना लागा रहै, अंत मिलैगा सोइ ।
दादू जाके मन बसै, ता कौं दरसन होइ ॥ ४० ॥
दादू निबहै त्यूँ चलै, धरि धीरज मन माहिँ ।
परसैगा पिव एक दिन, दादू थाके नाहिँ ॥ ४१ ॥
जब मन मिर्तक ह्वै रहै, इंद्री बल भागा ।
काया के सब गुण तजै, नीरंजन लागा ॥ ४२ ॥
आदि अंत मधि एक रस, टूटै नहिँ धागा ।
दादू एकै रहि गया, तब जाणी जागा ॥ ४३ ॥
जब लगि सेवग तन धरै, तब लगि दूसर आहि ।
एकमेक ह्वै मिलि रहै, तौ रस पीवन थैं जाहि ॥४४॥
ये दूनयूँ ऐसी कहैं, कीजै कौण उपाइ ।
ना मैं एक न दूसरा, दादू रहु ल्यौ लाइ ॥ ४५ ॥

॥ इति लय को अंग समाप्त ॥ ७ ॥

---

*सोय जाय, नींद मैं हो जाय ।

८--निहकर्मी पतिब्रता को अंग

(दादू) नमो नमो निरंजनं, नमस्कार गुर देवत: ।
बंदनं सर्व साधवा, प्रणामं पारंगत: ॥ १ ॥
एक तुम्हारे आसिरै, दादू इहि बेसास* ।
राम भरोसा तोर है, नहिं करणी की आस ॥ २ ॥
रहणी राजस ऊपजै, करणी आपा होइ ।
सब थैं दादू निर्मला, सुमिरण लागा सोइ ॥ ३ ॥
(दादू) मन अपणा लैलीन करि, करणी सब जंजाल ।
दादू सहजैं निर्मला, आपा मेटि सँभाल ॥ ४ ॥
(दादू) सिद्धि हमारे साइयाँ, करामात करतार ।
रिद्धि हमारे राम हैं, आगम अलख अपार ॥ ५ ॥
गोब्यंद गोसाईं तुम्हैं अम्हंचा† गुरू, तुम्हैं अम्हंचा ज्ञान ।
तुम्हैं अम्हंचा देव, तुम्हैं अम्हंचा ध्यान ॥ ६ ॥
तुम्हैं अम्हंची पूजा, तुम्हैं अम्हंची पाती ।
तुम्हैं अम्हंचा तीरथ, तुम्हैं अम्हंचा जाती ॥ ७ ॥
तुम्हैं अम्हंचा नाद, तुम्हैं अम्हंचा भेद ।
तुम्हैं अम्हंचा पुराण, तुम्हैं अम्हंचा बेद ॥ ८ ॥
तुम्हैं अम्हंची जुगत, तुम्हैं अम्हंचा जोग ।
तुम्हैं अम्हंचा बैराग, तुम्हैं अम्हंचा भोग ॥ ९ ॥
तुम्हैं अम्हंची जीवनि, तुम्हैं अम्हंचा जप ।
तुम्हैं अम्हंचा साधन, तुम्हैं अम्हंचा तप ॥ १० ॥
तुम्हैं अम्हंचा सील, तुम्हैं अम्हंचा संतोष ।
तुम्हैं अम्हंची मुकति, तुम्हैं अम्हंचा मोष ॥ ११ ॥

---

*बिश्वास । †अमचा=हमारा ।

तुम्हैँ अम्हंचा सिव, तुम्हैँ अम्हंची सक्ति ।
तुम्हैँ अम्हंचा आगम, तुम्हैँ अम्हंची उक्ति ॥ १२ ॥
तूँ सति तूँ अवगति तूँ अपरंपार, तूँ निराकार तुम्हंचा* नाम
दादू चा† बिस्राम, देहु देहु अवलंबन राम ॥ १३ ॥
(दादू) राम कहूँ ते जोड़िबा, राम कहूँ ते साखि ।
राम कहूँ ते गाइबा, राम कहूँ ते राखि ॥ १४‡ ॥
(दादू) कुल हमारे केसवा, सगा त सिरजनहार ।
जाति हमारी जगत-गुर, परमेसुर परिवार ॥ १५ ॥
(दादू) एक सगा संसार मैँ, जिन हम सिरजे सोइ ।
मनसा बाचा कर्मना, और न दूजा कोइ ॥ १६ ॥
साईँ सन्मुख जीवताँ, मरताँ सन्मुख होइ ।
दादू जीवण मरण का, सोच करै जिनि कोइ ॥ १७ ॥
साहिब मिल्या त सब मिले, भैँटे भैँटा होइ ।
साहिब रह्या त सब रहे, नहीं त नाहीं कोइ ॥ १८ ॥
साहिब रहताँ सब रह्या, साहिब जाताँ जाइ ।
दादू साहिब राखिये, दूजा सहज सुभाइ ॥ १९ ॥
सब सुख मेरे साइयाँ, मंगल अति आनंद ।
दादू सज्जन सब मिले, जब भैँटे परमानंद ॥ २० ॥
दादू रीझै राम पर, अनत न रीझै मन ।
मीठा भावै एक रस, दादू सोई जन ॥ २१ ॥
(दादू) मेरे हिरदे हरि बसै, दूजा नाहीं और ।
कहौ कहाँ धौँ राखिये, नहीं आन कौँ ठौर ॥ २२ ॥

---

*तुमचा=तुम्हारा । †का । ‡नाम का सुमिरन ही मेरा पद जोड़ना है, वही मेरी साखी, वही मेरा गाना, वहो मेरी धारना है—पं० चं० प्र० ।

(दादू) नारायण नैना बसै, मन हीं मोहनराइ ।
हिरदा माहैं हरि बसै, आतम एक समाइ ॥ २३ ॥
परम कथा उस एक की, दूजा नाहीं आन ।
दादू तन मन लाइ करि, सदा सुरति रस पान ॥ २४* ॥
(दादू) तन मन मेरा पीव सौं, एक सेज सुख सोइ ।
गहिला लोग न जाणही, पचि पचि आपा खोइ ॥२५॥
(दादू) एक हमारे उरि बसै, दूजा मेल्या† दूरि ।
दूजा देखत जाइगा, एक रह्या भरपूर ॥ २६ ॥
निहचल का निहचल रहै, चंचल का चलि जाइ ।
दादू चंचल छाडि सब, निहचल सौं ल्यौ लाइ ॥२७॥
साहिब रहताँ सब रह्या, साहिब जाताँ जाइ ।
दादू साहिब राखिये, दूजा सहज सुभाइ ॥ २८ ॥
मन चित मनसा पलक मैं, साईं दूरि न होइ ।
निहकामी निरखै सदा, दादू जीवनि सोइ ॥ २९ ॥
जहाँ नाँव तहँ नीति चाहिये, सदा राम का राज ।
निर्बिकार तन मन भया, दादू सीझे‡ काज ॥ ३० ॥
जिसकी खूबी खूब सब, सोई खूब सँभारि ।
दादू सुंदरि खूब सौं, नख सिख साज सँवारि ॥ ३१ ॥
(दादू) पंच अभूषन पीव करि, सोलह सब ही ठाँव ।
सुंदरि यहु सिंगार करि, लै लै पिव का नाँव ॥ ३२ ॥
यह ब्रत सुंदरि लै रहै, तौ सदा सुहागनि होइ ।
दादू भावै पीव कौं, ता सम और न कोइ ॥ ३३ ॥

---

*यह साखी केवल साधू दयालसरन जी की लिपि मैं दी हुई है। †डाला।
‡सरे, बने।

साहिब जी का भावताँ, कोइ करै कलि माहिँ ।
मनसा बाचा कर्मना, दादू घट घट नाहिँ ॥ ३४ ॥
अज्ञा माहैँ बैसै ऊबै*, अज्ञा आवै जाइ ।
अज्ञा माहिँ लेवै देवै, अज्ञा पहिरै खाइ ॥ ३५ ॥
अज्ञा माहैँ बाहरि भीतरि, अज्ञा रहै समाइ ।
अज्ञा माहैँ तन मन राखै, दादू रहि ल्यौ लाइ ॥ ३६ ॥
पतिब्रता गृह आपणे, करै खसम की सेव ।
ज्यौँ राखै त्यौँ हीं रहै, अज्ञाकारी टेव† ॥ ३७ ॥
(दादू) नीच ऊँच कुल सुंदरी, सेवा सारी होइ ।
सोई सुहागनि कीजिये, रूप न पीजै धोइ ॥ ३८ ॥
(दादू) जब तन मन सौंप्या राम कौँ, ता सनि का बिभिचार ।
सहज सील संतोष सत, प्रेम भगति लै सार ॥ ३९ ॥
पर पुरिषा‡ सब परिहरै, सुंदरि देखै जागि ।
अपणा पीव पिछाणि करि, दादू रहिये लागि ॥ ४० ॥
आन पुरिष हूँ बहनड़ी, परम पुरिष भरतार ।
हूँ अबला समझौँ नहीं, तूँ जाणै करतार ॥ ४१ ॥
जिस का तिस कौँ दीजिये, साईं सन्मुख आइ ।
दादू नख सिख सौंपि सब, जिनि यहु बंट्या§ जाइ ॥४२॥
सारा दिल साईं सौँ राखै, दादू सोई सयान ।
जे दिल बंटै आपणा, सो सब मूढ़ अयान ॥ ४३ ॥
(दादू) सारौँ सौँ दिल तोरि करि, साईं सौँ जोरै ।
साईं सेती जोरि करि, काहे कौँ तोरै ॥ ४४ ॥
साहिब देवै राखणा‖, सेवग दिल चोरै ।
दादू सब धन साह का, भूला मन थोरै¶ ॥ ४५ ॥

*बैठै उठै । †आदत, सुभाव । ‡पुरुष । §बाँटा । ‖अमानत । ¶तुच्छ बुद्धि ।

(दादू) मनसा बाचा कर्मना, अंतरि आवै एक ।
ता कौं परतषि* रामजी, बातैं और अनेक ॥ ४६ ॥
(दादू) मनसा बाचा कर्मना, हिरदै हरि का भाव ।
अलख पुरिष आगे खड़ा, ता कै त्रिभुवन राव ॥ ४७ ॥
(दादू) मनसा बाचा कर्मना, हरिजी सौं हित होइ ।
साहिब सन्मुख संगि है, आदि निरंजन सोइ ॥ ४८ ॥
(दादू) मनसा बाचा कर्मना, आतुर कारणि राम ।
समरथ साईं सब करै, परगट पूरे काम ॥ ४९ ॥
नारी पुरिषा देखि करि, पुरिषा नारी होइ ।
दादू सेवग राम का, सीलवंत है सोइ ॥ ५० ॥
पर पुरिषा रत बाँझणी,† जाणै जे फल होइ ।
जनम बिगोवै आपणा, दादू निर्फल सोइ ॥ ५१ ॥
दादू तजि भरतार कौं, पर पुरिषा रत होइ ।
ऐसी सेवा सब करै, राम न जाणै सोइ ॥ ५२ ॥
नारी सेवग तब लगैं, जब लग साईं पास ।
दादू परसै आन कौं, ता की कैसी आस ॥ ५३ ॥
दादू नारी पुरिष कौं, जाणै जे बसि होइ ।
पिव की सेवा ना करै, कामणिगारी‡ सोइ ॥ ५४ ॥
कीया मन का भावताँ, मेटी आज्ञाकार ।
क्या ले मुख दिखलाइये, दादू उस भरतार ॥ ५५ ॥
करामाति§ कलंक है, जा के हिरदै एक ।
अति आनँद बिभिचारणी, जा के खसम अनेक ॥ ५६ ॥
(दादू) पतिब्रता के एक है, बिभिचारणि के दोइ ।
पतिब्रता बिभिचारणी, मेला क्यौंकरि होइ ॥ ५७ ॥

---

*प्रत्यक्ष । †बाँझ । ‡टोनहिन, डाइन । §चमत्कार, सिद्धि शक्ति ।

पतिव्रता के एक है, दूजा नाहीं आन ।
बिभिचारणि के दोइ हैं, पर घर एक समान ॥ ५८ ॥
(दादू) पुरिष हमारा एक है, हम नारी बहु अंग ।
जे जे जैसी ताहि सौं, खेलै तिसही रंग ॥ ५९ ॥
दादू रहता राखिये, बहता देहु बहाइ ।
बहते संग न जाइये, रहते सौं ल्यौ लाइ ॥ ६० ॥
जिनि बाझै काहू कर्म सौं, दूजे आरँभ* जाइ ।
दादू एकै मूल गहि, दूजा देइ बहाइ ॥ ६१ ॥
बावैं देखि न दाहिणे, तन मन सन्मुख राखि ।
दादू निर्मल तत्त गहि, सत्य सबद यहु साखि ॥ ६२ ॥
(दादू) दूजा नैन न देखिये, स्रवणहुँ सुनै न जाइ ।
जिभ्या आन न बोलिये, अंग न और सुहाइ ॥ ६३ ॥
चरणहुँ अनत न जाइये, सब उलटा माहिं समाइ ।
उलटि अपूठा आप मैं, दादू रहु ल्यौ लाइ ॥ ६४ ॥
(दादू) दूजे अंतर होत है, जिनि आणै मन माहिं ।
तहँ ले मन कौं राखिये, जहँ कुछ दूजा नाहिं ॥ ६५ ॥
भरम तिमर भाजै नहीं, रे जिय आन उपाइ ।
दादू दीपक साजि ले, सहजैं ही मिटि जाइ ॥ ६६ ॥
(दादू) सो बेदन† नहिं बावरे, आन‡ किये जे जाइ ।
सब दुख-भंजन§ साइयाँ, ताही सौं ल्यौ लाइ ॥ ६७ ॥
(दादू) औषदि मूली कुछ नहीं, ये सब झूठी बात ।
जे औषदि ही जीविये, तौ काहे कौं मरि जात ॥ ६८ ॥

* नया काम, उलझेड़ा । † पीड़ा । ‡ दूसरे के । § दुख-निवारन ।

मूल गहै सो निहचल बैठा, सुख मैं रहै समाइ ।
डाल पात भरमत फिरै, बेदौं* दिया बहाइ ॥ ६९ ॥
सौ धक्का सुनहाँ† कौं देवै, घर बाहरि काढै ।
दादू सेवग राम का, दरबार न छाडै ॥ ७० ॥
साहिब का दर छाडि करि, सेवग कहीं न जाइ ।
दादू बैठा मूल गहि, डालौं फिरै बलाइ ॥ ७१ ॥
(दादू) जब लग मूल न सींचिये, तब लग हस्या न होइ ।
सेवा निरफल सब गई, फिरि पछिताना सोइ ॥ ७२ ॥
दादू सींचे मूल के, सब सींच्या बिस्तार ।
दादू सींचे मूल बिन, बादि गई बेगार ॥ ७३ ॥
सब आया उस एक मैं, डाल पान फल फूल ।
दादू पीछैं क्या रह्या, जब निज पकड़्या मूल ॥ ७४ ॥
खेत न निपजै बीज बिन, जल सींचे क्या होइ ।
सब निरफल दादू राम बिन, जाणत है सब कोइ ॥७५॥
(दादू) जब मुख माहैं मेलिये, तब सबही तृप्ता होइ ।
मुख बिन मेले आन दिस, तृप्ति न मानै कोइ ॥ ७६ ॥
जब देव निरंजन पूजिये, तब सब आया उस माहिं ।
डाल पान फल फूल सब, दादू न्यारे नाहिं ॥ ७७ ॥
दादू टीका राम कौं, दूसर दीजै नाहिं ।
ज्ञान ध्यान तप भेष पष,‡ सब आये उस माहिं ॥७८॥
साधू राखै राम कौं, संसारी माया ।
संसारी पालव§ गहै, मूल साधू पाया ॥ ७९ ॥
दादू जे कुछ कीजिये, अविगत बिन आराध ।
कहिबा सुणिबा देखिबा, करिबा सब अपराध ॥ ८० ॥

---

* बेद कतेब । † कुत्ता । ‡ पक्ष या टेक । § पत्ता ।

सब चतुराई देखिये, जे कुछ कीजै आन ।
दादू आपा सौंपि सब, पिव कौं लेहु पिछान ॥ ८१ ॥
दादू दूजा कुछ नहीं, एक सत्त करि जाणि ।
दादू दूजा क्या करै, जिन एक लिया पहिचाणि ॥ ८२ ॥
(दादू) कोई बांछै मुकति फल, कोइ अमरापुरि बास ।
कोई बांछै परम गति, दादू राम मिलन की प्यास ॥८३॥
तुम हरि हिरदै हेत सौं, प्रगटहु परमानंद ।
दादू देखै नैन भरि, तब केता होइ अनंद ॥ ८४ ॥
प्रेम पियाला राम रस, हम कौं भावै येहि ।
रिधि सिधि माँगैं मुकति फल, चाहैं तिन कौं देहि ॥ ८५ ॥
कोटि बरस क्या जीवणा, अमर भये क्या होइ ।
प्रेम भगति रस राम बिन, का दादू जीवनि सोइ ॥ ८६ ॥
कछू न कीजै कामना, सर्गुण निर्गुण होइ ।
पलटि जीवतैं ब्रह्म गति, सब मिलि मानैं मोहिं ॥८७॥
घट अजरावर* ह्वै रहै, बंधन नाहीं कोइ ।
मुकता चौरासी मिटै, दादू संसै सोइ ॥ ८८ ॥
निकट निरंजन लागि रहु, जब लगिअलख अभेव। (४-३१७)
दादू पीवै राम रस, निहकामी निज सेव ॥ ८९ ॥
सालोक संगति रहै, सामीप सन्मुख सोइ ।
सारूप सारीखा भया, साजुज एकै होइ ॥ ९०† ॥
राम रसिक बांछै नहीं, परम पदारथ चार ।
अठ सिधि नौ निधि का करै, राता सिरजनहार ॥९१॥

---

* अमर । † इस म चारो प्रकार की मुक्ति का वर्णन है-(१) सालोक अर्थात इष्ट के लोकमैं बासा मिलना, (२) सामीप=इष्ट के निकट रहना, (३) सारूप=इष्ट का रूप धारण करना, (४) सायुज्य=इष्ट मैं लय हो जाना ।

स्वारथ सेवा कीजिये, ता थैं भला न होइ ।
दादू ऊसर बाहि[*] करि, कोठा भरै न कोइ ॥ ९२ ॥
सुत बित माँगै बावरे, साहिब सी निधि मेलि[†] ।
दादू वै निर्फल गये, जैसैं नागर बेलि ॥ ९३ ॥
फल कारण सेवा करै, जाचै त्रिभुवन-राव ।
दादू सो सेवग नहीं, खेलै अपणा डाव[‡] ॥ ९४ ॥
सहकामी सेवा करै, माँगै मुगध[§] गँवार ।
दादू ऐसे बहुत हैं, फल के भूँचणहार[||] ॥ ९५ ॥
तन मन ले लागा रहै, राता सिरजनहार ।
दादू कुछ माँगै नहीं, ते बिरला संसार ॥ ९६ ॥
(दादू कहै) साईं कौं सँभालताँ, कोटि बिघन टलि जाहिं ।
राई मान बसंदरा, केते काठ जलाहिं[¶] ॥ ९७ ॥
राम नाम गुर सबद सूँ, रे मन पेलि भरम ।
निहकरमी सूँ मन मिल्या, दादू काटि करम ॥ ९८ ॥
सहजैं हीं सब होइगा, गुण इंद्री का नास ।
दादू राम सँभालताँ, कटैं करम के पास[**] ॥ ९९ ॥
एक महूरत मन रहै, नाँव निरंजन पास ।
दादू तब ही देखताँ, सकल करम का नास ॥ १०० ॥
एक राम के नाम बिन, जिव की जलण न जाइ ।
दादू केते पचि मुए, करि करि बहुत उपाइ ॥ १०१ ॥
करमै करम कादै नहीं, करमै करम न जाइ ।
करमै करम छुटै नहीं, करमै करम बधाइ[††] ॥ १०२ ॥

॥ इति निहकरमी पतिब्रता को अंग समाप्त ॥८॥

* जोत बो कर। † छोड़ कर। ‡ दाँव। § मूर्ख। || चाहने वाले। ¶ राई बराबर आग से काठ के ढेर जल जाते हैं। ** फाँस। †† बढ़ाता है।

९–चितावणी को अंग

(दादू) नमो नमो निरंजनं, नमस्कार गुर देवतः ।
बंदनं सर्व साधवा, प्रणामं पारंगतः ॥१॥

(दादू) जे साहिब कौं भावै नहीं, सो हम थैं जिनि होइ ।
सतगुर लाजै आपणा, साध न मानै कोइ ॥२॥

(दादू) जे साहिब कौं भावै नहीं, सो सब परिहरि प्राण ।
मनसा बाचा कर्मना, जे तूं चतुर सुजाण ॥३॥

(दादू) जे साहिब कौं भावै नहीं, जीव न कीजै रे ।
परिहरि बिषै बिकार सब, अमृत रस पीजै रे ॥४॥

दादू जे साहिब कौं भावै नहीं, सो बाट न बूझी रे ।
साईं सौं सन्मुख रही, इस मन सौं जूझी रे ॥ ५ ॥

राम कहे सब रहत है, नख सिख सकल सरीर ।
राम कहे बिन जात है, समझो मनवाँ बीर ॥ ६ ॥

राम कहे सब रहत है, लाहा मूल सहेत ।
राम कहे बिन जात है, मूरख मनवाँ चेत ॥ ७ ॥

राम कहे सब रहत है, आदि अंत ल्यौ लाइ ।
राम कहे बिन जात है, यह मन बहुरि न आइ ॥ ८ ॥

राम कहे सब रहत हैं, जीव ब्रह्म की लार ।
राम कहे बिन जात हैं, रे मन होउ हुसियार ॥ ९ ॥

दादू अचेत न होइये, चेतन सौं चित लाइ ।
मनवाँ सोता नींद भरि, साईं संग जगाइ ॥ १० ॥

दादू अचेत न होइये, चेतन सौं करि चित्त ।
ये अनहद जहँ थैं उपजै, खोजो तहँ ही नित्त ॥ ११ ॥

दादू जन कुछ चेत करि, सौदा लीजै सार ।
निखर* कमाई न छूटणा, अपणे जीव बिचार ॥ १२ ॥
(दादू) कर साईं की चाकरी, ये हरि नाँव न छोड़ि ।
जाणा है उस देस कौं, प्रीति पिया सौं जोड़ि ॥ १३ ॥
आपा पर सब दूरि करि, राम नाम रस लागि ।
दादू औसर जात है, जागि सकै तौ जागि ॥ १४ ॥
बार बार यहु तन नहीं, नर नारायण देह ।
दादू बहुरि न पाइये, जनम अमोलिक येह ॥ १५ ॥
दुख दरिया संसार है, सुख का सागर राम ।
सुख सागर चलि जाइये, दादू तजि बेकाम ॥ १६ ॥
एका एकी राम सौं, कै साधू का संग ।
दादू अनत न जाइये, और काल का अंग ॥ १७ ॥
(दादू) तन मन के गुण छाडि सब, जब होइ नियारा ।
तब अपने नैनहुँ देखिये, परघट पिव प्यारा ॥ १८ ॥
(दादू) झाँती पाये पसु पिरी, अंदरि सो आहे ।
हाँणी पाणे बिच्च मैं, मिहर न लाहे ॥ १९† ॥
दादू झाँती पाये पसु पिरी, हाँणे लाइ म बेर ।
साथ सभोई हल्यौ, पोइ पसंदो केर ॥ २०‡ ॥

॥ इति चितावनी को अंग समाप्त ॥ ६ ॥

*असल, निज। † झाँकी (झाँती) पाकर या खिड़की मैं मुँह डाल कर प्रीतम (पिरी) का दर्शन कर (पसु) वह अंदर है —अब (हाँणी) वह आप (पाणे) तेरे घट मैं है अपनो मेहर न छोड़ेगा (लाहे)। ‡ झाँकी पाकर प्रीतम का दर्शन कर, अब (हाँणे) देर (बेर) मत (म) लगा (लाइ)— साथी सभी (सभोई) चल दिये (हल्यौ), पीछे (पोइ) कौन (केर) देखेगा [पसंदो]

१०--मन को अंग

दादू नमो नमो निरंजनं, नमस्कार गुर देवतः।
बंदनं सर्व साधवा, प्रणामं पारंगतः॥ १॥
दादू यहु मन बरजी बावरे, घट मैं राखी घेरि।
मन हस्ती माता बहै, अंकुस दे दे फेरि॥२॥
हस्ती छूटा मन फिरै, क्यौँ ही बँध्या न जाइ।
बहुत महावत पचि गये, दादू कुछ न बसाइ॥ ३॥
जाहाँ थैं मन उठि चलै, फेरि तहाँ ही राखि।
तहँ दादू लयलीन करि, साध कहैं गुर साखि॥४॥
थोरैं थोरैं हटकिये*, रहैगा ल्यौ लाइ।
जब लागा उनमनी सौं, तब मन कहीं न जाइ॥ ५॥
आड़ा दे दे† राम कौं, दादू राखै मन।
साखी दे इस्थिर करै, सोई साधू जन॥ ६॥
सोई सूर जे मन गहै, निमखि न चलने देइ।
जब हीं दादू पग भरै, तब ही पाकड़ि लेइ॥ ७॥
जेती लहरि समंद की, तेते मनहिं मनोरथ मारि।
बैसै सब संतोष करि, गहि आतम एक बिचारि॥ ८॥
(दादू) जे मुख माहैं बोलता, स्रवणहुं सुणता आइ।
नैनहुं माहैं देखता, सो अंतरि उरझाइ॥ ९॥
दादू चम्बक देखि करि, लोहा लागै आइ।
यौं मन गुण इंद्री एक सौं, दादू लीजै लाइ॥ १०॥

---

*बरजना, रोकना। †सन्मुख करके।

मन का आसण जे जिव जाणै, तौ ठौर ठौर सब सूझै।
पंचौं आणि एक घरि राखै, तब अगम निगम सब बूझै॥११॥
बैठे सदा एक रस पीवै, निरबैरी कत जूझै।
आतम राम मिलै जब दादू, तब अंगि न लागै दूजै॥१२॥
जब लगि यहु मन थिर नहीं, तब लगि परस न होइ।
दादू मनवाँ थिर भया, सहजि मिलैगा सोइ॥ १३ ॥
(दादू) बिन अवलंबन क्यूँ रहै, मन चंचलि चलि जाइ।
इस्थिर मनवाँ तौ रहै, सुमिरण सेती लाइ॥ १४ ॥
मन इस्थिर कर लीजै नाम।
दादू कहै तहाँ हीं राम॥ १५ ॥
हरि सुमिरण सौं हेत करि, तब मन निहचल होइ।
दादू बेध्या प्रेम रस, बीष* न चालै सोइ॥ १६ ॥
जब अंतरि उरझ्या एक सौं, तब थाके सकल उपाय।
दादू निहचल थिर भया, तब चलि कहीं न जाइ॥ १७ ॥
(दादू) कउवा बोहिथ† बैसि करि, मंझि समंदाँ‡ जाइ।
उड़ि उड़ि थाका देखि तब, निहचल बैठा आइ॥ १८ ॥
यहु मन कागद की गुडी,§ उड़ि चढ़ी आकास।
दादू भीगै प्रेम जल, तब आइ रहै हम पास॥ १९ ॥
दादू खीला गारि‖ का, निहचल थिर न रहाइ।
दादू पग नहिं साच के, भरमै दह दिसि जाइ॥ २० ॥
तब सुख आनँद आतमा, जे मन थिर मेरा होइ।
दादू निहचल राम सौं, जे करि जाणै कोइ॥ २१ ॥

---

*बिष, ज़हर। †नाव किश्ती। ‡समुद्र। §गुड्डी, पतंग। ‖गाड़ी की कील जो पहिये के साथ घूमती रहती है। [पंडित चंद्रिका प्रसाद ने गारिका का अर्थ "मिट्टी का" लिखा है]

मन निर्मल थिर होत है, राम नाम आनंद ।
दादू दरसन पाइये, पूरण परमानंद ॥ २२ ॥
(दादू) यौँ फूटे थैं सारा भया, संधे संधि मिलाइ[*]।
बाहुड़ि बिषै न भूँचिये,[†] तौ कबहूँ फूटि न जाइ ॥२३॥
(दादू) यहु मन भूला सो गली, नरक जाण के घाट ।
अब मन अविगत नाथ सौँ, गुरू दिखाई बाट ॥२४॥
(दादू) मन सुध स्याबत[‡] आपणाँ, निहचल होवै हाथ।
तौ इहँ ही आनंद है, सदा निरंजन साथ ॥ २५ ॥
जब मन लागै राम सौँ, तब अनत काहे को जाइ ।
दादू पाणी लूँण ज्यूँ, ऐसैं रहै समाइ ॥ २६ ॥
ज्यूँ जल पैसै दूध मैँ, ज्यूँ पाणी मैँ लूँण ।
ऐसैं आतम राम सौँ, मन हठ साधै कूँण ॥२७॥ (२-७६)
मन का मस्तक मूँडिये, काम क्रोध के केस[§] ।
दादू बिषै बिकार सब, सतगुरु के उपदेस ॥ २८ ॥ (१-७७)
सो कुछ हम थैं ना भया, जा पर रीझै राम ।
दादू इस संसार मैँ, हम आये बेकाम ॥ २९ ॥
क्या मुँह ले हँसि बोलिये, दादू दीजै रोइ ।
जनम अमोलक आपणा, चले अकारथ खोइ ॥ ३० ॥
जा कारण जग जीजिबे[||], सो पद हिरदे नाहिँ ।
दादू हरि की भगति बिन, धृग जीवण कलि माहिँ ॥३१॥
कीया मन का भावताँ, मेटी अज्ञाकार ।
क्या ले मुख दिखलाइये, दादू उस भरतार[¶] ॥ ३२ ॥

---

*जाड़ से जोड़ मिला कर। †चाहिये। ‡साबित, स्थिर। § बाल। || जीने योग्य। ¶पति, पुरुष।

इंद्री स्वारथ सब किया, मन माँगे सो दीन्ह ।
जा कारण जग सिरजिया, सो दादू कछू न कीन्ह ॥३३॥
कीया था इस काम कौं, सेवा कारण साज ।
दादू भूला बंदगी, सखा न एकौ काज ॥ ३४ ॥
दादू बिषै बिकार सौं, जब लगि मन राता ।
तब लगि चित्त न आवई, त्रिभवन-पति दाता ॥३५॥ (२-६६)
(दादू) का जाणौं कब होइगा, हरि सुमिरन इकतार ।
का जाणौं कब छाड़ि है, यहु मन बिषै बिकार ॥३६॥(२-६७)
बादिहि जनम गँवाइया , कीया बहुत बिकार ।
यहु मन इस्थिर ना भया , जहँ दादू निज सार ॥३७॥
(दादू) जिनि बिष पीवै बावरे, दिन दिन बाढ़ै रोग ।
देखत हीं मरि जाइगा , तजि बिषया रस भोग ॥३८॥
आपा पर सब दूरि करि , राम नाम रस लागि । (९-१०)
दादू औसर जात है , जागि सकै तौ जागि ॥३९॥
दादू सब कुछ बिलसताँ , खाताँ पीताँ होइ ।
दादू मन का भावता , कहि समभावै कोइ ॥४०॥
दादू मन का भावता , मेरी कहै बलाइ ।
साच राम का भावता , दादू कह सुणि आइ ॥४१॥
सब मन का भावता , जे कुछ कीजै आन ।
मन गहि राखै एक सौं , दादू साध सुजान ॥४२॥
जे कुछ भावै राम कौं , सो तत कहि समभाइ ।
दादू मन का भावता , सब की कहै बनाइ ॥४३॥
अड़े पग चालै नहीं , होइ रह्या गलियार* ।
राम रतिथ निबहै नहीं , खेवै कौं हुसियार ॥४४॥

---

* अड़ियल ।

(दादू) का परमोधै आन कौं, आपण बहिया* जात।
औरौं कौं अमृत कहै, आपण हीं बिष खात ॥४५॥
(दादू) पंचौं ये परमोधि ले, इन हीं कूँ उपदेस।
यहु मन अपणा हाथ करि, तौ चेला सब देस ॥४६॥ (१-१४९)
(दादू) पंचौं का मुख मूल है, मुख का मनवाँ होइ।
यहु मन राखै जतन करि, साध कहावै सोइ ॥४७॥
(दादू) जब लगि मन के दोइ गुण, तब लग निपणा† नाहिं
द्वै गुण मन के मिटि गये, तब निपणा मिलि माहिं ॥४८॥
काचा पाका जब लगैं, तब लगि अंतर होइ।
काचा पाका दूरि करि, दादू एकै सोइ ॥४९॥
सहज रूप मन का भया, तब द्वै द्वै मिटी तरंग।
ताता सीला सम भया, तब दादू एकै अंग ॥५०॥
(दादू) बहु-रूपी मन तब लगैं, जब लगि माया रंग।
जब मन लागा राम सौं, तब दादू एकै अंग ॥५१॥
हीरा‡ मन पर राखिये, तब दूजा चढ़ै न रंग।
दादू यौं मन थिर भया, अबिनासी के संग ॥५२॥
सुख दुख सब झाँईं§ पड़ै, तब लगि काचा मन।
दादू कुछ ब्यापै नहीं, तब मन भया रतन ॥५३॥
पाका मन डोलै नहीं, निहचल रहै समाइ।
काचा मन दह दिसि फिरै, चंचल चहुँ दिसि जाइ ॥५४॥
सीप सुधा रस ले रहै, पिवै न खारा नीर।
माहैं मोती नीपजै, दादू बंद सरीर ॥५५॥

---

*बहा। † निपणा यानी जिस में पानी का मेल न हो (जैसा कि सुच्चे दूध के लिये बोला जाता है), बिना मेल के, शुद्ध। ‡हीरा का तात्पर्य राम नाम से है। §छाया, असर।

दादू मन पंगुल भया, सब गुण गये बिलाइ ।
है काया नव-जोबनी[*], मन बूढ़ा ह्वै जाइ ॥५६॥

(दादू) कच्छिब अपने करि लिये, मन इंद्री निज ठौर ।(१-८९)
नाँइ निरंजन लागि रहु, प्राणी परिहरि और ॥५७॥

मन इंद्री आँधा किया, घट मैं लहरि उठाइ ।
साईं सतगुर छाड़ि करि, देखि दिवाना जाइ ॥५८॥

(दादू कहै) राम बिना मन रंक[†] है, जाचै तीन्यूँ लोक ।
जब मन लागा राम सौँ, तब भागे दलिदर दोष ॥५९॥

इंद्री का आधीन मन, जीव जंत सब जाचै ।
तिणैँ तिणैँ[‡] के आगैँ दादू, तिहूँ लोक फिरि नाचै ॥६०॥

इंद्री अपणै बसि करै, सो काहे जाचण जाइ ।
दादू इस्थिर आतमा, आसण बैसै आइ ॥६१॥

मन मनसा दून्यूँ मिले, तब जिव कीया भाँड[§] ।
पंचौँ का फेर्या फिरै, माया नचावै राँड ॥६२॥

नकटी[†] आगैँ नकटा[||] नाचै, नकटी ताल बजावै ।
नकटी आगैँ नकटा गावै, नकटी नकटा भावै ॥६३॥

पाँचौँ इंद्री भूत हैँ, मनवाँ खेतरपाल[¶] ।
मनसा देवी पूजिये, दादू तीन्यूँ काल ॥६४॥

जीवत लूटैँ जगत सब, मितक लूटैँ देव ।
दादू कहाँ पुकारिये, करि करि मूए सेव ॥६५॥

अगनि धोम[**] ज्यौँ नीकलै, देखत सबै बिलाइ ।
त्यौँ मन बिछुट्या राम सौँ, दह दिसि बीखरि जाइ ॥६६॥

---

* तरुण । † भिखमंगा । ‡ तुच्छोँ या नीचोँ । §मसखरा, बेहूदा । ||मनसा ।
‡मन । ¶राजा । **धुआँ ।

घर छाडे जब का गया, मन बहुरि न आया ।
दादू अगनि के धोम ज्यौँ, खुर खोज न पाया ॥६७॥
सब काहू के होत है, तन मन पसरै जाइ ।
ऐसा कोई एक है, उलटा माँहिँ समाइ ॥६८॥
क्यौँ करि उलटा आणिये, पसरि गया मन फेरि ।
दादू डोरी सहज की, यौँ आणै घरि घेरि ॥६९॥
(दादू) साध सबद सौँ मिलि रहै, मन राखै बिलमाइ ।
साध सबद बिन क्यौँ रहै, तब हीं बीखरि जाइ ॥७०॥
चंचल चहुँ दिसि जात है, गुर बायक सूँ बंधि ।
दादू संगति साध की, पारब्रह्म सूँ संधि ॥७१॥(१-८४)
एक निरंजन नाँव सौँ, साधू संगति माहिँ ।
दादू मन बिलमाइये, दूजा कोई नाहिँ ॥७२॥
तन मैँ मन आवै नहीँ, निस दिन बाहरि जाइ ।
दादू मेरा जिव दुखी, रहै नहीँ ल्यौ लाइ ॥७३॥
तन मैँ मन आवै नहीँ, चंचल चहुँ दिसि जाइ ।
दादू मेरा जिव दुखी, रहै न राम समाइ ॥७४॥
कोटि जतन करि करि मुए, यहु मन दह दिसि जाइ ।
राम नाम रोक्या रहै, नाहीँ आन उपाइ ॥७५॥
यहु मन बहु बकवाद सौँ, बाइ भूत ह्वै जाइ ।
दादू बहुत न बोलिये, सहजैँ रहै समाइ ॥७६॥
भूला भौँदू फेरि मन, मूरख मुग्ध गँवार ।
सुमिरि सनेही आपणा, आतम का आधार ॥७७॥
मन माणिक मूरख राखि रे, जण जण हाथि न देहु ।
दादू पारिख जौहरी, राम साध दोइ लेहु ॥७८॥

(दादू) मारयाँ बिन मानै नहीं, यहु मन हरि की आन ।
ज्ञान खड़ग गुरदेव का, ता सँग सदा सुजान ॥७९॥ (१-८६)
मन मिरगा मारै सदा, ता का मीठा माँस ।
दादू खाइबे कौं हिल्या, ता थैं आन उदास* ॥८०॥
कह्या हमारा मानि मन, पापी परिहरि काम ।
बिषया का सँग छाड़ि दे, दादू कहि रे राम ॥८१॥
केता कहि समुझाइये, मानै नहीं निलज्ज ।
मूरख मन समझै नहीं, कीये काज अकज्ज ॥८२॥
मन हीं मंजन कीजिये, दादू दरपण देह ।
माहैं मूरति देखिये, इहिं औसर करि लेह ॥८३॥
तब हीं कारा† होत है, हरि बिन चितवत आन ।
क्या कहिये समझै नहीं, दादू सिखवत ज्ञान ॥८४॥
(दादू) पाणी धोवैं बावरे, मन का मैल न जाइ ।
मन निर्मला तब होइगा, जब हरि के गुण गाइ ॥८५॥
(दादू) ध्यान धरैं का होत है, जे मन नाहिं निर्मल होइ ।
तौ बग‡ सब हीं ऊधरैं, जे यहि बिधि सीझै कोइ ॥८६॥
(दादू) ध्यान धरैं का होत है, जे मन का मैल न जाइ ।
बग मीनी का ध्यान धरि, पसू बिचारे खाइ ॥८७॥
(दादू) काले थैं धौला भया, दिल दरिया मैं धोइ ।
मालिक सेती मिलि रह्या, सहजैं निर्मल होइ ॥८८॥
(दादू) जिस का दर्पण ऊजला, सो दर्सण देखै माहिं ।
जिस की मैली आरसी, सो मुख देखै नाहिं ॥८९॥
दादू निर्मल सुद्ध मन, हरि रँग राता होइ ।
दादू कंचन करि लिया, काच कहे नहिं कोइ ॥९०॥

---

*और भोग बेस्वाद [उदास] होगये । †काला, मलीन । ‡बकुला ।

यहु मन अपना थिर नहीं, करि नहिं जाणै कोइ।
दादू निर्मल देव की, सेवा क्यौं करि होइ ॥९१॥
(दादू) यहु मन तीन्यूँ लोक मैं, अरस परस सब होइ।
देही की रष्या करै, हम जिनि भीटै कोइ ॥९२[*]॥
(दादू) देह जतन करि राखिये, मन राख्या नहिं जाइ।
उत्तिम मद्धिम बासना, भला बुरा सब खाइ ॥९३॥
दादू हाड़ौं मुख भऱ्या, चाम रह्या लपटाइ।
माहैं जिभ्या माँस की, ताही सेती खाइ ॥९४॥
नऊ दुवारे नरक के, निस दिन बहै बलाइ।
सुची[†] कहाँ लौं कीजिये, राम सुमिरि गुण गाइ ॥९५॥
प्राणी तन मन मिलि रह्या, इंद्री सकल बिकार।
दादू ब्रह्मा सुद्र घरि, कहाँ रहै आचार ॥९६॥
दादू जीवै पलक मैं, मरताँ कल्प बिहाइ।
दादू यहु मन मसूकरा, जिनि कोई पतियाइ ॥९७॥
(दादू) मूंवा मन हम जीवत देख्या, जैसे मरहट[‡] भूत।
मूवाँ पीछैं उठि उठि लागै, ऐसा मेरा पूत ॥९८॥
निहचल करताँ जुग गये, चंचल तब हीं होइ।
दादू पसरै पलक मैं, यहु मन मारै मोहिं ॥९९॥
दादू यहु मन मींडका[§], जल सौं जीवै सोइ।
दादू यहु मन रिंद[‖] है, जिनि रु पतीजै कोइ ॥१००॥
माहैं सूषिम[¶] ह्वै रहै, बाहरि पसारै अंग।
पवन लागि पोढ़ा भया, काला नाग भुवंग ॥१०१॥

---

[*]लोग देही की छुआ छूत तो बचाते हैं पर मन हर जगह स्पर्श करता फिरता है—[भीटै =छू जाय] [†]सफ़ाई। [‡]मरघट। [§]मैंडक। [‖]लामज़हब, गयां गुज़रा। [¶]सूक्षम।

मन भुवंग बहु बिष भर्‌या, निर्बिष क्यौँ हीँ न होइ ।
दादू मिल्या गुर गारुड़ी,* निर्बिष कीया सोइ ॥१०२॥
सुपना तब लग देखिये, जब लग चंचल होइ ।
जब निहचल लागा नाँव सौँ, तब सुपना नाहीँ कोइ १०३
जागत जहँ जहँ मन रहै, सोवत तहँ तहँ जाइ ।
दादू जे जे मन बसै, सोइ सोइ देखै आइ ॥१०४॥
दादू जे जे चित बसै, सोइ सोइ आवै चीत ।
बाहर भीतर देखिये, जाही सेती प्रीत ॥१०५॥
सावण हरिया देखिये, मन चित ध्यान लगाइ ।
दादू केते जुग गये, तौ भी हर्‌या न जाइ ॥१०६॥
जिस की सुरति जहाँ रहै, तिस का तहँ बिस्राम ।
भावै माया मोह मैं, भावै आतम राम ॥१०७॥
जहँ मन राखै जीवताँ, मरताँ तिस घरि जाइ ।
दादू बासा प्राण का, जहँ पहली रह्या समाइ ॥१०८॥
जहाँ सुरति तहँ जीव है, जहँ नाहीँ तहँ नाहिँ ।
गुण निर्गुण जहँ राखिये, दादू घर बन माहिँ ॥१०९॥
जहाँ सुरति तहँ जीव है, आदि अंत अस्थान ।
माया ब्रह्म जहँ राखिये, दादू तहँ बिस्राम ॥११०॥
जहाँ सुरति तहँ जीव है, जिवन मरण जिस ठौर ।
बिष अमृत जहँ राखिये, दादू नाहीँ और ॥१११॥
जहाँ सुरति तहँ जीव है, जहँ जाणै तहँ जाइ ।
गम्म अगम जहँ राखिये, दादू तहाँ समाइ ॥११२॥
मन मनसा का भाव है, अंत फलैगा सोइ ।
जब दादू बाणक† बण्या, तब आसै आसण होइ ॥११३॥

---

*साँप का बिष झाड़ने वाला । †संयोग ।

जप तप करणी करि गये, सरग पहूँते* जाइ ।
दादू मन की बासना, नरक पड़ै फिरि आइ ॥११४॥
पाका काचा ह्वै गया, जीत्या हारै डाव† ।
अंत काल गाफिल भया, दादू फिसले पाँव ॥११५॥
(दादू) यहु मन पंगुल पंच दिन, सब काहू का होइ ।
दादू उतरि अकास थैं, धरती आया सोइ ॥११६॥
ऐसा कोई एक मन, मरै सो जीवै नाहिं ।
दादू ऐसे बहुत हैं, फिरि आवैं कलि माहिं ॥११७॥
देखा देखी सब चले, पारि न पहुँच्या जाइ ।
दादू आसणि पहल‡ के, फिरि फिरि बैठे आइ ॥११८॥
बरतण§ एकै भाँति सब, दादू संत असंत ।
भिन्न भाव अंतर घणा, मनसा तहाँ गछंत‖ ॥११९॥
यहु मन मारै मोमिनाँ, यहु मन मारै मीर ।
यहु मन मारै साधिकाँ, यहु मन मारै पीर ॥१२०॥
मन मारे मुनियर¶ मुए, सुर नर किये सँघार ।
ब्रह्मा बिस्नु महेस सब, राखै सिरजनहार ॥१२१॥
मन बाहे** मुनियर बड़े, ब्रह्मा बिस्नु महेस ।
सिध साधक जोगी जती, दादू देस बिदेस ॥१२२॥
पूजा मान बड़ाइयाँ, आदर माँगै मन ।
राम गहै सब परिहरै, सोई साधू जन ॥१२३॥
जहँ जहँ आदर पाइये, तहाँ तहाँ जिव जाइ ।
बिन आदर दीजै राम रस, छाड़ि हलाहल खाइ ॥१२४॥

---

*पहुँचे । †दाँव । ‡पहिले ;—पहलू या बाज़ू के अर्थ भी लगते हैं । §बर्ताव । ‖जाता है; सम्बंध रखती है । ¶मुनिवर । **बहाये ।

करणी किरका* को नहीं, कथणी अनत अपार ।
दादू यूँ क्यूँ पाइये, रे मन मूढ़ गँवार ॥१२५॥
दादू मन मिर्तक भया, इन्द्री अपणै हाथ ।
तौ भी कदे† न कीजिये, कनक कामिनी साथ ॥१२६॥
अब मन निरभय घरि नहीं, भय मैं बैठा आइ ।
निरभय सँग थैं बीछुट्या, तब कायर ह्वै जाइ ॥१२७॥
जब मन मिर्तक ह्वै रहै, इंद्री बल भागा ।
काया के सब गुण तजै, नीरंजन लागा ॥१२८॥ (७-४२)
आदि अंत मधि एक रस, टूटै नहिं धागा ।
दादू एकै रहि गया, तब जाणी जागा ॥१२९॥(७-४३)
दादू मन के सीस मुख, हस्त पाँव है जीव ।
स्रवण नेत्र रसना रटै, दादू पाया पीव ॥१३०॥
जहँ के नवाये सब नवैं, सोई सिर करि जाणि ।
जहँ के बुलाये बोलिये, सोई मुख परवाणि ॥१३१॥
जहँ के सुणाये सब सुणैं, सोई स्रवण सयाण ।
जहँ के दिखाये देखिये, सोई नैन सुजाण ॥१३२॥
(दादू) मन हीं सौं मल ऊपजै, मन हीं सौं मल धोइ ।
सीख चलै गुर साध की, तौ तूँ निरमल होइ ॥१३३॥
दादू मन हीं माया ऊपजै, मन हीं माया जाइ ।
मन हीं राता राम सौं, मन हीं रह्या समाइ ॥१३४॥
(दादू) मन हीं मरणा ऊपजै, मन हीं मरणा खाइ ।
मन अबिनासी ह्वै रह्या, साहिब सौं ल्यौ लाइ ॥१३५॥
मन हीं सन्मुख नूर है, मन हीं सन्मुख तेज ।
मन हीं सन्मुख जोति है, मन हीं सन्मुख सेज ॥१३६॥

---

*किनका मात्र । †कभी ।

मन हीं सौं मन थिर भया, मन हीं सौं मन लाइ ।
मन हीं सौं मन मिलि रह्या, दादू अनत न जाइ ॥१३७॥

॥ इति मन को अंग समाप्त ॥ १० ॥

११—सूषिम* जन्म को अंग

(दादू) नमो नमो निरंजनं, नमस्कार गुर देवत: ।
बंदनं सर्व साधवा, प्रणामं पारंगत: ॥१॥
(दादू) चौरासी लख जीव की, परकीरति घट माहिं ।
अनेक जन्म दिन के करै, कोई जाणै नाहिं ॥२॥
(दादू) जेते गुण ब्यापैं जीव कौं, तेते ही अवतार ।
आवागवन यहु दूरि करि, समृथ सिरजनहार ॥३॥
सब गुण सब ही जीव के, दादू ब्यापैं आइ ।
घर माहैं जामै मरै, कोई न जाणै ताहि ॥४॥
जीव जन्म जाणै नहीं, पलक पलक मैं होइ ।
चौरासी लख भोगवै, दादू लखै न कोइ ॥५॥
अनेक रूप दिन के करै, यहु मन आवै जाइ ।
आवागवन मन का मिटै, तब दादू रहै समाइ ॥६॥
निस बासर यहु मन चलै, सूषिम जीव सँघार ।
दादू मन थिर कीजिये, आतम लेहु उबारि ॥७॥
कबहूँ पावक कबहूँ पाणी, धर† अंबर गुण बाइ ।
कबहूँ कुंजर कबहूँ कीड़ी, नर पसुवा ह्वै जाइ ॥८॥
सूकर स्वान सियाल‡ सिंघ, संर्प रहै घट माहिं ।
कुंजर कीड़ी जीव सब, पाँडे§ जाणै नाहिं ॥९॥

॥ इति सूषिम जन्म को अंग समाप्त ॥ ११ ॥

*सूक्ष्म । †धर = पृथ्वी ; अंबर = आकाश ; बाइ = वायु । ‡सियार । §पंडित ।

१२—माया को अंग

(दादू) नमो नमो निरंजनं, नमस्कार गुर देवत: ।
बंदनं सर्ब साधवा, प्रणामं पारंगत: ॥१॥
साहिब है पर हम नहीं, सब जग आवै जाइ ।
दादू सुपिना देखिये, जागत गया बिलाइ ॥२॥
(दादू) माया का सुख पंच दिन, गर्ब्यौ कहा गँवार ।
सुपिनैं पायौ राज धन, जात न लागै बार ॥३॥
(दादू) सुपिनैं सूता प्राणिया, कीये भोग बिलास ।
जागत झूठा ह्वै गया, ता की कैसी आस ॥४॥
यौं माया का सुख मन करै, सेज्या सुंदरि पास ।
अंति काल आया गया, दादू होहु उदास ॥५॥
जे नाहीं सो देखिये, सूता सुपिनैं माहिं ।
दादू झूठा ह्वै गया, जागै तौ कुछ नाहिं ॥६॥
यहु सब माया मिर्ग-जल*, झूठा झिलिमिलि होइ ।
दादू चिलका देखि करि, सति करि जाना सोइ ॥७॥
झूठा झिलिमिलि मिर्ग-जल, पाणी करि लीया ।
दादू जग प्यासा मरै, पसु प्राणी पीया ॥८॥
छलावा छलि जाइगा, सुपिना बाजी सोइ ।
दादू देखि न भूलिये, यहु निज रूप न होइ ॥९॥
सुपिनैं सब कुछ देखिये, जागै तौ कुछ नाहिं ।
ऐसा यहु संसार है, समझि देखि मन माहिं ॥१०॥
(दादू) ज्यौं कुछ सुपिनैं देखिये, तैसा यहु संसार ।
ऐसा आपा जाणिये, फूल्यौ कहा गँवार ॥११॥

---

*मृग-जल से अभिप्राय मरीचिका या सराब से है जहाँ वालू के मैदान की चमक दूर से देख कर मृग को पानी का धोखा होता है और उस के पीछे प्यास बुझाने को दौड़ता है ।

(दादू) जतन जतन करि राखिये, दिढ़ गहि आतम मूल।
दूजो द्रृष्टि न देखिये, सब ही सँबल फूल ॥१२॥
(दादू) नैनहुँ भरि नहिं देखिये, सब माया का रूप।
तहँ ले नैना राखिये, जहँ है तत्त अनूप ॥१३॥
हस्ती, हय, बर, धन देखि करि, फूल्यौ अंग न माइ*।
भेरि† दमामा‡ एक दिन, सब ही छाड़े जाइ ॥१४॥
(दादू) माया बिहड़ै§ देखताँ, काया संग न जाइ।
कृत्तम बिहड़ै बावरे, अजरावर‖ ल्यौ लाइ ॥१५॥
(दादू) माया का बल देखि करि, आया अति अहंकार।
अंध भया सूझै नहीं, का करिहै सिरजनहार ॥१६॥
मन मनसा माया रती¶, पंच तत्त परकास।
चौदह तीन्यूँ लोक सब, दादू होइ उदास ॥१७॥
माया देखे मन खुसी, हिरदै होइ बिगास।
दादू यहु गति जीव की, अंति न पूगै** आस ॥१८॥
मन की मूठि न माँडिये, माया के नीसाण।
पीछैँ ही पछिताहुगे, दादू खोटे बाण ॥१९††॥
कुछ खाताँ कुछ खेलताँ, कुछ सोवत दिन जाइ।
कुछ बिषियाँ रस बिलसताँ, दादू गये बिलाइ ॥२०॥

---

* समाय। † शहनाई, नफ़ीरी। ‡ डंका। § बिछुड़ै। ‖ अकाल पुरुष। ¶ रत, लौलीन। ** पूरी होय।

††साखी १९ के अर्थ पंडित चंद्रिका प्रसाद ने बिचित्र लिखे हैं। वह "बाण" के मानी तीर के, "मूठ"=कमान, "नीसाण"=निशाना के लगाते हैं। यह अर्थ खींचा तानी के और अशुद्ध जान पड़ते हैं क्योंकि माया को मन के तीर का निशाना "न" बनाना उलटी बात होगी, और "खोटे" तीर का मुहावरा भी कभी सुनने म नहीं आया थोथे तीर अलबत्ते बोलते हैं! हमारी समझ में तो सीधे सादे मतलब यह हैं कि मन की हठ [मूठ] को रोको [न माँडिये=न करिये] जिस का झुकाव या रुचि [नीसाण] माया की ओर होती है; नहीं तो इस बुरी आदत [खोटे बाण] के लिये पीछे पछताना पड़ेगा।

माखण मन पाहण भया, माया रस पीया।
पाहण मन माखण भया, राम रस्स लीया ॥२१॥
(दादू) माया सौँ मन बीगड़या, ज्यौँ काँजी करि दूध।
है कोई संसार मैँ, मन करि देवै सूध* ॥२२॥
गंदी सौँ गंदा भया, यौँ गंदा सब कोइ।
दादू लागै खूब सौँ, तौ खूब सरीखा होइ ॥२३॥
(दादू) माया सौँ मन रत भया, बिषै रस्स माता।
दादू साचा छाड़ि करि, झूठे रँग राता ॥२४॥
माया के सँगि जे गये, ते बहुरि न आये।
दादू माया डाकिणी†, इन केते खाये ॥२५॥
(दादू) माया मोट बिकार की, कोइ न सकई डारि।
बहि बहि मूए बापुरे, गये बहुत पचि हारि ॥२६॥
(दादू) रूप राग गुण अँड़सरे‡, जहँ माया तहँ जाइ।
बिद्या अष्यर§ पंडिता, तहाँ रहे घर छाइ ॥२७॥
साध न कोई पग भरै, कबहूँ राज दुवारि।
दादू उलटा आप मैँ, बैठा ब्रह्म बिचारि ॥२८॥
(दादू) अपणे अपणे घरि गये, आपा अंग बिचारि।
सहकामी माया मिले, निहकामी ब्रह्म सँभारि ॥२९॥
(दादू) माया मगन जु है रहे, हम से जीव अपार।
माया माहैँ ले रही, डूबे काली धार‖ ॥३०॥

॥ सवैया ॥

(दादू) बिषै के कारणे रूप राते रहैँ,
नैन नापाक यौँ कीन्ह भाई।
बदी की बात सुणत सारा दिन,
स्रवन नापाक यौँ कीन्ह जाई॥

---

* शुद्ध। † डंकिनी। ‡ अँगड़स रहे, फँस रहे। § अक्षर। ‖ काल की धारा म।

स्वाद के कारणे लुब्धि लागी रहै,
जिभ्या नापाक यौं कीन्ह खाई ।
भोग के कारणे भूख लागी रहै,
अंग नापाक यौं कीन्ह लाई ॥३१॥

दादू नगरी चैन तब, जब इक-राजी* होइ
दोइ-राजी दुख दुंद मैं, सुखी न बैसै कोइ ॥३२॥

इक-राजी आनंद है, नगरी निहचल बास ।
राजा परजा सुखि बसैं, दादू जोति प्रकास ॥३३॥

जैसैं कुंजर काम बस, आप बँधाणा आइ ।
ऐसैं दादू हम भये, क्यौंकरि निकस्या जाइ ॥३४॥

जैसैं मरकट जीभ रस, आप बँधाणा अंध ।
ऐसैं दादू हम भये, क्यौंकरि छूटै फंध ॥३५॥

ज्यौं सूवा सुख कारणे, बंध्या मूरख माहिं ।
ऐसैं दादू हम भये, क्यौंही निकसैं नाहिं ॥ ३६ ॥

जैसैं अंध अज्ञान गृह, बंध्या मूरख स्वादि ।
ऐसैं दादू हम भये, जन्म गँवाया बादि ॥३७॥

(दादू) बूड़ि रह्या रे बापुरे, माया गृह के कूप ।
मोह्या कनक अरु कामिनी, नाना बिधि के रूप ॥३८॥

(दादू) स्वाद लागि संसार सब, देखत परलै जाइ ।
इंद्री स्वारथ साच तजि, सबै बँधाणे आइ ॥३९॥

बिष सुख माहैं रमि रह्या, माया हित चित लाइ ।
सोई संत जन ऊबरे, स्वाद छाड़ि गुण गाइ ॥४०॥

दादू झूठी काया झूठ घर, झूठा यह परिवार ।
झूठी माया देखि करि, फूल्यौ कहा गँवार ॥४१॥

---

*एकही का राज।

॥ कवित्त ॥

(दादू) झूठा संसार, झूठा परिवार,
 झूठा घर बार, झूठा नर नारि, तहाँ मन मानै।
झूठा कुल जाति, झूठा पित मात,
 झूठा बंध भ्रात, झूठा तन गात, सति करि जानै॥
झूठा सब धंध, झूठा सब फंध,
 झूठा सब अंध, झूठा जा चंद, कहा मधु छानै।
दादू भागि, झूठ सब त्यागि,
 जागि रे जागि, देखि दिवानै॥ ४२॥

दादू झूठे तन के कारणे, कीये बहुत बिकार।
गृह दारा धन संपदा, पूत कुटुँब परिवार॥४३॥
ता कारण हति आतमा, झूठ कपट अहंकार।
सो माटी मिलि जाइगा, बिसर्या सिरजनहार॥४४॥
(दादू) जन्म गया सब देखताँ, झूठी के सँग लागि।
साचे प्रीतम कौँ मिलै, भागि सकै तौ भागि॥४५॥

॥ छंद ॥

(दादू) गतं* गृहं, गतं धनं, गतं दारा सत जोबनं।
गतं माता, गतं पिता, गतं बंधु सज्जनं॥
गतं आपा, गतं परा, गतं संसार कत रंजनं।
भजसि भजसि रे मन, परब्रह्म निरंजनं॥ ४६॥
जीवौँ माहैँ जिव रहै, ऐसा माया मोह।
साईँ सूधा सब गया, दादू नहिँ अंदोह† ॥४७॥

*गया। †फ़ारसी शब्द 'अंदोह' का अर्थ ग़म, शोक होता है; हिन्दी मेँ अंदेह=अंदेशा।

माया मगहर* खेत खर, सद गति कदे न होइ ।
जे बंचैं ते देवता, राम सरीखे सोइ ॥४८*॥
कालरि† खेत न नीपजै, जे बाहै‡ सौ बार ।
दादू हाना बीज का, क्या पचि मरै गँवार ॥४९॥
दादू इस संसार सौं, निमख न कीजै नेह ।
जामण मरण आवटणा§, छिन छिन दाझै देह ॥५०॥
दादू मोह संसार कौं, बिहरै‖ तन मन प्राण ।
दादू छूटै ज्ञान करि, को साधू संत सुजाण ॥५१॥
मन हस्ती माया हस्तिनी, सघन बन संसार ।
ता मैं निर्भय ह्वै रह्या, दादू मुग्ध गँवार ॥५२॥
(दादू) काम कठिन घटि चोर है, घर फोड़ै दिन रात ।
सोवत साह न जागई, तत्त बस्त ले जात ॥५३॥
काम कठिन घटि चोर है, मूसै भरे भँडार ।
सोवत ही ले जाइगा, चेतनि पहरे चार ॥५४॥
ज्यौं घुन लागै काठ कौं, लोहै लागै काट¶ ।
काम किया घट जाजरा**, दादू बारह बाट ॥५५॥
राहु गिलै†† ज्यौं चंद कौं, गहण गिलै ज्यौं सूर ।
कर्म गिलै यौं जीव कौं, नखसिख लागै पूर ॥५६॥
(दादू) चंद गिलै जब राहु कौं, गहण गिलै जब सूर ।
जीव गिलै जब कर्म कौं, राम रह्या भरपूर ॥५७॥

---

* काशी के गंगा पार के खेतों को मगहर भूमि कहते हैं और कहावत है कि वहाँ मरने से गधे का जन्म मिलता है सो दादू साहिब ने माया की उपमा उसी भूमि से दी है, अर्थात दोनों दुर्गति की दाता हैं। † ऊसर। ‡ जोतै। § जन्म मरन की तपन। ‖ फूट जाना। ¶ मोरचा। ** जरजर, निबल। †† ग्रसै।

कर्म कुहाड़ा* अंग बन, काटत बारम्बार।
अपने हाथौं आप कौं, काटत है संसार ॥५८॥
आपै मारै आप कौं, यहु जीव बिचारा।
साहिब राखणहार है, सो हितू हमारा ॥५९॥
आपै मारै आप कौं, आप आप कौं खाइ।
आपै अपणा काल है, दादू कहि समझाइ ॥६०॥
मरिबे की सब ऊपजै, जीबे की कुछ नाहिँ।
जीबे की जाणै नहीं, मरिबे की मन माहिँ ॥६१॥
बंध्या बहुत बिकार सौं, सर्ब पाप का मूल।
ढाहै सब आकार कौं, दादू यहु अस्थूल ॥६२॥
(दादू) यहु तौ दोजग† देखिये, काम क्रोध अहंकार।
राति दिवस जरिबौ करै, आपा अगिनि बिकार ॥६३॥
बिषै हलाहल खाइ करि, सब जग मरि मरि जाइ।
दादू मुहरा‡ नाँव ले, रिदे राखि ल्यौ लाइ ॥६४॥
जेती बिषया बिलसिये, तेती हत्या होइ।
प्रत्तषि§ माणस‖ मारिये, सकल सिरोमणि सोइ ॥६५॥
बिषया का रस मद भया, नर नारी का मास।
माया माते मद पिया, किया जन्म का नास ॥६६॥
(दादू) भावै साकत¶ भगत है, बिषै हलाहल खाइ।
तहँ जन तेरा रामजी, सुपिनै कदे न जाइ ॥६७॥
खाड़ाबूजी भगति है, लोहर-वाड़ा माहिँ।
परगट पेड़ाइत बसैं, तहँ संत काहे कौं जाहिँ ॥६८**॥

---

* कुल्हाड़ा। † नर्क। ‡ ज़हर मुहरा। § प्रत्यक्ष। ‖ मन। ¶ निगुरा।
** खाड़ाबूजी=गढ़े मेँ छिपाई हुई अर्थात धोखे या कपट की। लोहरवाड़ा=चोरोँ की एक बस्ती का नाम। पेड़ाइत=पीड़ा देने वाले या दुष्टप्राणी। दादू दयाल ने कपट भक्ति की उपमा इस चोर बस्ती से दी है जिस के निकट संत सुपने मेँ भी नहीँ जाते अर्थात कपट की भक्ति से संतोँ को घृणा है।

साँपणि इक सब जीव कौँ, आगे पीछे खाइ।
दादू कहि उपगार करि, कोइ जन ऊबरि जाइ ॥६९॥
दादू खाये साँपणी, क्यौँ करि जीवैं लोग।
राम मंत्र जन* गारड़ी†, जीवैं यहि संजोग ॥७०॥
(दादू) माया कारण जग मरै, पिव के कारणि कोइ।
देखो ज्यौँ जग परजलै, निमख न न्यारा होइ ॥७१॥
काल कनक अरु कामिनी, परिहरि इन का संग।
दादू सब जग जलि मुवा, ज्यौँ दीपक जोति पतंग ॥७२॥
(दादू) जहाँ कनक अरु कामिनी, तहँ जीव पतंगे जाहिँ।
आगि अनँत सूझै नहीं, जलि जलि मूए माहिँ ॥७३॥
घट माहैँ माया घणी, बाहरि त्यागी होइ।
फाटीकंथा‡ पहरि करि, चिहन§ करै सब कोइ ॥७४॥
काया राखै बंद दे, मन दह दिसि खेलै।
दादू कनक अरु कामिनी, माया नहिँ मेलै ॥७५॥
दादू मन सौँ मीठी मुख सौँ खारी।
माया त्यागी कहैँ बजारी ॥७६॥
माया मंदिर मीच का, ता मैँ पैठा धाइ।
अंध भया सूझै नहीं, साध कहैँ समझाइ ॥७७॥
दादू केते जलि मुए, इस जोगी की आगि।
दादू दूरै बंचिये, जोगी के सँग लागि ॥७८॥
ज्यौँ जल मैँणी‖ मंछली, तैसा यहु संसार।
माया माते जीव सब, दादू मरत न बार ॥७९॥

---

* एक लिपि मैँ "जन" की जगह "गुरु" है। † साँप का बिष झाड़ने वाला। ‡ गुदड़ी। § चैन। ‖ भीतर।

(दादू) माया फोड़ै नैन दोइ, राम न सूझै काल ।
साध पुकारै मेर* चढ़ि, देखि अगिनो की झाल ॥८०॥

बिना भुवंगम हम डसे, बिन जल डूबे जाइ ।
बिनहीं पावक ज्यौं जले, दादू कुछ न बसाइ ॥८१॥

(दादू) अमृत रूपी आप है, और सबै बिष झाल ।
राखणहारा राम है, दादू दूजा काल ॥८२॥

बाजी चिहर† रचाइ करि, रह्या अपरछन‡ होइ ।
माया पट पड़दा दिया, ता थैं लखै न कोइ ॥८३॥

दादू बाहे देखताँ, ढिग ही ढौरी लाइ ।
पिव पिव करते सब गये, आपा दे न दिखाइ ॥८४§॥

मैं चाहूँ सो ना मिलै, साहिब का दीदार ।
दादू बाजी बहुत है, नाना रंग अपार ॥८५॥

हम चाहैं सो ना मिलै, औ बहुतेरा आहि ।
दादू मन मानै नहीं, केता आवै जाहि ॥८६॥

बाजी मोहे जीव सब, हम कौं भुरकी बाहि‖ ।
दादू कैसी करि गया, आपण रह्या छिपाइ ॥८७॥

दादू साईं सत्ति है, दूजा भर्म बिकार ।
नाँव निरंजन निर्मला, दूजा घोर अँधार ॥८८॥

दादू सो धन लीजिये, जे तुम्ह सेती होइ ।
माया बाँधे केई मुए, पूरा पड़्या न कोइ ॥८९॥

(दादू कहै) जे हम छाड़ैं हाथ थैं, सो तुम लिया पसारि ।
जे हम लेवैं प्रीति सौं, सो तुम दीया डारि ॥९०॥

---

*पहाड़ । †बिचित्र । ‡गुप्त । §ईश्वर ने जीवों के ढिग (साथ) ढौरी (चाह) लगाकर उन को जगत मैं बाहि (भरमा) रक्खा है-- पं० चं० प्र० । ‖ मंत्र डाला ।

(दादू) हीरा पग सौँ ठेलि करि, कंकर कौँ कर लीन्ह।
पारब्रह्म कौँ छाड़ि करि, जीवन सौँ हित कीन्ह ॥९१॥
(दादू) सब को बणिजै खार-खलि*, हीरा कोई न लेइ।
हीरा लेगा जौहरी, जो माँगै सो देइ ॥९२॥
दड़ी† दोट‡ ज्यौँ मारिये, तिहूँ लोक मैँ फेर।
धुर पहुँचे संतोष है, दादू चढ़िबा मेर§ ॥९३॥
अनलपंखि‖ आकाश कौँ, माया मेर§ उलंघि।
दादू उलटे पंथ चढ़ि, जाइ बिलम्बे अंगि ॥९४॥
(दादू) माया आगैँ जीव सब, ठाढ़े रहे कर जोड़ि।
जिन सिरजे¶ जल बुंद सौँ, ता सौँ बैठे तोड़ि ॥९५॥
सुर नर मुनियर बसि किये, ब्रह्मा बिसुन महेस।
सकल लोक के सिर खड़ी, साधू के पग हेठ ॥९६॥
(दादू) माया चेरी संत की, दासी उस दरबार।
ठकुराणी सब जगत की, तीन्यूँ लोक मँझार ॥९७॥
(दादू) माया दासी संत की, साकत की सिरताज।
साकत सेती भाँडणी**, संतौँ सेती लाज ॥९८॥
चारि पदारथ मुक्ति बापुरी, अठ सिधि नौ निधि चेरी।
माया दासी ता के आगैँ, जहँ भक्ति निरंजन तेरी ॥९९॥
(दादू कहै) ज्यौँ आवै त्यौँ जाइ बिचारी।
बिलसी बितड़ी नैँ माथैँ मारी†† ॥१००॥
(दादू) माया सब गहले‡‡ किये, चौरासी लख जीव।
ता का चेरी क्या करै, जे रँग राते पीव ॥१०१॥

---

*संसार खारी और फोक चीज़ैँ अर्थात कूड़ा करकट का गाहक है। †गैँद। ‡चोट। §मेरु=पहाड़। ‖अलल पच्छ या सारदूल चिड़िया जो आकाश ही मैँ रहता है। ¶ रचा। **निलज्ज। ††संतौँ ने माया को आप यथार्थ रीति से बिलसा, औरौँ को बाँटा (बितड़ी) और (नैँ) फिर धप्प मार कर निकाल दिया। ‡‡पागल।

(दादू) माया बैरिणि जीव की, जिनि को लावै प्रीति ।
माया देखै नरक करि*, यहु संतन की रीति ॥१०२॥
माया मति चकचाल करि†, चंचल कीये जीव ।
माया माते मद पिया, दादू बिसर्‍या पीव ॥ १०३॥
जणे जणे की रामकी‡, घर घर की नारी ।
पतिब्रता नहिं पीव की, सो माथैं मारी ॥१०४॥
जण जण के उठि पीछैं लागै, घर घर भरमत डोलै ।
ताथैं दादू खाइ तमाचे, मंदल दुहु मुख बोलै§ ॥१०५॥
जे नर कामिनि परिहरैं, ते छूटैं गर्भ-बास ।
दादू ऊँधे‖ मुख नहीं, रहैं निरंजन पास ॥१०६॥
रोक न राखै झूठ न भाखै, दादू खरचै खाइ ।
नदी पूर परबाह ज्यूँ, माया आवै जाइ ॥१०७॥
सदिका सिरजनहार का, केता आवै जाइ ।
दादू धन संचै नहीं, बैठ खुलावै खाइ ॥१०८॥
जोगणि ह्वै जोगी गहे, सोफणि¶ ह्वै करि सेस ।
भगतणि ह्वै भगता गहे, करि करि नाना भेस ॥१०९॥
बुधि बमेक बल हरणी, त्रय तन ताप उपावनी ।
अंग अगिनि परजालिनी, जिव घर बारि नचावनी॥११०
नाना बिधि के रूप धरि, सब बंधे भामिनी ।
जग बिटंब** परलै किया, हरि नाम भुलावनी ॥१११॥

---

*नर्क समान । †मत को भरमा कर । ‡फ़ारसी मैं राम चेरे को कहते हैं, रामक=छुद्र चेरा, "रामकी"=छुद्र चेरी । §ढोलक जो दो मुँह से बोलती है और इस लिये तमाचा (चटकना) खाती है । ‖गर्भ मैं बच्चा औंधे मुँह रहता है । ¶नागिन । **पसारा, ढकोसला ।

बाजीगर को पूतरी, ज्यूँ मरकट मोह्या।
दादू माया राम की, सब जगत बिगोया ॥११२॥
मोरा मोरी देखि करि, नाचै पंख पसारि।
यौं दादू घर आँगणै, हम नाचे कै बारि* ॥११३॥
(दादू) जिस घट दीपक राम का, तिस घट तिमर न होइ
(४-१९६)
उस उजियारे जोति के, सब जग देखै सोइ ॥११४॥
(दादू) जेहि घट ब्रह्म न परगटै, तहँ माया मंगल गाइ।
दादू जागै जोति जब, तब माया भरम बिलाइ ॥११५॥
(दादू) जोतो चमकै तिरवरै†, दीपक देखै लोइ।
चंद सूर का चाँदणा, पगार‡ छलावा होइ ॥११६॥
दादू दीपक देह का, माया परगट होइ।
चौरासी लख पंखिया, तहाँ परै सब कोइ ॥११७॥
यहु घट दीपक साध का, ब्रह्म जोति परकास।
दादू पंखी संत जन, तहाँ परै निज दास ॥११८॥
दादू मन मिरतक भया, इंद्री अपणै हाथ।
तौ भी कदे न कीजिये, कनक कामिनी साथ ॥११९॥
जाणै बूझै जीव सब, त्रिया पुरुष का अंग।
आपा पर भूला नहीं, दादू कैसा संग ॥१२०॥
माया के घट साजि द्वै, त्रिया पुरुष धरि नाँउ।
दून्यूँ सुन्दर खेलैं दादू, राखि लेहु बलि जाँउ ॥१२१॥
बहण बीर करि देखिये, नारी अरु भर्तार।
परमेसुर के पेट के, दादू सब परिवार ॥१२२॥

---

*कई बार। †झिलमिलाय। ‡पगार के ठीक अर्थ गुजराती भाषा में "तनख़ाह" के हैं परंतु यहाँ "चमक" से मतलब है। "पगार छलावा" का अभिप्राय भूतों की लुकारी या शहाबा से है जिस में झूठा प्रकाश दीख पड़ता है।

पर घर परिहरि आपणी, सब एकै उणहार[*] ।
पसु प्राणी समझै नहीं, दादू मुग्ध गँवार ॥१२३॥
पुरिष पलटि बेटा भया, नारी माता होइ ।
दादू को[†] समझै नहीं, बड़ा अचंभा मोहिं ॥१२४॥
माता नारी पुरिष की, पुरिष नारि का पूत ।
दादू ज्ञान बिचारि करि, छाडि गये अवधूत ॥१२५॥
ब्रह्मा बिस्नु महेस लौं, सुर नर उरझाया ।
बिष का अमृत नाँव धरि, सब किनहूँ खाया ॥१२६॥
(दादू) माया का जल पीवताँ, ब्याधी होइ बिकार ।
सेझे[‡] का जल पीवताँ, प्राण सुखी सुध सार ॥१२७॥
जिव गहिला जिव बावला, जीव दिवाना होइ ।
दादू अमृत छाड़ि करि, बिष पीवै सब कोइ ॥१२८॥
माया मैली गुणमई, धरि धरि उज्जल नाँव ।
दादू मोहै सबन कूँ, सुर नर सब ही ठाँव ॥१२९॥
बिष का अमृत नाँव धरि, सब कोई खावै ।
दादू खारा ना कहै, यहु अचिरज आवै ॥१३०॥
(दादू) जे बिष जारै खाइ करि, जिन मुख मैं मेलै ।
आदि अंत परलय गये, जे बिष सूँ खेलै ॥१३१॥
जिन बिष खाया ते मुए, क्या मेरा क्या तेरा ।
आगि पराई आपणी, सब करै निबेरा ॥१३२॥
(दादू कहै) जिनि बिष पीवै बावरे, दिन दिन बाढ़ै रोग ।
देखत ही मरि जायगा, तजि बिषया रस भोग ॥१३३॥

---

*सदृश, रूप । †कोई । ‡सोत ।

अपणा पराया खाइ बिष , देखत ही मरि जाय ।
दादू को जीवै नहीं , इहिं भोरैं[*] जिनि खाइ ॥१३४॥
ब्रह्म सरीखा होइ करि , माया सूँ खेलै ।
दादू दिन दिन देखताँ , अपणौ गुण मेलै[†] ॥१३५॥
माया मारै लात सूँ , हरि कूँ घालै हाथ ।
संग तजै सब झूठ का , गहै साच का साथ ॥१३६॥
घर के मारे बन के मारे , मारे स्वर्ग पयाल ।
सूषिम मोटा गूँथि करि , माँड्या माया जाल ॥१३७॥
ऊभा[‡] सारं बैठ बिचारं , संभारं जागत सूता ।
तीन लोक तत जाल बिडारं , तहाँ जाइगा पूता[§] ॥१३८॥
मुए सरीखे ह्वै रहे , जीवण की क्या आस ।
दादू राम बिसारि करि , बाँछै[||] भोग बिलास ॥१३९॥
माया रूपी राम कूँ , सब कोई ध्यावै ।
अलख आदि अनादि है , सो दादू गावै ॥१४०॥
ब्रह्मा का बेद बिस्नु की मूरति, पूजै सब संसारा ।
महादेव की सेवा लागै , कहैं है सिरजनहारा ॥१४१॥
माया का ठाकुर किया , माया की महिमाइ ।
ऐसे देव अनंत करि , सब जग पूजन जाइ ॥१४२॥
माया बैठी राम ह्वै , कहै मैं ही मोहनराइ ।
ब्रह्मा बिस्नु महेस लौं , जोनी आवै जाइ ॥१४३॥
माया बैठी राम ह्वै , ता कूँ लखै न कोइ ।
सब जग मानै सत्त करि , बड़ा अचंभा मोहिं ॥१४४॥
अंजन किया निरंजना , गुण निर्गुण जानै ।
धर्‌या दिखावै अधर करि , कैसैं मन मानै ॥१४५॥

---

*भूले से । †त्यागै । ‡खड़ा । §पवित्र । ||माँगै ।

निरंजन की बात कहि, आवै अंजन माहिँ।
दादू मन मानै नहीं, सर्ग रसातल जाहिँ ॥१४६॥
दादू कथणी और कुछ, करणी करै कुछ और।
तिन थैं मेरा जिव डरै, जिन के ठीक न ठौर ॥१४७॥
कामधेनु के पटतरे*, करै काठ की गाइ।
दादू दूध दूझै नहीं, मूरखि देहि बहाइ ॥१४८॥
चिंतामणि† कंकर किया, माँगै कछू न देइ।
दादू कंकर डारि दे, चिंतामणि कर लेइ ॥१४९॥
पारस किया पषान का, कंचन कदे‡ न होइ।
दादू आतम राम बिन, भूलि पड़्या सब कोइ ॥१५०॥
सूरिज फटिक पषाण का, ता सूँ तिमर न जाइ।
साचा सूरिज परगटै, दादू तिमर नसाइ ॥१५१॥
मूरति घड़ी§ पषाण की, कीया सिरजनहार।
दादू साच सूझै नहीं, यूँ डूबा संसार ॥१५२॥
पुरिष बिदेस कामिणि किया, उसही के उणहारि‖।
कारज को सीझै नहीं, दादू माथैं मारि ॥१५३॥
कागद का माणस किया, छत्रपती सिर मौर।
राज पाट साधै नहीं, दादू परिहरि और ॥१५४॥
सकल भवन भानै घड़ै, चतुर चलावणहार।
दादू सो सूझै नहीं, जिस का वार न पार ॥१५५॥

---

*बराबर। †एक मणि जो मुँह माँगा पदार्थ देती है। ‡कभी। §गढ़ी।
‖यदि स्त्री परदेस गये हुए पुरुष के सरीखी मूरत बनाकर रक्खै तो उससे कोई काम नहीं निकल सकता।

(दादू) पहिली आप उपाइ करि, न्यारा पद निर्बाण ।
ब्रह्मा बिस्नु महेस मिलि, बंध्या सकल बँधाण* ॥१५६॥
नाँव नीति अनीति सब, पहिली बाँधे बंध ।
पसू न जाणै पारधी†, दादू रोपै फंध ॥१५७॥
दादू बाँधे बेद बिधि, भरम करम उरझाइ ।
मरजादा माहैं रहै, सुमिरण किया न जाइ॥१५८॥
(दादू) माया मीठी बोलणी, नै नै‡ लागै पाँइ ।
दादू पैसै पेट मैं, काढ़ि कलेजा खाइ ॥१५९॥
नारी नागणि जे डसे, ते नर मुए निदान ।
दादू को जीवै नहीं, पूछौ सबै सयान ॥१६०॥
नारी नागणि एक सी, बाघणि बड़ी बलाइ ।
दादू जे नर रत भये, तिन का सरबस खाइ ॥१६१॥
नारी नैन न देखिये, मुख सूँ नाँव न लेइ ।
कानौं कामणि जिनि सुणै, यहु मण जाण न देइ ॥१६२॥
सुंदरि खाये साँपणी, केते यहि कलि माहिं ।
आदि ग्रंत इन सब डसे, दादू चेतै नाहिं ॥१६३॥
दादू पैसै पेट मैं, नारी नागणि होइ ।
दादू प्राणी सब डसे, काढ़ि सकै ना कोइ ॥१६४॥
माया साँपणि सब डसै, कनक कामणी होइ ।
ब्रह्मा बिस्नु महेस लौं, दादू बचै न कोइ ॥१६५॥

---

*निरंजन जोत (काल और माया) ने ब्रह्मा, बिश्नु, महेश, को पैदा किया और फिर निरंजन न्यारे होकर निरबान पद मैं सतपुरुष के ध्यान मैं लग गये और तीनौं देवता और माया ने मिलकर सब रचना त्रिलोकी की करी और सब प्रकार के बंधन जीव को अपनी अमलदारी से बाहर न आ सकने के निमित्त फैलाये। †शिकारी। ‡झुक झुक कर।

माया मारै जीव सब, खंड खंड करि खाइ।
दादू घट का नास करि, रोवै जग पतियाइ ॥१६६॥
बाबा बाबा कहि गिलै*, भाई कहि कहि खाइ।
पूत पूत कहि पी गई, पुरिषा जिन पतियाइ ॥१६७॥
ब्रह्मा बिस्नु महेस की, नारी माता होइ।
दादू खाये जीव सब, जिनि रु पतीजै कोइ ॥१६८॥
माया बहुरूपी नटणी नाचै, सुर नर मुनि कूँ मोहै।
ब्रह्मा बिस्नु महादेव बाहै†, दादू बपुरा को है ॥१६९॥
माया पासी‡ हाथि लै, बैठी गोप छिपाइ।
जे कोइ धीजै प्राणियाँ, ताही के गलि बाहि ॥१७०॥
पुरिषा पासी हाथि करि, कामणि के गल बाहि।
कामणि कटारी कर गहै, मारि पुरिष कूँ खाइ ॥१७१॥
नारी बैरणि पुरिष की, पुरिषा बैरी नारि।
अंति कालि दून्यूँ मुए, दादू देखि बिचारि ॥१७२॥
नारी पुरिष कूँ ले मुई, पुरिषा नारी साथ।
दादू दून्यूँ पचि मुए, कछू न आया हाथ ॥१७३॥
भँवरा लुब्धी बास का, कँवल बँधाना आइ।
दिन दस माहैं देखताँ, दून्यूँ गये बिलाइ ॥१७४॥
नारी पीवै पुरिष कूँ, पुरिष नारी कूँ खाइ।
दादू गुर के ज्ञान बिन, दून्यूँ गये बिलाइ ॥१७५॥

॥ इति माया को अंग समाप्त ॥१२॥

---

*निगलै। †जोतै। ‡फाँसी।

१३—साच को अंग

(दादू) नमो नमो निरंजनं , नमस्कार गुर देवतः ।
बन्दनं सर्ब साधवा , प्रणामं पारंगतः ॥ १ ॥

॥ निर्दई-मांसाहारी ॥

(दादू) दया जिन्हौं के दिल नहीं , बहुरि कहावैं साध ।
जे मुख उन का देखिये , (तौ) लागै बहु अपराध ॥२॥
(दादू) मिहर मुहब्बत मन नहीं , दिल के बज्र कठोर ।
काले काफिर ते कहिय* , मोमिन† मालिक और ॥३॥
(दादू) कोई काहू जीव की , करै आतमा घात ।
साच कहूँ संसा नहीं , सो प्राणी दोजगि‡ जात॥४॥
(दादू) नाहर सिंह सियाल सब , केते मूसलमानं ।
माँस खाइ मोमिन भये , बड़े मियाँ का ज्ञान ॥५॥
(दादू) माँस अहारी जे मरा , ते नर सिंह सियाल ।
बग§ मंजार‖ सुनहा¶ सही , एता परतषि** काल ॥६॥
(दादू) मुई मार माणस घणे , ते परतषि** जम काल ।
मिहर दया नहिं सिंहदिल†† , कूकर काग सियाल ॥७॥
माँस अहारी मद‡‡ पिवै , बिषै बिकारी सोइ ।
दादू आतम राम बिन , दया कहाँ थैं होइ ॥८॥

---

* कहना चाहिये । † सच्चे मालिक का ईमान या निश्चय रखने वाले ।
‡ दोज़ख=नर्क । § बगुला । ‖ बिल्ली । ¶ कुत्ता । ** प्रत्यक्ष । †† संग दिल = कठोर ।
‡‡ शराब ।

लंगर लोग लोभ सूँ लागे, बोलैं सदा उन्हीं की भीर।
जोर जुलम बीच बटपारे, आदि अंत उनहीं सूँ सीर॥९*॥

तन मन मारि रहे साईं सूँ, तिन कूँ देखि करैं ताजीर।
ये बड़ि बूझि कहाँ थैं पाई, ऐसी कजा औलियापीर॥१०†॥

बेमिहर गुमराह ग़ाफ़िल, गोश्त ख़ुर्दनी।
बेदिल बदकार आलम, हयात मुर्दनी॥११‡॥

छल करि बल करि धाइ करि, मारै जेहि तेहिं फेरि।
दादू ताहि न धीजिये, परणै सगी पतेरि§॥१२॥

(दादू) दुनियाँ सूँ दिल बाँधि करि, बैठे दीन गँवाइ।
नेकी नाँव बिसारि करि, करद कमाया खाइ‖॥१३॥

(दादू) गल काटै कलमा भरै, अया बिचारा दीन।
पाँचौ बखत निमाज गुजारै, स्याबित नहीं अकीन॥१४¶॥

---

* साखी नं० ९-निलज्ज बिषई संसारी [लंगर लोग] उन निर्दई बेईमानों का पच्छ [भीर] करते और उन्हीं की सी बोली बोलते हैं, ऐसे लोग अत्याचार और दुष्टता [ज़ोर ज़ुलम] की राह के ठग [बटपार] हैं और यह जीव जनम भर ऐसों ही का साथ [सीर] देता है।

† साखी नं० १०-जो भक्त जन तन मन को नीचा डाल कर मालिक की सेवा में लगे हैं उन से ऐसे दुर्जन विरोध [ताज़ीर] रखते हैं; न जाने यह अनूठी समझौती [बड़ी बूझि] महात्माओं और सद्गुउपदेशकों [औलिया पीर] के घात [क़ज़ा] की कहाँ से धारन की।

‡ साखी नं० ११-निठुर [बेमिहर] बिमुख [गुमराह] अचेत (ग़ाफ़िल) मांस अहारी [गोश्त ख़ुर्दनी] कपटी [बेदिल] [कुकर्मी [बदकार], संसार में [आलम] जीते जी मृतक तुल्य [हयात मुर्दनी] ह।

§ ऐसे का कभी बिश्वास न करै [धीजिये] वह अपनी सगी बहिन [पतेरि] से ब्याह कर ले (परणै) तो अचरज नहीं।

‖ छुरी की कमाई (यानी गोश्त जिस को छुरे से काटते हैं) खाता है।

¶ मुसलमान दीन आधीन बकरे (अया) को ज़िबह करने के वक्त कलमा पढ़ते हैं-लेकिन पाँचों वक़्त की नमाज़ पढ़ने से क्या होता है जब प्रतीत (यक़ीन) पक्की नहीं है।

दुनियाँ के पीछे पड़्या, दौड़्या दौड़्या जाइ।
दादू जिन पैदा किया, ता साहिब कूँ छिटकाइ ॥१५॥
कुफ़र* जे के मन मैं, मीयाँ मूसलमान।
दादू पेया† झंग‡ मैं, बिसारे रहमान ॥ १६ ॥
आपस§ कैाँ मारै नहीं, पर कैाँ मारन जाइ।
दादू आपा मारे बिना, कैसे मिलै खुदाइ ॥ १७ ॥
भीतर दुंदर|| भरि रहे, तिन कैाँ मारैँ नाहिं।
साहिब की अरवाह¶ कैाँ, ता कैाँ मारन जाहिं ॥ १८ ॥
(दादू) मूए कैाँ क्या मारिये, मीयाँ मूई** मार।
आपस†† कैाँ मारै नहीं, औरौँ कैाँ हुसियार ॥ १९ ॥

॥ साच ॥

जिस का था तिस का हुआ, तौ काहे का दोस।
दादू बंदा बंदगी, मीयाँ ना कर रोस ॥ २० ॥
सेवग सिरजनहार का, साहिब का बंदा।
दादू सेवा बंदगी, दूजा क्या धंधा ॥ २१ ॥

॥ काफ़र यानी असाध की रहनी ॥
॥ चौपाई‡‡ ॥

सो काफिर जो बोलै काफ। दिल अपणा नहिं राखै साफ ॥
साईं कैाँ पहिचानै नाहीं। कूड़ कपट सब उस ही माहीं ॥२२॥
साईं का फुरमान न मानै, कहाँ पीव ऐसे करि जानै।
मन आपणे मैं समझत नाहीं। निरखत चलै आपणी छाहीं
॥ २३ ॥

---

*जिस के मन मैं संसार की चाह और मालिक की अचाह है।
† पड़ा। ‡ झगड़ा। § अपनपौ। || दुई, भरम, कलह। ¶ रूहैं, जीवौं।
** माया, ममता। †† हुँगता। ‡‡ नीचे की आठ कड़ियाँ और फिर दो दोहों के आगे की आठ कड़ियाँ चौपाई की हैं जिन पर एक हो नंबर होना चाहिये लेकिन जो कि पाँचो लिपियों और छापों मैं दोहा की तरह दो दो कड़ियों पर नंबर दिये हैं वही तरीक़ा क़ाइम रक्खा गया।

जो हम नहीं गुजारते, तुम कौं क्या भाई।
सीर नहीं कुछ बंदगी, कहु क्यूँ फुरमाई ॥ ३२ ॥
अपणे अमलौं छूटिये, काहू के नाहीं।
सोई पीड़ पुकारसी, जा दूखै माहीं ॥ ३३ ॥
कोई खाइ अघाइ करि, भूखे क्यौं भरिये।
खूटी पूगी* आन की, आपण क्यौं मरिये ॥ ३४ ॥
फूटी नाव समंद मैं, सब डूबन लागे।
अपणाँ अपणाँ जीव ले, सब कोई भागे ॥ ३५ ॥
(दादू) सिरि सिरि लागी आपणे, कहु कौण बुझावै।
अपणाँ अपणाँ साच दे, साईं कौं भावै ॥ ३६ ॥

॥ चितावनी ॥

साचा नाँव अलाह का, सोई सति करि जाणि।
निहचल करि ले बंदगी, दादू सो परवाणि ॥ ३७ ॥
आवट कूटा† होत है, औसर बीता जाइ।
दादू करि ले बंदगी, राखणहार खुदाइ ॥ ३८ ॥
इस कलि केते ह्वै गये, हिंदू मूसलमान।
दादू साची बंदगी, झूठा सब अभिमान ॥३९॥

॥ कथनी बिना करनी ॥

पोथी अपणा प्यंड करि, हरि जस माहैं लेख।
पंडित अपणा प्राण करि, दादू कथहु अलेख ॥ ४०‡ ॥

---

*खोटा भाग। †कूटा पीसी, जनम मरन। ‡ भगवंत जो लिखने पढ़ने से परे है उस के गुणानुबाद के लिये अपने पिंड की पोथी बनाओ अंतर को कागद, उसके दात को लेख, और अपने प्राण को पाठक।

जोर करै मिसकीन[*] सतावै । दिल उस की मैं दरद न आवै ॥
साईं सेती नाहीं नेह । गर्ब करै अति अपणी देह ॥२४॥
इन बातन क्यौं पावै पीव । पर धन ऊपर राखै जीव ॥
जोर जुलुम करि कुटँब सूँ खाइ । सो काफिर दोजग मैं
जाइ ॥ २५ ॥

॥ हिंसा ॥

॥ दोहा ॥

(दादू) जा कौं मारण जाइये , सोई फिर मारै ।
जा कौं तारण जाइये , सोई फिर तारै ॥ २६ ॥
(दादू) नफस[†] नाँव सूँ मारिये , गोसमाल[‡] दे पंद[§] ।
दूई है सो दूरि करि , तब घट मैं आनंद ॥ २७ ॥

॥ चौपाई ॥

मुसलमान जो राखै मान । साईं का मानै फुरमान ॥
सारौं कौं सुखदाई होइ । मुसलमान कर जाणै सोइ॥२८॥
(दादू) मुसलमान मिहर गहि रहै । सब कौं सुख किसही
नहिं दहै ॥
मुवा न खाय जीवत नहिं मारै । करै बंदगी राह सँवारै ॥२९॥
सो मोमिन मन मैं करि जाणि । सत्ति सबूरी बैसै आणि ॥
चालै साच सँवारै बाट । तिन कूँ खुलै भिस्त का पाट ॥३०॥
सो मोमिन मोम दिल होइ । साईं को पहिचानै सोइ ।
जोर न करै हराम न खाइ । सो मोमिन भिस्त मैं जाइ ॥३१॥

---

*ग़रीब । †मन । ‡कान उमेठना, सज़ा देना । §समझौती, सीख । ‖ कहते हैं कि नम्बर ३२ से ३६ तक की साखियाँ मुसलमानों के इस व्यंग पर लिखी गईं कि दादूजी न नमाज़ पढ़ते और न देवी देवता पूजते तो न हिन्दू हुए न मुसलमान, फिर हैं क्या ?

जो हम नहीं गुजारते , तुम कौं क्या भाई ।
सीर नहीं कुछ बंदगी , कहु क्यूँ फुरमाई ॥ ३२ ॥
अपणे अमलौं छूटिये , काहू के नाहीं ।
सोई पीड़ पुकारसी , जा दूखे माहीं ॥ ३३ ॥
कोई खाइ अघाइ करि, भूखे क्यौं भरिये ।
खूटी पूगी* आन की, आपण क्यौं मरिये ॥ ३४ ॥
फूटी नाव समंद मैं, सब डूबन लागे ।
अपणाँ अपणाँ जीव ले, सब कोई भागे ॥ ३५ ॥
(दादू) सिरि सिरि लागी आपणे, कहु कौण बुझावै ।
अपणाँ अपणाँ साच दे, साईं कौं भावै ॥ ३६ ॥

॥ चितावनी ॥

साचा नाँव अलाह का , सोई सति करि जाणि ।
निहचल करि ले बंदगी , दादू सो परवाणि ॥ ३७ ॥
आवट कूटा† होत है , औसर बीता जाइ ।
दादू करि ले बंदगी , राखणहार खुदाइ ॥ ३८ ॥
इस कलि केते ह्वै गये , हिंदू मूसलमान ।
दादू साची बंदगी , झूठा सब अभिमान ॥३९॥

॥ कथनी बिना करनी ॥

पोथी अपणा प्यंड करि , हरि जस माहैं लेख ।
पंडित अपणा प्राण करि , दादू कथहु अलेख ॥ ४०‡ ॥

---

*खोटा भाग । †कूटा पीसी, जनम मरन । ‡ भगवंत जो लिखने पढ़ने से परे है उस के गुणानुवाद के लिये अपने पिंड की पोथी बनाओ अंतर को कागद, उसके दात को लेख, और अपने प्राण को पाटक ।

काया कतेब बोलिये, लिखि राखूँ रहिमान* ।
मनवाँ मुल्ला बोलिये, सुरता† है सुबहान‡ ॥ ४१ ॥
(दादू) काया महल मैं निमाज गुजारूँ, तहँ और
न आवन पावै ।
मन मनके§ करि तसबी|| फेरूँ, तब साहिब के मन भावै॥४२॥
दिल दरिया मैं गुसल¶ हमारा, ऊजू** करि चित लाऊँ ।
साहिब आगे करूँ बंदगी, बेर बेर बलि जाऊँ ॥४३॥
(दादू) पंचौँ संगि सँभालूँ साँई, तन मन तौ सुख पाऊँ ।
प्रेम पियाला पिवजी देवै, कलमा ये लय लाऊँ ॥४४॥
सोभा कारण सब करै, रोजा बंग निमाज ।
मुवा न एकै आह सूँ, जे तुझ साहिब सेती काज ॥४५††॥
हर रोज हजूरी होइ रहु, काहे करै कलाप‡‡ ।
मुल्ला तहाँ पुकारिये, जहँ अरस§§ इलाही आप ॥४६॥
हर दम हाजिर होणाँ बाबा, जब लग जीवै बंदा ।
दाइम|||| दिल साँई सौँ साबित, पंच बखत का धंधा ॥४७॥
(दादू) हिंदू मारग कहैँ हमारा, तुरक कहैँ रह¶¶ मेरी ।
कहाँ पंथ है कहौ अलह का, तुम तौ ऐसी हेरी ॥४८॥
(दादू) दुई दरोग*** लोग कौँ भावै, साँई साच पियारा ।
कौण पंथ हम चलैँ कहौ धौँ, साधौ करौ बिचारा ॥४९॥
खंडि खंडि करि ब्रह्म कौँ, पखि पखि††† लीया बाँटि ।
दादू पूरण ब्रह्म तजि, बँधे भरम की गाँठि ॥५०॥

---

*दयाल पुरुष । †श्रोता । ‡पवित्र भगवंत । §माला के दाने । ||माला । ¶स्नान ।
**निमाज़ के पहिले मुसलमान हाथ मुँह धोते हैँ उसको वजू बोलते हैँ ।
††भाव यह कि रोज़ा, बाँग नमाज़ आदि कार्रवाई ऊपरी दिखावे की करता है परन्तु मालिक के मिलने की बिरह नहीँ उठाता कि जिससे काम बनै । ‡‡शोक, दुख ।
§§अर्श=नवाँ आसमान । ||||सदा, हमेशा । ¶¶राह । ***झूठ । †††पखड़ी पखड़ी ।

जीवत दीसै रोगिया, कहैं मूवाँ पीछैं जाइ।
दादू दुँह के पाढ़ मैं, ऐसी दारू लाइ ॥ ५१* ॥

सो दारू किस काम की, जा थैं दरद न जाइ।
दादू काटै रोग कैाँ, सो दारू ले लाइ ॥ ५२ ॥

(दादू) अनभै काटै रोग कौँ, अनहद उपजै आइ।(४-२०७)
सेभ्झे का जल निर्मला, पीवै रुचि ल्यौ लाइ ॥५३॥

सोइ अनभै सोइ ऊपजी, सोई सबद तत सार।
सुणताँ ही साहिब मिलै, मन के जाहिँ बिकार ॥५४॥

औषद खाइ न पछि रहै, बिषम ब्याधि क्यौँ जाइ।(१-१५१)
दादू रोगी बावरा, दोस बैद कैाँ लाइ ॥ ५५ ॥

॥ पेटू होने का निषेद ॥

एक सेर का ठाँवड़ा†, क्यौँ ही भरया न जाइ।
भूख न भागी जीव की, दादू केता खाइ ॥ ५६ ॥

पसुवाँ की नाइँ भरि भरि खाइ, व्याधि घनेरी बधती‡जाइ।
राम रसाइन भरि भरि पीवै, दादू जोगी जुग जुग जीवै॥५७॥

दादू चारै§ चित दिया, चिंतामणि कैाँ भूलि।
जन्म अमोलिक जात है, बैठे माँझी फूलि ॥ ५८ ॥

भरी अधौड़ी भावठी॥, बैठा पेट फुलाइ।
दादू सूकर स्वान ज्यौँ, ज्योँ आवै त्यौँ खाइ ॥ ५९ ॥

---

*इस साखी का भावार्थ यह है कि तुम जो अनेक इष्ट देवी देवताओँ के बाँध रहे हो और उन से यह आस करते हो कि मुए पीछे मुक्ति हो जायगी यह तुम्हारी भूल है, भला संसार रूपी पहाड़ (पाढ़) की दाह (दुँह) मैँ यह छोटी छोटी दवाइयाँ (अर्थात इष्ट) क्या काम दे सकती हैँ, इस लिये ऐसी भारी औषधी लेव जैसा कि ५२ वीं साखी मैँ लिखा है। † बरतन। ‡ बढ़ती। § चारा या पशु तुल्य अहार मैँ। ॥ कच्चे चमड़े की भट्ठी यानी पेट।

(दादू) खाटा मीठा खाइ करि, स्वादि चित दीया ।
इन मैं जीव बिलंबिया, हरि नाँव न लीया ॥ ६० ॥
भगति न जाणै राम की, इंद्री के आधीन ।
दादू बंध्या स्वाद सौं, ता थैं नाँव न लीन्ह ॥ ६१ ॥
(दादू) अपना नीका राखिये, मैं मेरा दिया बहाइ ।
तुझ अपणे सेती काज है, मैं मेरा भावै तीधर जाइ ॥६२॥
जे हम जाण्या एक करि, तौ काहे लोक रिसाइ ।
मेरा था सो मैं लिया, लोगौं का क्या जाइ ॥ ६३ ॥
दादू द्वै द्वै पद किये, साखी भी द्वै चारि ।
हम कौं अनभै ऊपजी, हम ज्ञानी संसारि ॥ ६४ ॥
सुनि सुनि पर्चै ज्ञान के, साखी सबदी होइ ।
तब हीं आपा ऊपजै, हम सा और न कोइ ॥६५॥
सो उपजी किस काम की, जे जण जण करै कलेस ।
साखी सुनि समझै साध की, ज्यौं रसना रस सेस ॥६६॥
(दादू) पद जोड़ै साखी कहै, बिषै न छाड़ै जीव ।
पानी घालि बिलोइये, तौ क्यौं कर निकसै घीव ॥६७॥
(दादू) पद जोड़े क्या पाइये, साखी कहे क्या होइ ।
सत्ति सिरोमणि साइयाँ, तत्त न चीन्हा सोइ ॥६८॥
कहिबे सुणिबे मन खुसी, करिबा औरै खेल ।
बातौं तिमर न भाजई, दीवा बाती तेल ॥ ६९ ॥
(दादू) करिबे वाले हम नहीं, कहिबे कूँ हम सूर ।
कहिबा हम थैं निकट है, करिबा हम थैं दूर ॥७०॥
(दादू) कहे कहे का होत है, कहे न सीझै काम ।
कहे कहे का पाइये, जब लग रिदै न आवै राम ॥७१॥

राम कहूँ ते जोड़िबा, राम कहूँ ते साखि।
राम कहूँ ते गाइबा, राम कहूँ ते राखि ॥ ७२ ॥
दादू सुरता* घरि† नहीं, बकता बकै सु बादि।
बकता सुरता एक रस, कथा कहावै आदि ॥ ७३ ॥
बकता सुरता घरि नहीं, कहै सुणै को राम।
दादू यहु मन थिर नहीं, बादि बकै बेकाम ॥ ७४ ॥
देखा देखी सब चले, पार न पहुँच्या जाइ।
दादू आसण पहल कै, फिरि फिरि बैठे आइ ॥७५॥
(१०-११७)
अंतर सुरझे समझि करि, फिर न अरूझे जाइ।
बाहिर सुरझे देखताँ, बहुरि अरूझे आइ ॥७६॥
आलम लावे आप सौं, साहिब सेती नाहिं।
दादू को‡ निपजै नहीं, दून्यूँ निर्फल जाहिं ॥७७॥
तूँ मुझ कूँ मोटा§ कहै, हौं तुझे बड़ाई मान।
साईं कूँ समझै नहीं, दादू झूठा ज्ञान ॥७८॥
सदा समीप रहै सँग सनमुख, दादू लखै न गूझ।
सुपनै ही समझै नहीं, क्यौं करि लहै अबूझ ॥७९॥
(दादू) भगत कहावैं आप कूँ, भगति न जाणैं भेव।
सुपनैं ही समझैं नहीं, कहाँ बसैं गुरदेव ॥८०॥(१-१२९)
(दादू) सेवग नाँव बुलाइये, सेवा सुपिनै नाहिं।
नाँव धराये का भया, जे एक नहीं मन माहिं ॥८१॥
नाँव धरावे दास का, दासातन थैं दूरि।
दादू कारज क्यौं सरै, हरि सौं नहीं हजूरि ॥८२॥

---

* श्रोता, सुनने वाला। † एक चित्त। ‡ कोई। § बड़ा।

भगत न होवै भगति बिन , दासातन बिन दास ।
बिन सेवा सेवग नहीं , दादू झूठो आस ॥८३॥
(दादू) राम भगति भावै नहीं, अपनी भगति का भाव ।
राम भगति मुख सौं कहै , खेलै अपणाँ डाव* ॥८४॥
भगति निराली रहि गई , हम भूलि पड़े बन माहिं ।
भगति निरंजन राम की , दादू पावै नाहिं ॥८५॥
सो दसा कतहूँ रही , जिहिं दिसि पहुँचै साध ।
मैं तैं मूरखि गहि रहे , लोभ बड़ाई बाद ॥८६॥
दादू राम बिसारि करि , कीये बहु अपराध ।
लाजौं मारे साध सब , नाँव हमारा साध ॥८७॥
मनसा के पकवान सौं , क्यौं पेट भरावै ।
ज्यौं कहिये त्यौं कीजिये , तब हीं बनि आवै ॥८८॥
(दादू) मिसरी मिसरी कीजिये, मुख मीठा नाहीं ।
मीठा तब हीं होइगा , छिटकावै माहीं ॥८९॥
(दादू) बातौं ही पहुँचै नहीं, घर दूरि पयाना ।
मारग पंथी उठि चलै , दादू सोइ सयाना ॥९०॥
बातौं सब कुछ कीजिये , अंत कछू नहिं देखै ।
मनसा बाचा कर्मना , तब लागै लेखै ॥९१॥
(दादू) कासौं कहि समझाइये , सब को चतुर सुजान ।
कीड़ी कुंजर आदि दै , नाहिन कोई अजान ॥९२॥
(दादू) सूकर स्वान सियाल सिंह , सर्प रहै घट माहिं ।
कुंजर कीड़ी जीव सब , पाँडे जाणैं नाहिं ॥९३॥ (११-९)
(दादू) सूना घट सोधी नहीं , पंडित ब्रह्मा पूत ।
अगम† निगम‡ सब कथैं , घर§ मैं नाचैं भूत‖ ॥९४॥

---

*दाव । †शास्त्र । ‡पुरान आदिक । §घट । ‖काम क्रोध आदिक ।

पढ़े न पावै परम गति, पढ़े न लंघै पार।
पढ़े न पहुँचै प्राणिया, दादू पीड़ पुकार ॥९५॥
दादू निबरे* नाँव बिन, झूठा कथैं गियान।
बैठे सिर खाली करैं, पंडित बेद पुरान ॥९६॥
(दादू) केते पुस्तक पढ़ि मुए, पंडित बेद पुरान।
केते ब्रह्मा कथि गये, नाहिंन राम समान ॥९७॥
सब हम देख्या सोधि करि, बेद पुरानौं† माहिँ।
जहाँ निरंजन पाइये, सो देस दूरि इत नाहिँ ॥९८॥
पढ़ि पढ़ि थाके पंडिता, किन हुँ न पाया पार।
कथि कथि थाके मुनि जना, दादू नाँइ अधार ॥९९॥(२-८७)
काजी कजा‡ न जानही, कागद हाथि कतेब।
पढ़ताँ पढ़ताँ दिन गये, भीतर नाहीँ भेद ॥१००॥
मसि§ कागद के आसरे, क्यौं छूटै संसार।
राम बिना छूटै नहीँ, दादू भर्म बिकार ॥१०१॥
कागद काले करि मुए, केते बेद पुरान।
एकै अष्यर‖ पीव का, दादू पढ़ै सुजान ॥१०२॥
दादू अष्यर प्रेम का, कोई पढ़ेगा एक। (३-११८)
दादू पुस्तक प्रेम बिन, केते पढ़ैं अनेक ॥१०३॥
दादू पाती प्रेम की, बिरला बाँचै कोइ। (३-११९)
बेद पुरान पुस्तक पढ़े, प्रेम बिना क्या होइ ॥१०४॥
(दादू) कहताँ कहताँ दिन गये, सुणताँ सुणताँ जाइ।
दादू ऐसा को नहीँ, कहि सुणि राम समाइ ॥१०५॥

---

*हीन, कमतर। †दो पुस्तकों में "कुरानौं" है। ‡शरा का मर्म। § सियाही।
‖ अक्षर।

मौन गहैं ते बावरे, बोलैं खरे अयान।
सहजैं राते राम सौं, दादू सोई सयान ॥१०६॥
कहताँ सुणताँ दिन गये, ह्वै कछू न आवा।
दादू हरि की भगति बिन, प्राणी पछितावा ॥१०७॥
दादू कथणी और कुछ, करणी करैं कुछ और।
तिन थैं मेरा जिव डरै, जिन के ठीक न ठौर ॥१०८॥
अंतर गति औरै कछू, मुख रसना कुछ और।
दादू करणी और कुछ, तिन कौं नाहीं ठौर ॥१०९॥
(दादू) राम मिलन की कहत हैं, करते कुछ औरै।
ऐसे पिव क्यूँ पाइये, समझि मन बौरे ॥११०॥
(दादू) बगनी भंगा खाइ करि, मतवाले माँझी।
पैका नाहीं गाँठड़ी, पातिसाही खाँजी ॥१११*॥
दादू टोटा दालिदी†, लाखौं का ब्यौपार।
पैका नाहीं गाँठड़ी, सिरे‡ साहूकार ॥११२॥
(दादू) ये सब किस के पंथ मैं, धरती अरु असमान।
पानी पवन दिन राति का, चंद सूर रहिमान ॥११३॥
ब्रह्मा बिस्नु महेस का, कौन पंथ गुरदेव।
साईं सिरजनहार तूँ, कहिये अलख अभेव ॥११४॥
महम्मद किस के दीन मैं, जबराइल§ किस राह।
इन के मुर्सद‖ पीर‖ की, कहिये एक अलाह ॥११५॥

नोट—११३ से ११६ तक की साखियों की पहिली कड़ी मैं प्रश्न है और दूसरी मैं उत्तर।

*भँगेड़ी भाँग खा कर सुध बुध भूल जाते हैं, पल्ले एक टका नहीं पर डींग पादशाही ख़ानख़ानाँ की मारते हैं। †दारिद्री, कंगाल। ‡भारी, औवल दर्जे के। §एक प्रधान फ़िरिश्ते का नाम। ‖गुरू।

(दादू) ये सब किसके ह्वै रहे, यहु मेरे मन माहिं।
अलख इलाही जगत गुर, दूजा कोई नाहिं ॥११६॥

दादू औरैं ही औला तकै, थीयाँ सदै बियंनि।
सो तूँ मीयाँ ना घुरै, जो मीयाँ मीयंनि ॥११७*॥

आई रोजी ज्यौं गई, साहिब का दीदार।
गहिला लोगौं कारणे, देखै नहीं गँवार ॥११८†॥

(दादू) सोई सेवग राम का, जिसैं न दूजी चिंत।
दूजा को भावै नहीं, एक पियारा मिंत ॥११९॥

फल कारनि सेवा करै, जाचै त्रिभुवन राव। (८-९२)
दादू सो सेवग नहीं, खेलै अपणा डाव ॥१२०॥

सहकामी सेवा करै, माँगै मुग्ध गँवार। (८-९३)
दादू ऐसे बहुत हैं, फल के भूचनहार ॥१२१॥

तन मन से लागा रहै, राता सिरजनहार। (८-९४)
दादू कुछ माँगै नहीं, ते बिरला संसार ॥१२२॥

अपनी अपनी जाति सौं, सब को बैसै पाँति।
दादू सेवग राम का, ताके नहीं भरांति‡ ॥१२३॥

चोर अन्याई मसकरा, सब मिलि बैसैं पाँति।
दादू सेवग राम का, तिन सौं करैं भरांति ॥१२४॥

---

*औरों को तो बड़ा (औला) देखता (तकै) या मानता है और सदा दूसरों ही (बियंनि) का बना रहता है (थीयाँ), लेकिन उस मालिक (मीयाँ) को नहीं चाहता जो सब मालिकों का मालिक है। †इस (मनुष्य) शरीर ही में मौक़ा था कि सच्चे मालिक की भक्ति कर के उस का दीदार पाता परन्तु गँवार ने संसार और कुटुम्बियों की बढ़ती की ख़ातिर इस दुर्लभ औसर को इस तरह से गँवाया जैसे कि खाना परस कर आई हुई थाली सामने से उठ जावे। ‡दुबिधा।

दादू सूप बजायाँ क्यौं टलै, घर मैं बड़ी बलाइ* ।
काल झाल इस जीव का, बातन हीं क्यूँ जाय ॥१२५॥
साँप गया सहनाण† कूँ, सब मिलि मारै लोक ।
दादू ऐसा देखिये, कुल का डगरा फोक‡ ॥१२६॥
दादू दून्यूँ भरम हैं, हिंदू तुरक गँवार ।
जे दुहवाँ थैं रहित है, सो गहि तत्त बिचार ॥१२७॥
अपणाँ अपणाँ करि लिया, भंजन माहैं बाहि ।
दादू एकै कूप जल, मन का भरम उठाइ ॥१२८॥
(दादू) पानी के बहु नाँव धरि, नाना बिधि की जाति ।
बोलनहारा कौन है, कहौ धौं कहाँ समाति ॥१२९॥
जब पूरन ब्रह्म बिचारिये, तब सकल आतमा एक ।
काया के गुन देखिये, तौ नाना बरण अनेक ॥१३०॥
(दादू) लीला राजा राम की, खेलैं सब ही संत ।
आपा पर एकै भया, छूटी सबै भरंत ॥१३१§॥
अपणाँ पराया खाइ बिष, देखत ही मरि जाइ ।(१२-१३२)
दादू को जीवै नहीं, यहिं भोरै‖ जिनि खाइ ॥१३२॥
(दादू) भावै साकत भगत है, बिषै हलाहल खाइ । (१२-६७)
तहँ जन तेरा रामजी, सुपनै कदे न जाइ ॥१३३॥

॥ अमिट पाप प्रचंड ॥

भाव भगति उपजै नहीं, साहिब का परसंग ।
बिषै बिकार छूटै नहीं, सो कैसा सतसंग ॥१३४॥

---

*दीवाली के दूसरे दिन घर से बालाय निकालने के निमित्त सूप बजाते हैं परंतु घट की खोट अर्थात इंद्रियों के बिकार ऐसी तुच्छ जुगतों से नहीं जाते । †लीक । ‡थोथा । §कहते हैं कि टौंक में एक भारी उत्सव था वहाँ भोजन सामग्री भीड़ के लिये कम थी परंतु दादू दयाल के भोग लगाने पर वह सामग्री अटूट हो गई । इस का भेद दयाल जी के एक शिष्य ने पूछा जिसके जवाब में यह साखी दादू साहिब ने कही—पं० चं० प्र० । ‖भूल से ।

बासन बिषै बिकार के, तिन कूँ आदर मान।
संगी सिरजनहार के, तिन सूँ गर्ब गुमान ॥१३५॥
अंधे कूँ दीपक दिया, तौ भी तिमर न जाइ।
सोधी नहीं सरीर की, तासनि का समझाइ ॥१३६॥
(दादू) कहिये कुछ उपगार कौं, मानैं औगुण दोष।
अंधे कूप बताइया, सत्ति न मानैं लोक ॥१३७॥
कालरि खेत न नीपजै, जे बाहै सौ बार। (१२-४९)
दादू हाना बीज का, क्या पचि मरै गँवार ॥१३८॥
(दादू) जिन कंकर पत्थर सेविया, सो अपना मूल गँवाइ।
अलख देव अंतरि बसै, क्या दूजी जागह जाइ॥१३९॥
पत्थर पीवैं धोइ करि, पत्थर पूजैं प्राण।
अन्ति काल पत्थर भये, बहु बूड़े यहि ज्ञान ॥१४०॥
कंकर बाँध्या गाँठड़ी, हीरे के बेसास।
अंति काल हरि जौहरी, दादू सूत कपास ॥१४१
(दादू) पहिली पूजे ढूँढसी, अब भी ढूँढस बाणि*।
आगैं ढूँढस होइगा, दादू सति करि जाणि॥१४२

॥ चितावनी ॥

दादू पैंडे पाप के, कदे न दीजै पाँव।
जिहिं पैंडे मेरा पिव मिलै, तिहिं पैंडे का चाव॥१४३॥
(दादू) सुकिरत मारग चालताँ, बुरा न कबहूँ होइ।
अमृत खाताँ प्राणियाँ, मुवा न सुनिये कोइ॥१४४॥

॥ भरम ॥

कुछ नाहीं का नाँव क्या, जे धरिये सो झूठ।
सुर नर मुनि जन बंधिया, लोका आवट कूट† ॥१४५॥

---

* आदत। † कूटा पीसी, जनम मरन।

कुछ नाहीं का नाँव धरि, भरम्या सब संसार।
साच झूठ समझै नहीं, ना कुछ किया बिचार॥१४६॥
(दादू) कोइ दौड़े द्वारिका, कोई कासी जाहिं।
कोई मथुरा कौं चले, साहिब घट ही माहिं॥१४७॥
पूजनहारे पासि है, देही माहैं देव। (४-२५८)
दादू ता कौं छाडि करि, बाहरि माँडी सेव॥१४८॥
ऊपरि आलम* सब करै, साधू जन घट माहिं।
दादू एता अंतरा, ता थैं बनती नाहिं॥१४९॥
दादू सब थे एक के, सो एक न जाना।
जणे जणे का ह्वै गया, यहु जगत दिवाना॥१५०॥
झूठा साचा करि लिया, बिष अमृत जाना।
दुख कौं सुख सब को कहै, ऐसा जगत दिवाना॥१५१॥

॥ साच ॥

सूधा मारग साच का, साचा होइ सो जाइ।
झूठा कोई ना चलै, दादू दिया दिखाइ॥१५२॥
साहिब सौं साचा नहीं, यहु मन झूठा होइ।
दादू झूठे बहुत हैं, साचा बिरला कोइ॥१५३॥
(दादू) साचा अंग न ठेलिये†, साहिब मानै नाहिं।
साचा सिर पर राखिये, मिलि रहिये ता माहिं॥१५४
जे कोइ ठेलै† साच कौं, तौ साचा रहै समाइ‡।
कौड़ी बर§ क्यौं दीजिये, रत्न अमोलिक जाइ॥१५५॥
साचे साहिब कौं मिलै, साचे मारग जाइ।
साचे सौं साचा भया, तब साचे लिये बुलाइ॥१५६॥

*संसार। †ढकेलना, निकाल देना। ‡सिमट या खिंच जाता है। §श्रेष्ठ।

दादू साचा साहिब सेविये , साची सेवा होइ ।
साचा दरसन पाइये , साचा सेवग सोइ ॥१५७॥
साचे का साहिब धणी , समरथ सिरजनहार ।
पाखँड की यहु पिर्थमी* , परपंच का संसार ॥१५८॥
झूठा परगट साचा छानै† , तिनकी दादू राम न मानै ॥१५९
कहँ आसिक अल्लाह के , मारे अपने हाथ । (३-६८)
कहँ आलम औजूद सौं , कहँ जबाँ की बात ॥ १६० ॥
(दादू) पाखँड पीव न पाइये, जे अंतरि साच न होइ ।
ऊपरि थैं क्यौंहीं रहौ , भीतर के मल धोइ ॥ १६१ ॥
साच अमर जुगि जुगि रहै , दादू बिरला कोइ ।
झूठ बहुत संसार मैं , उतपति परलय होइ ॥१६२॥
दादू झूठा बदलिये , साच न बदल्या जाइ ।
साचा सिर पर राखिये , साध कहै समझाइ ॥१६३॥
साच न बूझै जब लगैं , तब लग लोचन अंध ।
दादू मुकता छाड़ि करि , गल मैं घाल्या फंध ॥१६४॥
साच न सूझै जब लगैं , तब लग लोचन नाहिं ।
दादू निरबँध छाड़ि करि , बंध्या द्वै पष‡ माहिं ॥१६५॥
दादू जे साहिब सिरजै नहीं , तौ आपे क्यौं करि होइ ।
जे आपै ही ऊपजै , तौ मरि करि जीवै कोइ ॥१६६॥
कर्म फिरावै जीव कूँ , कर्मौं कूँ करतार ।
करतार कूँ कोई नहीं , दादू फेरनहार ॥ १६७ ॥
जे यहु करता जीव था , संकट क्यूँ आया ।
कर्मौं के बसि क्यूँ भया , क्यूँ आप बँधाया ॥ १६८ ॥

---

* पृथ्वी । † गुप्त, छिपा । ‡ पक्ष, तरफ़ ।

क्यूँ सब जोनी जगत मैं, घर बार नचाया ।
क्यूँ यह करता जीव है, पर हाथि बिकाया ॥ १६९ ॥
दादू कृत्तम काल बसि, बंध्या गुण माहीं ।
उपजै बिनसै देखताँ, यहु करता नाहीं ॥ १७० ॥
एक साच सौं गहि गही, जीवन मरन निबाहि ।
दादू दुखिया राम बिन, भावै तीर्थारि जाहि ॥ १७१ ॥
(दादू) भावै तहाँ छिपाइये, साच न छाना होइ ।(२-११०)
सेस रसातल गगन धू, परगट कहिये सोइ ॥ १७२ ॥
(दादू) छानै छानै कीजिये, चौड़ैं परगट होइ ।
दादू पैसि पयाल मैं, बुरा करै जिनि कोइ ॥१७३॥
अनकीया लागै नहीं, कीया लागै आइ ।
साहिब के दरि न्याव है, जे कुछ राम रजाइ* ॥ १७४ ॥
सोइ जन साधू सिद्ध सो, सोइ सतबादी सूर ।
सोइ मुनियर दादू बड़े, सनमुख रहणि हजूर ॥ १७५ ॥
सोइ जन साचे सोइ सती, सोइ साधक सूजान ।
सोइ ज्ञानी सोइ पंडिता, जे राते भगवान ॥ १७६ ॥
(दादू) सोइ जोगी सोइ जंगमा, सोइ सोफी सोइ सेख ।
सोइ सन्यासी सेवड़े, दादू एक अलेख ॥ १७७ ॥
सोइ काजी मुल्ला सोई, सोइ मोमिन मुसलमान ।
सोई सयाने सब भले, जे राते रहिमान ॥ १७८ ॥
राम नाम कूँ बणिजन बैठे, ता थैं माँड्या हाट ।
साँई सौं सौदा करैं, दादू खोलि कपाट ॥ १७९ ॥
बिच के† सिर खाली करैं, पूरे सुख संतोष ।
दादू सुध बुध आतमा, ताहि न दीजै दोष ॥ १८० ॥

---

*रज़ा=मर्ज़ी, इच्छा । † बीच के अर्थात अधूरे ।

सुध बुध सूँ सुख पाइये, कै साध बमेकी* होइ।
दादू ये बिच के बुरे, दाधे रीगे† सोइ ॥१८१॥
जिनि कोई हरि नाँव मैं, हम कूँ हाना बाहि‡।
ता थैं तुम थैं डरत हौं, क्यूँ ही टलै बलाइ ॥१८२॥
जे हम छाड़ैं राम कूँ, तौ कौन गहैगा।
दादू हम नहिं उच्चरैं§, तौ कौन कहैगा ॥ १८३ ॥
एक राम छाड़ै नहीं, छाड़ै सकल बिकार।
दादू सहजैं होइ सब, दादू का मत सार ॥१८४॥
जे तूँ चाहै राम कूँ, तौ एक मना‖ आराध।
दादू दूजा दूरि करि, मन इंद्री कर साध ॥१८५॥
कबीर बिचारा कहि गया, बहुत भाँति समझाइ।
दादू दुनियाँ बावरी, ता के संगि न जाइ ॥१८६॥
पावैंगे उस ठौर को, लंघैंगे यहु घाट।
दादू क्या कहि बोलिये, अजहूँ बिच ही बाट ॥१८७॥
साचा राता साच सूँ, झूठा राता झूठ।
दादू न्याव नबेरिये¶, सब साधौं कूँ पूछ ॥१८८॥

॥ सच्चे साध संत के मत की एकता ॥

जे पहुँचे ते कहि गये, तिनकी एकै बाति।
सबै सयाने एक मति, उनकी एकै जाति ॥ १८९ ॥
जे पहुँचे ते** पूछिये, तिन की एकै बात।
सब साधौं का एक मति, ये बिच के बारह बाट†† ॥१९०॥

---

*बिबेकी। †दाधे रीगे=जले तपे जीव जंतु की नाईं रेंगते हैं अर्थात जीते जी मृतक तुल्य हैं। ‡हानि पहुँचावै या डालै। §बोलैं। ‖एक चित होके। ¶निबेड़ा करना, तै करना। **तिन से। ††तित्तर बित्तर, बेठिकाने।

सबै सयाने कहि गये, पहुँचे का घर एक ।
दादू मारग माहिँ के, तिन की बात अनेक ॥१९१
सूरज सन्मुख आरसी, पावक किया प्रकास ।(१-१४८
दादू साईँ साध बिच, सहजैँ निपजै दास ॥ १९२
सूरज साखीभूत है, साच करै परकास ।
चोर डरै चोरी करे, रैनि तिमर का नास ॥१९३
चोर न भावै चाँदिणाँ, जिनि उजियारा होइ ।
सूते का सब धन हडौँ*, मुझै न देखै कोइ ॥ १९४ ॥

॥ संसकार आगम ॥

घटि घटि दादू कहि समझावै, जैसा करै सो तैसा पावै ।
को काहू की सीरी नाहीँ, साहिब देखै सब घट माहीँ१९

---

*हरौँ ।

॥ इति साच को अंग समाप्त १३ ॥

१४--भेष को अंग

(दादू) नमो नमो निरंजनं, नमस्कार गुर देवतः
बंदनं सर्ब साधवा, प्रणामं पारंगतः ॥ १ ॥

दादू बूड़ै ज्ञान सब, चतुराई जलि जाइ।
अंजन मंजन फूँकि कै, रहौ राम ल्यौ लाइ ॥ २ ॥
राम बिना सब फीके लागैं, करनी कथा गियान।
सकल अबिर्था* कोटि करि, दादू जोग धियान ॥ ३ ॥
ज्ञानी पंडित बहुत हैं, दाता सूर अनेक।
दादू भेष अनंत हैं, लागि रह्या सो एक ॥ ४ ॥
कोरा कलस अवाह† का, ऊपरि चित्र अनेक।
क्या कीजै दादू बस्त बिन, ऐसे नाना भेष ॥ ५ ॥
बाहरि दादू भेष बिन, भीतर बस्त अगाध।
सो ले हिरदे राखिये, दादू सन्मुख साध ॥ ६ ॥
(दादू) भाँडा भरि धरि बस्त सूँ, ज्यौं महिंगे मोल बिकाइ।
खाली भाँडा बस्त बिन, कौड़ी बदले जाइ ॥ ७ ॥
(दादू) कनक कलस बिष सूँ भरया, सो किस आवै काम।
सो धनि कूटा चाम का, जा मैं अमृत राम ॥ ८‡ ॥
दादू देखै बस्त कौं, बासन देखै नाहिं।
दादू भीतरि भरि धरया, सो मेरे मन माहिं ॥ ९ ॥
(दादू) जे तूँ समझै तौ कहौं, साचा एक अलेष।
डाल पान तजि मूल गहि, क्या दिखलावै भेष ॥ १० ॥

---

* व्यर्थ। † कुम्हार का आवा। ‡ सोने का कलसा जिस में बिष भरा हो बेकाम है परंतु कूटे चमड़े का कुप्पा भी जिस में नाम (राम) रूपी अमृत भरा हो वह धन्य (धनि) है।

(दादू) सब दिखलावैं आप कूँ, नाना भेष बणाइ ।
जहँ आपा मेटन हरि भजन, तेहिँ दिसि कोई न जाइ ॥११॥
सो दिसा कतहूँ रही, जेहिँ दिसि पहुँचे साध ।
मैं तैं मूरिख गहि रहे, लोभ बड़ाई बाद ॥ १२ ॥
(दादू) भेष बहुत संसार मैं, हरि जन बिरला कोइ ।
हरि जन राता राम सूँ, दादू ऐकै सोइ ॥ १३ ॥
हीरै रीझै जौहरी, खलि रीझै संसार ।
स्वाँग साध बहु अंतरा, दादू सत्ति बिचार ॥ १४ ॥
स्वाँग साध बहु अंतरा, जेता धरनि अकास ।
साधू राता राम सूँ, स्वाँग जगत की आस ॥१५॥
(दादू) स्वाँगी सब संसार है, साधू बिरला कोइ ।
जैसैं चंदन बावना, बन बन कहीं न होइ* ॥१६॥
(दादू) स्वाँगी सब संसार है, साधू कोई एक ।
हीरा दूरि दिसंतरा, कंकर और अनेक ॥ १७ ॥
(दादू) स्वाँगी सब संसार है, साधू सोधि सुजाण ।
पारस परदेसौं भया, दादू बहुत पषाण ॥१८॥
(दादू) स्वाँगी सब संसार है, साध समंदाँ पार ।
अनलपंखि कहँ पाइये, पंखी कोटि हजार ॥१९॥
दादू चंदन बन नहीं, सूरन के दल नाहिँ ।
सकल समँद हीरा नहीं, त्यूँ साधू जग माहिँ ॥२०॥
जे साईं का ह्वै रहै, साईं तिस का होइ ।
दादू दूजी बात सब, भेष न पावै कोइ ॥ २१ ॥

---

* बावना चंदन चंदनों मैं बिशेष सुगंधित होता है सो वह हर एक जंगल मैं नहीं मिल सकता ।

(दादू) स्वाँग सगाई कुछ नहीं, राम सगाई साच।
दादू नाता नाँव का, दूजै अंगि* न राच ॥२२॥
दादू एकै आतमा, साहिब है सब माहिं।
साहिब के नाते मिलै, भेष पंथ के नाहिं ॥२३॥
(दादू) माला तिलक सूँ कुछ नहीं, काहू सेती काम।
अंतरि मेरे एक है, अहि निसि उसका नाम ॥ २४ ॥
(दादू) भगत भेष धरि मिथ्या बोलै, निंदा पर अपबाद।
साचे कूँ झूठा कहै, लागै बहु अपराध ॥ २५ ॥
(दादू) कबहूँ कोई जिनि मिलै, भगत भेष सूँ जाइ।
जीव जन्म का नास है, कहै अमृत बिष खाइ॥२६॥
(दादू) पहुँचे पूत बटाऊ ह्वै करि, नट ज्यूँ काछ्या भेष।
खबरि न पाई खोज की, हम कूँ मिल्या अलेष॥२७॥
(दादू) माया कारणि मूँड मुँडाया, यहु तौ जोग न होई।
पारब्रह्म सूँ परचा नाहीं, कपट न सीझै कोई ॥२८॥
पीव न पावै बावरी, रचि रचि करै सिंगार।
दादू फिरि फिरि जगत सूँ, करैगी बिभचार ॥ २९ ॥
प्रेम प्रोत सनेह बिन, सब झूठे सिंगार।
दादू आतम रत नहीं, क्यूँ मानै भरतार ॥३०॥
(दादू) जग दिखलावै बावरी, षोड़स करै सिंगार।
तहँ न सँवारै आप कूँ, जहँ भीतर भरतार ॥ ३१ ॥
सुध बुध जीव धिजाइ करि, माला संकल बाहि।
दादू माया ज्ञान सूँ, स्वामी बैठा खाइ ॥ ३२† ॥

---

* नोट एक लिपि में "अंगि" के बदले "रंग" है। † भेषधारी स्वामी बने हुए जीवों के गले में कंठी की साँकर (संकल) डालकर और माया मंत्र दे कर उन की सुध बुध को दबा देते हैं और आप बैठे माल चाभते हैं।

जोगी जंगम सेवड़े, बौध सन्यासी सेख।
षटदर्सन दादू राम बिन, सबै कपट के भेख ॥ ३३ ॥

(दादू) सेख मसाइख औलिया, पैगम्बर सब पीर।
दरसन सूँ परसन नहीं, अज हूँ वैली तीर* ॥३४॥

(दादू) नाना भेष बनाइ करि, आपा देखि दिखाइ।
दादू दूजा दूरि करि, साहिब सूँ ल्यौ लाइ ॥३५॥

दादू देखा देखी लोक सब, केते आवैं जाहिं।
राम सनेही ना मिलै, जे निज देखै माहिं ॥ ३६ ॥

(दादू) सब देखैं अस्थूल कौं, यहु ऐसा आकार।
सूषिम सहज न सूझई, निराकार निरधार ॥३७॥

(दादू) बाहर का सब देखिये, भीतर लख्या न जाइ।
बाहरि दिखावा लोक का, भीतरि राम दिखाइ ॥३८॥

(दादू) यहु परख सराफी ऊपली†, भीतरि की यहु नाहिं।
अंतरि की जानैं नहीं, तातैं खोटा‡ खाहिं ॥३९॥

(दादू) झूठा राता झूठ सूँ, साचा राता साच।
एता अंध न जानहीं, कहँ कंचन कहँ काच ॥४०॥

(दादू) सचु बिन साईं ना मिलै, भावै भेष बनाइ।
भावै करवत उरध-मुखि§, भावै तीरथ जाइ ॥४१॥

(दादू) साचा हरि का नाँव है, सो ले हिरदे राखि।
पाखँड परपँच दूरि करि, सब साधौं की साखि ॥४२॥

हिरदे की हरि लेइगा, अंतरजामी राइ।
साच पियारा राम कूँ, कोटिक करि दिखलाइ ॥४३॥

---

*इस तरफ़। † ऊपरी। ‡ धोखा। § काशी करवत अर्थात उलटे लटके हुए आरे से सिर कटा देना।

दादू मुख की ना गहै, हिरदे की हरि लेइ ।
अंतरि सूधा एक सूँ, तौ बोल्याँ दोस न देइ ॥४४॥
सब चतुराई देखिये, जे कुछ कीजै आन ।
मन गहि राखै एक सूँ, दादू साध सुजान ॥ ४५ ॥
सबद सुई सूरति धागा, काया कंथा* लाइ ।
दादू जोगी जुगि जुगि पहिरै, कबहूँ फाटि न जाइ ॥४६॥
ज्ञान गुरू की गूदड़ी, सबद गुरू का भेष ।
अतीत हमारी आतमा, दादू पंथ अलेष ॥ ४७ ॥
इसक अजब अबदाल† है, दरदवंद दरवेस ।
दादू सिक्का सबर है, अकलि पीर उपदेस ॥ ४८ ॥
(दादू) सतगुर माला तन दिया, पवन सुरति सूँ पोइ ।
बिन हाथौं निस दिन जपै, परम जाप यूँ होइ ॥४९॥

---

* गुदड़ी । † "अबदाल" शब्द के मानी फ़ारसी में फ़क़ीर या साधू के हैं और यहाँ खपते भी हैं परंतु पं० चंद्रिका प्रसाद ने इसका अर्थ सिद्धि शक्ति और करामात लिखा है ।

॥ इति भेष को अंग समाप्त १३ ॥
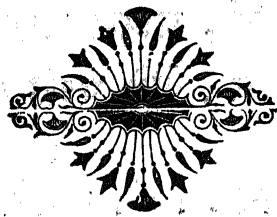
१५--साध को अंग

(दादू) नमो नमो निरंजनं , नस्मकारं गुर देवतः ।
बंदनं सर्व साधवा , प्रणामं पारंगतः ॥१॥
(दादू) निराकार मन सुरति सौं, प्रेम प्रीति सौं सेव ।
जे पूजै आकार कौं , तौ साधू परतषि देव ॥२॥
(दादू) भोजन दीजै देह कौं, लीया मन बिसराम ।
साधू के मुख मेलिये , पाया आतम राम ॥ ३ ॥
ज्यौं यहु काया जीव की, त्यौं साईं के साध ।
दादू सब संतोखिये , माहैं आप अगाध ॥४॥

॥ सतसंग महिमा ॥

साधू जन संसार मैं , भव जल बोहिथ* अंग ।
दादू केते ऊधरे , जेते बैठे संग ॥ ५ ॥
साधू जन संसार मैं , सीतल चंदन बास ।
दादू केते ऊधरे , जे आये उन पास ॥ ६ ॥
साधू जन संसार मैं , हीरे जैसा होइ ।
दादू केते ऊधरे , संगति आये सोइ ॥ ७ ॥
साधू जन संसार मैं , पारस परगट गाइ ।
दादू केते ऊधरे , जेते परसे आइ ॥ ८ ॥
रूख बिरष बनराइ सब , चंदन पासैं होइ ।
दादू बास लगाइ करि , किये सुगंधे सोइ ॥९॥
जहाँ अरँड अरु आक थे , तहँ चंदन ऊग्या माहिँ ।
दादू चंदन करि लिया , आक कहै को नाहिँ ॥१०॥

*नाव ।

साध नदी जल राम रस, तहाँ पखालै अंग।
दादू निर्मल मल गया, साधू जन के संग ॥११॥
साधू बरखै राम रस, अमृत बाणी आइ।
दादू दरसन देखताँ, त्रिबिधि ताप तन जाइ ॥१२॥
संसार बिचारा जात है, बहिया लहर तरंग।
भेरै* बैठा ऊबरै, सत साधू के संग ॥१३॥
दादू नेड़ा परम पद, साधू संगति माहिँ।
दादू सहजैँ पाइये, कबहूँ निर्फल नाहिँ ॥१४॥
दादू नेड़ा परम पद, करि साधू का संग।
दादू सहजैँ पाइये, तन मन लागै रंग ॥१५॥
दादू नेड़ा परम पद, साधू संगति होइ ॥
दादू सहजैँ पाइये, स्याबत† सनमुख सोइ ॥१६॥
दादू नेड़ा परम पद, साधू जन के साथ।
दादू सहजैँ पाइये, परम पदारथ हाथ ॥१७॥
साध मिलै तब ऊपजै, हिरदे हरि का भाव।
दादू संगति साध की, जब हरि करै पसाव‡ ॥१८॥
साध मिलै तब ऊपजै, हिरदे हरि का हेत।
दादू संगति साध की, कृपा करै तब देत ॥१९॥
साध मिलै तब ऊपजै, प्रेम भगति रुचि होइ।
दादू संगति साध की, दया करि देवै सोइ ॥२०॥
साध मिलै तब ऊपजै, हिरदे हरि की प्यास।
दादू संगति साध की, अविगत पुरवै आस ॥२१॥

---

*बेड़ा, नाव। † साबित, स्थिर। ‡दात।

साध मिलै तब हरि मिलै, तब सुख आनँद मूर ।
दादू संगति साध की, राम रह्या भरपूर ॥२२॥
परम कथा उस एक की, दूजा नाहीं आन ।
दादू तन मन लाइ करि, सदा सुरति रस पान ॥२३॥
प्रेम कथा हरि की कहै, करै भगति ल्यौ लाइ ।
पिवै पिलावै राम रस, सो जन मिलवो आइ ॥२४॥
(दादू) पिवै पिलावै राम रस, प्रेम भगति गुण गाइ ।
नित प्रति कथा हरि की करै, हेत सहित ल्यौ लाइ ॥२५॥
आन कथा संसार की, हमहिं सुणावै आइ ।
तिस का मुख दादू कहै, दई* न दिखाई ताहि ॥२६॥
(दादू) मुख दिखलाई साध का, जे तुम हीं मिलवै आइ ।
तुम माहीं अंतर करै, दई न दिखाई ताहि ॥२७॥
जब दरवौ तब दीजियौ, तुम पैं मागौं येहु ।
दिन प्रति दरसन साध का, प्रेम भगति दिढ़ देहु ॥२८॥
साध सपीड़ा मन करै, सतगुरु सबद सुणाइ ।
मीरां† मेरा मिहरि करि, अंतर बिरह उपाइ‡ ॥ २९ ॥
ज्यौं ज्यौं होवै त्यौं कहै, घटि बधि§ कहै न जाइ ।
दादू सो सुध आतमा, साधू परसै आइ ॥ ३० ॥
साहिब सैाँ सनमुख रहै, सतसंगति मैं आइ ।
दादू साधू सब कहैं, सो निरफल क्यूँ जाइ ॥३१॥
ब्रह्म गाइ‖ त्रय लोक मैं, साधू अस्थन¶ पान ।
मुख मारग अमृत झरै, कत ढूँढै दादू आन ॥ ३२ ॥
दादू पाया प्रेम रस, साधू संगति माहिं ।
फिर फिरि देखै लोक सब, यहु रस कतहूँ नाहिं ॥३३॥

---

* ईश्वर । † हे मेरे मालिक । ‡उपजा कर । §घटा बढ़ा कर । ‖गऊ । ¶थन ।

(दादू) जिस रस कूँ मुनियर मरैं, सुर नर करैं कलाप* ।
सो रस सहजैं पाइये , साधू संगति आप ॥ ३४ ॥
संगति बिन सीझै नहीं , कोटि करै जे कोइ ।
दादू सतगुर साध बिन , कबहूँ सुद्ध न होइ ॥ ३५ ॥
दादू नेड़ा दूर थैं , अबिगत का आराध ।
मनसा बाचा कर्मना , दादू संगति साध ॥ ३६ ॥
सर्ग न सीतल होइ मन , चंद न चंदन पास ।
सीतल संगति साध की कीजै दादूदास ॥ ३७ ॥
दादू सीतल जल नहीं , हेम न सीतल होइ ।
दादू सीतल संत जन , राम सनेही सोइ ॥ ३८ ॥
दादू चंदन कदि कह्या , अपणा प्रेम प्रकास ।
दह दिसि परगट ह्वै रह्या , सीतल गंध सुबास ॥ ३९ ॥
दादू पारस कदि कह्या , मुझ थी कंचन होइ ।
पारस परगट ह्वै रह्या , साच कहै सब कोइ ॥ ४० ॥
तन नहिं भूला मन नहिं भूला, पंच न भूला प्राण ।
साध सबद क्यूँ भूलिये , रे मन मूढ़ अजाण ॥४१॥
रतन पदारथ माणिक मोती, हीरौं का दरिया ।
चिंतामणि चित राम धन , घट अमृत भरिया ॥ ४२ ॥
समरथ सूरा साध सो , मन मस्तक धरिया ।
दादू दरसन देखताँ , सब कारिज सरिया ॥ ४३ ॥
धरती अम्बर राति दिन , रबि ससि नावैं सीस ।
दादू बलि बलि वारणे , जे सुमिरैं जगदीस ॥ ४४ ॥
चंद सूर सिजदा करैं , नाँव अलह का लेइँ ।
दादू जिमीं असमान सब , उन पाँवौं सिर देइँ ॥ ४५ ॥

---

* कल्पना, लालसा ।

जे जन राते राम सूँ, तिन की मैं बलि जाँउ ।
दादू उन पर वारणे, जे लागि रहे हरि नाँउ ॥४६
जे जन हरि के रँग रँगे, सो रँग कदे न जाइ ।
सदा सुरंगे संत जन, रँग मैं रहे समाइ ॥ ४७ ॥
दादू राता राम का, अबिनासी रँग माहिं ।
सब जग धोबी धोइ मरै, तै। भी खूटै* नाहिं ॥ ४८
साहिब किया सो क्यौं मिटै, सुंदर सोभा रंग ।
दादू धोवैं बावरे, दिन दिन होइ सुरंग ॥ ४९ ॥
परमारथ कूँ सब किया, आप सवारथ नाहिं ।
परमेसुर परमारथी, कै साधू कलि माहिं ॥ ५० ॥
पर उपगारी संत सब, आये यहि कलि माहिं ।
पिवैं पिलावैं राम रस, आप सवारथ नाहिं ॥५१॥
पर उपगारी संत जन, साहिब जी तेरे ।
जाती देखी आतमा, राम कहि टेरे ॥ ५२ ॥
चंद सूर पावक पवन, पाणी का मत सार ।
धरती अम्बर राति दिन, तरवर फलैं अपार ॥ ५३ ॥
छाजन भोजन परमारथी, आतम देव अधार ।
साधू सेवग राम के, दादू पर उपगार ॥ ५४ ॥
जिस का तिस कूँ दीजिये, सुकिरति पर उपगार ।
साधू सेवग सो भला, सिर नहिं लेवै भार ॥ ५५ ॥
परमारथ कूँ राखिये, कीजै पर उपगार ।
दादू सेवग सो भला, निरअंजन† निरकार‡ ॥५६॥
सेवा सुकिरति सब गया, मैं मेरा मन माहिं ।
दादू आपा जब लगैं, साहिब मानै नाहिं ॥ ५७ ॥

---

* छूटै । † निर्माया । ‡ निरांकार, अरूप ।

साध सिरोमणि सोधि ले , नदी पूरि परि आइ ।
सजीवनि साम्हाँ चढ़ै , दूजा बहिया जाइ ॥ ५८* ॥
जिन के मस्तक मणि† बसै , सो सकल सिरोमणि अंग ।
जिन के मस्तक मणि नहीं , ते बिष भरे भवंग ॥५९॥
दादू इस संसार मेँ , ये द्वै रतन अमोल ।
इक साईं अरु संत जन , इन का मोल न तोल ॥६०॥
दादू इस संसार मेँ , ये द्वै रहे लुकाइ ।
राम सनेही संत जन , औ बहुतेरा आइ ॥ ६१ ॥
सगे हमारे साध हैँ , सिर पर सिरजनहार ।
दादू सतगुर सो सगा , दूजा धंध बिकार ॥६२॥(१-१४०)
जिन के हिरदे हरि बसै , सदा निरंतर नाँउ ।
दादू साचे साध की , मैँ बलिहारी जाउँ ॥ ६३ ॥
साचा साध दयाल घट , साहिब का प्यारा ।
राता माता राम रस , सो प्राण हमारा ॥ ६४ ॥
(दादू) फिरता चाक कुम्हार का, यूँ दीसै संसार ।
साधू जन निहचल भये , जिन के राम अधार ॥६५॥
जलती बलती आतमा , साध सरोवर जाइ ।
दादू पीवै राम रस , सुख मैँ रहै समाइ ॥६६॥
काँजी‡ माहैँ भेलि§ करि , पावै सब संसार ।
करता केवल निर्मला , को साधू पीवणहार ॥६७॥

---

*जैसे जीती मछली नदी मेँ उलटी धारा पर चढ़ती चली जाती है पर मरी मछली धारा के साथ बह जाती है ऐसे ही जीते जागते पुरुष अर्थात साधजन भवसागर के प्रवाह के बिरुद्ध चलते हैँ और मुर्दा-दिल संसारी उस मेँ बह जाते हैँ। †भक्ति रूपी रत्न। ‡रस या मट्ठे मेँ राई आदि मसाला डाल कर एक तरह की पतली खटाई बनाते हैँ। §मिलाना।

(दादू) असाध मिलै अंतर पड़ै, भाव भगति रस जाइ ।
साध मिलै सुख ऊपजै, आनँद अंगि न माइ* ॥६८

(दादू) साधू संगति पाइये, राम अमी फल होइ ।
संसारी संगति पाइये, बिष फल देवै सोइ ॥६९॥

दादू सभा संत की, सुमती उपजै आइ ।
साकत की सभा बैसताँ, ज्ञान काया थैं जाइ ॥७०॥

(दादू) सब जग दीसै एकला, सेवग स्वामी दोइ ।
जगत दुहागी राम बिन, साध सुहागी सोइ ॥७१॥

(दादू) साधू जन सुखिया भये, दुनियाँ कूँ बहु दंद† ।
दुनी दुखी हम देखताँ, साधन सदा अनंद ॥७२॥

दादू देखत हम सुखी, साँईं के सँगि लागि ।
यौं सो सुखिया होइगा, जा के पूरे भाग ॥७३॥

(दादू) मीठा पीवै राम रस, सो भी मीठा होइ ।
सहजैं कड़वा मिटि गया, दादू निर्बिष सोइ ॥७४॥

(दादू) अंतरि एक अनंत सूँ, सदा निरंतर प्रीति ।
जिहिं प्राणी प्रीतम बसै, सो बैठा त्रिभवन जीति॥७५॥

(दादू) मैं दासी तिहँ दास की, जिहँ सँग खेलै पीव ।
बहुत भाँति करि वारणै, ता परि दीजै जीव ॥७६॥

(दादू) लीला राजा राम की, खेलैं सब ही संत ।
आपा पर एकै भया, छूटी सबै भरंत ॥७७॥(१३-१३१

(दादू) आनँद सदा अडोल सूँ, राम सनेही साध ।
प्रेमी प्रीतम कूँ मिलै, यहु सुख अगम अगाध ॥७८

---

*समाय । †द्वंद=झगड़े, बखेड़े ।

यहु घट दीपक साध का, ब्रह्म जोति परकास।
दादू पंखी संत जन, तहाँ परै निज दास ॥७९॥(१२-११६)

घर बन माहैं राखिये, दीपक जोति जगाइ।
दादू प्राण पतंग सब, जहँ दीपक तहँ जाइ ॥८०॥

घर बन माहैं राखिये, दीपक जलता होइ।
दादू प्राण पतंग सब, जाइ मिलैं सब कोइ ॥८१॥

घर बन माहैं राखिये, दीपक प्रगट प्रकास।
दादू प्राण पतंग सब, आइ मिलैं उस पास ॥८२॥

घर बन माहैं राखिये, दीपक जोति सहेत।
दादू प्राण पतंग सब, आइ मिलैं उस हेत ॥८३॥

जिहिं घट परगट राम है, सो घट तज्या न जाय।
नैनौं माहैं राखिये, दादू आप नसाइ* ॥८४॥

जिहिं घटि दीपक राम का, तिहिं घट तिमर न होइ।
उस उजियारे जोति के, सब जग देखै सोइ ॥८५॥
(४-१९६,१२-११२)

कबहुँ न बिहड़ै† सो भला, साधू दिढ़-मति होइ।
दादू हीरा एक रस, बाँधि गाँठड़ी सोइ ॥८६॥

ग्रंथ‡ न बाँधै गाँठड़ी, नहिं नारी सूँ नेह।
मन इंद्री इस्थिर करै, छाडि सकल गुण देह ॥८७॥
निराकार सूँ मिलि रहै, अखँड भगति करि लेह।
दादू क्यूँ कर पाइये, उन चरणौं की खेह ॥८८॥

---

* आपा को मेट कर। † बिछुड़ै, बदलै। ‡ ग्रंथ के अर्थ गाँठ और धन माल के भी हैं।

(दादू) असाध मिलै अंतर पड़ै, भाव भगति रस जाइ ।
साध मिलै सुख ऊपजै, आनँद अंगि न माइ* ॥६८

(दादू) साधू संगति पाइये, राम अमी फल होइ ।
संसारी संगति पाइये, बिष फल देवै सोइ ॥६९॥

दादू सभा संत की, सुमती उपजै आइ ।
साकत की सभा बैसताँ, ज्ञान काया थैं जाइ ॥७०॥

(दादू) सब जग दीसै एकला, सेवग स्वामी दोइ ।
जगत दुहागी राम बिन, साध सुहागी सोइ ॥७१॥

(दादू) साधू जन सुखिया भये, दुनियाँ कूँ बहु दंद† ।
दुनी दुखी हम देखताँ, साधन सदा अनंद ॥७२॥

दादू देखत हम सुखी, साईं के सँगि लागि ।
यौं सो सुखिया होइगा, जा के पूरे भाग ॥७३॥

(दादू) मीठा पीवै राम रस, सो भी मीठा होइ ।
सहजैं कड़वा मिटि गया, दादू निर्बिष सोइ ॥७४॥

(दादू) अंतरि एक अनंत सूँ, सदा निरंतर प्रीति ।
जिहिँ प्राणी प्रीतम बसै, सो बैठा त्रिभवन जीति॥७५॥

(दादू) मैं दासी तिहँ दास की, जिहँ सँग खेलै पीव ।
बहुत भाँति करि वारणै, ता परि दीजै जीव ॥७६॥

(दादू) लीला राजा राम की, खेलैं सब ही संत ।
आपा पर एकै भया, छूटी सबै भरंत ॥७७॥(१३-१३१)

(दादू) आनँद सदा अडोल सूँ, राम सनेही साध ।
प्रेमी प्रीतम कूँ मिलै, यहु सुख अगम अगाध ॥७८॥

---

*समाय । †द्वंद=झगड़े, बखेड़े ।

यहु घट दीपक साध का, ब्रह्म जोति परकास ।
दादू पंखी संत जन, तहाँ परै निज दास ॥७९॥(१२-११६)

घर बन माहैँ राखिये, दीपक जोति जगाइ ।
दादू प्राण पतंग सब, जहँ दीपक तहँ जाइ ॥८०॥

घर बन माहैँ राखिये, दीपक जलता होइ ।
दादू प्राण पतंग सब, जाइ मिलैँ सब कोइ ॥८१॥

घर बन माहैँ राखिये, दीपक प्रगट प्रकास ।
दादू प्राण पतंग सब, आइ मिलैँ उस पास ॥८२॥

घर बन माहैँ राखिये, दीपक जोति सहेत ।
दादू प्राण पतंग सब, आइ मिलैँ उस हेत ॥८३॥

जिहिँ घट परगट राम है, सो घट तज्या न जाय ।
नैनौँ माहैँ राखिये, दादू आप नसाइ* ॥८४॥

जिहिँ घटि दीपक राम का, तिहिँ घट तिमर न होइ ।
उस उजियारे जोति के, सब जग देखै सोइ ॥८५॥
(४-१९६,१२-११२)

कबहुँ न बिहड़ै† सो भला, साधू दिढ़-मति होइ ।
दादू हीरा एक रस, बाँधि गाँठड़ी सोइ ॥८६॥

ग्रंथ‡ न बाँधै गाँठड़ी, नहिँ नारी सूँ नेह ।
मन इंद्री इस्थिर करै, छाडि सकल गुण देह ॥८७॥
निराकार सूँ मिलि रहै, अखँड भगति करि लेह ।
दादू क्यूँ कर पाइये, उन चरणौँ की खेह ॥८८॥

---

* आपा को मेट कर । † बिछुड़ै, बदलै । ‡ ग्रंथ के अर्थ गाँठ और धन माल के भी हैँ ।

साध सदा संजम रहै, मैला कदे न होइ ।
दादू पंक* परसै नहीं, कर्म न लागै कोइ ॥८९॥
साध सदा संजम रहै, मैला कदे न होइ ।
सुन्नि सरोवर हंसला, दादू बिरला कोइ ॥९०॥
साहिब का उनहार† सब, सेवग माहैं होइ ।
दादू सेवग साध सो, दूजा नाहीं कोइ ॥९१॥
(दादू) जब लग नैन न देखिये, साध कहैं ते अंग ।
तब लग क्यूँ कर मानिये, साहिब का परसंग ॥९२॥
(दादू) सोइ जन साधू सिद्ध सो, सोई सकल सिर मौर ।
जिहिं के हिरदे हरि बसै, दूजा नाहीं और ॥९३॥
(दादू) औगुन छाड़ै गुण गहै, सोई सिरोमणि साध ।
गुण औगुण थैं रहित है, सो निज ब्रह्म अगाध ॥९४॥
(दादू) सींधव‡ फटक पषाण का, ऊपरि एकै रंग ।
पाणी माहैं देखिये, न्यारा न्यारा अंग ॥९५॥
(दादू) सींधव के आपा नहीं, नीर षीर§ परसंग ।
आपा फटक पषाण के, मिलै न जल के संग ॥९६॥
(दादू) सब जग फटक पषाण है, साधू सींधव होइ ।
सींधव एकै ह्वै रह्या, पाणी पत्थर दोइ ॥९७॥
साधू जन उस देस का, को आया यहि संसार ।
दादू उस कूँ पूछिये, प्रीतम के समचार ॥९८॥
समाचार सत पीव के, को साध कहैगा आइ ।
दादू सीतल आतमा, सुख मैं रहै समाइ ॥९९॥

---

*कीचड़ । †सदृश, रूप । ‡सैन्धव=पहाड़ी नोन जिस को सेंधा नोन भी कहते हैं । §दूध ।

साध सबद सुख बरखि है, सीतल होइ सरीर ।
दादू अंतर आतमा, पीवै हरि जल नीर ॥१००॥
दादू दत* दरबार का, को साधू बाँटै आइ ।
तहाँ राम रस पाइये, जहँ साधू तहँ जाइ ॥१०१॥
(दादू) सुता†सनेही राम का, सो मुझ मिलवहु आणि ।
तिस आगैं हरि गुण कथूँ, सुनत न करई काणि‡ ॥१०२॥
(दादू) सब ही मृतक समान हैं, जीया तब ही जाणि ।
दादू छाँटा§ अमी का, को साधू बाहै‖ आणि ॥१०३॥
(प्रश्न) सबही मिर्तक ह्वै रहे, जीवैं कौन उपाइ ।
(उत्तर) दादू अमृत राम रस, को साधू सींचै आइ ॥१०४॥
(प्रश्न) सब ही मिर्तक माहिं हैं, क्यौं करि जीवैं सोइ ।
(उत्तर) दादू साधू प्रेम रस, आणि पिलावै कोइ ॥१०५॥
(प्रश्न) सब ही मिर्तक देखिये, केहि बिधि जीवै जीव ।
(उत्तर) साध सुधा रस आणि करि, दादू बरिखै पीव ॥१०६॥
हरि जल बरिखै बाहिरा, सूके काया खेत ।
दादू हरिया होइगा, सींचनहार सुचेत ॥१०७¶॥
गंगा जमुना सरसुती, मिलैं जब सागर माहिं ।
खारा पानी ह्वै गया, दादू मीठा नाहिं ॥१०८॥
दादू राम न छाँड़िये, गहिला तजि संसार ।
साधू संगति सोधि ले, कुसंगति संग निवार ॥१०९॥

---

*दात, दान । †श्रोता । ‡कान=लाज, शरम । §छींट । ‖डालै । ¶ हरि जल अर्थात अमी रूपी सदोपदेश की बाहरी बर्षा से काम न सरेगा सूखा हुआ खेत काया का जभी हरा होगा जब सींचने वाला (उपदेशक) पूरा सचेत हो जो उसका असर अंतर में धसाने की समर्थता रखता हो । पं० चं० प्र० ने बाहिरा के अर्थ वायु सम्बन्धी लिखे हैं और सींचनहार के अर्थ साधक के जो समझ में नहीं आते ।

(दादू) कुसंगति सब परहरी, मात पिता कुल कोइ ।
सजन सनेही बंधवा, भावै आपा होइ ॥११०*॥
अज्ञान मूर्ख हितकारी, सज्जनो समो रिपुः ।
ज्ञात्वा त्यजंति ते, निरामयी मनो जितः ॥१११†॥
कुसंगति केते गये, तिन का नाँव न ठाँव ।
दादू ते क्यौं ऊधरैं, साध नहीं जिस गाँव ॥११२॥
भाव भगति का भंग करि, बटपारे मारैं बाट ।
दादू द्वारा मुकति का, खोले जड़ँ कपाट ॥११३॥

॥ सतसंग महात्म ॥

साध सँगति अंतर पड़ै, तौ भागैगा किस ठौर ।
प्रेम भगति भावै नहीं, यहु मन का मत और ॥११४॥
(दादू) राम मिलन के कारणे, जे तूँ खरा उदास ।
साधू संगति सोधि ले, राम उन्हौं के पास ॥११५॥
ब्रह्मा संकर सेस मुनि, नारद ध्रू सुकदेव ।
सकल साध दादू सही, जे लागे हरि सेव ॥११६॥
साध कँवल हरि बासना, संत भँवर सँग आइ ।
दादू परिमल ले चले, मिले राम कूँ जाइ ॥११७॥
(दादू) सहजैं मेला होइगा, हम तुम हरि के दास ।
अंतर-गति तौ मिलि रहे, फुनि‡ परगट परकास ॥११८॥
आतम माहैं राम है, पूजा ता की होइ । (४-२६२)
सेवा बंदन आरती, साध करैं सब कोइ ॥११९॥

---

*साधू अपने समस्त कुटुम्ब को और आपे को त्याग देता है क्योँकि उन का साथ कुसंग है । † ज्ञानी पुरुष जो निष्कपट और मन को जीते हुए हैँ अज्ञानी और मूरख मित्र और सज्जन शत्रु दोनोँ को एक सा समझ कर त्याग देते हैँ । ‡ पुनि ।

संत उतारैं आरती, तन मन मंगलचार। (४-१६६)
दादू बलि बलि वारने, तुम परि सिरजनहार ॥१२०॥

(दादू) मम सिर मोटे भाग, साधौं का दरसन किया।
कहा करै जम काल, राम रसायन भर पिया॥१२१॥

(दादू) एता अविगत आप थैं, साधौं का अधिकार।
चौरासी लख जीव का; तन मन फेरि सँवार ॥१२२॥

बिष का अमृत करि लिया, पावक का पाणी।
बाँका सूधा करि लिया, सो साध बिनाणी* ॥१२३॥

दादू ऊरा† पूरा करि लिया, खारा मीठा होइ।
फूटा सारा करि लिया, साध बमेकी‡ सोइ ॥१२४॥

बंध्या मुक्ता करि लिया, उरभ्या सुरभ्रि समान।
बैरी मीता करि लिया, दादू उत्तिम ज्ञान ॥१२५॥

झूठा साचा करि लिया, काचा कंचन सार।
मैला निर्मल करि लिया, दादू ज्ञान बिचार ॥१२६॥

काया कर्म लगाइ करि, तीरथ धोवै आइ।
तीरथ माहैं कीजिये, सो कैसे करि जाइ ॥१२७॥

जहँ तिरिये तहँ डूबिये, मन मैं मैला पोइ।
जहँ छूटै तहँ बंधिये, कपट न सीझै कोइ ॥१२८॥

दादू जब लग जीविये, सुमिरण संगति साध।
दादू साधू राम बिन, दूजा सब अपराध ॥१२९॥

॥ इति साध को अंग समाप्त ॥ १५ ॥

---

*बिज्ञानी। † कम। ‡ बिबेकी।

॥ १६--मधि* को अंग ॥

(दादू) नमो नमो निरंजनं, नमस्कार गुरु देवतः ।
बंदनं सर्ब साधवा, प्रणामं पारंगतः ॥ १ ॥
(दादू) द्वै पष† रहिता सहज सो, सुख दुख एक समाण ।
मरै न जीवै सहज सो, पूरा पद निर्बाण ॥ २ ॥
सहज रूप मन का भया, जब द्वै द्वै मिटी तरंग ।(१०-५०)
ताता सीला सम भया, तब दादू एकै अंग ॥ ३ ॥
सुख दुख मन मानै नहीं, राम रंग राता ।
दादू दून्यूँ छाड़ि सब, प्रेम रस्स माता ॥ ४ ॥
मति मोटी‡ उस साध की, द्वै पष रहत समान ।
दादू आपा मेटि करि, सेवा करै सुजान ॥ ५ ॥
कछु न कहावै आप कौं, काहू संगि न जाइ ।
दादू निर्पष ह्वै रहै, साहिब सौं ल्यौ लाइ ॥६॥
सुख दुख मन मानै नहीं, आपा पर सम भाइ ।
सो मन मन करि सेविये, सब पूरण ल्यौ लाइ ॥७॥
ना हम छाड़ैं ना गहैं, ऐसा ज्ञान विचार ।
मद्धि भाइ§ सेवैं सदा, दादू मुकति दुवार ॥ ८ ॥
सहज सुन्नि मन राखिये, इन दून्यूँ के माहिं । (७-९)
लै समाधि रस पीजिये, तहाँ काल भय नाहिं ॥९॥
आपा मेटै मृत्तिका‖, आपा धरै अकास ।
दादू जहँ जहँ द्वै नहीं, मद्धि निरंतर बास ॥१०॥
नहीं मृतक नहिं जीवता, नहिं आवै नहिं जाइ । (६-२२)
नहिं सूता नहिं जागता, नहिं भूखा नहिं खाइ ॥११॥

* मध्य । † पक्ष । ‡ बड़ी, श्रेष्ठ । § मध्य भाव । ‖ मृत्तिका=मिट्टी, अर्थात मिट्टी की बनी हुई देंह ।

दादू इस आकार थैं, दूजा सूषिम लोक।
ता थैं आगैं और है, तहवाँ हरषि न सोक ॥१२॥
(दादू) हद्द छाड़ि बेहद्द मैं, निर्भय निर्पष होइ।
लागि रहै उस एक सौं, जहाँ न दूजा कोइ ॥१३॥
(दादू) दूजे अंतर होत है, जिनि आणै मन माहिँ। (८-६३)
तहँ ले मन को राखिये, जहँ कुछ दूजा नाहिँ ॥१४॥
निराधार घर कीजिये, जहँ नाहिँ धरणि अकास।
दादू निहचल मन रहै, निर्गुण के बेसास ॥१५॥
मन चित मनसा आतमा, सहज सुरति ता माहिँ। (४-२९६)
दादू पंचूँ पूरि ले, जहँ धरती अंबर नाहिँ ॥१६॥
अधर चाल कबीर की, आसंघी* नहिँ जाइ।
दादू डाकै मिरग ज्यूँ, उलटि पड़ै भुइँ आइ ॥१७॥
दादू रहणि कबीर की, कठिन बिषम यहु चाल।
अधर एक सौं मिलि रह्या, जहाँ न झंपै† काल ॥१८॥
निराधार निज भगति करि, निराधार निज सार।
निराधार निज नाँव ले, निराधार निरकार ॥१९॥
निराधार निज राम रस, को साधू पीवणहार।
निराधार निर्मल रहै, दादू ज्ञान बिचार ॥२०॥
जब निराधार मन रहि गया, आतम के आनंद।
दादू पीवै राम रस, भेटै परमानंद ॥ २१ ॥
दुहु बिच राम अकेला आपै, आवण जाण न देई।
जहँ के तहँ सब राखे दादू, पारि पहूँते‡ सेई ॥२२॥
चलु दादू तहँ जाइये, जहँ मरै न जीवै कोइ।
आवागवन भय को नहीं, सदा एक रस होइ ॥२३॥

---

* निरंतर, बेरोक, सुगम। † देखै। ‡ पहुँचता है।

चलु दादू तहँ जाइये, जहँ चंद सूर नहिं जाइ ।
राति दिवस का गम नहीं, सहजैं रह्या समाइ ॥२४॥
चलु दादू तहँ जाइये, माया मोह थैं दूरि ।
सुख दुख को ब्यापै नहीं, अबिनासी घर पूरि ॥२५॥
चलु दादू तहँ जाइये, जहँ जम जोरा को नाहिं ।
काल मीच लागै नहीं, मिलि रहिये ता माहिं ॥२६॥
एक देस हम देखिया, तहँ रुत* नहिं पलटै कोइ ।
हम दादू उस देस के, जहँ सदा एक रस होइ ॥२७॥
एक देस हम देखिया, जहँ बस्ती ऊजड़ नाहिं ।
हम दादू उस देस के, सहज रूप ता माहिं ॥२८॥
एक देस हम देखिया, नहिं नेड़े नहिं दूरि ।
हम दादू उस देस के, रहे निरंजन पूरि ॥२९॥
एक देस हम देखिया, जहँ निस दिन नाहीं घाम ।
हम दादू उस देस के, जहँ निकट निरंजन राम ॥३०॥
बारह मासी नीपजै, तहाँ किया परबेस ।
दादू सूका ना पड़ै, हम आये उस देस ॥३१॥
जहँ बेद कुरान का गमि नहीं, तहाँ किया परबेस ।
तहँ कुछ अचिरज देखिया, यहु कुछ औरै देस ॥३२॥
ना घरि रह्या न बनि गया, ना कुछ किया कलेस । (१-७४)
दादू मन हीं मन मिलया, सतगुर के उपदेस ॥३३॥
काहे दादू घरि रहै, काहे बन खँडि जाइ ।
घर बन रहिता राम है, ता ही सौं ल्यौ लाइ ॥३४॥
(दादू) जिनि प्राणी करि जाणिया, घर बन एक समान ।
घर माहैं बन ज्यौं रहै, सोई साध सुजान ॥३५॥

---

* ऋतु ।

सब जग माहैं एकला , देंह निरंतर बास ।
दादू कारणि राम के , घर बन माहिँ उदास ॥३६॥
घर बन माहैं सुख नहीं , सुख है साईं पास ।
दादू ता सौं मन मिल्या , इन थैं भया उदास ॥३७॥
ना घरि भला न बन भला , जहाँ नहीं निज नाँव ।(२-७८)
दादू उनमनि मन रहै , भला त सोई ठाँव ॥ ३८ ॥
बैरागी बन मैं बसै , घरबारी घर माहिँ ।
राम निराला रहि गया , दादू इन मैं नाहिँ ॥३९॥
दीन दुनी सदिकै करूँ , टुक देखण दे दीदार । (३-४०)
तन मन भी छिन छिन करूँ , भिस्त दोजग भी वार ॥४०॥
दादू जीवण मरण का , मुझ पछितावा नाहिँ ।
मुझ पछितावा पीव का , रह्या न नैनहुँ माहिँ ॥४१॥
सुरग नरक संसय नहीं , जीवण मरण भय नाहिँ ।
राम बिमुख जे दिन गये , सो सालैं मन माहिँ ॥४२॥
सुरग नरक सुख दुख तजे , जीवण मरण नसाइ ।
दादू लोभी राम का , को आवै को जाइ ॥४३॥

॥ संत मत की महिमा ॥

(दादू) हिंदू तुरक न होइबा , साहिब सेती काम ।
षट दरसन* के संग न जाइबा, निर्पष† कहिबा राम ॥४४॥
षट दरसन दून्यूँ नहीं , निरालंब निज बाट ।
दादू एकै आसिरे , लंघै औघट घाट ॥४५॥
(दादू) ना हम हिंदू होहिँ गे , ना हम मूसलमान ।
षट दरसन मैं हम नहीं , हम राते रहिमान ॥४६॥

*छह शास्त्र अर्थात साँख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा, वेदांत। †निर्पक्ष।

जोगी जंगम सेवड़े, बोध सन्यासी सेख। (१४-३
षट दरसन दादू राम बिन, सबै कपट के भेख ॥४७॥
दादू अलह राम का, द्वै पष थैं न्यारा।
रहिता गुन आकार का, सो गुरू हमारा ॥४८॥
(दादू) मेरा तेरा बावरे, मैं तैं की तजि बाणि*।
जिन यहु सब कुछ सिरजिया, करि ताही का जाणि ॥४९
(दादू) करणी हिंदू तुरक की, अपणी अपणी ठौर।
दुहँ बिच मारग साध का, यहु संतौं की रह और ॥५०॥
दादू हिंदू तुरक का, द्वै पष पंथ निवारि।
संगति साचे साध की, साईं कौं संभारि ॥५१॥
(दादू) हिंदू लागे देहुरै†, मूसलमान मसीति‡।
हम लागे इक अलेष सौं, सदा निरंतर प्रीति ॥५२॥
न तहाँ हिंदू देहुरा, न तहाँ तुरक मसीति।
दादू आपै आप है, नहीं तहाँ रह रीति ॥५३॥
यहु मसीति यहु देहुरा, सतगुर दिया दिखाइ। (१-७५)
भीतरि सेवा बंदगी, बाहरि काहे जाइ ॥५४॥
दून्यूँ हाथी ह्वै रहे, मिलि रस पिया न जाइ।
दादू आपा मेटि करि, दून्यूँ रहे समाइ ॥५५॥
भय भीत भयानक ह्वै रहे, देख्या निरपष अंग।
दादू एकै ले रह्या, दूजा चढ़ै न रंग ॥५६§॥
जानै बूझै साच है, सब को देखण धाइ।
चाल नहीं संसार की, दादू गह्या न जाइ ॥५७§॥

---

*आदत। †देवल। ‡मसजिद। §नं० ५६ व ५७ साखियों का यह अभिप्राय है कि संत मत का निर्पक्ष अंग देख कर सब रोब मानते और थर्राते हैं—सब देखने को तो दौड़ते हैं और उस की सचाई का भी निश्चय होता है परंतु लोक रीति की टेक बस उस को धारण नहीं करते।

(दादू) पष काहू के ना मिलै, निर्पष निर्मल नाँव ।
साइँ सौं सनमुख सदा, मुकता सब ही ठाँव ॥५८॥
(दादू) जब थैं हम निर्पष भये, सबै रिसाने लोक ।
सतगुरु के परसाद थैं, मेरे हरख न सोक ॥५९॥
निर्पष ह्वै करि पष गहै, नरक पड़ैगा सोइ ।
हम निर्पष लागे नाँव सौं, कर्ता करै सो होइ ॥६०॥
(दादू) पष काहू के ना मिलै, निहकामी निर्पष साध ।
एक भरोसे राम के, खेलै खेल अगाध ॥६१॥
दादू पषा पषी संसार सब, निर्पष बिरला कोइ ।
सोई निर्पष होइगा, जाके नाँव निरंजन होइ॥६२॥
अपने अपने पंथ की, सब को कहै बढाइ ।
ता थैं दादू एक सौं, अंतरगति ल्यौ लाइ ॥६३॥
दादू द्वै पष दूरि करि, निर्पष निर्मल नाँव ।
आपा मेटै हरि भजै, ता की मैं बलि जाँव ॥६४॥
दादू तजि संसार सब, रहै निराला होइ ।
अबिनासी के आसरै, काल न लागै कोइ ॥६५॥
कलिजुग कूकर कलिमुहाँ, उठि उठि लागै धाइ ।
दादू क्यौं करि छूटिये, कलिजुग बड़ी बलाइ ॥६६॥
काला मुँह संसार का, नीले कीये पाँव ।
दादू तीनि तलाक* दे, भावै तीधर जाव ॥६७॥
दादू भाव हीन जे पिरथमी, दया बिहूणा देस ।
भगति नहीं भगवंत की, तहँ कैसा परवेस ॥६८॥
जे बोलै तौ चुप कहैं, चुप तौ कहैं पुकार ।
दादू क्यौंकरि छूटिये, ऐसा है संसार ॥६९॥

---

* तिलांजुली दे ।

न जाणौं हाँजी चुप्प गहि , मेटि अग्नि की झाल* ।
सदा सजीवन सुमिरिये , दादू बंचै काल ॥ ७० ॥
पंथि चलैं ते प्राणिया , तेता कुल ब्यौहार ।
निर्पष साधू सो सही , जिन कै एक अधार ॥७१॥
दादू पंथौं परि गये , बपुरे बारह बाट ।
इन के संगि न जाइये , उलटा अविगत घाट ॥७२
(दादू) जागे कौं आया कहैं , सूते कौं कहैं जाइ ।
आवण जाणा झूठ है , जहँ का तहाँ समाइ ॥७३॥

॥ इति मधि को अंग समाप्त ॥ १६ ॥

* संसारी झगड़ों की तपन से बचने के लिये भर सक तो मौन गहै, या कह दे कि मैं नहीं जानता, या हाँ में हाँ मिला कर अपनी जान छुड़ावै ।
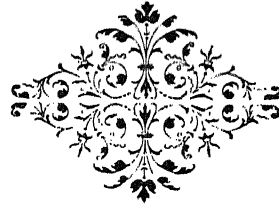
१७–इति सारग्राही को अंग

(दादू) नमो नमो निरंजनं , नमस्कार गुर देवतः ।
बंदनं सर्व साधवा , प्रणामं पारंगतः ॥ १ ॥
दादू साधू गुण गहै , औगुण तजै बिकार ।
मान सरोवर हंस ज्यूँ , छाडि नीर गहि सार ॥२॥
हंस गियानी सो भला , अंतरि राखै एक ।
बिष मैं अमृत काढ़ि ले , दादू बड़ा बमेक* ॥ ३ ॥
पहिली न्यारा मन करै , पीछै सहज सरीर ।
दादू हंस बिचार सौं , न्यारा कीया नीर ॥ ४ ॥
आपै आप प्रकासिया , निर्मल ज्ञान अनंत ।
षीर नीर न्यारा किया , दादू भजि भगवंत ॥ ५ ॥
षीर नीर का संत जन , न्याव नवेरै आइ ।
दादू साधू हंस बिन , भेल सभेलै† जाइ ॥ ६ ॥
(दादू) मन हंसा मोती चुणै , कंकर दीया डारि ।
सतगुर कहि समझाइया , पाया भेद बिचारि ॥ ७ ॥
दादू हंस मोती चुणै , मानसरोवर जाइ ।
बगुला छीलरि‡ बापुड़ा , चुणि चुणि मछली खाइ ॥८॥
दादू हंस मोती चुगै , मानसरोवर न्हाइ ।
फिर फिरि बैसै बापुड़ा , काग करंकाँ§ आइ ॥ ९ ॥
दादू हंस परेखिये , उत्तिम करणी चाल ।
बगुला बैसै ध्यान धरि , परतषि कहिये काल ॥१०॥

---

*बिबेक। †मिला मिलाया, बिना सफ़ाई हुए। ‡तलैया। §कौवे की तरह सूखी चमड़ी अर्थात असार भोगोँ मैँ लगा रहता है।

उज्जल करणी हंस है, मैली करणी काग।
मद्धिम करणी छाडि सब, दादू उत्तिम भाग ॥ ११ ॥
(दादू) निर्मल करणी साध की, मैली सब संसार।
मैली मद्धिम ह्वै गये, निरमल सिरजनहार ॥१२॥
(दादू) करणी ऊपरि जाति है, दूजा सोच निवार।
मैली मद्धिम ह्वै गये, उज्जल ऊँच बिचार ।॥१३॥
उज्जल करणी राम है, दादू दूजा धंध।
का कहिये समझै नहीं, चारौं लोचन* अंध ॥१४॥
(दादू) गऊ बच्छ का ज्ञान गहि, दूध रहै ल्यौ लाइ।
सींग पूँछ पग परिहरै, अस्थन लागै धाइ ॥ १५ ॥
(दादू) काम गाइ के दूध सूँ, हाड़ चाम सूँ नाहिं।
इहि बिधि अमृत पीजिये, साधू के मुख माहिं ॥१६॥
(दादू) काम धणी के नाँव सूँ, लोगन सूँ कुछ नाहिं।
लोगन सूँ मन ऊपली†, मन की मन हीं माहिं ॥१७॥
जा के हिरदै जैसी होइगी, सो तैसी ले जाइ।
दादू तूँ निर्दोष रहु, नाँव निरंतर गाइ ॥१८॥
(दादू) साध सबै करि देखणाँ, असाध न दीसै कोइ।
जिहिं के हिरदै हरि नहीं, तिहिं तन टोटा‡ होइ ॥१९॥
साधू संगति पाइये, तब दूँदर§ दूरि नसाइ।
दादू बोहिथ‖ बैसि करि, डूँडै¶ निकट न जाइ ॥२०॥

---

* चारौं लोचन अर्थात दो बाहरी आँख जो चिहरे पर दीखती हैं, एक अंतरी चक्षु जिसको शिव-नेत्र या तीसरा-तिल कहते हैं और चौथा उस के ऊपर अंतरी चक्षु सहसदल कँवल के स्थान का जिस के खुलने पर ज्योति निरंजन का दर्शन होता है। पंडित चंद्रिकाप्रसाद का लेख कि तीसरे और चौथे चक्षु श्रुति और स्मृति हैं संतमत के विरुद्ध है। †ऊपरी। ‡ घाटा। § द्वंद्व=दुई। ‖ बड़ी नाव। ¶ डोंगी या छोटी नाव।

जब परम पदारथ पाइये, तब कंकर दीया डारि।
दादू साचा सौं मिले, तब कूड़ा काच निवारि ॥२१॥
जब जीवन मूरी* पाइये, तब मरिबा कौण बिसाहि† ।
दादू अमृत छाड़ि करि, कौण हलाहल खाहि ॥२२॥
जब मान सरोवर पाइये, तब छीलर कूँ छिटकाइ ।
दादू हंसा हरि मिले, तब कागा गये बिलाइ ॥२३॥
जहँ दिनकर तहँ निस नहीं, निस तहँ दिनकर नाहिं ।
दादू एकै द्वै नहीं, साधन के मत माहिं ॥२४॥
(दादू) एकै घोड़े चढ़ि चलै, दूजा कोतिल‡ होइ ।
दुहुँ घोड़ौं चढ़ि बैसताँ, पारि न पहुँता कोइ ॥२५॥

॥ इति सारग्राही को अंग समाप्त ॥ १७ ॥
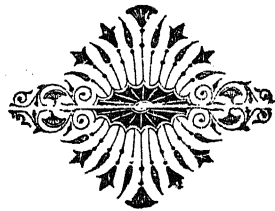
* मूल। † मोल ले। ‡ कोतल=बिना सवारी के। भाव यह कि परमारथ की मुख्यता रक्खे हुए स्वारथ भी करते रहो यदि दोनों में एक सा बरतोगे तो पार नहीं होगे।

१८—बिचार को अंग

(दादू) नमो नमो निरंजनं, नमस्कार गुर देवतः ।
बंदनं सर्व साधवा, प्रणामं पारंगतः ॥ १ ॥
(दादू) जल मैँ गगन गगन मैँ जल है, फुनि वै गगन निरालं ।
ब्रह्म जीव इहिँ बिधि रहै, ऐसा भेद बिचारं ॥ २ ॥
ज्यूँ दरपन मैँ मुख देखिये, पानी मैँ प्रतिब्यंब ।
ऐसे आतम राम है, दादू सबही संग ॥ ३ ॥
जब दरपन माहैँ देखिये, तब अपना सूझै आप ।
दरपन बिन सूझै नहीं, दादू पुन्य रु* पाप ॥ ४ ॥
जीयँ† तेल तिलन्नि मैँ, जीयँ गंध फुलन्नि ।
जीयँ माखण षीर मैँ, ईयँ‡ रब§ रूहन्नि‖ ॥ ५ ॥
ईयँ रब रूहन्नि मैँ, जीयँ रूह रगन्नि¶ ।
जीयँ जेरौ** सूर मैँ, ठंढो चंद्र बसन्नि†† ॥ ६ ॥
(दादू) जिन यह दिल मंदिर किया, दिल मंदिर मैँ सोइ ।
दिल माहैँ दिलदार है, और न दूजा कोइ ॥ ७ ॥
मीत तुम्हारा तुम्ह कनैँ, तुम हीं लेहु पिछाणि ।
दादू दूरि न देखिये, प्रतिब्यंब ज्यूँ जाणि ॥ ८ ॥
प्रश्न—(दादू) नाल कँवल जल ऊपजै, क्यूँ जुदा जल माहिँ ।
उत्तर—चंदहिँ हित चित प्रीतड़ी, यूँ जल सेती नाहिँ‡‡ ॥९॥
दादू एक बिचार सूँ, सब थैँ न्यारा होइ ।
माहैँ है पर मन नहीं, सहज निरंजन सोइ ॥१०॥

---

* रु=और । † जैसे । ‡ ऐसे । § मालिक । ‖ सुरतोँ मेँ । ¶ नाड़ियोँ मेँ । ** प्रकाश । †† रहती है । ‡‡ कुमोदनी की प्रीत जल से नहीँ है, बल्कि चंद्रमा से है इस लिये वह जल से अलग रहती है ।

प्रश्न–(दादू) गुणनिर्गुण मन मिलि रह्या, क्यूँ बेगर* ह्वै जाइ
उत्तर–जहँ मन नाहीं सो नहीं, जहँ मन चेतन सो आहि॥११

दादू सब ही ब्याधि की, औषधि एक बिचार।
समझै थैं सुख पाइये, कोइ कुछ कहौ गँवार ॥१२॥

(दादू) इक निर्गुण इक गुण मई, सब घटि ये द्वै ज्ञान।
काया का माया मिलै, आतम ब्रह्म समान ॥ १३ ॥

(दादू) कोटि अचारी एक बिचारी, तऊ न सरभरि† होइ।
आचारी सब जग भख्या, बिचारी बिरला कोइ ॥१४॥

(दादू) घट मैं सुख आनंद है, तब सब ठाहर होइ।
घट मैं सुख आनंद बिन, सुखी न देख्या कोइ ॥ १५ ॥

काया लोक अनंत सब, घट मैं भारी भीर।
जहाँ जाइ तहँ संग सब, दरिया पैली तीर‡॥ १६ ॥

काया माया ह्वै रही, जोधा बहु बलवंत।
दादू दुस्तर क्यूँ तिरै, काया लोक अनंत ॥ १७ ॥

मोटी माया तजि गये, सूषिम लीयैं जाइ।
दादू को छूटै नहीं, माया बड़ी बलाइ ॥ १८ ॥

दादू सूषिम माहिँ ले, तिन का कीजै त्याग।
सब तजि राता राम सौं, दादू यहु बैराग ॥ १९ ॥

गुणातीत सो दरसनी, आपा धरै उठाइ।
दादू निर्गुण राम गहि, डोरी लागा जाइ ॥२०॥

प्यंड मुक्ति सब को करै, प्राण मुक्ति नहिँ होइ।
प्राण मुक्ति सतगुर करै, दादू बिरला कोइ ॥२१॥

---

* बेगाना, बेग़रज़। † सरवरि = बराबरी। ‡ पैली तीर = दूसरी तरफ़ या किनारे पर; उस पार।

प्रश्न—(दादू) षुध्या त्रिषा क्यूँ भूलिये, सीत तपति क्यूँ जाइ
क्यूँ सब छूटै देह गुण, सतगुरु कहि समझाइ ॥२२॥
उत्तर—माहीं थैं मन काढ़ि करि, ले राखै निज ठौर।
दादू भूलै देह गुण, बिसरि जाइ सब और ॥ २३ ॥
नाँव भुलावे देह गुण, जीव दसा सब जाइ।
दादू छाड़ै नाँव कूँ, तौ फिरि लागै आइ ॥२४
(दादू) दिन दिन राता राम सूँ, दिन दिन अधिक सनेह।
दिन दिन पीवै राम रस, दिन दिन दर्पण देह ॥ २५ ।
(दादू) दिन दिन भूलै देह गुण, दिन दिन इंद्री नास
दिन दिन मन मनसा मरै, दिन दिन होइ प्रकास ॥२६
देह रहै संसार मैं, जीव राम के पास।
दादू कुछ ब्यापै नहीं, काल झाल दुख त्रास ॥ २७ ॥
काया की संगति तजै, बैठा हरि पद माहिं।
दादू निर्भय ह्वै रहै, कोइ गुण ब्यापै नाहिं ॥ २८ ॥
काया माहैं भय घणा, सब गुण ब्यापैं आइ।
दादू निर्भय घर किया, रहे नूर मैं जाइ ॥ २९ ॥
खड़ग धार बिष ना मरै, कोइ गुण ब्यापै नाहिं।
राम रहै त्यूँ जन रहै, काल झाल जल माहिं ॥३०
सहज बिचार सुख मैं रहै, दादू बड़ा बमेक*।
मन इंद्री पसरैं नहीं, अंतरि राखै एक ॥ ३१ ॥
मन इंद्री पसरैं नहीं, अहि निसि एकै ध्यान।
पर उपगारी प्राणिया, दादू उत्तिम ज्ञान ॥ ३२ ॥

---

* बिबेक।

(दादू) आपा उरझैं उरझिया, दीसै सब संसार। (१-१३२)
आपा सुरझैं सुरझिया, यहु गुर ज्ञान बिचार ॥३३॥

(दादू) मैं नाहीं तब नाँव क्या, कहा कहावै आप।
साधो कहै बिचारि करि, मेटहु तन की ताप ॥ ३४ ॥

जब समझ्या तब सुरझिया, उलटि समाना सोइ।
कछू कहावै जब लगैं, तब लगि समझ न होइ ॥३५॥

जब समझ्या तब सुरझिया, गुरमुखि ज्ञान अलेख।
उर्ध कँवल मैं आरसी, फिरि करि आपा देख ॥३६॥

प्रेम भगति दिन दिन बधै*, सोई ज्ञान बिचार।
दादू आतम सोधि करि, मथि करि काढ़्या सार ॥३७॥

(दादू) जिहि बिरियाँ यहु सब कुछ भया, सो कुछ करै बिचार।
काजी पंडित बावरे, क्या लिखि बंधे भार ॥ ३८ ॥

(दादू) जब यहु मन हीं मन मिल्या, तब कुछ पाया भेद।
दादू ले करि लाइये, क्या पढ़ि मरिये बेद ॥ ३९ ॥

पाणी पावक पावक पाणी, जाणै नहीं अजाण।
आदि अंत बिचारि करि, दादू जाण सुजाण ॥ ४० ॥

सुख माहैं दुख बहुत है, दुख माहैं सुख होइ।
दादू देखि बिचारि करि, आदि अंत फल दोइ ॥ ४१ ॥

मीठा खारा खारा मीठा, जाणै नहीं गँवार।
आदि अंत गुण देखि करि, दादू किया बिचार ॥ ४२ ॥

कोमल कठिन कठिन है कोमल, मूरिख मर्म न बूझै।
आदि अंत बिचारि करि, दादू सब कुछ सूझै ॥ ४३ ॥

---

* बढ़ै।

प्रश्न—(दादू) षुध्या त्रिषा क्यूँ भूलिये, सीत तपति क्यूँ जाइ।
क्यूँ सब छूटै देह गुण, सतगुरु कहि समझाइ ॥२२॥
उत्तर—माहीं थैं मन काढ़ि करि, ले राखै निज ठौर।
दादू भूलै देह गुण, बिसरि जाइ सब और ॥ २३ ॥
नाँव भुलावै देह गुण, जीव दसा सब जाइ।
दादू छाड़ै नाँव कूँ, तौ फिरि लागै आइ ॥२४॥
(दादू) दिन दिन राता राम सूँ, दिन दिन अधिक सनेह।
दिन दिन पीवै राम रस, दिन दिन दर्पण देह ॥ २५ ॥
(दादू) दिन दिन भूलै देह गुण, दिन दिन इंद्री नास।
दिन दिन मन मनसा मरै, दिन दिन होइ प्रकास ॥२६॥
देह रहै संसार मैं, जीव राम के पास।
दादू कुछ ब्यापै नहीं, काल झाल दुख त्रास ॥ २७ ॥
काया की संगति तजै, बैठा हरि पद माहिं।
दादू निर्भय ह्वै रहै, कोइ गुण ब्यापै नाहिं ॥ २८ ॥
काया माहैं भय घणा, सब गुण ब्यापैं आइ।
दादू निर्भय घर किया, रहे नूर मैं जाइ ॥ २९ ॥
खड़ग धार बिष ना मरै, कोइ गुण ब्यापै नाहिं।
राम रहै त्यूँ जन रहै, काल झाल जल माहिं ॥३०॥
सहज बिचार सुख मैं रहै, दादू बड़ा बमेक*।
मन इंद्री पसरैं नहीं, अंतरि राखै एक ॥ ३१ ॥
मन इंद्री पसरैं नहीं, अहि निसि एकै ध्यान।
पर उपगारी प्राणिया, दादू उत्तिम ज्ञान ॥ ३२ ॥

* बिबेक।

(दादू) आपा उरझैं उरझिया, दीसै सब संसार। (१-१३२)
आपा सुरझैं सुरझिया, यहु गुर ज्ञान बिचार ॥३३॥
(दादू) मैं नाहीं तब नाँव क्या, कहा कहावै आप।
साधौ कहौ बिचारि करि, मेटहु तन की ताप ॥ ३४ ॥
जब समझ्या तब सुरझिया, उलटि समाना सोइ।
कछू कहावै जब लगैं, तब लगि समझ न होइ ॥३५॥
जब समझ्या तब सुरझिया, गुरमुखि ज्ञान अलेख।
उर्ध कँवल मैं आरसी, फिरि करि आपा देख ॥३६॥
प्रेम भगति दिन दिन बधै*, सोई ज्ञान बिचार।
दादू आतम सोधि करि, मथि करि काढ़्या सार ॥३७॥
(दादू) जिहि बिरियाँ यहु सब कुछ भया, सो कुछ करौ बिचार।
काजी पंडित बावरे, क्या लिखि बंधे भार ॥ ३८ ॥
(दादू) जब यहु मन हीं मन मिल्या, तब कुछ पाया भेद।
दादू ले करि लाइये, क्या पढ़ि मरिये बेद ॥ ३९ ॥
पाणी पावक पावक पाणी, जाणै नहीं अजाण।
आदि अंत बिचारि करि, दादू जाण सुजाण ॥ ४० ॥
सुख माहैं दुख बहुत है, दुख माहैं सुख होइ।
दादू देखि बिचारि करि, आदि अंत फल दोइ ॥ ४१ ॥
मीठा खारा खारा मीठा, जाणै नहीं गँवार।
आदि अंत गुण देखि करि, दादू किया बिचार ॥ ४२ ॥
कोमल कठिन कठिन है कोमल, मूरिख मर्म न बूझै।
आदि अंत बिचारि करि, दादू सब कुछ सूझै ॥ ४३ ॥

---

* बढ़ै।

पहिली प्राण† बिचारि करि, पीछै पग दीजै ।
आदि अंत गुण देखि करि, दादू कुछ कीजै ॥ ४४ ॥
पहिली प्राण बिचारि करि, पीछै चलिये साथ ।
आदि अंत गुण देखि करि, दादू घाली हाथ ॥ ४५ ॥
पहिली प्राण बिचारि करि, पीछै कुछ कहिये ।
आदि अंत गुण देखि करि, दादू निज गहिये ॥ ४६ ॥
पहिली प्राण बिचारि करि, पीछै आवै जाइ ।
आदि अंत गुण देख करि, दादू रहै समाइ ॥ ४७ ॥
(दादू) सोचि करै सो सूरमा, करि सोचै सो कूर ।
करि सोच्याँ मुख स्याम है, सोच कर्‌याँ मुख नूर ॥४८॥
जो मति पीछैं ऊपजै, सो मति पहिली होइ ।
कबहुँ न होवै जी दुखी, दादू सुखिया सोइ ॥ ४९ ॥
आदि अंत गाहन किया, माया ब्रह्म बिचार ।
जहाँ का तहाँ ले धर्‌या, दादू देत न बार ॥ ५० ॥

॥ इति बिचार को अंग समाप्त ॥ १८ ॥

---

* स्वासा ।
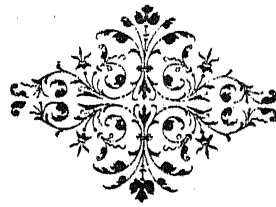
१९–बेसास* को अंग

(दादू) नमो नमो निरंजनं, नमस्कार गुर देवत: ।
बंदनं सर्व साधवा, प्रणामं पारंगत: ॥ १ ॥
(दादू) सहजैं सहजैं होइगा, जे कुछ रचिया राम ।
काहे कौं कलपै मरै, दुखी होत बेकाम ॥ २ ॥
साईं किया सो ह्वै रह्या, जे कुछ करै सो होइ ।
करता करै सो होत है, काहे कलपै कोइ ॥ ३ ॥
(दादू कहै) जे तैं किया सो ह्वै रह्या, जे तूँ करै सो होइ ।
करण करावण एक तूँ, दूजा नाहीं कोइ ॥ ४ ॥
(दादू) सोई हमारा साइयाँ, जे सब का पूरणहार ।
दादू जीवण मरण का, जा के हाथ बिचार ॥ ५ ॥
(दादू) सर्ग भवन पाताल मधि, आदि अंत सब सिष्ट ।
सिरजि सबन कौं देत है, सोई हमारा इष्ट ॥ ६ ॥
(दादू) करणहार करता पुरिष, हम कौं कैसी चिंत ।
सब काहू की करत है, सो दादू का मिंत ॥ ७ ॥
(दादू) मनसा बाचा कर्मणा, साहिब का बेसास ।
सेवग सिरजनहार का, करै कौन की आस ॥ ८ ॥
सुरम† न आवै जीव कूँ, अणकीया सब होइ ।
दादू मारग मिहर का, बिरला बूझै कोइ ॥ ९ ॥
(दादू) उद्दिम औगुण को नहीं, जे करि जाणै कोइ ।
उद्दिम मैं आनंद है, जे साईं सेती होइ ॥ १० ॥
(दादू) पूरणहारा पूरसी, जो चित रहसी ठाम ।
अंतर थैं हरि उमँगसी, सकल निरंतर राम ॥ ११ ॥

---

* विश्वास । † श्रम, परिश्रम ।

पूरिक पूरा पासि है, नाहीं दूरि गँवार।
सब जानत है बावरे, देवे कूँ हुसियार॥ १२॥
दादू च्यंता राम कूँ, समरथ सब जाणै।
दादू राम सँभालिये, च्यंता जिनि आणै॥ १३॥
(दादू) च्यंता कीयाँ कुछ नहीं, च्यंता जिव कूँ खाइ।
हूणा था सो ह्वै रह्या, जाणा है सो जाइ॥ १४॥
(दादू) जिन पहुँचाया प्राण कूँ, उदर उर्धमुख षीर।
जठर अगनि मैं राखिया, कोमल काया सरीर॥१५॥
सो समरथ संगी सँगि रहै, बिकट घाट घट भीर।
सो साईं सूँ गहगही[*], जिनि भूलै मन बीर॥१६॥
गोबिँद के गुण चीत करि, नैन बैन पग सीस।
जिन मुख दीया कान कर, प्राणनाथ जगदीस॥१७॥
तन मन सौंज सँवारि सब, राखै बिसवा बीस।
सो साहिब सुमिरै नहीं, दादू भानि हदीस[†]॥१८॥
(दादू) सो साहिब जिनि बीसरै, जिन घट दीया जीव।
गर्भ बास मैं राखिया, पालै पोखै पीव॥ १९॥
दादू राजिक[‡] रिजक[§] लीये खड़ा, देवै हाथौं हाथ।
पूरिक पूरा पासि है, सदा हमारे साथ॥ २०॥
हिरदय राम सँभालि ले, मन राखै बेसास।
दादू समरथ साइयाँ, सब की पूरै आस॥ २१॥
दादू साईं सबन कूँ, सेवग ह्वै सुख देइ।
अया मूढ़ मति[||] जीव की, तौ भी नाँव न लेइ॥२२॥

---

* पकड़, लगन। † पैग़म्बर के बचन को तोड़ कर यानी निरादर कर के।
‡ रोज़ी देने वाला। § रोज़ी। || बकरा जैसी जड़ बुद्धि।

(दादू) सिरजनहारा सबन का, ऐसा है समरत्थ ।
सोई सेवग ह्वै रह्या, जहँ सकल पसारै हत्थ ॥२३॥
धनि धनि साहिब तू बड़ा, कैान अनूपम रीति ।
सकल लोक सिर साइयाँ, ह्वै करि रह्या अतीत* ॥२४॥
(दादू) हूँ बलिहारी सुरत की, सब की करै सँभाल ।
कीड़ी कुंजर पलक मैं, करता है प्रतिपाल ॥२५॥
(दादू) छाजन† भोजन सहज मैं, सइयाँ देइ सो लेइ ।
ता थैं अधिका और कुछ, सो तूँ काँइ करेइ‡ ॥२६॥
दादू टूका सहज का, संतोषी जन खाइ ।
मिरतक भोजन गुरमुखो, काहे कलपै जाइ ॥ २७ ॥
दादू भाड़ा§ देह का, तेता सहजि बिचारि ।
जेता हरि बिच अंतरा, तेता सबै निवारि ॥२८‖॥
दादू जल दल राम का, हम लेवैं परसाद ।
संसार का समझै नहीं, अबिगत भाव अगाध ॥२९॥
परमेसुर के भाव का, एक कणूका¶ खाइ ।
दादू जेता पाप था, भरम करम सब जाइ ॥३०॥
(दादू) कौण पकावै कौण पीसै, जहाँ तहाँ सीधा ही दीसै ॥३१॥
(दादू) जे कुछ खुसी खुदाइ की, होवैगा सोई ।
पचि पचि कोई जिनि मरै, सुणि लीज्यौ लोई ॥ ३२ ॥
(दादू) छूटि खुदाइ कहीं को नाहीं, फिरिहै पिरथी सारी ।
दूजी दहणि दूरि करि बौरे, साधू सबद बिचारी ॥३३॥

---

* जो पार होगया है । † छाया, घर । ‡ क्या करेगा । § भाड़ा = किराया । ‖ जितना शरीर के गुज़ारे के लिये दर्कार है उस को सहज रीत से ग्रहन करै परंतु ज़रूरत से ज़ियादा की चाह न करै जिस से मालिक से दूरी पैदा हो । ¶ किनका मात्र ।

(दादू) बिना राम कहीं को नहीं, फिरिहौ देस बिदेसा ।
दूजी दहणि दूरि करि बौरे, सुणि यहु साध सँदेसा ॥३४॥
(दादू) सिदक सबूरी साच गहि, स्याबित राखि अकीन ।
साहिब सौं दिल लाइ रहु, मुरदा ह्वै मसकीन[*] ॥३५॥
(दादू) अणबंछया[†] टूका खात है, मर्महि लागा मन ।
नाँव निरंजन लेत है, यौं निर्मल साधू जन ॥३६॥
अणबंछया आगैं पड़ै, खिरया[‡] बिचारि रखाइ ।
दादू फिरै न तोड़ता, तरवर ताकि न जाइ ॥३७॥
अणबंछया, आगैं पड़ै, पीछैं लेइ उठाइ ।
दादू के सिर दोस यहु, जे कुछ राम रजाइ[§] ॥३८॥
अणबंछी अजगैब[||] की, रोजी गगन गिरास ।
दादू सति कर लीजिये, सो साईं के पास ॥ ३९ ॥
मीठे का सब मीठा लागै, भावै बिष भरि देइ ।
दादू कड़वा ना कहै, अमृत करि करि लेइ ॥४०॥
बिपति भली हरि नाँव सूँ, काया कसौटी दुक्ख ।
राम बिना किस काम का, दादू सम्पति सुक्ख ॥४१॥
दादू एक बेसास बिन, जियरा डावाँडोल ।
निकटि निधि दुख पाइये, चिंतामणी अमोल ॥४२॥
(दादू) बिन बेसासी जीयरा, चंचल नाहीं ठौर ।
निहचय निहचल ना रहै, कछू और की और ॥४३॥
(दादू) होणा था सो ह्वै रह्या, सर्ग न बांछी धाइ ।
नरक कनै[¶] थीं[**] ना डरी, हुआ सो होसी आइ ॥४४॥

---

* दीन, आधीन । † अनिच्छित । ‡ झड़ा हुआ । § मरज़ी, इच्छा । || आकाश-वृत्ति । ¶ पास । ** से ।

(दादू) होणा था सो ह्वै रह्या, जिन बांछै सुख दुक्ख ।
सुख माँगे दुख आइसी, पै पिव न बिसारी मुक्ख ॥४५॥

(दादू) होणा था सो ह्वै रह्या, जे कुछ कीया पीव ।
पल बधै* ना छिन घटै, ऐसी जाणी जीव ॥ ४६ ॥

(दादू) होणा था सो ह्वै रह्या, और न होवै आइ ।
लेणा था सो ले रह्या, और न लीया जाइ ॥४७॥

ज्यूँ रचिया त्यूँ होइगा, काहे कूँ सिर लेह ।
साहिब ऊपर राखिये, देखि तमासा येह ॥ ४८ ॥

ज्यूँ जाणै त्यूँ राखियो, तुम सिर ढाली† राइ‡ ।
दूजा को देखौं नहीं, दादू अनत न जाइ ॥४९॥

ज्यूँ तुम भावै त्यूँ खुसी, हम राजी उस बात ।
दादू के दिल सिदक§ सूँ, भावै दिन कूँ रात ॥५०॥

(दादू) करणहार जे कुछ किया, सो बुरा न कहणा जाइ ।
सोई सेवग संत जन, रहिबा राम रजाइ ॥ ५१ ॥

(दादू) करणहार जे कुछ किया, सोई हूँ करि जाणि ।(६-२६)
जे तूँ चतुर सयाणा जाणराइ, तौ याही परवाणि ॥५२॥

दादू करता हम नहीं, करता औरै कोइ ।
करता है सो करैगा, तूँ जिनि करता होइ ॥५३॥

कासी तजि मगहर‖ गया, कबीर भरोसे राम ।
सँदेही¶ साईं मिल्या, दादू पूरे काम ॥ ५४ ॥

---

* बढ़ । † डाली । ‡ हे मेरे राजा या स्वामी ; और "राइ" का अर्थ सलाह भी हो सकता है । § सिदक़ = सच्चा । ‖ मशहूर है कि मगहर में मरने से आदमी गद्दहे का जनम पाता है परंतु कबीर साहिब ने जान बूझ कर अपना शरीर वहीं त्याग किया । ¶ सदेह या इसी चोले में ।

दादू रोजी राम है, राजिक* रिजिक† हमार।
दादू उस परसाद सूँ, पोष्या सब परिवार ॥५५॥
पंच सँतोषे एक सूँ, मन मतवाला माहिँ।
दादू भागी भूख सब, दूजा भावै नाहिँ ॥ ५६ ॥
दादू साहिब मेरे कप्पड़े, साहिब मेरा खाण‡।
साहिब सिर का ताज है, साहिब प्यंड पराण ॥ ५७ ॥
साईं सत संतोष दे, भाव भगति बेसास।
सिदक सबूरी साच दे, माँगै दादूदास ॥ ५८ ॥

॥ इति बेसास को अंग समाप्त ॥ १६ ॥

---

* अन्नदाता। † रोज़ी। ‡ खाना।

२०–पीव पिछाण को अंग

(दादू) नमो नमो निरंजनं, नमस्कार गुर देवतः ।
बंदनं सर्व साधवा, प्रणामं पारंगतः ॥ १ ॥

सारौं* के सिर देखिये, उस पर कोई नाहिं ।
दादू ज्ञान बिचारि करि, सो राख्या मन माहिं ॥२॥

सब लालौं सिर लाल है, सब खूबौं सिर खूब ।
सब पाकौं सिर पाक है, दादू का महबूब† ॥ ३ ॥

परब्रह्म परापरं, सो मम देव निरंजनं । (१-२)
निराकारं निर्मलं, तस्य दादू बंदनं ॥ ४ ॥

एक तत्त ता ऊपरि इतनी, तीनि लोक ब्रह्मंडा ।
धरती गगन पवन अरु पाणी, सप्त दीप नौ खंडा ॥५॥
चंद सूर चौरासी लख, दिन अरु रैणी रचिले सप्त समंदा ।
सवा लाख मेर गिर परबत, अठारह भार तीरथ बरत ता ऊपर मंडा ।
चौदह लोक रहैं सब चरना‡, दादूदास तास घरि बंदा ॥६॥

(दादू) जिनि यहु एती करि धरी, थंभ§ बिन राखी ।
सो हम कूँ क्यूँ बीसरै, संत जन साखी ॥ ७ ॥

(दादू) जिन प्राण प्यंड हम कूँ दिया, अंतर सेवैं ताहि ।
जे आवै औसाण सिरि, सोई नाँव सँबाहि ॥८॥(२-२४)

(दादू) जिन मुझ कूँ पैदा किया, मेरा साहिब सोइ ।
मैं बंदा उस राम का, जिन सिरज्या सब कोइ ॥९॥

---

* सब । † प्रीतम । ‡ एक लिपि और एक पुस्तक के पाठ में "चरना" की जगह "रचना" है । § खम्भा, सहारा ।

(दादू) एक सगा संसार मैं, जिन हम सिर्जे सोइ ।
मनसा बाचा कर्मना, और न दूजा कोइ ॥ १० ॥
जे था कंत कबीर का, सोई बर बरिहौं ।
मनसा बाचा कर्मना, मैं और न करिहौं ॥ ११ ॥
(दादू) सब का साहिब एक है, जा का परगट नाँव ।
दादू साईं सोधि ले, ता की मैं बलि जाँव ॥ १२ ॥
साचा साईं सोधि करि, साचा राखी भाव ।
दादू साचा नाँव ले, साचे मारग आव ॥ १३ ॥
साचा सतगुरु सोधि ले, साचे लीजै साध । (१-५४)
साचा साहिब सोधि करि, दादू भगति अगाध ॥१४॥
जामै* मरै सो जीव है, रमिता राम न होइ ।
जामण मरण थैं रहित है, मेरा साहिब सोइ ॥१५॥
उठै न बैसै एक रस, जागै सोवै नाहिं ।
मरै न जीवै जगत गुर, सब उपजि खपै उस माहिं॥१६॥
ना वहु जामै ना मरै, ना आवै गर्भ बास ।
दादू ऊँधे† मुख नहीं, नर्क कुंड दस मास ॥ १७ ॥
किरतम नहीं सो ब्रह्म है, घटै बधै नहिं जाइ ।
पूरण निहचल एक रस, जगति न नाचै आइ ॥१८॥
उपजै बिनसै गुण धरै, यहु माया का रूप ।
दादू देखत थिर नहीं, षिण छाँही षिण धूप ॥१९॥
जे नाहीं सो ऊपजै, है सो उपजै नाहिं ।
अलख आदि अनादि है, उपजै माया माहिं ॥२०॥
प्रश्न—जे यहु करता जीव था, संकट क्यूँ आया ।
कर्मौं के बसि क्यूँ भया, क्यूँ आप बँधाया ॥ २१ ॥

* उगै, जन्मै । † औंधे ।

क्यूँ सब जोनी जगत मैँ, घर बार नचाया ।
क्यूँ यह करता जीव है, पर हाथ बिकाया ॥ २२ ॥
उत्तर—दादू किरतम काल बसि, बंध्या गुण माहीं ।
उपजै बिनसै देखताँ, यहु करता नाहीं ॥ २३ ॥
जाती* नूर अलाह का, सिफाती† अरवाह ।
सिफाती† सिजदा करै, जाती बेपरवाह ॥ २४ ॥
वार पार नहिं नूर का, दादू तेज अनंत । (४-१०४)
कीमति नहिं करतार की, ऐसा है भगवंत ॥ २५ ॥
निरसंध नूर अपार है, तेज पुंज सब माहिं ।(४-१०५)
दादू जोति अनंत है, आगौ पीछौ नाहिं ॥२६॥
खंड खंड निज ना भया, इक लस एकै नूर । (४-१०६)
ज्यूँ था त्यूँ हीं तेज है, जोति रही भर पूर ॥२७॥
परम तेज परकास है, परम नूर नीवास । (४-१०७)
परम जोति आनंद मैँ, हंसा दादूदास ॥ २८ ॥
परम तेज परापरं, परम जोति परमेसुरं ।
स्वयं ब्रह्म सदई सदा, दादू अबिचल इस्थिरं ॥२९॥
आदि अंत आगैँ रहै, एक अनूपम देव । (४-२५४)
निराकार निज निर्मला, कोई न जाणै भेव ॥३०॥
अबिनासी अपरंपरा, वार पार नहिं छेव ।(४-२५५)
सो तूँ दादू देखिले, उर अंतरि करि सेव ॥ ३१ ॥
अबिनासी साहिब सति है, जे उपजै बिनसै नाहिं ।
जेता कहिये काल मुख, सो साहिब किस माहिं ॥३२॥
साईं मेरा सत्ति है, निरंजन निराकार ।
दादू बिनसै देखताँ, झूठा सब आकार ॥ ३३ ॥

---

* निर्गुण । † सर्गुण ।

राम रटनि छाडै नहीं, हरि लय लागा जाइ।
बीचैं ही अटकै नहीं, कला कोटि दिखलाइ॥ ३४॥
उरैं* ही अटकै नहीं, जहाँ राम तहँ जाइ।
दादू पावै परम सुख, बिलसै बस्त अघाइ॥ ३५॥
(दादू) उरैं ही उरझे घणे, मूए गल दे पास।
ऐन अंग जहँ आप था, तहाँ गये निज दास॥ ३६॥
सेवा का सुख प्रेम रस, सेज सुहाग न देइ।
दादू बाहै† दास कूँ, कहै दूजा सब लेइ॥ ३७॥
पर पुरिषा सब परिहरै, सुंदरि देखै जागि। (८-३८)
अपणा पीव पिछाणि करि, दादू रहिये लागि॥ ३८॥
आन पुरिष हूँ बहनड़ी‡, परम पुरिष भरतार।
हूँ अबला समझौं नहीं, तूँ जाणै करतार॥ ३९॥
लोहा माटी मिलि रह्या, दिन दिन काई खाइ।
दादू पारस राम बिन, कतहूँ गया बिलाइ॥ ४०॥
लोहा पारस परसि करि, पलटै अपणा अंग।
दादू कंचन ह्वै रहै, अपणे साईं संग॥ ४१॥
(दादू) जिहिं परसैं पलटै प्राणिया, सोई निज करि लेह।
लोहा कंचन ह्वै गया, पारस का गुण येह॥ ४२॥
आपा नाहीं बल मिटै, त्रिबिधि तिमरि नहिं होइ।
दादू यहु गुण ब्रह्म का, सुन्नि समाना सोइ॥ ४३॥
(दादू) माया का गुण बल करै, आपा उपजै आइ।
राजस तामस सातगी, मन चंचल ह्वै जाइ॥ ४४॥
दह दिसि फिरै सो मन है, आवै जाइ सो पवन।
राखणहारा प्राण है, देखणहारा ब्रह्म॥ ४५॥

॥ इति पीव पिछान को अंग समाप्त॥ २०॥

---

* इस ओर। † सींचै। ‡ बहिन।

२१--समर्थाई को अंग

(दादू) नमो नमो निरंजनं, नमस्कार गुर देवतः ।
बंदनं सर्व साधवा, प्रणामं पारंगतः ॥ १ ॥
(दादू) कर्ता करै त निमष* मैं, कीड़ी कुंजर होइ ।
कुंजर थैं कीड़ी करै, मेटि न सक्कै कोइ ॥ २ ॥
(दादू) कर्ता करै त निमष मैं, राई मेर† समान ।
मेर कौं राई करै, तौ को मेटै फुरमान‡ ॥ ३ ॥
(दादू) कर्ता करै त निमष मैं, जल माहैं थल थाप ।
थल माहैं जलहर करै, ऐसा समरथ आप ॥ ४ ॥
(दादू) कर्ता करै त निमष मैं, ठाली§ भरै भँडार ।
भरिया गहि ठाली करै, ऐसा सिरजनहार ॥ ५ ॥
(दादू) धरती कौं अम्बर‖ करै, अम्बर धरती होइ ।
निस अँधियारी दिन करै, दिन कूँ रजनी सोइ ॥ ६ ॥
मिरतक काढ़ि मसाण थैं, कहु कौण चलावै ।
अविगत गति नहिं जाणिये, जग आण दिखावै ॥ ७ ॥
(दादू) गुपत गुण परगट करै, परगट गुपत समाइ ।
पलक माहिं भानै घड़ै¶, ता की लखी न जाइ ॥ ८ ॥
(दादू) सोई सही साबित हुआ, जा मस्तकि कर देइ ।
गरीब निवाजै देखताँ, हरि अपणा करि लेइ ॥ ९ ॥
(दादू) सब ही मारग साइयाँ, आगैं एक मुकाम ।
सोई सनमुख करि लिया, जाही सेती काम ॥ १० ॥
मीराँ मुझ सूँ मिहरि करि, सिर पर दीया हाथ ।
दादू कलियुग क्या करै, साईं मेरा साथ ॥ ११ ॥

---

* छिन । † पहाड़ । ‡ हुकम, आज्ञा । § खाली । ‖ आकाश । ¶ गढ़ै ।

(दादू) समथ सब बिधि साइयाँ, ता की मैं बलि जाउँ ।
अंतर एक जु सो बसै, औराँ चित्त न लाउँ ॥ १२ ॥

दादू मारग मेहर का, सुखी सहज सौं जाइ ।
भौसागर थैं काढ़ि करि, अपणे लिये बुलाइ ॥ १३ ॥

दादू जे हम चितवैं, सो कछू न होवै आइ ।
सोई करता सत्ति है, कुछ औरै करि जाइ ॥ १४ ॥

एकूँ लेइ बुलाइ करि, एकूँ देइ पठाइ ।
दादू अद्भुत साहिबी, क्यूँ ही लखी न जाइ ॥ १५ ॥

ज्यूँ राखै त्यूँ रहैंगे, अपणे बलि नाहीं ।
सबै तुम्हारे हाथि है, भाजि कत जाहीं ॥ १६ ॥

(दादू) डोरी हरि कै हाथि है, गल माहैं मेरै ।
बाजीगर का बंदरा, भावै तहँ फेरै ॥ १७ ॥

ज्यूँ राखै त्यूँ रहैंगे, मेरा क्या सारा ।
हुक्मी सेवग राम का, बंदा बेचारा ॥ १८ ॥

साहिब राखै तौ रहै, काया माहैं जीव ।
हुक्मी बंदा उठि चलै, जबहिं बुलावै पीव ॥ १९ ॥

खंड खंड परकास है, जहाँ तहाँ भरपूर ।
दादू करता करि रह्या, अनहद बाजैं तूर ॥ २० ॥

दादू दादू कहत है, आपै सब घट माहिं ।
अपणी रुचि आपै कहै, दादू थैं कुछ नाहिं ॥ २१ ॥

हम थैं हुआ न होइगा, ना हम करणे जोग ।
ज्यूँ हरि भावै त्यूँ करै, दादू कहैं सब लोग ॥ २२ ॥

दादू दूजा क्यूँ कहै, सिर परि साहिब एक ।
सो हम कूँ क्यूँ बीसरै, जे जुग जाहिं अनेक ॥ २३ ॥

आप अकेला सब करै, औरूँ के सिर देइ।
दादू सोभा दास कूँ, अपणा नाँव न लेइ॥ २४॥
आप अकेला सब करै, घट मैं लहरि उठाइ।
दादू सिर दे जीव के, यूँ न्यारा ह्वै जाइ॥ २५॥
ज्यूँ यहु समझै त्यूँ कहै, यहु जीव अज्ञानी।
जेती बाबा तैं कही, इन एक न मानी॥ २६॥
(दादू) परचा माँगै लोग सब, कहैं हम कूँ कुछ दिखलाइ।
समरथ मेरा साइयाँ, ज्यूँ समझै त्यूँ समझाइ॥२७॥
दादू तन मन लाइ करि, सेवा दिढ़ करि लेइ।
ऐसा समरथ राम है, जे माँगै सो देइ॥ २८॥
समरथ सो सेरी[*] समझाइनैं, करि अणकरता होइ।
घटि घटि ब्यापक पूरि सब, रहै निरंतर सोइ॥ २९॥
रहै नियारा सब करै, काहू लिप्त न होइ।
आदि अंत भानै घड़ै[†], ऐसा समरथ सोइ॥ ३०॥
सुरम[‡] नहीं सब कुछ करै, यौं कल धरी बणाइ।
कौतिगहारा ह्वै रह्या, सब कुछ होता जाइ॥ ३१॥
लिपै छिपै नहिं सब करै, गुण नहिं ब्यापै कोइ।
दादू निहचल एक रस, सहजैं सब कुछ होइ॥ ३२॥
बिन गुण ब्यापे सब किया, समरथ आपै आप।
निराकार न्यारा रहै, दादू पुन्न न पाप॥ ३३॥
समिता के घरि सहज मैं, दादू दुबिधा नाहिं।
साईं समरथ सब किया, समझि देखि मन माहिं॥३४॥

---

* सेरी=मार्ग या रहनी—अर्थ यह कि हे समरथ सो मार्ग मुझे समझाओ कि जिससे आप सब करते हुए भी अकरता हो। † गढ़ै। ‡ श्रम, परिश्रम।

पैदा कीया घाट घड़ि, आपै आप उपाइ ।
हिकमति हुनर कारीगरी, दादू लखी न जाइ ॥ ३५ ॥
जंत्र बजाया साजि करि, कारीगर करतार ।
पंचौं का रस नाद है, दादू बोलणहार ॥ ३६ ॥
पंच ऊपना* सबद थैं, सबद पंच सौं होइ ।
साईं मेरे सब किया, बूझै बिरला कोइ ॥ ३७ ॥
है तौ रती नहीं तौ नाहीं, सब कुछ उतपति होइ ।
हुक्मैं हाजिर सब किया, बूझै बिरला कोइ ॥ ३८ ॥
नहीं तहाँ तैं सब किया, आपै आप उपाइ ।
निज तत न्यारा ना किया, दूजा आवै जाइ ॥ ३९ ॥
नहीं तहाँ तैं सब किया, फिरि नाहीं ह्वै जाइ ।
दादू नाहीं होइ रहु, साहिब सौं ल्यौ लाइ ॥४०॥
(दादू) खालिक† खेलै खेल करि, बूझै बिरला कोइ ।
ले करि सुखिया ना भया, दे करि सुखिया होइ ॥४१॥
देबे की सब भूख है, लेबे की कुछ नाहिं ।
साईं मेरे सब किया, समझि देखि मन माहिं ॥४२॥
(दादू) जे साहिब सिरजय नहीं, तौ आपै क्यौंकरि होइ ।
जे आपै ही ऊपजै, तौ मरि करि जीवै कोइ ॥४३॥
कर्म फिरावै जीव कौं, कर्मौं कौं करतार ।
करतार कौं कोई नहीं, दादू फेरनहार ॥ ४४ ॥

॥ इति समर्थाई को अंग समाप्त ॥ २१ ॥

---

* उतपन्न हुआ । † कर्त्ता ।

२२—सबद को अंग

(दादू) नमो नमो निरंजनं, नमस्कार गुर देवतः ।
बंदनं सर्व साधवा, प्रणामं पारंगतः ॥ १ ॥

(दादू) सबदैं बंध्या सब रहै, सबदैं सब ही जाइ ।
सबदैं ही सब ऊपजै, सबदैं सबै समाइ ॥ २ ॥

(दादू) सबदैं ही सचु पाइये, सबदैं ही संतोष ।
सबदैं ही इस्थिर भया, सबदैं भागा सोक ॥ ३ ॥

(दादू) सबदैं ही सूषिम भया, सबदैं सहज समान ।
सबदैं ही निर्गुण मिलै, सबदैं निर्मल ज्ञान ॥ ४ ॥

(दादू) सबदैं ही मुक्ता भया, सबदैं समझै प्राण ।
सबदैं ही सूझै सबै, सबदैं सुरझै जाण ॥ ५ ॥

(दादू) ओंकार थैं ऊपजै, अरस परस संजोग ।
अंकुर बीज द्वै पाप पुन, यहि बिधि जोग रु भोग ॥६॥

ओंकार थैं ऊपजै, बिनसै बहुत बिकार ।
भाव भगति लै थिर रहै, दादू आतम सार ॥ ७ ॥

पहली कीया आप थैं, उतपत्ती ओंकार ।
ओंकार थैं ऊपजै, पंच तत्त आकार ॥ ८ ॥

पंच तत्त थैं घट भया, बहु बिधि सब बिस्तार ।
दादू घट थैं ऊपजै, मैं तैं बरण बिचार ॥ ९ ॥

एक सबद सब कुछ किया, ऐसा समरथ सोइ ।
आगैं पीछैं तौ करै, जे बल-हीणा होइ ॥ १०* ॥

---

* अकबर शाह ने सवाल किया था कि पहिले पानी पैदा हुआ या हवा, ज़मीन या आसमान, मर्द या औरत, इसी का जवाब साखी नं० १० में है—पं० चं० प्र० ।

निरंजन निराकार है, ओंकार आकार।
दादू सब रँग रूप सब, सब बिधि सब बिस्तार॥११॥
आदि सबद ओंकार है, बोलै सब घट माहिँ।
दादू माया बिस्तरी, परम तत्त यहु नाहिँ॥१२॥
पैदा कीया घाट घड़ि, आपै आप उपाइ।(२१-३५)
हिकमत हुनर कारीगरी, दादू लखी न जाइ॥१३॥
जंत्र बजाया साजि करि, कारीगर करतार। (२१-३६)
पंचौं का रस नाद है, दादू बोलणहार॥१४॥
पंच ऊपना सबद थैं, सबद पंच सौं होइ। (२१-३७)
साइँ मेरे सब किया, बूझै बिरला कोइ॥१५॥
(दादू) एक सबद सौं ऊनवै*, बर्षन लागै आइ।
एक सबद सौं बीखरै, आप आप कौं जाइ॥१६॥
(दादू) साध सबद सौं मिलि रहै, मन राखै बिलमाइ।
साध सबद बिन क्यूँ रहै, तबहीं बीखरि जाइ॥१७॥
(दादू) सबद जरै सो मिलि रहै, एकै रस पूरा।
काइर भाजै जीव ले, पग माँडै सूरा॥१८॥
सबद बिचारै करणी करै, राम नाम निज हिरदै धरै।
काया माहैँ सोधै सार, दादू कहै लहै सो पार॥१९॥
(दादू) काहे कौड़ी खरचिये, जे पैकै† सीझै काम।
सबदौं कारिज सिध भया, तौ सुरम‡ न दीजै राम॥२०॥
(दादू) सबद बाण गुर साध के, दूरि दिसंतर जाइ।(१-२८)
जेहि लागे सो ऊबरे, सूते लिये जगाइ॥२१॥
(दादू) राम रिदै रस भेलि करि, को साधू सबद सुणाइ।
जाणौ कर दीपक दिया, भरम तिमर सब जाइ॥२२॥

*उनय या लटक आवै जैसे बरसने वाले बादल। †अनायास—पं० चं० प्र०।
‡ श्रम, परिश्रम।

दादू बाणी प्रेम की, कवल बिगासैं होइ।
साध सबद माता रहै, तिन सबदौं मोह्या मोहिं॥२३॥

(दादू) हरि भुरकी* बाणी साध की, सो परियौ मेरे सीस।
छूटै माया मोह थैं, प्रेम भजन जगदीस॥ २४॥

(दादू) भुरकी राम है, सबद कहै गुर ज्ञान।
तिन सबदौं मन मोहिया, उनमन लागा ध्यान॥२५॥

दादू बाणी ब्रह्म की, अनभै घट परकास।(४-२०८)
राम अकेला रहि गया, सबद निरंजन पास॥२६॥

सबदौं माहैं राम धन, जे कोइ लेइ बिचारि।
दादू इस संसार मैं, कबहुं न आवै हारि॥ २७॥

(दादू) राम रसाइन भरि धर्‍या, साधन सबद मँझारि।
कोइ पारिख पीवै प्रीत सौं, समझै सबद बिचारि॥२८॥

सबद सरोवर† सूभर‡ भर्‍या, हरि जल निर्मल नीर।
दादू पीवै प्रीत सौं, तिन के अखिल§ सरीर॥२९॥

सबदौं माहैं राम रस, साधौं भरि दीया।
आदि अंत सब संत मिलि, यौं दादू पीया॥ ३०॥

पाणी माहीं राखिये, कनक कलंक न जाइ।
दादू साचा सबद दे‖, ताइ अगिन मैं बाहि॥३१॥

कारिज को सीझै नहीं, मीठा बोलै बीर।
दादू साचे सबद बिन, कटै न तन की पीर॥ ३२॥

---

* चुटकी, मंत्र-प्रयोग। † तालाब। ‡ शुभ्र=प्रकाशमान। § सारा। ‖ एक लिपि और एक पुस्तक मैं "साचा सबद दे" की जगह "गुर के ज्ञान सौं" है जैसा कि गुरदेव के अंग की साखी नम्बर १०५ मैं है।

(दादू) गुण तजि निर्गुण बोलिये, तेता बोल अबोल ।
गुण गहि आपा बोलिये , तेता कहिये बोल ॥ ३३ ॥
साचा सबद कबीर का , मीठा लागै मोहिं ।
दादू सुनताँ परम सुख , केता आनँद होइ ॥ ३४ ॥

॥ इति सबद को अंग समाप्त ॥ २२ ॥

२३—जीवत मृतक को अंग

(दादू) नमो नमो निरंजनं, नमस्कार गुर देवतः ।
बंदनं सर्व साधवा , प्रणामं पारंगतः ॥ १ ॥
धरती मत आकास का , चंद सूर का लेइ ।
दादू पानी पवन का , राम नाम कहि देइ ॥ २* ॥
दादू धरती ह्वै रहै , तजि कूड़ कपट हंकार ।
साईं कारण सिरि सहै , ता कौं परतषि† सिरजनहार ॥ ३
जीवत माटी ह्वै रहै , साईं सनमुख होइ ।
दादू पहिली मरि रहै , पीछै तौ सब कोइ ॥ ४ ॥
आपा गर्ब गुमान तजि , मद मंछर हंकार ।
गहै गरीबी बंदगी , सेवा सिरजनहार ॥ ५ ॥
मद मंछर आपा नहीं , कैसा गर्ब गुमान ।
सुपिनै ही समझै नहीं , दादू क्या अभिमान ॥ ६ ॥
झूठा गर्ब गुमान तजि , तजि आपा अभिमान ।
दादू दीन गरीब ह्वै , पाया पद निर्बान ॥ ७ ॥

---

* धरती का गुण क्षमा, आकाश की निर्लेपता, चन्द्रमा की शीतलता, सूर्य्य का तेज, पानी की निर्मलता, पवन की अनाशक्ति—इन गुनोँ को मनुष्य धारन करै और राम नाम का भजन करता रहै—पं० चं० प्र० । † प्रत्यक्ष ।

(दादू) भाव भगति दीनता अंग ।
प्रेम प्रीति सदा तिहि संग ॥ ८ ॥
(दादू) सिदक सबूरी साच गहि, साबित राखि अकीन (१९-३५)
साहिब सौं दिल लाइ रहु, मुरदा ह्वै मसकीन ॥ ९ ॥
तब साहिब कूँ सिजदा किया, तब सिर धर्या उतारि ।
यौं दादू जीवत मरै, हिरस हवा कूँ मारि ॥ १० ॥
राव रंक सब मरहिंगे, जीवै नाहीं कोइ ।
सोई कहिये जीवता, जे मरजीवा होइ ॥ ११ ॥
(दादू) मेरा बैरी मैं मुवा, मुझे न मारै कोइ ।
मैं हीं मुझ कौं मारता, मैं मरजीवा होइ ॥ १२ ॥
दादू आपा जब लगैं, तब लग दूजा होइ । (४-४७)
जब यहु आपा मिटि गया, तब दूजा नाहीं कोइ ॥१३॥
बैरी मारे मरि गये, चित थैं बिसरे नाहिं ।
दादू अजहूँ साल है, समझि देख मन माहिं ॥१४॥
(दादू) तौ तूँ पावै पीव कौं, जे जीवत मिरतक होइ ।
आप गँवाये पिव मिलै, जानत है सब कोइ ॥ १५ ॥
(दादू) तौ तूँ पावै पीव कौं, आपा कछू न जाण ।
आपा जिस थैं ऊपजै, सोई सहज पिछाण ॥ १६ ॥
(दादू) तौ तूँ पावै पीव कौं, मैं मेरा सब खोइ ।
मैं मेरा सहजैं गया, तब निर्मल दरसन होइ ॥१७॥
मैं हीं मेरे पोट* सिर, मरिये ता के भार ।
दादू गुर परसाद सौं, सिर थैं धरी उतार ॥ १८ ॥
मेरे आगे मैं खड़ा, ता थैं रह्या लुकाइ ।
दादू परगट पीव है, जे यहु आपा जाइ ॥ १९ ॥

---

* एक लिपि और एक पुस्तक में "मोट" है ।

(दादू) जीवत मिरतक होइ करि, मारग माहैं आव ।
पहिला सीस उतारि करि, पीछे धरिये पाँव ॥ २० ॥
दादू मारग साध का, खरा दुहेला जाण ।
जीवत मिरतक ह्वै चलै, राम नाम नीसाण ॥ २१ ॥
दादू मारग कठिन है, जीवत चलै न कोइ ।
सोई चलिहै बापुरा, जे जीवत मिरतक होइ ॥२२॥
मिरतक होवै सो चलै, नीरंजन की बाट ।
दादू पावै पीव कौं, लंघै औघट घाट ॥ २३ ॥
(दादू) मिरतक तब ही जाणिये, जब गुण इंद्री नाहिं ।
जब मन आपा मिटि गया, तब ब्रह्म समाना माहिं ॥२४॥
(दादू) जीवत ही मरि जाइये, मरि माहैं मिलि जाइ ।
साईं का सँग छाडि करि, कौण सहै दुख आइ ॥२५॥
(दादू) कदि यहु आपा जाइगा, कदि यहु बिसरै और।(१-६१)
कदि यहु सूषिम होइगा, कदि यहु पावै ठौर ॥ २६ ॥
(दादू) आपा कहाँ दिखाइये, जे कुछ आपा होइ ।
यहु तौ जाता देखिये, रहता चीन्हौ सोइ ॥ २७ ॥
दादू आप छिपाइये, जहाँ न देखै कोइ ।
पिव कौं देखि दिखाइये, त्यौं त्यौं आनँद होइ ॥ २८ ॥
(दादू) अंतरगति आपा नहीं, मुख सौं मैं तैं होइ ।
दादू दोस न दीजिये, यौं मिलि खेलैं दोइ ॥ २९ ॥
जे जन आपा मेटि करि, रहै राम ल्यौ लाइ ।
दादू सब ही देखताँ, साहिब सौं मिलि जाइ ॥३०॥
गरीब गरीबी गहि रह्या, मसकीनी मसकीन ।
दादू आपा मेटि करि, होइ रह्या लैलीन ॥ ३१ ॥

मैं हौं मेरी जब लगै, तब लग बिलसै खाइ।
मैं नाहीं मेरी मिटै, तब दादू निकटि न जाइ ॥३२॥

दादू मना मनी सब ले रहे, मनी न मेटी जाइ।
मना मनी जब मिटि गई, तब हीं मिलै खुदाइ ॥ ३३ ॥

दादू मैं मैं जालि दे, मेरे लागौ आगि।
मैं मैं मेरा दूरि करि, साहिब के सँगि लागि ॥ ३४ ॥

दादू खोई आपणी, लज्या कुल की कार।
मान बड़ाई पति गई, तब सनमुख सिरजनहार ॥३५॥

(दादू) मैं नाहीं तब एक है, मैं आई तब दोइ।
मैं तैं पड़दा मिटि गया, तब ज्यौं था त्यौं ही होइ॥३६॥

नूर सरीखा करि लिया, बंदौं का बंदा।
दादू दूजा को नहीं, मुझ सरिखा गंदा ॥ ३७* ॥

दादू सीख्यूँ† प्रेम न पाइये, सीख्यूँ प्रीति न होइ।
सीख्यूँ दर्द न ऊपजे, जब लग आप न खोइ ॥३८॥

कहिबा सुणिबा गति भया, आपा पर का नास।
दादू मैं तैं मिटि गया, पूरण ब्रह्म प्रकास ॥ ३९ ॥

(दादू) साईं कारण माँस का, लोही‡ पानी होइ।
सूकै आटा अस्थि§ का, दादू पावै सोइ ॥ ४० ॥

तन मन मैदा पीसि करि, छानि छानि ल्यौ लाइ।
यौं बिन दादू जीव का, कबहूँ साल न जाइ ॥ ४१ ॥

---

* जिस मैं दासानुदासता का भाव आया वह प्रकाश स्वरूप होगया और जिस मैं आपा [मुझ] लगा है वह महा मलीन बना है। † सीखने से। ‡ लोहू। § हड्डी।

पीसे ऊपरि पीसिये, छाने ऊपरि छान।
तौ आतम कण* ऊबरै, दादू ऐसी जान ॥ ४२ ॥
पहिली तन मन मारिये, इन का मरदै मान।
दादू काढ़ै जंत्र मैं, पीछै सहज समान ॥४३॥
काटे ऊपर काटिये, दाधे† कौं दौं‡ लाइ।
दादू नीर न सींचिये, तौ तरवर बधता§ जाइ ॥४४॥
(दादू) सब कौं संकट एक दिन, काल गहेगा आइ।
जीवत मिरतक ह्वै रहै, ता के निकट न जाइ ॥४५॥
जीवत मिरतक ह्वै रहै, सब को बिरकत होइ।
काढ़ौ काढ़ौ सब कहै, नाँव न लेवे कोइ ॥ ४६ ॥
सारा गहिला ह्वै रहै, अंतरजामी जाणि।
तौ छूटै संसार थैं, रस पीवै सारँगपाणि‖ ॥४७॥
गूँगा गहिला बावरा, साइँ कारण होइ।
दादू दिवाना ह्वै रहै, ता कौं लखै न कोइ ॥ ४८ ॥
जीवत मिरतक साध की, बाणी का परकास।
दादू मोहे राम जी, लीन भये सब दास ॥ ४९ ॥
(दादू) जे तूँ मोटा मीर है, सब जीवों मैं जीव।
आपा देखि न भूलिये, खरा दुहेला पीव ॥ ५० ॥
आपा मेटि समाइ रहु; दूजा धंधा बाद।
दादू काहे पचि मरै, सहजैं सुमिरण साध ॥ ५१ ॥
(दादू) आपा मेटै एक रस, मन इस्थिर लैलीन।
अरस परस आनँद करै, सदा सुखी सो दीन ॥ ५२ ॥

---

* बीज,, सार वस्तु। † जले हुए। ‡ आग। § बढ़ता। ‖ दो लिपियों में "सारँगप्राणि" है परंतु "सारँगपाणि" अर्थात हाथ (पाणि) में धनुष (सारँग) रखने वाले ठीक जान पड़ता है।

दादू है को भय घणा , नाहीं कौं कुछ नाहिं ।(४-४९)
दादू नाहीं होइ रहु , अपणे साहिब माहिं ॥ ५३ ॥
(दादू) मैं नाहीं तहँ मैं गया, एकै दूसर नाहिं । (४-४५)
नाहीं कौं ठाहर घणी , दादू निज घर माहिं ॥ ५४ ॥
जहाँ राम तहँ मैं नहीं, मैं तहँ नाहीं राम । (४-४४)
दादू महल बारीक है , द्वै कौं नाहीं ठाम ॥ ५५ ॥
बिरह अगिन का दाग दे, जीवत मिरतक गोर । (३-९७)
दादू पहिली घर किया, आदि हमारी ठौर ॥ ५६ ॥
नहीं तहाँ थैं सब किया, फिर नाहीं ह्वै जाइ । (२१-४०)
दादू नाहीं होइ रहु , साहिब सौं ल्यौ लाइ ॥ ५७ ॥
हमैं हमारा करि लिया, जीवत करणी सार ।
पीछै संसा को नहीं , दादू अगम अपार ॥ ५८ ॥
माटी माहैं ठौर करि , माटी माटी माहिं ।
दादू सम कर राखिये , द्वै पष* दुबिधा नाहिं ॥ ५९ ॥

॥ इति जीवत मृतक को अंग समाप्त ॥ २३ ॥

---

* पक्ष ।

२४—सूरा तन को अंग

(दादू) नमो नमो निरंजनं, नमस्कार गुर देवत: ।
बंदनं सर्व साधवा, प्रणामं पारंगत: ॥ १ ॥
साचा सिर सौं खेल है, यह साधू जन का काम ।
दादू मरणा आसँघै[*], सोई कहैगा राम ॥ २ ॥
राम कहैं ते मरि कहैं, जीवत कह्या न जाइ ।
दादू ऐसैं राम कहि, सती सूर सम भाइ ॥ ३ ॥
जब दादू मरिबा गहै, तब लोगौं की क्या लाज ।
सती राम साचा कहै, सब तजि पति सैँ काज ॥४॥
(दादू) हम काइर कढ़बा[†] करि रहे, सूर निराला होइ ।
निकसि खड़ा मैदान मैं, ता सम और न कोइ ॥५॥
मडा[‡] न जीवै तौ सँगि जलै, जीवै तौ घर आण ।
जीवन मरणा राम सैं, सोई सती करि जाण ॥ ६ ॥
जन्म लगैं बिभचारणी, नख सिख भरी कलंक ।
पलक एक सनमुख जली, दादू धोये अंक ॥ ७ ॥
स्वाँग सती का पहरि करि, करै कुटुंब का सोच ।
बाहरि सूरा देखिये, दादू भीतरि पोच[§] ॥ ८ ॥
(दादू) सती त सिरजनहार सौं, जलै बिरह की झाल ।
ना वहु मरै न जलि बुझै, ऐसैं संगि दयाल ॥ ९ ॥
(दादू) जे मुझ होते लाख सिर, तौ लाखौं देती वारि ।
सह[‖] मुझ दीया एक सिर, सोई सौंपै नारि ॥ १० ॥
सती जलि कोइला भई, मुए मडे की लार ।
यौं जे जलती राम सैं, साचे सँगि भर्तार ॥ ११ ॥

---

* हिम्मत से । † चलने की तैयारी । ‡ मरा । § पूच, कायर । ‖ शाह, मालिक ।

मुए मडे सौँ हेत क्या , जे जिव की जाणै नाहिँ ।
हेत हरी सौँ कीजिये , जे अंतरजामी माहिँ ॥१२॥
सूरा चढ़ि संग्राम कौँ , पाछा पग क्यौँ देइ ।
साहिब लाजै भाजताँ , धृग जीवन दादू तेइ ॥ १३ ॥
सेवक सूरा राम का , सोई कहैगा राम ।
दादू सूर सन्मुख रहै , नहिँ काइर का काम ॥ १४ ॥
काइर काम न आवई , यहु सूरे का खेत ।
तन मन सौँपै राम कौँ, दादू सीस सहेत ॥ १५ ॥
जब लग लालच जीव का, तब लग निर्भय हुआ न जाइ।
काया माया मन तजै , तब चौड़े रहै बजाइ ॥ १६ ॥
(दादू) चौड़े मैँ आनंद है , नाँव धस्या रणजीत ।
साहिब अपणा करि लिया , अंतरगति की प्रीत ॥ १७ ॥
(दादू) जे तुझ काम करीम* सौँ, तौ चौहटे चढ़ि करि नाच ।
झूठा है सो जाइगा , निहचै रहसी साच ॥ १८ ॥
राम कहैगा एक को† , जे जीवत मिरतक होइ ।
दादू ढूँढ़े पाइये , कोटी‡ मध्ये कोइ ॥ १९ ॥
सूरा पूरा संत जन , साईं कौँ सेवै ।
दादू साहिब कारणै , सिर अपणा देवै ॥ २० ॥
सूरा झूझै§ खेत मैँ , साईं सन्मुख आइ ।
सूरे कौँ साईं मिलै , तब दादू काल न खाइ ॥२१॥
मरिबे ऊपर एक पग , करता करै सो होइ ।
दादू साहिब कारणै , तालाबेली‖ मोहिँ ॥ २२ ॥
दादू अंग न खैँचिये , कहि समझाऊँ तोहि ।
मोहिँ भरोसा राम का , बंका बाल न होइ ॥ २३ ॥

* दाता, दयाल । † कोई । ‡ करोड़ । § जूझै=लड़ै । ‖ तड़प, बेकली ।

बहुत गया थोड़ा रह्या, अब जिव सोच निवार।
दादू मरणा माँडि* रहु, साहिब के दरबार ॥ २४

जीवूँ का संसा पड़्या, को का कूँ तारै।
दादू सोई सूरिवाँ†, जे आप उबारै ॥ २५ ॥

जे निकसै संसार थैँ, साईं की दिसि धाइ।
जे कबहूँ दादू बाहुड़ै, तौ पीछैँ मार्‍या जाइ ॥२

(दादू) कोइ पीछैँ हेला जिनि करै, आगैँ हेला आव
आगैँ एक अनूप है, नहिँ पीछैँ का भाव ॥२७

पीछैँ कौँ पग ना भरै, आगैँ कौँ पग देइ।
दादू यहु मत सूर का, अगम ठौर कौँ लेइ ॥ २८

आगा चलि पीछा फिरै, ता का मूँह मदीठ‡।
दादू देखै दोइ दल, भागै देकर पीठ ॥ २९ ॥

दादू मरणा माँडि करि, रहै नहीं ल्यौ लाइ।
काइर भाजै जीव ले, आरणि§ छाडे जाइ ॥ ३०

सूरा होइ सुमेर उलंघै, सब गुण बंध्या छूटै।
दादू निर्भय ह्वै रहै, काइर तिणा न टूटै ॥ ३१

सर्प केसरि काल कुंजर, बहु जोध मारग माहिँ||।
कोटि मैँ कोइ एक ऐसा, मरण आसँघि¶ जाहिँ ॥ ३

(दादू) जब जागै तब मारिये, बैरी जिय के साल।
मनसा डायनि काम रिपु, क्रोध महाबलि काल ॥ ३३

पंच चोर चितवत रहीँ, माया मोह बिष झाल।
चेतन पहरै आपणै, कर गहि खड़ग सँभाल ॥३

* मँड रह, मुस्तैद रह। † सूरमा। ‡ देखने योग्य नहीं। § रण, लड़ाई ||संत पंथ में साँप, सिंह, काल, हाथी, आदि दूत बिघ्नकारक हैं। ¶हिम्मत से

काया कबज कमान करि, सार सबद करि तीर।
दादू यहु सर साँधि करि, मारै मोटे मीर ॥ ३५ ॥
काया कठिन कमान है, खाँचै बिरला कोय।
मारै पंचौं मिरगला, दादू सूरा सोइ ॥ ३६ ॥
जे हरि कोप करै इन ऊपरि, तौ काम कटक दल जाहिँ कहाँ।
लालच लोभ क्रोध कत भाजै, प्रगट रहे हरि जहाँ तहाँ ॥३७॥
तब साहिब कौँ सिजदा किया, जब सिर धस्या उतारि।
यौँ दादू जीवत मरै, हिर्स हवा कौँ मारि ॥३८॥(२३-१०)
(दादू) तन मन काम करीम के, आवै तौ नीका।
जिस का तिस कौँ सौँपिये, सोच क्या जी का ॥ ३९ ॥
जे सिर सौँप्या राम कौँ, सो सिर भया सनाथ।
दादू दे ऊरण[*] भया, जिस का तिस के हाथ ॥४०॥
जिस का है तिस कौँ चढ़ै, दादू ऊरण होइ।
पहिली देवै सो भला, पीछै तौ सब कोइ ॥ ४१ ॥
साईं तेरे नाँव परि, सिर जीव करूँ कुरबान।
तन मन तुम परि वारणै, दादू प्यंड पराण ॥ ४२ ॥
अपणे साईं कारणे, क्या क्या नहिँ कीजे।
दादू सब आरंभ तजि, अपणा सिर दीजै ॥ ४३ ॥
सिर के साटै लीजिये, साहिब जी का नाँव।
खेलै सीस उतारि करि, दादू मैँ बलि जाँव ॥ ४४ ॥
खेलै सीस उतारि करि, अधर एक सौँ आइ।
दादू पावै प्रेम रस, सुख मैँ रहै समाइ ॥ ४५ ॥
(दादू) मरणे थीं तूँ मति डरै, सब जग मरता जोइ।
मिलि करि मरणा राम सौँ, तौ कलि अजरावर[†] होइ॥४६॥

---

* उत्रिन, बेबाक़। † अमर।

(दादू) मरणे थीं तूँ मति डरै, मरणा अंति निदान ।
रे मन मरणा सिरजिया, कहि ले केवल राम ॥ ४७ ॥
दादू मरणे थीं तूँ मति डरै, मरणा पहुँच्या आइ ।
रे मन मेरा राम कहि, बेगा बार न लाइ ॥ ४८ ॥
(दादू) मरणे थीं तूँ मति डरै, मरणा आजि कि काल्हि ।
मरणा मरणा क्या करै, बेगा राम सँभालि ॥४९॥
दादू मरणा खूब है, निपट बुरा बिभचार ।
दादू पति कौं छाडि करि, आन भजै भर्तार ॥ ५० ॥
दादू तन थैं कहा डराइये, जे बिनसि जाइ पल बार ।
काइर हुआँ न छूटिये, रे मन हो हुसियार ॥ ५१ ॥
दादू मरणा खूब है, मरि माहैं मिलि जाइ ।
साहिब का सँग छाडि करि, कौन सहै दुख आइ ॥५२॥
(दादू) माहैं मन सौं झूझि करि, ऐसा सूरा बीर ।
इंद्री अरि* दल भानि सब, यौं कलि हुआ कबीर ॥५३॥
साईं कारण सीस दे, तन मन सकल सरीर ।
दादू प्राणी पंच दे, यौं हरि मिल्या कबीर ॥५४॥
सबै कसौटी सिर सहै, सेवग साईं काज ।
दादू जीवनि क्यौं तजै, भाजैं हरि कौं लाज ॥ ५५॥
साईं कारण सब तजै, जन का ऐसा भाव ।
दादू राम न छाडिये, भावै तन मन जाव ॥ ५६ ॥
दादू सेवग सो भला, सेवै तन मन लाइ ।
दादू साहिब छाडि करि, काहू संग न जाइ ॥ ५७ ॥
पतिब्रता पति पीव कौं, सेवै दिन अरु रात ।
दादू पति कूँ छाडि करि, काहू संगि न जात ॥ ५८ ॥

---

* शत्रु, बैरी ।

दादू मरिबो एकजु बार, अमर झुकेड़े* मारिये ।
तौ तिरिये संसार, आतम कारज सारिये ॥५९॥
दादू जे तूँ प्यासा प्रेम का, तौ जीवन की क्या आस ।
सिर के साटै पाइये, तौ भरि भरि पीवै दास ॥६०॥
मन मनसा जीते नहीं, पंच न जीते प्राण ।
दादू रिप† जीते नहीं, कहैं हम सूर सुजाण ॥ ६१ ॥
मन मनसा मारे नहीं, काया मारण जाहि ।
दादू बाँबी मारिये, सर्प मरै क्यौं माँहि ॥ ६२ ॥
दादू पाखर पहरि करि, सब को झूझण जाइ ।
अंगि उघाड़े सूरिवाँ, चोट मुँहै मुँह खाइ ॥ ६३ ॥
जब झूझै तब जाणिये, काढि खड़े क्या होइ ।
चोट मुँहै मुँह खाइगा, दादू सूरा सोइ ॥ ६४ ॥
सूरा तन सहजैं सदा, साच सेल‡ हथियार ।
साहिब कै बल जूझताँ, केते किये सुमार ॥ ६५ ॥
(दादू) जब लग जिय लागै नहीं, प्रेम प्रीति के सेल ।
तब लग पिव क्यौं पाइये, नहिं बाजीगर का खेल ॥६६॥
(दादू) जे तूँ प्यासा प्रेम का, तौ किस कैाँ सैंतै§ जीव ।
सिर कै साटै लीजिये, जे तुझ प्यारा पीव ॥ ६७ ॥
(दादू) महा जोध मोटा बली, सो सदा हमारी भीर‖ ।
सब जग रूठा क्या करै, जहाँ तहाँ रणधीर ॥ ६८ ॥
दादू रहते पहते राम जन, तिन भी माँड्या झूझ ।
साचा मुँह मोड़ै नहीं, अर्थ इता¶ ही बूझ । ६९ ॥
दादू काँधै सबल के, निरबाहैगा ओर ।
आसणि अपणे ले चल्या, दादू निहचल ठौर ॥ ७० ॥

---

* झूले की पैंग । † रिपु=बरी । ‡ भाला । § बचाकर रखता है । ‖ पक्ष पर ¶ इतना ।

(दादू) क्या बल कहा पतंग का, जलत न लागै बार।
बल तौ हरि बलवंत का, जीवै जिहिं आधार ॥ ७१ ॥
राखणहारा राम है, सिर ऊपर मेरे।
दादू केते पचि गये, बैरी बहुतेरे ॥ ७२ ॥
(दादू) बलि तुम्हारे बापजी, गिणत न राणा राव।
मीर मलिक परधान पति, तुम बिन सबही बाव* ॥७३॥
दादू राखी राम परि, अपणी आप सँबाहि† ।
दूजा को देखूँ नहीं, ज्यौं जाणै त्यौं निर्बाहि ॥७४॥
तुम बिन मेरे को नहीं, हम कौं राखणहार।
जे तूँ राखै साइयाँ, तौ कोई न सक्कै मार ॥७५॥
सब जग छाडै हाथ थ, तुम जिनि छाडहु राम।
नहिं कुछ कारिज जगत सौं, तुम हीं सेती काम ॥ ७६ ॥
(दादू) जाते जिव थैं तौ डरूँ, जे जिव मेरा होइ।
जिन यहु जीव उपाइया, सार करैगा सोइ ॥ ७७ ॥
(दादू) जिन कौं साईं पधरा‡, तिन बंका§ नाहीं कोइ।
सब जग रूठा क्या करै, राखणहारा सोइ ॥ ७८ ॥
(दादू) साचा साहिब सिर ऊपरैं, तती‖ न लागै बाव।
चरण कँवल की छाया रहै, कीया बहुत पसाव¶ ॥७९॥
(दादू कहै) जे तूँ राखै साइयाँ, तौ मारि न सक्कै कोइ।
बाल न बंका करि सकै, जे जग बैरी होइ ॥ ८० ॥
दादू राखणहारा राखै, तिसैं कौण मारै।
उसै कौण डबोवै, जिसैं साईं तारै।
कहै दादू सो कबहुँ न हारै, जे जन साईं सँभारै ॥८१॥

---

* हवा। † खींच कर। ‡ अनुकूल, सहायक। § टेढ़ा। ‖ गरम। ¶ दया।

निर्भय बैठा राम जपि, कबहूँ काल न खाइ।
जब दादू कुंजर चढ़ै, तब सुनहा* झखि† जाइ ॥८२॥
काइर कूकर कोटि मिलि, भौंकै अरु भागै।
दादू गरुवा गुरुमुखी, हस्ती नहिं लागै ॥ ८३ ॥

इति सूरा तन को अंग समाप्त ॥ २४ ॥

२५—काल को अंग

(दादू) नमो नमो निरंजनं, नमस्कार गुर देवतः।
बंदनं सर्व साधवा, प्रणामं, पारंगतः ॥ १ ॥
काल न सूझै कंध पर, मन चितवै बहु आस।
दादू जिव जाणै नहीं, कठिन काल की पास‡ ॥२॥
(दादू) काल हमारे कंध चढ़ि, सदा बजावै तूर।
काल हरण करता पुरिष, क्यौं न सँभालै सूर ॥ ३ ॥
जहँ जहँ दादू पग धरै, तहाँ काल का फंध।
सिर ऊपर साँधे§ खड़ा, अजहुँ न चेतै अंध ॥ ४ ॥
(दादू) काल गिरासन का कहिये, काल रहित कहि सोइ।
काल रहित सुमिरण सदा, बिना गिरासन होइ ॥५॥॥
दादू मरिये राम बिन, जीजे राम सँभाल।
अमृत पीवै आतमा, यौं साधू बंचै काल ॥ ६ ॥

---

* कुत्ता। † झाँक।। ‡ फाँस। § कमान खींचे। ‖ काल के खाजा तो सभी जोव हैं उन का क्या ज़िक्र, काल-रहित अर्थात काल के गिरास से बचे हुए वही जन हैं जो सदा सुमिरन में लौलीन रहते हैं।

दादू यहु घट काचा जल भख्या, बिनसत नाहीं बार ।
यहु घट फूटा जल गया , समझत नहीं गँवार ॥७॥
फूटी काया जाजरी , नव ठाहर काणी[*] ।
ता मैं दादू क्यौं रहै , जीव सरीखा पाणी ॥ ८ ॥
बाव भरी इस खाल का, झूठा गर्ब गुमान ।
दादू बिनसै देखताँ , तिस का क्या अभिमान ॥९॥
(दादू) हम तौ मूए माहिं ह, जीवण कार भरम्म ।
झूठे का क्या गर्बबा[†], पाया मुझ मरम्म ॥ १० ॥
यहु बन हरिया देखि करि, फूल्यौ फिरै गँवार ।
दादू यहु मन मिरगला , काल अहेड़ी लार ॥ ११ ॥
सबहीं दीसै काल मुखि , आपै गहि करि दीन्ह ।
बिनसै घट आकार का , दादू जे कुछ कीन्ह ॥ १२ ॥
काल कीट[‡] तन काठ कौं, जुरा[§] जनम कूँ खाइ ।
दादू दिन दिन जीव की , आव घटंती जाइ ॥ १३ ॥
काल गिरासै जीव कौं , पल पल साँसै[||] साँस ।
पग पग माहैं दिन घड़ी , दादू लखै न तास ॥ १४ ॥
पग पलक की सुध नहीं , साँस सबद क्या होइ ।
कर मुख माहैं मेलताँ , दादू लखै न कोइ ॥ ॥ १५ ॥
दादू काया कारवाँ[¶] , देखत हीं चलि जाइ ।
जब लग साँस सरीर मैं , राम नाम ल्यौ लाइ ॥ १६ ॥
दादू काया कारवाँ, मोहिं भरोसा नाहिं ।
आसण कुंजर सिरि छतर, बिनसि जाहिं षिण माहिं ॥१७॥

---

*छेददार। †गर्ब, घमंड । ‡कीड़ा । §जरा-बुढ़ापा । ||आयु, उमर । ¶पथिक, फ़ारसी मे कारवाँ मुसाफिरों के झुंड को कहते हैं ।

दादू काया कारवीं, पड़त न लागै बार।
बोलणहारा महल मैं, सो भी चालणहार ॥ १८ ॥
दादू काया कारवीं, कदे न चालै संग।
कोटि बरस जे जीवणा, तऊ होइला भंग ॥ १९ ॥
कहताँ सुनताँ देखताँ, लेताँ देताँ प्राण।
दादू सो कत हूँ गया, माटी धरी मसाण ॥ २० ॥
सींगी नाद न बाज हीं, कत गये सो जोगी।
दादू रहते मढ़ी मैं, करते रस भोगी ॥ २१ ॥
दादू जियरा जाइगा, यहु तन माटी होइ।
जे उपज्या सो बिनसिहै, अमर नहीं कलि कोइ ॥२२॥
दादू देही देखताँ, सब किसही की जाइ।
जब लग साँस सरीर मैं, गोबिंद के गुण गाइ ॥२३॥
दादू देही पाहुणी, हंस बटाऊ* माहिं।
का जाणौं कब चालसी, मोहिं भरोसा नाहिं ॥ २४ ॥
दादू सब को पाहुणा, दिवस चारि संसार।
औसरि औसरि सब चले, हम भी इहै बिचार ॥२५॥
सब को बैठे पंथ सिरि, रहे बटाऊ होइ।
जे आये ते जाहिंगे, इस मारग सब कोइ ॥२६॥
बेग बटाऊ पंथ सिरि, अब बिलँब न कीजै।
दादू बैठा क्या करै, राम जपि लीजै ॥ २७ ॥
संझया चलै उतावला†, बटाऊ बनखँड माहिं।
बरियाँ‡ नाहीं ढील की, दादू बेगि घरि जाहिं ॥२८॥
दादू करह§ पलानि करि, को चेतन चढ़ि जाइ।
मिलि साहिब दिन देखताँ, साँझ पड़ै जिनि आइ ॥२९॥

---

* पथिक। † जल्दी, तेज़। ‡ समय। § ऊँट।

पंथ दुहेला* दूरि घर, संग न साथी कोइ ।
उस मारग हम जाहिंगे, दादू क्यौं सुख सोइ ॥३०॥
लंघण खे लक घणा, कपर चाढ़ी चींह ।
अलाह पाँधी पंध मैं, विहंदा ऊहे कींअ ॥ ३१† ॥
(दादू) हँसताँ रोवताँ पाहुणा, काहू छाडि न जाइ ।
काल खड़ा सिर ऊपरै, आवणहारा आइ ॥ ३२ ॥
(दादू) जोरा बैरी काल है, सो जीव न जानै ।
सब जग सूता नींदड़ी, इस तानै बानै‡ ॥ ३३ ॥
दादू करणी काल की, सब जग परलै होइ ।
राम बिमुख सब मरि गये, चेति न§ देखै कोइ ॥३४॥
साहिब कौं सुमिरै नहीं, बहुत उठावै भार ।
दादू करणी काल की, सब परलै संसार ॥ ३५ ॥
सूता काल जगाइ करि, सब पैसैं मुख माहिं ।
दादू अचिरज देखिया, कोई चेतै नाहिं ॥ ३६ ॥
सब जीव बिसाहैं‖ काल कौं, करि करि कोटि उपाइ ।
साहिब कौं समझैं नहीं, यौं परलय है जाइ ॥३७॥
दादू कारण काल के, सकल सँवारैं आप ।
मीच बिसाहैं मरण कौं, दादू सोग सँताप ॥ ३८ ॥
दादू अमृत छाडि करि, बिषै हलाहल खाइ ।
जीव बिसाहै काल कौं, मूढ़ा मरि मरि जाइ ॥३९॥

---

* कठिन। † इस साखी को शोध कर सिन्ध के प्रसिद्ध विद्वान मास्टर झम्मटमल ने अर्थ लगाया है—लंघण = पार करना। लक = हल कर पार होने योग्य नदी के हिस्से। कपर = कराड़ा, घाटा। चाढ़ी = चढ़ाई। चींह = उँची अड़बड़। अलाह = ए ख़ुदा। पाँधी = पथिक। विहंदा = बैठे, ठिठके। आहीन = हैं—अनेक घाटियाँ पार करने को हैं, चढ़ाई उँची और अड़बड़ है, पथिक जो रास्ते में हैं क्या चुप बैठ रहेंगे। ‡ तीर। § एक लिपि और एक पुस्तक में "चेति न" की जगह "चेतनि" है। ‖ मोल लें।

निर्मल नाँव बिसारि करि, दादू जिव जंजाल ।
नहीं तहाँ थैं करि लिया, मनसा माहैं काल ॥ ४० ॥
सब जग छेली* काल कसाई, कर्द† लिये कंठ काटै ।
पंच तत्त की पंच पंखरी, खंड खंड करि बाँटै ॥४१॥
काल झाल मैं जग जलै, भाजि न निकसै कोइ ।
दादू सरणैं साच कै, अभय अमर पद होइ ॥४२॥
सब जग सूता नींद भरि, जागै नाहीं कोइ ।
आगै पीछै देखिये, परतषि परलै होइ ॥ ४३ ॥
ये सज्जन दुर्जन भये, अंति काल की बार ।
दादू इन मैं को नहीं, बिपति बटावणहार ॥ ४४ ॥
संगी सज्जन आपणा, साथी सिरजनहार ।
दादू दूजा को नहीं, इहि कलि इहि संसार ॥४५॥
ये दिन बीते चलि गये, वे दिन आये धाइ ।
राम नाम बिन जीव कौं, काल गरासै जाइ ॥ ४६ ॥
जे उपज्या सो बिनसिहै, जे दीसै सो जाइ ।
दादू निर्गुण राम जपि, निहचल चित्त लगाइ ॥४७॥
जे उपज्या सो बिनसिहै, कोई थिर न रहाइ ।
दादू बारी आपणी, जे दीसै सो जाइ ॥ ४८ ॥
(दादू) सब जग मरि मरि जात है, अमर उपावणहार ।
रहता रमता राम है, बहता सब संसार ॥ ४९ ॥
दादू कोई थिर नहीं, यहु सब आवै जाइ ।
अमर पुरिष आपै रहै, कै साधू ल्यौ लाइ ॥ ५० ॥
यहु जग जाता देखि करि, दादू करी पुकार ।
घड़ी महूरत चालणाँ, राखै सिरजनहार ॥ ५१ ॥

---

* बकरी । †छुरी ।

(दादू) बिष सुख माहैं खेलताँ, काल पहूँत्या* आइ ।
उपजै बिनसै देखताँ, यहु जग यौंही जाइ ॥ ५२ ॥
राम नाम बिन जीव जे, केते मुए अकाल ।
मीच बिना जे मरत हैं, ता थैं दादू साल† ॥ ५३ ॥
सर्प सिंह हस्ती घणा, राकस भूत परेत ।
तिस बन मैं दादू पड़्या, चेतै नहीं अचेत ॥ ५४ ॥
पूत पिता थैं बीछुट्या, भूलि पड़्या किस ठौर ।
मरै नहीं उर फाटि करि, दादू बड़ा कठोर ॥ ५५ ॥
जे दिन जाइ सो बहुरि न आवै, आव‡ घटै तन छीजै ।
अंति काल दिन आइ पहूँत्या, दादू ढील न कीजै ॥५६॥
दादू औसर चलि गया, बरियाँ गई बिहाइ ।
कर छिटकैं कहँ पाइये, जन्म अमोलिक जाइ ॥५७॥
दादू गाफिल ह्वै रह्या, गहिला हुआ गँवार ।
सो दिन चीति न आवई, सोवै पाँव पसार ॥ ५८ ॥
(दादू) काल हमारा कर गहे, दिन दिन खैंचत जाइ ।
अजहुँ जीव जागै नहीं, सोवत गई बिहाइ ॥ ५९ ॥
सूता आवै सूता जाइ, सूता खेलै सूता खाइ ।
सूता लेवै सूता देवै, दादू सूता जाइ ॥ ६० ॥
दादू देखत ही भया, स्याम बरण थैं सेत ।
तन मन जोबन सब गया, अजहुँ न हरि सौं हेत ॥६१॥
(दादू) झूठे के घर देखि करि, झूठे पूछे जाइ ।
झूठे झूठा बोलते, रहे मसाणौं आइ ॥ ६२ ॥
(दादू) प्राण पयाणा करि गया, माटी धरी मसाण ।
जालणहारे देखि करि, चेतैं नहीं अजाण ॥ ६३ ॥

* पहुँचा । † काँटा, कष्ट । ‡ उमर ।

(दादू) केइ जाले केइ जालिये, केई जालण जाहिँ ।
केई जालण की करैँ, दादू जीवण नाहिँ ॥ ६४ ॥
केइ गाड़े केइ गाड़िये, केई गाड़न जाहिँ ।
केई गाड़न की करैँ, दादू जीवण नाहिँ ॥ ६५ ॥
(दादू कहै) उठ रे प्राणी जाग जिव, अपना सजन सँभाल ।
गाफिल नींद न कीजिये, आइ पहूँत्या काल ॥ ६६ ॥
सम्रथ की सरणा तजै, गहै आन की ओट ।
दादू बलिवँत काल की, क्यौँ करि बंचै चोट ॥ ६७ ॥
अबिनासी के आसरै, अजरावर की ओट ।
दादू सरणै साच के, कदे न लागै चोट ॥ ६८ ॥
मूसा भागा मरण थैँ, जहाँ जाइ तहँ गोर* ।
दादू सर्ग पयाल सब, कठिन काल का सोर ॥ ६९ ॥
सब मुख माहैँ काल के, माँड्या माया जाल ।
दादू गोर मसाण मैँ, झंखै सरग पयाल ॥ ७० ॥
दादू मँडा मसाण का, केता करै डफान† ।
मिरतक मुरदा गोर का, बहुत करै अभिमान ॥ ७१ ॥
राजा राणा राव मैँ, मैँ खानौँ सिरि खान‡ ।
माया मोह पसारै एता, सब धरती असमान ॥ ७२ ॥
पंच तत्त का पूतला, यहु पिंड सँवारा ।
मंदिर माटी मास का, बिनसत नहिँ बारा ॥ ७३ ॥
हाड़ चाम का प्यंजरा, बिचि बोलणहारा ।
दादू ता मैँ पैसि करि, बहु किया पसारा ॥ ७४ ॥
बहुत पसारा करि गया, कुछ हाथि न आया ।
दादू हरि की भगति बिन, प्राणी पछिताया ॥ ७५ ॥

---

* क़बर । † दंभ, गुमान । ‡ सरदार ।

माणस जल का बुदबुदा, पानी का पोटा ।
दादू काया कोटि मैं, मैं बासी मोटा ॥ ७६ ॥
बाहरि गढ़ निर्भय करै, जीवे के ताईं ।
दादू माहैं काल है, सो जाणै नाहीं ॥ ७७ ॥
(दादू) साचै मत साहिब मिलै, कपट मिलैगा काल ।
साचै परम पद पाइये, कपट काया मैं साल ॥ ७८ ॥
मनहीं माहैं मीच है, सारौं के सिर साल ।
जे कुछ ब्यापै राम बिन, दादू सोई काल ॥ ७९ ॥
(दादू) जेती लहरि बिकार की, काल कँवल मैं सोइ ।
प्रेम लहरि सो पीव की, भिन्न भिन्न यौं होइ ॥ ८० ॥
(दादू) काल रूप माहैं बसै, कोई न जाणै ताहि ।
यह कूड़ी* करणी काल है, सब काहू कूँ खाइ ॥ ८१ ॥
(दादू) बिष अमृत घट मैं बसै, दून्यूँ एकै ठाँव ।
माया बिषै बिकार सब, अमृत हरि का नाँव ॥ ८२ ॥
(दादू) कहाँ महम्मद मीर था, सब नबियौं सिरताज ।
सो भी मरि माटी हुआ, अमर अलह का राज ॥ ८३ ॥
केते मरि माटी भये, बहुत बड़े बलवंत ।
दादू केते ह्वै गये, दाना देव अनंत ॥ ८४ ॥
(दादू) धरती करते एक डग, दरिया करते फाल ।
हाँकौं परबत फाड़ते, सो भी खाये काल ॥ ८५ ॥
(दादू) सब जग कंपै काल थैं, ब्रह्मा बिसुन महेस ।
सुर नर मुन जन लोक सब, सर्ग रसातल सेस ॥८६॥
चंद सूर धर पवन जल, ब्रह्मंड खँड परवेस ।
सो काल डरै करतार थैं, जै जै तुम आदेस† ॥ ८७ ॥

---

* झूठी । † प्रणाम ।

पवना पानी धरती अंबर, बिनसै रवि ससि तारा ।
पंच तत्त सब माया बिनसै, मानिष* कहा बिचारा ॥८८॥
दादू बिनसैं तेज के, माटी के किस माहिँ ।
अमर उपावणहार है, दूजा कोई नाहिँ ॥ ८९ ॥
प्राण पवन ज्यौँ पातला, काया करै कमाइ । (४-१९९)
दादू सब संसार मैं, क्यौं हीं गह्या न जाइ ॥ ९० ॥
नूर तेज ज्यौँ जोति है, प्राण प्यंड यौँ होइ । (४-२००)
दिष्टि मुष्टि आवै नहीं, साहिब के बसि सोइ ॥ ९१ ॥
मन हीं माहैं ह्वै मरै, जीवै मन हीं माहिँ ।
साहिब साखीभूत है, दादू दूसर नाहिँ ॥ ९२ ॥
आपै मारै आप कौँ, आप आप कौँ खाइ । (१२-६०)
आपै अपणा काल है, दादू कहि समझाइ ॥ ९३ ॥
आपै मारै आप कौँ, यहु जीव बिचारा । (१२-५९)
साहिब राखणहार है, सो हितू हमारा ॥ ९४ ॥
दीसै माणस प्रत्यष काल ।
ज्यौँ करि त्यौँ करि दादू टाल ॥ ९५ ॥

॥ इति काल को अंग समाप्त ॥ २५ ॥

---

* मनुष्य ।

२६—सजीवन को अंग ।

(दादू) नमो नमो निरंजनं, नमस्कार गुर देवतः ।
बंदनं सर्व साधवा, प्रणामं पारंगतः ॥ १ ॥
(दादू) जे तूँ जोगी गुरमुखी, तौ लेना तत्त बिचारि ।
गहि आवध* गुर ज्ञान का, काल पुरिष कौँ मारि ॥२॥
नाद बिंद सौँ घट भरै, सो जोगी जीवै ।
दादू काहे कौँ मरै, राम रस्स पीवै ॥ ३ ॥
साधू जन की बासना, सबद रहै संसार ।
दादू आतम ले मिलै, अमर उपावणहार ॥ ४ ॥
राम सरीखे ह्वै रहै, यहु नाहीं उनहार[†] ।
दादू साधू अमर है, बिनसै सब संसार ॥ ५ ॥
जे कोइ सेवै राम कौँ, तौ राम सरीखा होइ ।
दादू नाम कबीर ज्यौँ, साखी बोलै सोइ ॥ ६ ॥
अर्थि न आया सो गया, आया सो क्यौँ जाइ ।
दादू तन मन जीवताँ, आपा ठौर लगाइ ॥ ७ ॥
पहिली था सो अब भया, अब सो आगैँ होइ । (७-८)
दादू तीनौँ ठौर की, बूझै बिरला कोइ ॥ ८ ॥
जे जन बेधे प्रीति सौँ, ते जन सदा सजीव ।
उलटि समाने आप मैँ, अंतर[‡] नाहीं पीव ॥ ९ ॥
(दादू कहै) सब रँग तेरे तैँ रँगे, तूँ ही सब रँग माहिँ ।
सब रँग तेरे तैँ किये, दूजा कोई नाहिँ ॥ १० ॥
छूटै दंद तौ लागै बंद, लागै बंद तौ अमर कंद,
अमर कंद दादू आनंद ॥ ११ ॥

---

*शस्त्र । †सदृश । ‡भेद, दूरी ।

प्रश्न--कहँ जम जौरा भंजिये, कहाँ काल कौ डंड ।
कहाँ मीच कौं मारिये, कहाँ जुरा सत खंड ॥ १२ ॥
उत्तर--अमरठौर अबिनासी आसन, तहाँ निरंजन लागि रहे ।
दादू जोगी जुग जुग जीवै, काल ब्याल* सब सहजि गये १३
रोम रोम लै लाइ धुनि, ऐसैं सदा अखंड ।
दादू अबिनासी मिलै, तौ जम कौं दीजै डंड ॥ १४ ॥
(दादू) जुरा काल जामण मरण, जहाँ जहाँ जिव जाइ ।
भगति परायण† लीन मन, ता कौं काल न खाइ ॥१५॥
मरणा भागा मरण थैं, दुक्खैं नाठा दुक्ख ।
दादू भय सैं भय गया, सुक्खैं छूटा सुक्ख ॥ १६ ॥
जीवत मिलै सो जीवते, मूएँ मिलि मरि जाइ ।
दादू दून्यूँ देखि करि, जहँ जाणै तहँ लाइ ॥ १७ ॥
दादू साधन सब किया, जब उनमन लागा मन ।
दादू इस्थिर आतमा, यौं जुग जुग जीवै जन ॥१८॥
रहते सेती लागि रहु, तौ अजरावर होइ ।
दादू देखि बिचारि करि, जुदा न जीवै कोइ ॥ १९ ॥
जेती करणी काल की, तेती परिहरि प्राण ।
दादू आतम राम सौं, जे तूँ खरा सुजाण ॥ २० ॥
बिष अमृत घट मैं बसै, बिरला जाणै कोइ ।
जिन बिष खाया ते मुए, अमर अमी सौं होइ ॥२१॥
दादू सब ही मरि रहे, जीवै नाहीं कोइ ।
सोई कहिये जीवता, जे कलि अजरावर होइ ॥२२॥

*साँप । †निमग्न, ग़र्क़ ।

२६—सजीवन को अंग ।

(दादू) नमो नमो निरंजनं , नमस्कार गुर देवतः ।
बंदनं सर्ब साधवा , प्रणामं पारंगतः ॥ १ ॥
(दादू) जे तूँ जोगी गुरमुखी , तौ लेना तत्त बिचारि ।
गहि आवध* गुर ज्ञान का , काल पुरिष कौँ मारि ॥२॥
नाद बिंद सौँ घट भरै , सो जोगी जोवै ।
दादू काहे कौँ मरै , राम रस्स पीवै ॥ ३ ॥
साधू जन की बासना , सबद रहै संसार ।
दादू आतम ले मिलै , अमर उपावणहार ॥ ४ ॥
राम सरीखे ह्वै रहै , यहु नाहीं उनहार† ।
दादू साधू अमर है , बिनसै सब संसार ॥ ५ ॥
जे कोइ सेवै राम कौँ , तौ राम सरीखा होइ ।
दादू नाम कबीर ज्यौँ , साखी बोलै सोइ ॥ ६ ॥
आँथि न आया सो गया , आया सो क्यौँ जाइ ।
दादू तन मन जीवताँ , आपा ठौर लगाइ ॥ ७ ॥
पहिली था सो अब भया , अब सो आगैँ होइ । (७-८)
दादू तीनौँ ठौर की , बूझै बिरला कोइ ॥ ८ ॥
जे जन बेधे प्रीति सौँ , ते जन सदा सजीव ।
उलटि समाने आप मैँ , अंतर‡ नाहीं पीव ॥ ९ ॥
(दादू कहै) सब रँग तेरे तैँ रँगे , तूँ ही सब रँग माहिँ ।
सब रँग तेरे तैँ किये , दूजा कोई नाहिँ ॥ १० ॥
छूटै दंद तौ लागै बंद , लागै बंद तौ अमर कंद ,
अमर कंद दादू आनंद ॥ ११ ॥

---

*शस्त्र । †सदृश । ‡भेद, दूरी ।

प्रश्न--कहँ जम जौरा भंजिये, कहाँ काल कौ डंड ।
कहाँ मीच कौं मारिये, कहाँ जुरा सत खंड ॥ १२ ॥
उत्तर--अमरठौर अबिनासी आसन, तहाँनिरंजनलागिरहे।
दादू जोगी जुग जुग जीवै, काल ब्याल* सब सहजि गये १३
रोम रोम लै लाइ धुनि, ऐसैं सदा अखंड ।
दादू अबिनासी मिलै, तौ जम कौं दीजै डंड ॥ १४ ॥
(दादू) जुरा काल जामण मरण, जहाँ जहाँ जिव जाइ ।
भगति परायण† लीन मन, ता कौं काल न खाइ ॥१५॥
मरणा भागा मरण थैं, दुक्खैं नाठा दुक्ख ।
दादू भय सौं भय गया, सुक्खैं छूटा सुक्ख ॥ १६ ॥
जीवत मिलै सो जीवते, मूएँ मिलि मरि जाइ ।
दादू दून्यूँ देखि करि, जहँ जाणै तहँ लाइ ॥ १७ ॥
दादू साधन सब किया, जब उनमन लागा मन ।
दादू इस्थिर आतमा, यौं जुग जुग जीवै जन ॥१८॥
रहते सेती लागि रहु, तौ अजरावर होइ ।
दादू देखि बिचारि करि, जुदा न जीवै कोइ ॥ १९ ॥
जेती करणी काल की, तेती परिहरि प्राण ।
दादू आतम राम सौं, जे तूँ खरा सुजाण ॥ २० ॥
बिष अमृत घट मैं बसै, बिरला जाणै कोइ ।
जिन बिष खाया ते मुए, अमर अमी सौं होइ ॥२१॥
दादू सब ही मरि रहे, जीवै नाहीं कोइ ।
सोई कहिये जीवता, जे कलि अजरावर होइ ॥२२॥

---

*साँप । †निमग्न, ग़र्क़ ।

देह रहै संसार मैं, जीव राम के पास। (१८-२७)
दादू कुछ ब्यापै नहीं, काल झाल दुख त्रास ॥२३॥
काया की संगति तजै, बैठा हरि पद माहिं।
दादू निर्भय ह्वै रहै, कोइ गुण ब्यापै नाहिं ॥२४॥
दादू तजि संसार सब, रहै निराला होइ। (१८-२८)
अबिनासी कै आसिरै, काल न लागै कोइ ॥ २५ ॥
जागहु लागहु राम सौं, रैनि बिहानी जाइ।
सुमिर सनेही आपणा, दादू काल न खाइ ॥ २६ ॥
(दादू) जागहु लागहु राम सौं, छाड़हु बिषय बिकार।
जीवहु पीवहु राम रस, आतम साधन सार ॥ २७ ॥
मरै त पावै पीव कौं, जीवत बंचै* काल।
दादू निर्भय नाँव ले, दून्यौं हाथि दयाल ॥ २८ ॥
दादू मरणे कौं चल्या, सजीवन के साथि।
दादू लाहा मूल सौं, दून्यौं आये हाथि ॥ २९ ॥
दादू जाता देखिये, लाहा मूल गँवाइ।
साहिब की गति अगम है, सो कुछ लखी न जाइ ॥३०॥
साहिब मिलै त जीविये, नहीं त जीवै नाहिं।
भावै अनँत उपाव करि, दादू मूवौं माहिं ॥ ३१ ॥
सजीवन साधै नहीं, ता थैं मरि मरि जाइ।
दादू पीवै राम रस, सुख मैं रहै समाइ ॥ ३२ ॥
दिन दिन लहुड़े† हूँहिं सब, कहैं मोटा होता जाइ।
दादू दिन दिन ते बढ़ैं, जे रहे राम ल्यौ लाइ ॥३३॥

---

*ठगै। †उमर में छोटा।

ना जाणौं हाँजी चुप्प गहि, मेटि अग्नि की झाल।(१६-७०)
सदा सजीवन सुमिरिये, दादू बंचै काल ॥ ३४ ॥
(दादू) जीवत छूटै देह गुण, जीवत मुकता होइ।
जीवत काटै कर्म सब, मुकति कहावै सोइ ॥ ३५ ॥
(दादू) जीवत ही दूतर* तिरै, जीवत लंघै पार।
जीवत पाया जगत गुर, दादू ज्ञान बिचार ॥ ३६ ॥
जीवत जगपति कौं मिलै, जीवत आतम राम।
जीवत दरसन देखिये, दादू मन विसराम ॥ ३७ ॥
जीवत पाया प्रेम रस, जीवत पिया अघाइ।
जीवत पाया स्वाद सुख, दादू रहे समाइ ॥ ३८ ॥
जीवत भागे भरम सब, छूटे करम अनेक।
जिवत मुकत सदगति भये, दादू दरसन एक ॥ ३९ ॥
जीवत मेला ना भया, जीवत परस न होइ।
जीवत जगपति ना मिले, दादू बूड़े सोइ ॥ ४० ॥
जीवत दूतर ना तिरे, जिवत न लंघे पार।
जीवत निर्भय ना भये, दादू ते संसार ॥ ४१ ॥
जीवत परगट ना भया, जीवत परचा नाहिं।
जिवत न पाया पीव कौं, बूड़े भौजल माहिं ॥ ४२ ॥
जीवत पद पाया नहीं, जीवत मिले न जाइ।
जीवत जे छूटे नहीं, दादू गये बिलाइ ॥ ४३ ॥
दादू छूटै जीवताँ, मूआँ छूटै नाहिं।
मूआँ पीछैं छूटिये, तौ सब आये उस माहिं ॥४४॥

*दुखिया।

मूआँ पीछैं मुकति बतावैं , मूआँ पीछैं मेला ।
मूआँ पीछैं अमर अभै पद , दादू भूले गहिला ॥ ४५ ॥
मूआँ पीछैं बैकुंठ बासा , मुआँ सुरग पठावैं ।
मूआँ पीछैं मुकति बतावैं , दादू जग बौरावैं ॥ ४६ ॥
मूआँ पीछैं पद पहुँचावैं , मूआँ पीछैं तारैं ।
मूआँ पीछैं सद्गति होवैं , दादू जीवत मारैं ॥ ४७ ॥
मूआँ पीछैं भगति बतावैं , मूआँ पीछैं सेवा ।
मूआँ पीछैं संजम राखैं , दादू दोजग देवा ॥ ४८ ॥
(दादू) धरती क्या साधन किया, अंबर कौन अभ्यास ।
रवि ससि किस आरंभ थैं , अमर भये निज दास ॥ ४९ ॥
साहिब मारे ते मुए , कोई जीवै नाहिं ।
साहिब राखे ते रहे , दादू निज घर माहिं ॥ ५० ॥
जे जन राखे रामजी , अपणैं अंगि लगाइ ।
दादू कुछ व्यापै नहीं , जे कोटि काल झखि जाइ॥५१

इति सजीवन को अंग समाप्त ॥ २६ ॥
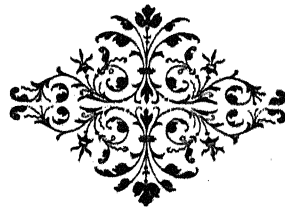
२७—पारिख को अंग।

(दादू) नमो नमो निरंजनं, नमस्कार गुर देवतः।
बंदनं सर्ब साधवा, प्ररणामं पारंगतः॥ १॥

(दादू) मन चित आतम देखिये, लागा है किस ठौर।
जहँ लागा तैसा जाणिये, का देखै दादू और॥ २॥

दादू साध परेखिये, अंतर आतम देख।
मन माहैं माया रहै, कै आपै आप अलेख॥३॥

दादू मन को देखि करि, पीछै धरिये नाँव।
अंतरगति की जे लखैं, तिन की मैं बलि जाँव॥४॥

(दादू) बाहिर का सब देखिये, भीतर लख्या न जाय। (१४-३७)
बाहिर दिखावा लोक का, भीतर राम दिखाइ॥ ५॥

यहु परख सराफी ऊपली, भीतर की यहु नाहिं।
अंतर की जाणैं नहीं, ता थैं खोटा* खाहिं॥ ६॥

(दादू) जे नाहीं सो सब कहै, है सो कहै न कोइ।
खोटा खरा परेखिये, तब ज्यौं था त्यौं ही होइ॥७॥

दह दिसि फिरै सो मन है, आवै जाइ सो पवन। (२०-४५)
राखणहारा प्राण है, देखणहारा ब्रह्म॥ ८॥

घट की भानि† अनीति सब, मन की मेटि उपाधि।
दादू परिहर पंच की, राम कहै ते साध॥ ९॥

अरथ आया तब जाणिये, जब अनरथ छूटै।
दादू भाँडा भरम का, गिरि चौड़ै फूटै॥ १०॥

---

*भटक—एक लिपि मैं "चोटा" है। † तोड़।

(दादू) दूजा कहिबे कौं रह्या, अंतर डार्‌या धोइ।
ऊपर की ये सब कहैं, माहिं न देखै कोइ ॥ ११ ॥
(दादू) जैसे माहैं जिव रहै, तैसी आवै बास।
मुखि बोलै तब जाणिये, अंतर का परकास ॥ १२ ॥
दादू ऊपर देखि करि, सब को राखै नाँव।
अंतरगति की जे लखैं, तिन की मैं बलि जाँव ॥१३॥
तन मन आतम एक है, दूजा सब उनहार।
दादू मूल पाया नहीं, दुबिधा भरम बिकार ॥ १४ ॥
काया के सब गुण बँधे, चौरासी लख जीव।
दादू सेवग सो नहीं*, जे रँग राते पीव ॥ १५ ॥
काया के बसि जाव सब, ह्वै गये अनँत अपार।
दादू काया बसि करै, निरंजन निराकार ॥ १६ ॥
पूरण ब्रह्म बिचारिये, तब सकल आतमा एक।
काया के गुण देखिये, तौ नाना बरण अनेक ॥ १७ ॥
मति बुधि बिबेक बिचार बिन, माणस पसू समान।
समझाया समझै नहीं, दादू परम† गियान ॥ १८ ॥
सब जिव प्राणी भूत है, साध मिलै तब देव।
ब्रह्म मिलै तब ब्रह्म है, दादू अलख अभेव ॥ १९ ॥
दादू बंध्या जीव है, छूटा ब्रह्म समान।
दादू दोनौं देखिये, दूजा नाहीं आन ॥ २० ॥
करमौं के बस जीव है, करम रहित सो ब्रह्म।
जहँ आतम तहँ परआत्मा, दादू भागा भर्म ॥ २१ ॥

*नहीं=नहां बँधे। † एक लिपि में "परम" की जगह "सिखवत" है।

काचा उछलै ऊफणै, काया हाँडो माहिं ।
दादू पाका मिलि रहै, जीव ब्रह्म द्वै नाहिं ॥ २२ ॥
(दादू) बाँधे सुर नवाये बाजैं, एह्वा सोधि रु लीज्यौ ।
राम सनेही साधू हाथैं, बेगा मोकलि दीज्यौ ॥२३*॥
प्राण जौहरी पारिखू, मन खोटा ले आवै ।
खोटा मन के माथै मारै, दादू दूरि उड़ावै ॥ २४ ॥
सरवण हैं नैना नहीं, ता थैं खोटा खाहिं ।
ज्ञान बिचार न ऊपजै, साच झूठ समझाहिं ॥२५॥
दादू साचा लीजिये, झूठा दीजै डारि ।
साचा सनमुख राखिये, झूठा नेह निवारि ॥ २६ ॥
साचे कौं साचा कहै, झूठे कौं झूठा ।
दादू दुबिधा को नहीं, ज्यौं था त्यौं दीठा ॥ २७ ॥
(दादू) हीरे कौं कंकर कहैं, मूरिष लोग अजान ।
दादू हीरा हाथि ले, परखैं साध सुजान ॥ २८ ॥
हीरा कौड़ी ना लहै, मूरिष हाथ गँवार ।(४-१९१)
पाया पारिख जौहरी, दादू मोल अपार ॥ २९ ॥
अंधे हीरा परखिया, कीया कौड़ी मोल ।(४-१९२)
दादू साधू जौहरी, हीरे मोल न तोल ॥ ३० ॥
सगुरा निगुरा परखिये, साध कहैं सब कोइ ।
सगुरा साचा निगुरा झूठा, साहिब के दरि होइ ॥ ३१ ॥
(दादू) सगुरा सति संजम रहै, सनमुख सिरजनहार ।
निगुरा लोभी लालची, भूँचै† बिषै बिकार ॥ ३२ ॥

* एह्वा = ऐसा ; सोधि = खोज ; मोकलि दीज्यौ = भेज दो । †चाहै ।

खोटा खरा परेखिये, दादू कसि कसि लेइ ।
साचा है सो राखिये, झूठा रहण न देइ ॥ ३३ ॥

खोटा खरा करि देवै पारिख, तौ कैसैं बनि आवै ।
खरे खोटे का न्याव नबेरै, साहिब के मन भावै ॥ ३४ ॥

(दादू) जिन्हैं ज्यौं कही तिन्हैं त्यौं मानी, ज्ञान बिचार न कीन्हा ।
खोटा खरा जिव परखि न जाणैं, झूठ साँच करि लीन्हा ॥ ३५ ॥

जे निधि कहीं न पाइये, सो निधि घर घर आहि ।
दादू महँगे मोल बिन, कोइ न लेवै ताहि ॥ ३६ ॥

खरी कसौटी कीजिये, बाणी बधती* जाइ ।
दादू साचा परखिये, महँगे मोल बिकाइ ॥ ३७ ॥

(दादू) राम कसै सेवग खरा, कदे न मोड़ै अंग ।
दादू जब लग राम है, तब लग सेवग संग ॥ ३८ ॥

दादू कसि कसि लीजिये, यहु ताते परिमान† ।
खोटा गाँठि न बाँधिये, साहिब के दीवान‡ ॥ ३९ ॥

खरी कसौटी पीव की, कोइ बिरला पहुँचनहार ।
जे पहुँचे ते ऊबरे, ताइ§ किये ततसार ॥ ४० ॥

दुर्बल देही निर्मल बाणी । दादू पंथी ऐसा जाणी ॥ ४१ ॥

(दादू) साहिब कसै सेवग खरा, सेवग कौं सुख होइ ।
साहिब करै सो सब भला, बुरा न कहिये कोइ ॥ ४२ ॥

दादू ठग आँबे रमैं, साधौं सौं कहियो ।
हम सरणाई राम की, तुम नीके रहियो ॥ ४३ ॥

इति पारिख को अंग समाप्त ॥ २७ ॥

*बढ़ती । †ताते परिमान = गरम यानी कड़ी कसौटी-पं०चं०प्र० । ‡कचहरी ।
§ आग में तपा कर ।

२८—उपजणि को अंग ।

(दादू) नमो नमो निरंजनं, नमस्कार गुर देवतः ।
बंदनं सर्व साधवा, प्रणामं पारंगतः ॥ १ ॥

(दादू) माया का गुण बल करै, आपा उपजै आइ । (२०-४४)
राजस तामस सातगी, मन चंचल ह्वै जाइ ॥ २ ॥

आपा नाहीं बल मिटै, त्रिबिधि तिमर नहिं होइ । (२०-४३)
दादू यहु गुण ब्रह्म का, सुन्नि समाना सोइ ॥ ३ ॥

(दादू) अनभै उपजी गुणमई, गुण हीं पैं लै जाइ ।
गुण हीं सौं गहि बंधिया, छूटै कौन उपाइ ॥ ४ ॥

द्वै पष उपजी परिहरै, निर्पष अनभै सार ।
एक राम दूजा नहीं, दादू लेहु बिचार ॥ ५ ॥

(दादू) काया ब्यावर गुण मई, मनमुख उपजै ज्ञान ।
चौरासी लख जीव कौं, इस माया का ध्यान ॥ ६ ॥

आतम बोध बंझ का बेटा, गुरमुख उपजै आइ । (१-२१)
दादू पंगुल पंच बिन, जहाँ राम तहँ जाइ ॥ ७ ॥

आतम माहैं ऊपजै, दादू पंगुल ज्ञान । (१-२०)
किरतिम जाइ उलंघि करि, जहाँ निरंजन थान ॥ ८ ॥

आतम उपजि अकास की, सुणि धरती की बाट ।
दादू मारग गैब का, कोई लखै न घाट ॥ ९ ॥

आतम बोधी अनभई, साधू निर्पष होइ ।
दादू राता राम सौं, रस पीवेगा सोइ ॥ १० ॥

प्रेम भगति जब ऊपजै, निहचल सहज समाध ।
दादू पीवै राम रस, सतगुर के परसाद ॥ ११ ॥

प्रेम भगति जब ऊपजै, पंगुल ज्ञान बिचार ।
दादू हरि रस पाइये, छूटै सकल बिकार ॥ १२ ॥

(दादू)भगतिनिरंजन राम की, अबिचलअबिनासी।(४-२४४)
सदा सजीवन आतमा, सहजैं परकासी ॥ १३ ॥

(दादू)बंझ बियाई आतमा, उपजा आनँद भाव ।
सहज सील संतोष सत, प्रेम मगन मन राव ॥ १४॥

जब हम ऊजड़ चालते, तब कहते मारग माहिं ।
दादू पहुँचे पंथ चलि, कहैं यहु मारग नाहिं ॥१५॥

पहिली हम सब कुछ किया, भरम करम संसार ।
दादू अनभै ऊपजी, राते सिरजनहार ॥ १६ ॥

सोइ अनभै सोइ ऊपजी, सोई सबद ततसार। (१३-५४)
सुणताँ ही साहिब मिलै, मन के जाहिं बिकार॥ १७ ॥

पारब्रह्म कह्या प्राण सौं, प्राण कह्या घट सोइ ।
दादू घट सब सौं कह्या, बिष अमृत गुण दोइ ॥१८॥

(दादू)मालिक कह्या अरवाह सौं, अरवाह कह्या औजूद।
औजूद आलम सौं कह्या, हुकम खबर मौजूद ॥ १९ ॥

दादू जैसा ब्रह्म है, तैसी अनभै उपजी होइ ।
जैसा है तैसा कहै, दादू बिरला कोइ ॥ २० ॥

इति उपजणि को अंग समाप्त ॥ २८ ॥

२९--दया निर्बैरता को अंग ।

(दादू) नमो नमो निरंजनं , नमस्कार गुर देवतः ।
बंदनं सर्ब साधवा , प्रणामं पारंगतः ॥ १ ॥
आपा मेटै हरि भजै , तन मन तजै बिकार ।
निरबैरी सब जीव सौं , दादू यहु मत सार ॥ २ ॥
(दादू)निरबैरी निज आतमा , साधन का मत सार ।
दादू दूजा राम बिन , बैरी मंझि बिकार ॥ ३ ॥
निरबैरी सब जीव सौं , संत जन सोई ।
दादू एकै आतमा , बैरी नहिं कोई ॥ ४ ॥
सब हम देख्या सोधि करि , दूजा नाहीं आन ।
सब घर एकै आतमा , क्या हिंदू मूसलमान ॥ ५ ॥
(दादू)नारि पुरिष का नाँव धरि , इहि संसै भरम भुलान ।
सब घट एकै आतमा , क्या हिंदू मूसलमान ॥ ६ ॥
(दादू) दोनौं भाई हाथ पग , दोनौं भाई कान ।
दोनौं भाई नैन हैं , हिंदू मूसलमान ॥ ७ ॥
दादू के दूजा नहीं , एकै आतम राम । (१-१४१)
सतगुर सिर पर साध सब , प्रेम भगति बिसराम ॥ ८ ॥
दादू संसा आरसी , देखत दूजा होइ ।
भरम गया दुबिध्या मिटी , तब दूसर नाहीं कोइ ॥ ९ ॥
किस सौं बैरी ह्वै रह्या , दूजा कोई नाहिं ।
जिस के अँग थैं ऊपज्या , सोई है सब माहिं ॥ १० ॥

सब घटि एकै आतमा, जाणै सो नीका।
आपा पर मैं चीन्हि ले, दरसन है पी[*] का ॥ ११ ॥
काहे कौं दुख दीजिये, घटि घटि आतम राम।
दादू सब संतोषिये, यहु साधू का काम। १२ ॥
काहे कौं दुख दीजिये, साईं है सब माहिं।
दादू एकै आतमा, दूजा कोई नाहिं ॥ १३ ॥
साहिब जी की आतमा, दीजै सुख संतोष।
दादू दूजा को नहीं, चौदह तीनौं लोक ॥ १४ ॥
(दादू) जब प्राण पिछाणै आप कौं, आतम सब भाई।
सिरजनहारा सबन का, ता सौं ल्यौ लाई ॥ १५ ॥
आतम राम बिचारि करि, घटि घटि देव दयाल।
दादू सब संतोषिये, सब जीऊँ प्रतिपाल ॥ १६ ॥
(दादू) पूरण ब्रह्म बिचारि ले, दुती भाव करि दूर।
सब घटि साहिब देखिये, राम रह्या भरपूर ॥ १७ ॥
दादू मंदिर काच का, मर्कट[†] सुनहा[‡] जाइ।
दादू एक अनेक ह्वै, आप आप कौं खाइ ॥१८॥
आतम भाई जीव सब, एक पेट परिवार।
दादू मूल बिचारिये, तौ दूजा कौन गँवार ॥१९॥
तन मन आतम एक है, दूजा सब उनहार। (२७-१४)
दादू मूल पाया नहीं, दुबिधा भरम बिकार ॥२०॥
काया के बसि जीव सब, ह्वै गये अनँत अपार। (२७-१६)
दादू काया बसि करै, निरंजन निराकार ॥ २१ ॥

---

[*] पति। [†] बंदर। [‡] कुत्ता।

(दादू)सूका सहजैं कीजिये , नीला भानै नाहिँ ।
काहे कौँ दुख दीजिये , साहिब है सब माहिँ ॥ २२[*] ॥
घट घट के उणहार सब , प्राण पुरिष[†] ह्वै जाइ ।
दादू एक अनेक ह्वै , बरतै नाना भाइ ॥ २३ ॥
आये एकंकार सब , साइँ दिये पठाइ ।
दादू न्यारे नाँव धरि , भिन्न भिन्न ह्वै जाइ ॥ २४ ॥
आये एकंकार सब , साइँ दिये पठाइ ।
आदि अंत सब एक है , दादू सहज समाइ ॥ २५ ॥
आतम देव अराधिये , बिरोधिये नहिँ कोइ ।
आराधैँ सुख पाइये , बिरोधैँ दुख होइ ॥ २६ ॥
ज्यौँ आपै देखै आप कौँ , यौँ जे दूसर होइ ।
तौ दादू दूसर नहीँ , दुक्ख न पावै कोइ ॥ २७ ॥
दादू सम करि देखिये , कुंजर कीट समान ।
दादू दुबिधा दूरि करि , तजि आपा अभिमान ॥२८॥
पूरण ब्रह्म बिचारिये , तब सकल आतमा एक ।(२७-१७)
काया के गुण देखिये , तौ नाना बरण अनेक ॥२९॥
दादू अरस खुदाय का , अजरावर का थान ।
दादू सो क्यौँ ढाहिये , साहिब का नीसाण ॥३०॥
(दादू) आप चिणावै देहुरा[‡] , तिस का करहि जतन ।
परतषि परमेसुर किया , सो भानै जीव रतन ॥३१॥
मसीत सँवारी माणसौँ[§] , तिस कौँ करै सलाम ।
ऐन आप पैदा किया , सो ढाहै मूसलमान ॥ ३२ ॥

---

* सब बनस्पतियोँ मेँ भी परमेश्वर है इस लिये हरे [नीला] पेड़ को न तोड़ै [भानै] सूखे [सूका] को काम मेँ भले लावै--पं०चं०प्र०। †पं० चंद्रिका प्रसाद की पुस्तक मेँ और एक लिपि मेँ "परस" है। ‡मंदिर बनावै। §मसजिद आदमी की बनाई हुई।

(दादू) जंगल माहैं जीव जे, जग थैं रहै उदास।
भयभीत भयानक रात दिन, निहचल नाहीं बास ॥ ३३ ॥
बाचा बंधी जीव सब, भोजन पाणी घास।
आतम ज्ञान न ऊपजै, दादू करहि बिनास ॥ ३४ ॥
काला मुँह करि करद* का, दिल थैं दूरि निवार।
सब सूरति सुबहान की, मुल्लाँ मुग्ध न मारि† ॥ ३५ ॥
गला गुसे का काटिये, मियाँ मनी कौं मारि।
पंचौं बिसमिल‡ कीजिये, ये सब जीव उबारि ॥ ३६ ॥
बैर बिरोधैं आतमा, दया नहीं दिल माहिं।
दादू मूरति राम की, ता कौं मारन जाहिं ॥ ३७ ॥
कुल आलम यके दीदम, अरवाहे इख़लास।
बद अमल बदकार दूई, पाक याराँ पास ॥ ३८§ ॥
(दादू) भावहीण जे पिरथमी, दया बिहूणा देस। (१६-६८)
भगति नहीं भगवंत की, तहँ कैसा परवेस ॥ ३९ ॥
काल झाल थैं काढ़ि करि, आतम अंगि लगाइ।
जीव दया यहु पालिये, दादू अमृत खाइ ॥ ४० ॥
(दादू) बुरा न बांछै जीव का, सदा सजीवन सोइ।
परलै बिषै बिकार सब, भाव भगति रत होइ ॥४१॥
ना को बैरी ना को मीत। दादू राम मिलण की चीत ॥४२॥

॥ इति दया निर्बैरता को अंग समाप्त ॥ २६ ॥

---

* छुरी। † मुल्लाजी दीन जीवोँ को मत मारो क्योँकि वह मालिक ही की अंश हैँ। ‡ ज़िबह। § समस्त संसार को एक देखता हूँ, सब सुरतें एक ही की अंश हैँ; कुकर्मी और खोटे जीवोँ के लिये दुभाँता है और भक्तजन मालिक की रक्षा में हैँ। "पास" फ़ारसी शब्द का अर्थ "रक्षा" है न कि "समीप" जो पं० चं० प्र० ने लिखा है।

३०—सुन्दरी को अंग ।

(दादू) नमो नमो निरंजनं, नमस्कार गुर देवतः ।
बंदनं सर्ब साधवा, प्रणामं पारंगतः ॥ १ ॥
आरतिवंती सुन्दरी, पल पल चाहै पीव ।
दादू कारण कंत के, तालाबेली जीव ॥ २ ॥
रतिवंती आरति करै, राम सनेही आव । (३-२)
दादू औसर अब मिलै, यहु बिरहनि का भाव ॥ ३ ॥
काहे न आवहु कंत घरि, क्यौं तुम रहे रिसाइ ।
दादू सुंदरि सेज पर, जनम अमोलिक जाइ ॥ ४ ॥
आतम अंतरि आव तूँ, याहै तेरी ठौर ।
दादू सुन्दरि पीव तूँ, दूजा नाहीं और ॥ ५ ॥
(दादू)पीव न देख्या नैन भरि, कंठि न लागी धाइ ।
सूती नहिं गल बाँहि दे, बिच हौं गई बिलाइ ॥ ६ ॥
सुरति पुकारै सुन्दरी, अगम अगोचर जाइ ।
दादू बिरहनि आतमा, उठि उठि आतुर धाइ ॥ ७ ॥
साईं कारण सेज सँवारी, सब थैं सुन्दर ठौर ।
दादू नारी नाह* बिन, आणि बिठाये और ॥ ८ ॥
कोई अवगुण मन बस्या, चित थैं धरी उतार ।
दादू पति बिन सुन्दरी, हाँढै† घर घर बार ॥ ९ ॥
प्रेम प्रीति इसनेह बिन, सब झूठे सिंगार ।
दादू आतम रत नहीं, क्यौं मानै भरतार ॥ १० ॥

---
*पति । †भटकै ।

प्रेम लहरि की पालकी, आतम बैसै आइ। (४-२७८
दादू खेलै पीव सौं, यहु सुख कह्या न जाइ ॥ ११
(दादू) हूँ सुख सूती नींद भरि, जागै मेरा पीव।
क्यौं करि मेला होइगा, जागै नाहीं जीव ॥ १२
सखी न खेलै सुन्दरी, अपणे पिव सौं जागि।
स्वाद न पाया प्रेम का, रही नहीं उर लागि ॥ १३
पंच दिहाड़े* पीव सौं, मिलि काहे ना खेलै।
दादू गहिली सुन्दरी, क्यौं रहै अकेलै ॥ १४।
सखी सुहागनि सब कहैं, हूँ र† दुहागनि आहि।
पिव का महल न पाइये, कहाँ पुकारौं जाइ ॥१५।
सखी सुहागनि सब कहैं, कंत न बूझै बात।
मनसा बाचा करमणा, मुरछि मुरछि‡ जिव जात ॥१६।
सखी सुहागनि सब कहैं, पिव सौं परस न होइ।
निसि बासर दुख पाइये, यहु बिथा न जाणै कोइ ॥१७
सखी सुहागनि सब कहैं, प्रगट न खेलै पीव।
सेज सुहाग न पाइये, दुखिया मेरा जीव ॥ १८ ॥
पर पुरिषा सब परिहरै, सुन्दरि देखै जागि। (८-४०,२०-३८
अपणा पीव पिछाणि करि, दादू रहिये लागि ॥ १९ ॥
पुरिष पुरातन छाड़ि करि, चली आन के साथ।
सो भी सँग थैं बीछट्या, खड़ी मरोड़ै हाथ ॥ २० ।

*दिन। †हूँ र=मैं रे। ‡मुरझा मुरझा कर।

सुन्दरि कबहूँ कंत का, मुख सौं नाँव न लेइ।
अपणे पिव के कारणै, दादू तन मन देइ ॥ २१* ॥

नैन बैन करि वारणैं, तन मन प्यंड पराण।
दादू सुन्दरि बलि गई, तुम परि कंत सुजाण ॥२२॥

तन भी तेरा मन भी तेरा, तेरा प्यंड पराण।
सब कुछ तेरा, तूँ है मेरा, यहु दादू का ज्ञान ॥ २३ ॥

पंच अभूषण पीव करि, सोलह सब ही ठाँव। (८-३२)
सुंदरि यहु सिंगार करि, लै लै पिव का नाँव ॥ २४ ॥

यहु ब्रत सुन्दरि लै रहै, तौ सदा सुहागनि होइ। (८-३३)
दादू भावै पीव कौं, ता सम और न कोइ ॥२५॥

सुन्दरि मोहै पीव कौं, बहुत भाँति भर्तार।
त्यौं दादू रिझवै राम कौं, अनंत कला कर्तार ॥ २६ ॥

(दादू) नीच ऊँच कुल सुंदरी, सेवा सारी होइ। (८-३८)
सोई सोहागनि कीजिये, रूप न पीजे धोइ ॥ २७ ॥

नदिया नीर उलंघि करि, दरिया पैली† पार।
दादू सुन्दरि सो भली, जाइ मिलै भर्तार ॥ २८ ॥

प्रेम लहरि गहि ले गई, अपणे प्रीतम पास।
आतम सुन्दरि पीव कौं, बिलसै दादूदास ॥ २९ ॥

सुंदरि कौं साँई मिल्या, पाया सेज सुहाग।
पिव सौं खेलै प्रेम रस, दादू मोटे भाग ॥ ३० ॥

---

*पतिब्रता स्त्री चाहे कितना ही दुख अपने पति के कारण उसे सहना पड़े परंतु उस का नाम ज़बान पर नहीँ लाती यानी उस का गिला नहीँ करती। यहाँ उस रिवाज से मतलब नहीँ है जिस के अनुसार स्त्री अपने पति का नाम नहीँ लेती। †पल्ली पार।

दादू सुन्दरि देह मैं, साईं कौं सेवै।
राती आपणे पीव सौं, प्रेम रसस लेवै ॥ ३१ ॥
दादू निर्मल सुन्दरी, निर्मल मेरा नाह।
दून्यौं निर्मल मिलि रहे, निर्मल प्रेम प्रवाह ॥ ३२ ॥
तेज पुंज की सुन्दरी, तेज पुंज का कंत। (४-१०९)
तेप पुंज की सेज परि, दादू बन्या बसंत ॥ ३३ ॥
साईं सुंदरि सेज परि, सदा एक रस होइ।
दादू खेलै पीव सौं, ता समि और न कोइ ॥३४॥

इति सुंदरी को अंग समाप्त ॥ ३० ॥

३१—कस्तूरिया मृग को अंग।

(दादू) नमो नमो निरंजनं, नमस्कार गुर देवतः।
बंदनं सर्व साधवा, प्रणामं पारंगतः ॥ १ ॥
(दादू) घटि कस्तूरी मिरग के, भरमत फिरै उदास।
अंतरगति जाणै नहीं, ता थैं सूँघै घास ॥ २ ॥
(दादू) सब घटि मैं गोबिंद है, संगि रहै हरि पास।
कस्तूरी मृग मैं बसै, सूँघत डोलै घास ॥ ३ ॥
(दादू) जीव न जाणै राम कौं, राम जीव के पास।
गुर के सब्दौं बाहिरा, ता थैं फिरै उदास ॥ ४ ॥
(दादू) जा कारणि जग ढूँढिया, सो तौ घट ही माहिं।
मैं तैं पड़दा भरम का, ता थैं जाणत नाहिं ॥ ५ ॥

(दादू) दूरि कहैं ते दूरि हैं, राम रह्या भरपूरि ।
नैनहुँ बिन सूझै नहीं, ता थैं रबि कत* दूरि ॥६॥
(दादू) ओढाँ होआ पाण खे, न लधाऊँ मंझ ।
न जाताऊँ पाण खे, ताईं क्याउँ पंध ॥ ७† ॥
(दादू) केई दौड़ै द्वारिका, केई कासी जाहि ।
केई मथुरा कौं चले, साहिब घट ही माहिं ॥ ८ ॥
(दादू) सब घटि माहैं रमि रह्या, बिरला बूझै कोइ ।
सोई बूझै राम कौं, जे राम सनेही होइ ॥ ९ ॥
सदा समीप रहै सँग सनमुख, दादू लखै न गूझ। (१३-७९)
सुपिनैं ही समझै नहीं, क्यों करि लहै अबूझ ॥१०॥
(दादू) जड़ मति जिव जाणै नहीं, परम स्वाद सुख जाइ ।
चेतनि समझै स्वाद सुख, पीवै प्रेम अघाइ ॥ ११ ॥
जागत जे आनँद करै, सो पावै सुख स्वाद ।
सूतैं सुख ना पाइये, प्रेम‡ गँवाया बाद ॥ १२ ॥
(दादू) जिस का साहिब जागणाँ, सेवग सदा सचेत ।
सावधान सनमुख रहै, गिरि गिरि पड़ै अचेत ॥१३॥
दादू साईं सावधान, हम हीं भये अचेत ।
प्राणी राखि न जाणहीं, ता थैं निर्फल खेत ॥ १४ ॥
(दादू) गोबिंद के गुण बहुत हैं, कोई न जाणै जीव ।
अपनी बूझै आप गति, जे कुछ कीया पीव ॥ १५ ॥

॥ इति कस्तूरिया मृग को अंग समाप्त ॥ ३१ ॥

---

*कितनी । †इस सिंधी भाषा की साखी का अर्थ यह जान पड़ता है-वे आप [पाण] तहाँ [ओढाँ] रहे [होआ] अंतर मैं [मंझ] नहीँ लगे [लधाऊँ = पाया] जिन्होंने अपने को [पाण खे] नहीं जाना [न जाताऊँ] तिन्होंने [ताईं] आप को (प्रीतम से) फ़ासले पर [पंध] किया [क्याऊँ] । ‡एक लिपि में "जन्म" है ।

३२—निंद्या को अंग ।

(दादू) नमो नमो निरंजनं, नमस्कार गुर देवतः ।
बंदनं सर्व साधवा, प्रणामं पारंगतः ॥ १ ॥

साधू निर्मल मल नहीं, राम रमै सम भाइ ।
दादू अवगुण काढ़ि करि, जीव रसातल जाइ ॥ २ ॥

(दादू) जब ही साध सताइये, तब ही ऊँध पलट* ।
आकास धसै धरती खिसै, तीनों लोक गरक† ॥ ३ ॥

(दादू) जिहिं घर निंद्या साध की, सो घर गये समूल‡ ।
तिन की नीव न पाइये, नाँव न ठाँव न धूल ॥ ४ ॥

(दादू) निंद्या नाँव न लीजिये, सुपिनै हीं जिनि होइ ।
ना हम कहैं न तुम सुणौ, हम जिनि भाखै कोइ ॥ ५ ॥

(दादू) निंद्या कीये नरक है, कीट पड़ैं मुख माहिं ।
राम बिमुख जामैं मर, भग मुख आवैं जाहिं ॥ ६ ॥

(दादू) निंदक बपुरा जिनि मरै, पर-उपगारी सोइ ।
हम कूँ करता ऊजला, आपण मैला होइ ॥ ७ ॥

(दादू) ज़िहिं बिधि आतम ऊधरै, परसै प्रीतम प्राण ।
साध सबद कूँ निंदणा§, समझैं चतुर सुजाण ॥ ८ ॥

अणदेख्या अनरथ कहैं, कलि प्रथमी का पाप ।
धरती अंबर जब लगैं, तब लग करैं कलाप‖ ॥ ९ ॥

अणदेख्या अनरथ कहैं, अपराधी संसार ।
जदि तदि लेखा लेइगा, समरथ सिरजनहार ॥ १० ॥

---

*औंधा पलटा खाया । †डूबा । ‡जड़ से । §निंदा का फल । ‖ कष्ट ।

दादू डरिये लोक थैं, कैसी धरैं उठाइ।
अणदेखी अजगैब की, ऐसी कहैं बनाइ ॥ ११ ॥
(दादू) अमृत कूँ बिष बिष कूँ अमृत, फेरि धरैं सब नाँव।
निर्मल मैला मैला निर्मल, जाहिंगे किस ठाँव ॥१२॥
(दादू) साचे कूँ झूठा कहैं, झूठे कूँ साचा।
राम दुहाई काढ़िये, कंठ थैं बाचा ॥ १३ ॥
(दादू) झूठ न कहिये साच कूँ, साच न कहिये झूठ।
दादू साहिब मानै नहीं, लागैं पाप अखूट* ॥ १४ ॥
(दादू) झूठ दिखावैं साच कूँ, भयानक भैभीत।
साचा राता साच सौं, झूठ न आनै चीत ॥ १५ ॥
साचे कूँ झूठा कहै, झूठा साच समान।
दादू अचिरज देखिया, यहु लोगौं का ज्ञान ॥ १६ ॥
(दादू) ज्यौंज्यौं निंदै लोग बिचारा, त्यौंत्यौं छीजै रोग हमारा।
साधन सब घटि रहै समाई, झूठा जगत झूठ ह्वै जाई ॥१७†॥

इति निंद्या को अंग समाप्त ॥ ३२ ॥

*अटूट, अनगिनत। †यह कड़ी केवल एक लिपि में है, पं० चंद्रिका प्रसाद की पुस्तक और दूसरी पुस्तकों में नहीं है।

३३—निगुणा* को अंग ।

(दादू) नमो नमो निरंजनं, नमस्कार गुर देवतः ।
बंदनं सर्व साधवा, प्रणामं पारंगतः ॥ १ ॥

दादू चंदन बावना, बसै बटाऊ† आइ ।
सुखदाई सीतल किये, तीन्यूँ ताप नसाइ ॥ २ ॥

काल कुहाड़ा हाथि ले, काटन लागा ढाइ ।
ऐसा यहु संसार है, डाल मूल ले जाइ ॥ ३ ॥

सतगुर चंदन बावना, लागे रहैं भुवंग ।
दादू बिष छाडैँ नहीं, कहा करै सतसंग ॥ ४ ॥

दादू कीड़ा नरक का, राख्या चंदन माहिँ ।
उलटि अपूठा नरक मैं, चंदन भावै नाहिँ ॥ ५ ॥

सतगुर साध सुजान है, सिष का गुण नहिँ जाइ ।
दादू अमृत छाडि करि, बिषै हलाहल खाइ ॥ ६ ॥

कोटि बरस लौँ राखिये, बंसा‡ चंदन पास ।
दादू गुण लीये रहै, कदे न लागै बास ॥ ७ ॥

कोटि बरस लौँ राखिये, पत्थर पानी माहिँ ।
दादू आड़ा अंग है, भीतर भेदै नाहिँ ॥ ८ ॥

कोटि बरस लौँ राखिये, लोहा पारस संग ।
दादू रोम का अंतरा, पलटै नाहीं अंग ॥ ९ ॥

कोटि बरस लौँ राखिये, जीव ब्रह्म सँगि दोइ ।
दादू माहैँ बासना, कदे न मेला होइ ॥ १० ॥

---

* गुण-रहित, निगुरा । † मुसाफ़िर । ‡ बाँस ।

मूसा जलता देखि करि, दादू हंस दयाल ।
मानसरोवर ले चल्या, पंखा काटै काल ॥ ११* ॥

दीसै माणस प्रत्यष काल । (२५--९५)
ज्यौँ करि त्यौँ करि दादू टाल ॥ १२ ॥

सब जीव भुवंगम कूप मैँ, साधू काढ़ै आइ ।
दादू बिषहर बिष भरे, फिर ताही कौँ खाइ ॥ १३ ॥

दादू दूध पिलाइये, बिषहर बिष करि लेइ ।
गुण का अवगुण करि लिया, ताही कौँ दुख देइ ॥ १४ ॥

बिन ही पावक जलि मुवा, जवासा जल माहिँ ।
दादू सूकै सींचताँ, तौ जल कौँ दूषन नाहिँ॥१५॥

सुफल बिरष परमारथी, सुख देवै फल फूल ।
दादू ऊपरि बैसि करि, निगुणा काटै मूल ॥ १६ ॥

दादू सगुणा गुण करै, निगुणा मानै नाहिँ ।
निगुणा मरि निर्फल गया, सगुणा साहिब माहिँ॥१७॥

निगुणा गुण मानै नहीं, कोटि करै जे कोइ ।
दादू सब कुछ सौंपिये, सो फिर बैरी होइ ॥ १८ ॥

दादू सगुणा लीजिये, निगुणा दीजै डारि ।
सगुणा सन्मुख राखिये, निगुणा नेह निवारि ॥ १९ ॥

सगुणा गुण केते करै, निगुणा न मानै एक ।
दादू साधू सब कहैँ, निगुणा नरक अनेक ॥ २०॥

---

*कथा है कि एक चूहे को आग मेँ जलता देख कर एक हंस ने दया करके रक्षा के लिये उसे अपने परोँ पर बैठा लिया और समुद्र पार ले उड़ा परंतु चूहे ने अपने सुभाव बस परोँ को काट डाला जिस से दोनोँ समुद्र मेँ गिर कर डूब गये ।

सगुणा गुण केते करै, निगुणा नाखै* ढाहि ।
दादू साधू सब कहैं, निगुणा निरफल जाहि ॥२१॥
सगुणा गुण केते करै, निगुणा न मानै कोइ ।
दादू साधू सब कहैं, भला कहाँ थैं होइ ॥ २२ ॥
सगुणा गुण केते करै, निगुणा न मानै नीच ।
दादू साधू सब कहैं, निगुणा के सिर मीच ॥२३॥
साहिब जी सब गुण करै, सतगुर के घटि† होइ ।
दादू काढ़ै काल मुखि, निगुणा न मानै कोइ ॥ २४॥
साहिब जी सब गुण करै, सतगुर माहैं आइ ।
दादू राखै जीव दे, निगुणा मेटै जाइ ॥ २५ ॥
साहिब जी सब गुण करै, सतगुर का दे संग ।
दादू परलै राखि ले, निगुणा न पलटै अंग ॥२६॥
साहिब जी सब गुण करै, सतगुर आड़ा देइ ।
दादू तारै देखताँ, निगुणा गुण नहिं लेइ ॥२७॥
सतगुर दीया राम धन, रहै सुबुद्धि बताइ ।
मनसा बाचा करमणा, बिलसै बितड़ै‡ खाइ ॥ २८॥
कीया कृत मेटै नहीं, गुण ही माहिं समाय ।
दादू बधै§ अनंत धन, कबहूँ कदे न जाइ ॥ २९ ॥

॥ इति निगुणा को अंग समाप्त ॥ ३३ ॥

३४—बिनती को अंग ।

(दादू) नमो नमो निरंजनं , नमस्कार गुर देवतः ।
बंदनं सर्व साधवा , प्रणामं पारंगतः ॥ १ ॥

दादू बहुत बुरा किया , तुम्हैं न करणा रोस ।
साहिब समाई का धनी , बंदे कौं सब दोस ॥ २ ॥

(दादू)बुरा बुरा सब हम किया, सो मुख कह्या न जाइ ।
निर्मल मेरा साइयाँ , ता कौं दोस न लाइ ॥ ३ ॥

साईं सेवा चोर मैं , अपराधी बंदा ।
दादू दूजा को नहीं , मुझ सरिखा गंदा ॥ ४ ॥

तिल तिल का अपराधी तेरा , रती रती का चोर ।
पल पल का मैं गुनही* तेरा , बकसौ औगुण मोर ॥ ५ ॥

महा अपराधी एक मैं , सारे यहि संसार ।
अवगुण मेरे अति घणे , अंत न आवै पार ॥ ६ ॥

बेमरजादा मिति नहीं , ऐसे किये अपार ।
मैं अपराधी बापजी , मेरे तुम हो एक अधार ॥ ७ ॥

दोष अनेक कलंक सब , बहुत बुरा मुझ माहिं ।
मैं कीये अपराध सब , तुम थैं छाना† नाहिं ॥ ८ ॥

गुनहगार अपराधी तेरा , भाजि कहाँ हम जाहिं ।
दादू देख्या सोधि सब , तुम बिन कहिं न समाहिं ॥ ९ ॥

आदि अंत लौं आइ करि , सुकिरत कछू न कीन्ह ।
माया मोह मद मंछरा‡ , स्वाद सबै चित दीन्ह ॥ १० ॥

---

*गुनहगार । †छिपा । ‡मत्सर = अहंकार ।

काम क्रोध संसै सदा, कबहूँ नाँव न लीन ।
पाखँड परपँच पाप मैं, दादू ऐसैं खीन[*] ॥ ११ ॥

(दादू) बहु बंधन सौं बंधिया, एक बिचारा जीव ।
अपणे बल छूटै नहीं, छोड़नहारा पीव ॥ १२ ॥

दादू बंदीवान[†] है, तू बंदीछोड़ दिवान ।
अब जिनि राखौ बंदि मैं, मीराँ[‡] मेहरबान ॥ १३ ॥

दादू अंतरि कालिमाँ[§], हिरदै बहुत बिकार ।
परगट पूरा दूरि करि, दादू करै पुकार ॥ १४ ॥

सब कुछ ब्यापै राम जी, कुछ छूटा नाहीं ।
तुम थैं कहा छिपाइये, सब देखौ माहीं ॥ १५ ॥

सबल साल मन मैं रहै, राम बिसरि क्यौं जाइ ।
यहु दुख दादू क्यौं सहै, साईं करौ सहाइ ॥ १६ ॥

राखणहारा राख तूँ, यहु मन मेरा राखि ।
तुम बिन दूजा को नहीं, साधू बोलैं साखि ॥ १७ ॥

माया बिषय बिकार थैं, मेरा मन भागै ।
सोई कीजै साइयाँ, तूँ मीठा लागै ॥ १८ ॥

साईं दीजै सो रती, तूँ मीठा लागै ।
दूजा खारा होइ सब, सूता जिव जागै ॥ १९ ॥

जे साहिब कौं भावै नहीं, सो हम थैं जिनि होइ । (९-२)
सतगुर लाजै आपणा, साध न मानै कोइ ॥ २० ॥

ज्यौं आपै देखै आप कौं, सो नैना दे मुझ ।
मीराँ मेरा मेहर करि, दादू देखै तुझ ॥ २१ ॥

---

* छीण । †कैदी । ‡हे मालिक । §कालिख ।

दादू पछितावा रह्या, सके न ठाहर लाइ ।
अरथि न आया राम के, यहु तन यौंही जाइ ॥ २२ ॥
कहताँ सुणताँ दिन गये, ह्वै कछू न आवा । (१३-१०७)
दादू हरि की भगति बिन, प्राणी पछितावा ॥ २३ ॥
सो कुछ हम थैं ना भया, जा परि रीझै राम । (१०-२९)
दादू इस संसार मैं, हम आये बेकाम ॥ २४ ॥
(दादू कहै) दिन दिन नौतम भगति दे, दिन दिन नौतम नाँव ।
दिन दिन नौतम नेह दे, मैं बलिहारी जाँव ॥ २५ ॥
साइँ सत संतोष दे, भाव भगति बेसास । (१९-५८)
सिदक सबूरी साच दे, माँगै दादूदास ॥ २६ ॥
साइँ संसय दूरि करि, करि संक्या का नास ।
भानि भरम दुबिध्या दुख दारुण, समता सहज प्रकास ॥ २७ ॥
नाहीं परगट ह्वै रह्या, है सो रह्या लुकाइ ।
सइयाँ पड़दा दूरि करि, तूँ ह्वै परगट आइ ॥ २८ ॥
(दादू) माया परगट ह्वै रही, यौं जे होता राम ।
अरस परस मिलि खेलते, सब जिव सबही ठाम ॥ २९ ॥
दया करै तब अंगि लगावै, भगति अखंडित देवै ।
दादू दरसन आप अकेला, दूजा हरि सब लेवै ॥ ३० ॥
(दादू) साध सिखावैं आतमा, सेवा दिढ़ करि लेहु ।
पारब्रह्म सौं बीनती, दया करि दर्सन देहु ॥ ३१ ॥
साहिब साध दयाल हैं, हम हीं अपराधी ।
दादू जीव अभागिया, अविध्या साधी ॥ ३२ ॥
सब जिव तोरैं राम सौं, पै राम न तोरै ।
दादू काचे ताग ज्यौं, टूटै त्यौं जोरै ॥ ३३ ॥

फूटा फेरि सँवारि करि, ले पहुँचावै ओर[*]।
ऐसा कोई ना मिलै, दादू गई वहोर[†] ॥ ३४ ॥
ऐसा कोई ना मिलै, तन फेरि सँवारै।
बूढ़े थैं बाला करै, षै[‡] काल निवारै ॥ ३५ ॥
गलै बिलै करि बीनती, एकमेक अरदास[§]।
अरस परस करुणा करै, तब दरवै दादूदास ॥ ३६ ॥
साईं तेरे डर डरूँ, सदा रहूँ भैभीत।
अजा सिंह ज्यौं भय घणा, दादू लीया जीत ॥ ३७ ॥
(दादू) पलक माहिं प्रगटै सही, जे जन करै पुकार।
दीन दुखी तब देखि करि, अति आतुर तिहिं बार ॥ ३८ ॥
आगै पीछै सँगि रहै, आप उठाये भार।
साध दुखी तब हरि दुखी, ऐसा सिरजनहार ॥ ३९ ॥
सेवग की रष्या करै, सेवग की प्रतिपाल।
सेवग की बाहर[||] चढ़ै, दादू दीन दयाल ॥ ४० ॥
(दादू) काया नाव समंद मैं, औघट बूड़ै आइ।
इहि औसर एक अगाध बिन, दादू कौन सहाइ ॥ ४१ ॥
यहु तन भेरा[¶] भौजला, क्यौंकरि लंघै तीर।
खेवट बिन कैसैं तिरै, दादू गहिर गँभीर ॥ ४२ ॥
प्यंड परोहन[¶] सिंध जल, भौसागर संसार।
राम बिना सूझै नहीं, दादू खेवणहार ॥ ४३ ॥
यहु घट बोहिथ[¶] धार मैं, दरिया वार न पार।
भैभीत भयानक देखि करि, दादू करी पुकार ॥ ४४ ॥

---

*किनारे। †समय। ‡क्षय। §प्रार्थना—"अरदास" फ़ारसी शब्द "अर्ज़दाश्त" का अपभ्रंश है। ||सहायता, मदद। ¶बेड़ा, नाव।

कलिजुग घोर अँधार है, तिस का वार न पार।
दादू तुम बिन क्यौं तिरै, सम्रथ सिरजनहार ॥ ४५ ॥
काया के बसि जीव है, कसि कसि बंध्या माहिँ।
दादू आतम राम बिन, क्योँही छूटै नाहिँ ॥ ४६ ॥
(दादू)प्राणी बंध्या पंच सूँ, क्योँही छूटै नाहिँ।
नीधणि* आया मारिये, यहु जिव काया माहिँ ॥ ४७ ॥
(दादू कहै)तुम बिन धणी न धोरी† जिव का, यौँहीआवेजाइ।
जे तूँ साईँ सत्ति है, तौ बेगा प्रगटेहु आइ ॥ ४८ ॥
नीधणि आया मारिये, धणी न धोरी कोइ।
दादू सो क्योँ मारिये, साहिब सिर परि होइ ॥ ४९ ॥
राम बिमुख जुगि जुगि दुखी, लख चौरासी जीव।
जामै मरै जगि आवटै, राखणहारा पीव ॥ ५० ॥
समरथ सिरजनहार है, जे कुछ करै सो होइ।
दादू सेवग राखि ले, काल न लागै कोइ ॥ ५१ ॥
साईँ साचा नाँव दे, काल झाल मिटि जाइ।
दादू निरभै ह्वै रहै, कबहूँ काल न खाइ ॥ ५२ ॥
कोई नहिँ करतार बिन, प्राण उधारणहार।
जियरा दुखिया राम बिन, दादू इहि संसार ॥ ५३ ॥
जिन की रष्या तूँ करै, ते उबरे करतार।
जे त छाडे हाथ थैँ, ते डूबे संसार‡ ॥ ५४ ॥
राखणहारा एक तूँ, मारणहार अनेक।
दादू के दूजा नहीँ, तूँ आपै ही देख ॥ ५५ ॥

*विना स्वामी के। †मुरब्बी, रक्षक। ‡एक लिपि मैँ "संसार" की जगह "कालीधार" है।

(दादू)जग ज्वाला जम रूप है, साहिब राखणहार।
तुम बिच अंतर जिनि पड़ै, ता थैं करूँ पुकार ॥ ५६ ॥
जहँ तहँ बिषै बिकार थैं, तुम ही राखणहार।
तन मन तुम कौं सौंपिया, साचा सिरजनहार ॥ ५७ ॥
(दादू कहै)गरक* रसातल जात है, तुम बिन सब संसार।
कर गहि करता काढ़ि ले, दे अवलंब अधार ॥ ५८ ॥
(दादू) दौं लागी जग परजलै, घटि घटि सब संसार।
हम थैं कछू न होत है, तुम बरसि बुझावणहार ॥ ५९ ॥
(दादू) आतम जीव अनाथ सब, करतार उबारै।
राम निहोरा कीजिये, जिनि काहू मारै ॥ ६० ॥
अरस जिमीं औजूद मैं, तहाँ तपै अफताब।
सब जग जलता देखि करि, दादु पुकारै साध ॥ ६१ ॥
सकल भुवन सब आतमा, निरबिष करि हरि लेइ।
पड़दा है सो दूरि करि, कुसमल रहणि न देइ ॥ ६२ ॥
तन मन निर्मल आतमा, सब काहू की होइ।
दादू बिषै बिकार की, बात न बूझै कोइ ॥ ६३ ॥
समरथ धोरी† कंध धरि, रथ ले ओर निबाहि।
मारग माहिं न मेलिये, पीछैं बिड़द‡ लजाहि ॥ ६४ ॥
(दादू) गगन गिरै तब को धरै, धरती धर छंडै।
जे तुम छाडहु राम रथ, कंधा को मंडै ॥ ६५ ॥
(दादू)ज्यौं वै बरत गगन थैं टूटै, कहाँ धरणि कहँ ठाम।(७-३१)
लागी सुरत अंग थैं छूटै, सो कत जीवै राम ॥ ६६ ॥

*डूबा। †रक्षक। ‡प्रतिज्ञा।

अंतरजामी एक तूँ, आतम के आधार।
जे तुम छाडहु हाथ थैं, तौ कौण सँबाहणहार॥६७॥
तेरा सेवग तुम लगैं, तुम्ह हीं माथैं भार।
दादू डूबत रामजी, बेगि उतारौ पार॥ ६८ ॥
सत छूटा सूरातन गया, बल पौरिष भागा जाइ।
कोई धीरज ना धरै, काल पहूँता आइ॥ ६९ ॥
संगी थाके संग के, मेरा कुछ न बसाइ।
भाव भगति धन लूटिये, दादू दुखी खुदाइ॥ ७० ॥
दादू जियरे जक* नहीं, बिसराम न पावै।
आतम पाणी लूण ज्यौं, ऐसैं होइ न आवै॥ ७१ ॥
(दादू) तेरी खूबी खूब है, सब नीका लागै।
सुंदर सोभा काढ़ि ले, सब कोई भागै॥ ७२ ॥
तुम्ह हौ तैसी कीजिये, तौ छूटैंगे जीव।
हम हैं ऐसी जिनि करौ, मैं सदिकै जाऊँ पीव॥ ७३ ॥
अनाथौं का आसिरा, निरधाराँ आधार।
निर्धन का धन राम है, दादू सिरजनहार॥ ७४ ॥
साहिब दर दादू खड़ा, निसि दिन करै पुकार।
मीराँ मेरा मिहर करि, साहिब दे दीदार॥ ७५ ॥
दादू प्यासा प्रेम का, साहिब राम पिलाइ।
परगट प्याला देहु भरि, मिरतक लेहु जिवाइ॥ ७६ ॥
अल्ला आली नूर का, भरि भरि प्याला देहु।
हम कूँ प्रेम पिलाइ करि, मतवाला करि लेहु॥ ७७ ॥

---

*सुख, शांति।

तुम कूँ हम से बहुत हैं, हम कूँ तुम से नाहिं ।
दादू कूँ जिनि परिहरौ, तूँ रहु नैनहुँ माहिं ॥ ७८ ॥
तुम थैं तब हीं होइ सब, दरस परस दरहाल ।
हम थैं कबहुँ न होइगा, जे बीतहिं जुग काल ॥७९॥
तुम हीं थैं तुम्ह कूँ मिलै, एक पलक मैं आइ ।
हम थैं कबहुँ न होइगा, कोटि कलप जे जाहिं ॥८०॥
साहिब सूँ मिलि खेलते, होता प्रेम सनेह ।
दादू प्रेम सनेह बिन, खरी दुहेली* देह ॥ ८१ ॥
साहिब सूँ मिलि खेलते, होता प्रेम सनेह ।
परगट दरसन देखते, दादू सुखिया देह ॥ ८२ ॥
तुम कूँ भावै और कुछ, हम कुछ कीया और ।
मिहर करो तौ छूटिये, नहीं त नाहीं ठौर ॥ ८३ ॥
मुझ भावै सो मैं किया, तुझ भावै सो नाहिं ।
दादू गुनहगार है, मैं देख्या मन माहिं ॥ ८४ ॥
खुसी तुम्हारी त्यूँ करौ, हम तौ मानी हारि ।
भावै बंदा बकसिये, भावै गहि करि मारि ॥ ८५ ॥
(दादू) जे साहिब लेखा लिया, तौ सीस काटि सूली दिया ।
मिहरि मया करि फिलि† किया, तौ जीये जीये करि जिया ८६

इति बिनती को अंग समाप्त ॥ ३४ ॥

---

*बोझैल । †फ़िल=बख़्शिश—पं०चं०प्र०

३५–साखीभूत को अंग

(दादू)नमो नमो निरंजनं , नमस्कार गुर देवतः ।
बंदनं सर्व साधवा , प्रणामं पारंगतः ॥ १ ॥
सब देखणहारा जगत का , अंतरि पूरै साखि ।
दादू स्याबति सो सही , दूजा और न राखि ॥ २ ॥
माहीं थैं मुझ कौं कहै , अंतरजामी आप ।
दादू दूजा धंध है , साचा मेरा जाप ॥ ३ ॥
करता है सो करैगा , दादू साखीभूत ।
कौतिगहारा ह्वै रह्या , अणकरता अवधूत ॥ ४ ॥
आप अकेला सब करै , घट मैं लहरि उठाइ । (२१-२५)
दादू सिर दे जीव के , यूँ न्यारा ह्वै जाइ ॥ ५ ॥
आप अकेला सब करै , औरूँ के सिर देइ । (२१-२४)
दादू सोभा दास कूँ , अपणा नाँव न लेइ ॥ ६ ॥
(दादू)राजस करि उतपति करै , सातग करि प्रतिपाल ।
तामस करि परलै करै , निर्गुण कौतिगहार ॥ ७ ॥
(दादू)ब्रह्म जीव हरि आतमा , खेलैं गोपी कान्ह* ।
सकल निरंतरि भरि रह्या , साखीभूत सुजाण ॥ ८ ॥
(दादू) जामन मरणा सानि करि , यहु प्यंड उपाया ।
साईं दीया जीव कूँ , ले जग मैं आया ॥ ९ ॥
बिष अमृत सब पावक पाणी , सतगुर समझाया ।
मनसा बाचा कर्मणा , सोई फल पाया ॥ १० ॥

* कन्हैया, कृष्ण ।

(दादू)जाणै बूझै जीव सब , गुण औगुण कीजै ।
जानि बूझि पावकि पड़ै , दई दोस न दीजै ॥ १
मन हीं माहैं ह्वै मरै , जीवै मन हीं माहिं । (२५-
साहिब साखीभूत है , दादू दूसर नाहिं ॥ १२ ॥
बुरा भला सिर जीव के , होवै इसही माहिं ।
दादू कर्ता करि रह्या , सो सिर दीजै नाहिं ॥ १
कर्ता ह्वै करि कुछ करै , उस माहिं बँधावै ।
दादू उस कौं पूछिये , उत्तर नहिं आवै ॥ १४ ॥
सेवा सुकिरति सब गया , मैं मेरा मन माहिं । (१५-
दादू आपा जब लगैं , साहिब मानै नाहिं ॥ १५
(दादू) केई उतारैं आरती , केई सेवा करि जाहिं ।
केई आइ पूजा करैं , केई खुलावैं खाहिं ॥ १६
केई सेवग ह्वै रहे , केइ साधू संगति माहिं
केई आइ दरसन करैं , हम थैं होता नाहिं ॥ १७
ना हम करैं करावैं आरती , ना हम पियैं पिलावैं नी
करै करावै साइयाँ , दादू सकल सरीर ॥ १८
करै करावै साइयाँ , जिन दीया औजूद ।
दादू बंदा बीचि है , सोभा कूँ मौजूद ॥ १९ ॥
देवै लेवै सब करै , जिन सिरजे सब लोइ ।
दादू बंदा महल मैं , सोभा करै सब कोइ ॥
(दादू) जूवा खेलै जाणराइ , ता कौं लखै न कोइ ।
सब जग बैठा जीति करि , काहू लिप्त न होइ ॥ २१

इति साखीभूत को अंग समाप्त ॥ ३५ ॥

३९--बेली को अंग ॥

(दादू) नमो नमो निरंजनं, नमस्कार गुर देवतः।
बंदनं सर्व साधवा, प्रणामं पारंगतः ॥ १ ॥

(दादू) अमृत रूपी नाँव ले, आतम तत पोषै।
सहजैं सहज समाधि मैं, धरणी जल सोखै ॥ २ ॥

पसरै तीन्यूँ लोक मैं, लिपति नहीं धोखै।
सो फल लागै सहज मैं, सुंदर सब लोकै ॥ ३ ॥

दादू बेली आतमा, सहज फूल फल होइ।
सहज सहज सतगुर कहै, बूझै बिरला कोइ ॥ ४ ॥

जे साहिब सींचै नहीं, तौ बेली कुमिलाय।
दादू सींचै साइयाँ, तौ बेली बधती* जाइ ॥ ५ ॥

हरि तरवर तत आतमा, बेली करि बिस्तार।
दादू लागै अमर फल, कोइ साधू सींचणहार ॥ ६ ॥

दादू सूका रूखड़ा, काहे न हरिया होइ।
आपै सींचै अमी रस, सूफल फलिया सोइ ॥ ७ ॥

कदे न सूखै रूखड़ा, जे अमृत सींच्या आप।
दादू हरिया सो फलै, कछू न ब्यापै ताप ॥ ८ ॥

जे घट रोपै राम जी, सींचै अमी अघाइ।
दादू लागै अमर फल, कबहूँ सूकि न जाइ ॥ ९ ॥

हरि जल बरिखै बाहिरा, सूकै काया खेत। (१५-१०७)
दादू हरिया होइगा, सींचणहार सुचेत ॥ १० ॥

---

* बढ़ती।

(दादू) अमर बेलि है आतमा, खार समंदा माहिं ।
सूकै खारे नीर सौं, अमर फल लागै नाहिं ॥ ११ ॥
(दादू) बहु गुणवंती बेलि है, ऊगी कालर माहिं ।
सींचै खारे नीर सौं, ता थैं निपजै नाहिं ॥ १२ ॥
बहु गुणवंती बेलि है, मीठी धरती बाहि* ।
मीठा पाणी सींचिये, दादू अमर फल खाइ ॥ १३ ॥
अमृत बेली बाहिये*, अमृत का फल होइ ।
अमृत का फल खाइ करि, मुवा न सुणिये कोइ ॥ १४ ॥
(दादू) बिष की बेली बाहिये, बिष ही का फल होइ ।
बिष ही का फल खाइ करि, अमर नहीं कलि कोइ ॥ १५ ॥
सतगुर संगति नीपजै, साहिब सींचणहार ।
प्राण बिरष† पीवै सदा, दादू फलै अपार ॥ १६ ॥
दया धर्म का रूखड़ा, सत सौं बधता जाइ ।
संतोष सौं फूलै फलै, दादू अमर फल खाइ ॥ १७ ॥

इति बेली को अंग समाप्त ॥ ३६ ॥

---

*डालना । †वृक्ष ।

३७--अबिहड़* को अंग।

(दादू) नमो नमो निरंजनं, नमस्कार गुर देवतः।
बंदनं सर्व साधवा, प्रणामं पारंगतः॥ १॥
(दादू) संगी सोई कीजिये, जे कलि अजरावर होइ।
ना वहु मरै न बीछुटै, ना दुख व्यापै कोइ॥ २॥
(दादू) संगी सोई कीजिये, जे इस्थिर इहि संसार।
ना वहु खिरै न हम खपैं, ऐसा लेहु बिचार॥ ३॥
(दादू) संगी सोई कीजिये, सुख दुख का साथी।
दादू जीवण मरण का, सो सदा सँगाती॥ ४॥
(दादू) संगी सोई कीजिये, जे कबहूँ पलटि न जाइ।
आदि अंत बिहड़ै नहीं, ता सन यहु मन लाइ॥ ५॥
(दादू) माया बिहड़ै देखताँ, काया संग न जाइ। (१२-१५)
कृत्तम बिहड़ै बावरे, अजरावर ल्यौ लाइ॥ ६॥
दादू अबिहड़ आप है, अमर उपावणहार।
अबिनासी आपै रहै, बिनसै सब संसार॥ ७॥
दादू अबिहड़ आप है, साचा सिरजनहार।
आदि अंत बिहड़ै नहीं, बिनसै सब आकार॥ ८॥
दादू अबिहड़ आप है, अबिचल रह्या समाइ।
निहचल रमिता राम है, जे दीसै सो जाइ॥ ९॥
दादू अबिहड़ आप है, कबहूँ बिहड़ै नाहिं।
घटै बधै नहिं एक रस, सब उपजि खपै उस माहिं॥ १०॥
अबिहड़ अँग बिहड़ै नहीं, अपलट पलटि न जाइ।
दादू अघट एक रस, सब मैं रह्या समाइ॥ ११॥

*जिस से बिछोहा न हो; अमर।

कबहुँ न बिहड़े सो भला , साधू दिढ़-मति होइ । (१५-८६)
दादू हीरा एक रस , बाँधि गाँठड़ो सोइ ॥ १२ ॥
जेते गुण ब्यापैं जीव कौं , तेते तैं तजै रे मन ।
साहिब अपणे कारणे , भलो निबाह्यो पण* ॥ १३ ॥

इति अविहड़ को अंग समाप्त ॥ ३७ ॥

॥ इति दादू दयाल की साखी संपूर्ण समाप्त ॥

---
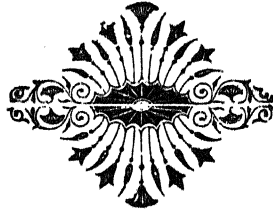
*केवल एक लिपि और एक पुस्तक में साखी नं० १३ की दूसरी कड़ी पूरी दी है औरों में "भलो निबाह्यो पण" नहीं है ।

संतबानी पुस्तकमाला

[जीवन-चरित्र हर महात्मा के उन की बानी के आदि में दिया है]

कबीर साहिब का साखी संग्रह ... ... १≈)
कबीर साहिब की शब्दावली, पहला भाग ... ... ॥।)
कबीर साहिब की शब्दावली, दूसरा भाग ... ... ॥।)
कबीर साहिब की शब्दावली तीसरा भाग ... ... ।=)
कबीर साहिब की शब्दावली, चौथा भाग ... ... ≡)
कबीर साहिब की ज्ञान-गुदड़ी, रेख़ते और झूलने ... ... ।≈)
कबीर साहिब की अखरावती ... ... =)
धनी धरमदास जी की शब्दावली ... ... ॥-)
तुलसी साहिब (हाथरस वाले) की शब्दावली भाग १ ... १≈)
तुलसी साहिब दूसरा भाग पद्मसागर ग्रंथ सहित ... ... १=)
तुलसी साहब का रत्नसागर ... ... १।-)
तुलसी साहिब का घट रामायन पहला भाग ... ... १॥)
तुलसी साहिब का घट रामायन दूसरा भाग ... ... १॥)
गुरु नानक की प्राण-संगली सटिप्पण पहला भाग ... १॥)
गुरु नानक की प्राण-संगली दूसरा भाग ... ... १॥)
दादू दयाल की बानी, भाग १ "साखी" ... ... १॥)
दादू दयाल की बानी, भाग २ 'शब्द" ... ... १)
सुन्दर बिलास ... ... १-)
पलटू साहिब भाग १—कुंडलियाँ ... ... ॥।)
पलटू साहिब भाग २—रेख़ते, झूलने, अरिल, कवित्त सवैया ... ॥।)
पलटू साहिब भाग ३—भजन और साखियाँ ... ... ॥।)
जगजीवन साहिब की बानी, पहला भाग ... ... ॥।-)
जगजीवन साहिब की बानी, दूसरा भाग ... ... ॥।-)
दूलन दास जी की बानी ... ... ।)॥

चरनदास जी की बानी, पहला भाग ... ... ॥।-)

चरनदास जी की बानी, दूसरा भाग ... ... ॥)

ग़रीबदास जी की बानी ... ... १।-)

रैदास जी की बानी ... ... ॥)

दरिया साहिब (बिहार) का दरिया सागर ... ... ।≡)॥

दरिया साहिब के चुने हुए पद और साखी ... ... ।-)

दरिया साहिब मारवाड़ वाले की बानी ... ... ।≡)

भीखा साहिब की शब्दावली ... ... ॥=)॥

गुलाल साहिब की बानी ... ... ॥=)

बाबा मलूकदास जी की बानी ... ... ।)॥

गुसाईं तुलसीदास जी की बारहमासी ... ... -)

यारी साहिब की रत्नावली ... ... =)

बुल्ला साहिब का शब्दसागर ... ... ।)

केशवदास जी की अमीघूँट ... ... -)॥

धरनी दास जी की बानी ... ... ।=)

मीरा बाई की शब्दावली ... ... ॥)

सहजो बाई का सहज-प्रकाश ... ... ।≡)॥

दया बाई की बानी ... ... ।)

संतबानी संग्रह, भाग १ साखी ... ... १॥)

प्रत्येक महात्माओं के संक्षिप्त जीवन-चरित्र सहित

संतबानी संग्रह, भाग २ (शब्द) ... ... १॥)

[ऐसे महात्माओं के संक्षिप्त जीवन-चरित्र सहित जो भाग १ में नहीं है]

कुल ३३।-)

अहिल्या बाई ... ... ≡)

दाम में डाक महसूल व रजिस्टरी शामिल नहीं है वह इसके ऊपर लिया जायगा—

मिलने का पता—

मैनेजर, बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद ।

हिन्दी पुस्तकमाला।

नवकुसुम—(प्रथम गुच्छ) इस पुस्तक में कई छोटी बड़ी कहानियाँ जो बड़ी रोचक और शिक्षाप्रद हैं संग्रहीत हैं। पढ़िये और और घरेलू ज़िन्दगी का आनन्द लूटिये। मूल्य ॥।)

सचित्र विनय पत्रिका—यह पुस्तक भी हिन्दी संसार में एक अमूल्य वस्तु है। इसकी टीका पं० महावीर प्रसाद मालवीय "वीर" ने बड़ी ही सरल भाषा में की है। इसमें ५ चित्र भी हैं। छपाई बड़े अक्षरों में बहुत ही सुन्दर हुई है। गोस्वामीजी की इस दुर्लभ पुस्तक का दाम मय टीका के सिर्फ़ २॥) है सजिल्द ३)

करुणा देवी—औरतों को पढ़ाइये, बहुत ही रोचक और शिक्षाप्रद उपन्यास है। मूल्य ॥=)

हिन्दी कवितावली—यह उत्तम कविताओं का संग्रह बालक बालिकाओं के लिये अत्यन्त उपयोगी है। मूल्य ~)

हिन्दी महाभारत—सरल शुद्ध हिन्दी में रंग विरंगे चित्रों के साथ अभी प्रकाशित हुआ है। सुन्दर कथा कथानकों के अतिरिक्त अन्त में इन्द्रप्रस्थ और हस्तिनापूर के राजाओं की एक विस्तृत वंशावली भी दी गई है। पढ़ने पर आप स्वयं प्रशंसा करने लगेंगे। सर्व साधारण को इस धार्मिक एवं ऐतिहासिक। ग्रन्थ का प्रचार होने के लिये, केवल लागत मात्र मूल्य ३)

गीता—(पाकेट एडिशन) श्लोक और उनका सरल हिन्दी में अनुवाद है। अन्त में गूढ़ शब्दों का कोश भी है। मूल्य ॥।≈)

उतर ध्रुव की भयानक यात्रा—(सचित्र) इस उपन्यास को पढ़ कर देखिये कैसी अच्छी सैर है। मूल्य ॥)

सिद्धि—यथा नाम तथा गुणः। पढ़िये और अपने अनमोल जीवन को सुधारिये। ॥)

महारानी शशिप्रभा देवी—क्या ही विचित्र उपन्यास है; स्त्रियों के लिये तो यह एक आदर्श है। इसमें यह दिखलाया गया है कि पति के सुख के लिये पत्नी ने किस तरह आत्म त्याग किया है। स्त्रियों को यह किताब १ दफ़े अवश्य पढ़नी चाहिये यह किताब एक बार हाथ में लेने से फिर रखने की इच्छा नहीं होती। मूल्य १।)

सचित्र द्रौपदी—पुस्तक में देवी द्रौपदी के जीवन चरित्र का अति उमत्त चित्र खींचा गया है। पुस्तक प्रत्येक भारतीय के लिये उपयोगी है। मूल्य ॥।)

कर्मफल—नया छपा है और क्या ही उत्तम उपन्यास है। मूल्य ॥।)

दुःख का मीठा फल—नाम ही से समझ लीजिये। मूल्य ॥)

सावित्री और गायत्री—पं० चन्द्रशेखर शास्त्री की लिखी है। लेखक के नाम ही से इसकी उपयोगिता प्रकट हो रही है। मूल्य ॥)

सचित्र रामचरित्रमानस—इस असली रामायण को बड़े रूप में टीका सहित हमने प्रकाशित किया है। भाषा बड़ी सरल और लालित्य पूर्ण है। यह रामायण १८ सुन्दर रंगीन चित्रों, मानस पिंगल और गोसाईं जी की जीवनी सहित है। पृष्ठ संख्या १४५०, मूल्य लागत मात्र केवल ८)

प्रेम-तपस्या—एक सामाजिक उपन्यास (प्रेम का सच्चा उदाहरण।) मूल्य ॥)

लोक परलोक हितकारी—इसमें कुल महात्माओं के उत्तम उपदेशों का संग्रह किया गया है। पढ़िये और अनमोल जीवन को सुधारिये। मूल्य सादे का ॥=) और सजिल्द १।)

विनय कोश—विनय पत्रिका के सम्पूर्ण शब्दों का अकारादि क्रम से संग्रह करके बिस्तार से अर्थ है। इस कोष को साथ रखने से साधारण मनुष्य भी विनय पत्रिका के कठिन पद्यों का अर्थ समझ सकता है और जिन लोगों के पास विनय पत्रिका मूल ही मूल है उन लोगों को तो उसकी एक प्रति अवश्य रखनी चाहिये इसके अतरिक्त यह एक उत्तम अर्थ कोष का भी काम देता है इसको पास रखने से किसी दूसरे हिन्दी कोष की आवश्यकता नहीं पड़ती। सजिल्द मूल्य २)

हनुमान बाहुक—प्रति दिन पाठ करने योग्य, मोटे मोटे अक्षरों में बहुत शुद्ध छपाया गया है। मूल्य ‒)॥

तुलसी ग्रन्थावली—तुलसीदास जी के बारहो ग्रन्थ शुद्धता-पूर्वक मोटे अक्षरों में छप रहे हैं और पाद टिप्पणी में कठिन शब्दों के अर्थ दिये गये हैं। शीघ्र ग्राहकों में नाम लिखाइये।

कवित्त रामायण—पं० रामगुलाम जी द्विवेदी कृत, पाद-टिप्पणी में कठिन शब्दों के अर्थ सहित छपी है। भक्ति रस की धारा बहती है। आप गद्गद हो जायँगे। मूल्य ।=)

मिलने का पता—

मैनेजर, बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद।

दादू दयाल की बानी

(पद्य)

[भाग २]

प्रकाशक

बेलवेडियर प्रेस, प्रयाग ।

मूल्य १।)

शब्द	पृष्ठ

ख

ग

शब्द पृष्ठ

घ

च

ज

शब्द				पृष्ठ

शब्द				पृष्ठ

शब्द				पृष्ठ
निरंजन यूँ रहै	...	...	...	१३५
निराकार तेरी आरती	...	...	...	१८९
नीके मोहन सैाँ प्रीति लाई	...	...	...	१२५
नीके राम कहत है बपुरा	...	...	...	३२
नीको धन हरि करि मैं जान्योाँ	...	...	...	४०
नूर नूर अव्वल आखिर नूर	...	...	...	१०१
नूर नैन भरि देखण दोजै	...	...	...	४६
नूर रह्या भरपूर	...	...	...	११२
नेटि रे माटी मैं मिलना	...	...	...	११८
न्यंदक बाबा बीर हमारा	...	...	...	१४०

प

पंडित राम मिलै सो कीजै	...	...	...	८२
पंथीड़ा पंथ पिछाणी रे पीव का	...	...	...	६३
पंथीड़ा बूझै बिरहणी	...	...	...	६३
परमारथ कौँ सब किया	...	...	...	१००
पहलै पहरै रैणि दै बणिजर्या	...	...	...	१८
पार नहिँ पाइये रे	...	...	...	६
पारब्रह्म भजि प्राणिया	...	...	...	१०७
पिव आव हमारे रे	...	...	...	३६
पिव देखे बिन क्यूँ रहौँ	...	...	...	१३४
पीव घरि आवनौँ ये	...	...	...	९३
पीवजी सेतीँ नेह नवेला	...	...	...	५१
पीव तैँ अपने काज सँवारे	...	...	...	४५
पीव पीव आदि अंत पीव	...	...	...	१०१
पीव हौँ कहा करौँ रे	...	...	...	५४
पूजौँ पहिली गणपतिराइ	...	...	...	३९
पूरि रह्या परमेसुर मेरा	...	...	...	२१

शब्द　　　　　　　　　　　　**पृष्ठ**

ब

भ

शब्द **पृष्ठ**

म

शब्द				पृष्ठ

शब्द				पृष्ठ

शब्द				पृष्ठ

शब्द				पृष्ठ

शब्द				पृष्ठ

शब्द पृष्ठ

गुजराती भाषा के शब्द

मरहठी भाषा के शब्द

पंजाबी भाषा के शब्द

फ़ारसी भाषा के शब्द

सिंधी भाषा के शब्द

दादू दयाल की बानी

भाग २—शब्द

॥ राग गौरी ॥

(१)

राम नाम नहिं छाडौं भाई ।
  प्राण तजौं निकट जिव जाई ॥ टेक ॥
रती रती करि डारै मोहिं ।
  जरै सरीर न छाडौं तोहि ॥ १ ॥
भावै ले सिर करवत दे ।
  जीवन मूरि न छाडौं ते ॥ २ ॥
पावक मैं ले डारै मोहिं ।
  जरै सरीर न छाडौं तोहि ॥ ३ ॥
इब दादू ऐसी बनि आई ।
  मिलौं गोपाल निसाण बजाई ॥ ४ ॥

(२)

राम नाम जिनि छाडै कोई ।
  राम कहत जन निर्मल होई ॥ १ ॥
राम कहत सुख संपति सार ।
  राम नाम तिरि लंघै पार ॥ २ ॥
राम कहत सुधि बुधि मति पाई ।
  राम नाम जिनि छाडौ भाई ॥ ३ ॥
राम कहत जन निर्मल होइ ।
  राम नाम कहि कुसमल धोइ ॥ ४ ॥

राम कहत को को नहिँ तारे ।
यहु तत दादू प्राण हमारे ॥ ५ ॥

(३)

मेरे मन भैया राम कहौ रे ॥ टेक ॥
राम नाम मोहिँ सहजि सुनावै ।
उनहिँ चरण मन कीन* रहौ रे ॥ १ ॥
राम नाम ले संत सुहावै ।
कोई कहै सब सीस सहौ रे ॥ २ ॥
वाही सौँ मन जोरे राखौ ।
नीके रासि लिये निबहौ रे ॥ ३ ॥
कहत सुनत तेरो कछू न जावै ।
पाप निछेदन† सोई लहौ रे ॥ ४ ॥
दादू रे जन हरि गुण गावो ।
कालहि जालहि फेरि दहौ रे ॥ ५ ॥

(४)

कौण बिधि पाइये रे , मीत हमारा सोइ ॥ टेक ॥
पास पीव परदेस है रे , जब लग प्रगटै नाहिँ ।
बिन देखे दुख पाइये , यहु सालै मन माहिँ ॥ १ ॥
जब लग नैन न देखिये , परगट मिलै न आइ ।
एक सेज संगहि रहै , यहु दुख सह्या न जाइ ॥ २ ॥
तब लग नेड़े दूरि है , जब लग मिलै न मोहिँ ।
नैन निकट नाहिँ देखिये , संगि रहे क्या होइ ॥ ३ ॥
कहा करौँ कैसे मिलै रे , तलफै मेरा जीव ।
दादू आतुर बिरहनी , कारण अपने पीव ॥ ४ ॥

---

*करे । †नाश करनेवाला ।

(५)

जियरा क्यौँ रहै रे, तुम्हरे दरसन बिन बेहाल ॥टेक॥
परदा अंतरि करि रहै, हम जीव केहि आधार।
सदा सँगाती प्रीतमा, अब के लेहु उबार ॥ १ ॥
गोप गोसाइँ ह्वै रहे, इब काहे न परगट होइ।
राम सनेही संगिया, दूजा नाहीं कोइ ॥ २ ॥
अंतरजामी छिपि रहे, हम क्यौँ जीवैँ दूरि।
तुम बिन ब्याकुल केसवा, नैन रहे जल पूरि ॥ ३ ॥
आप अपरछन ह्वै रहे, हम क्यौँ रैनि बिहाइ।
दादू दरसन कारणे, तलफि तलफि जिव जाइ ॥ ४ ॥

(६)

अजहूँ न निकसै प्राण कठोर ॥ टेक ॥
दरसन बिना बहुत दिन बीते, सुंदर प्रीतम मोर ॥१॥
चारि पहर चारौँ युग बीते, रैनि गँवाई भोर ॥२॥
अवधि गई अजहूँ नहिँ आये, कतहुँ रहे चित चोर ॥३॥
कबहूँ नैन निरखि नहिँ देखे, मारग चितवत तोर ॥४॥
दादू ऐसे आतुर बिरहणि, जैसे चंद चकोर ॥५॥

(७)

सो धन पिव जी साजि सँवारी।
इब बेगि मिलौ तन जाइ बनवारी ॥ टेक ॥
साजि सिँगार किया मन माहीँ।
अजहूँ पीव पतीजै नाहीँ ॥१॥
पीव मिलन को अहि निसि जागी।
अजहूँ मेरी पलक न लागी ॥ २ ॥
जतन जतन करि पंथ निहारौँ।
पिव भावै त्यौँ आप सँवारौँ ॥ ३ ॥

अब सुख दीजै जाउँ बलिहारी ।
कहै दादू सुणि बिपति हमारी ॥ ४ ॥

(८)

सो दिन कबहूँ आवैगा ।
दादूड़ा पिव पावैगा ॥ टेक ॥
क्यूँ ही अपणे अंगि लगावैगा ।
तब सब दुख मेरा जावैगा ॥ १ ॥
पिव अपणे बैन सुनावैगा ।
तब आनँद अंगि न मावैगा ॥ २ ॥
पिव मेरी प्यास मिटावैगा ।
तब आपहि प्रेम पिलावैगा ॥ ३ ॥
दे अपना दरस दिखावैगा ।
तब दादू मंगल गावैगा ॥ ४ ॥

(९)

तैं मन मोह्यौ मोर रे, रहि न सकौं हौं राम जी ॥टेक॥
तोरे नाँइ चित लाइया रे, औरनि भया उदास ।
साइँ ये समझाइया, हौं संग न छाडौं पास रे ॥ १ ॥
जाणौं तिलहि न बीछुटौं रे, जिनि पछतावा होइ ।
गुण तेरे रसना जपौं, सुणसी साइँ सोइ रे ॥ २ ॥
भोरैं* जनम गँवाइया रे, चीन्हा नहीं सो सार ।
अजहूँ येह अचेत है, और नहीं आधार रे ॥ ३ ॥
पिव की प्रीति तौ पाइये रे, जे सिर होवै भाग ।
यौ तौ अनत न जाइसी, रहसी चरणौं लाग रे ॥ ४ ॥
अनतैं मन निरवारिया रे, मोहिं एकै सेती काज ।
अनत गये दुख ऊपजै, मोहिं एकहि सेती राज रे ॥५॥

*भूल से ।

साइँ सौँ सहजैं रमौँ रे, और नहीं आन देव।
तहाँ मन बिलंबिया, जहाँ अलख अभेव रे॥ ६॥
चरन कवल चित लाइया रे, भोरैं* ही ले भाव।
दादू जन अचेत है, सहजैं ही तूँ आव रे॥ ७॥

(१०)

बिरहणि कौँ सिंगार न भावै। है कोइ ऐसा राम मिलावै।टेक
बिसरे अंजन मंजन चीरा। बिरह बिथा यहु ब्यापै पीरा॥१॥
नौसत† थाके सकल सिंगारा। है कोइ पीड़ मिटावनहारा॥२॥
देह ग्रेह नहिं सुद्धि सरीरा। निस दिन चितवत चात्रिग नीरा॥३
दादू ताहि न भावै आन। राम बिना भई मृतक समान॥४॥

(११)

इब तौ मोहिं लागी बाइ।
उन निहचल चित लियो चुराइ॥ टेक॥
आन न रुचै और नहिं भावै,
अगम अगोचर तहँ मन जाइ।
रूप न रेख बरण कहौं कैसा,
तिन चरणौं चित रह्या समाइ॥ १॥
तिन चरणौं चित सहजि समाना,
सो रस भीना तहँ मन धाइ,
अब तौ ऐसी बनि आई।
बिष तजै अरु अमृत खाइ॥ २॥
कहा करौं मेरा बस नाहीं,
और न मेरे अंगि सुहाइ।
पल इक दादू देखन पावै,
तौ जनम जनम की त्रिषा बुझाय॥ ३॥

---

*भोलेपन से। †सोलह।

(१२)

तूँ जिनि छाडै केसवा, मेरे ओर निबाहणहार हो।
औगुण मेरे देखि करि, तूँ ना कर मैला मन।
दीनानाथ दयाल है, अपराधी सेवग जन हो॥ १॥
हम अपराधी जनम के, नख सिख भरे बिकार।
मेटि हमारे औगुणाँ, तूँ गरवा सिरजनहार हो॥२॥
मैं जन बहुत बिगारिया, अब तुमहीं लेहु सँवारि।
समरथ मेरा साइयाँ, तूँ आपै आप उधारि हो॥ ३॥
तूँ न बिसारी केसवा, मैं जन भूला तोहि।
दादू को ओर निबाहि ले, अब जिनि छाडै मोहि हो॥४॥

(१३)

राम सँभालिये रे, बिषम दुहेली* बार॥ टेक॥
मंझि समंदा नावरी रे, बूड़े खेवट बाझ†।
काढ़नहारा को नहीं रे, एक राम बिन आज॥ १॥
पार न पहुँचै राम बिन, भेरा‡ भौजल माहिं।
तारणहारा एक तूँ, दूजा कोई नाहिं॥ २॥
पार परोहन§ तौ चलै, तुम खेवहु सिरजनहार।
भौसागर मैं डूबिहै, तुम बिन प्राण-अधार॥ ३॥
औघट दरिया क्योँ तिरै, बोहिथ§ बैसनहार।
दादू खेवट राम बिन, कौण उतारै पार॥ ४॥

(१४)

पार नहिं पाइये रे राम बिना को निरबाहणहार॥टेक॥
तुम बिन तारण को नहीं, दूभर‖ यहु संसार।
पैरत थाके केसवा, सूझै वार न पार॥ १॥

---

*कठिन। †बझ या फस कर। ‡बेड़ा, नाव। §नाव। ‖कठिन।

बिषम भयानक भौजला, तुम बिन भारी होइ ।
तूँ हरि तारण केसवा, दूजा नाहीं कोइ ॥ २ ॥
तुम बिन खेवट को नहीं, अतिर* तिरयो नहिं जाइ ।
औघट भेरा डूबि है, नाहीं आन उपाइ ॥ ३ ॥
यहु घट औघट बिषम है, डूबत माहिं सरीर ।
दादू काइर राम बिन, मन नाहिं बाँधै धीर ॥ ४ ॥

(१५)

क्योँ हम जीवैं दास गुसाईं । जे तुम छाडौ समरथ साईं ॥टेक
जे तुम जन को मनहिं बिसारा । तौ दूसर कौण सँभालनहारा १
जे तुम परिहरि रहौ निनारे । तौ सेवग जाइ कौन के द्वारे ॥२॥
जे जन सेवग बहुत बिगारै । तौ साहिब गरवा† दोष निवारै ॥३
समरथ साईं साहिब मेरा । दादू दास दीन है तेरा ॥४॥

(१६)

क्योँ कर मिलै मो कौँ राम गुसाईं ।
यहु बिषिया मेरे बसि नाहीं ॥ टेक ॥
यहु मन मेरा दह दिसि धावै । नियरे राम न देखन पावै ॥१॥
जिभ्या स्वाद सबै रस लागे । इंद्री भोग बिषै कौँ जागे ॥२॥
स्रवणहुँ साच कदे नहिं भावै । नैन रूप तहँ देखि लुभावै ॥३॥
काम क्रोध कदे नहिं छीजै । लालच लागि बिषै रस पीजै ॥४॥
दादू देखि मिलै क्योँ साईं । बिषै बिकार बसै मन माहिं ॥५॥

(१७)

जौ रे भाई राम दया नहिं करते ।
नवका नाँव खेवट हरि आपै, योँ बिन क्योँ निस्तरते ॥टेक॥
करनी कठिन होत नहिं मोपै, क्योँ कर ये दिन भरते ।
लालच लागि परत पावक मैँ, आपहि आपै जरते ॥१॥

---

*तैरने के योग्य नहीं, बोझैल । †गहिर गँभीर ।

स्वादहिँ संग बिषै नहिँ छूटै, मन निहचल नहिँ धरते।
खाय हलाहल सुख के ताईं, आपै ही पचि मरते ॥२॥
मैँ कामी कपटी क्रोध काया मैं, कूप परत नहिँ डरते।
करवत* काम सीस धरि अपने, आपहि आप बिहरते ॥३॥
हरि अपना अंग आप नहिं छाडै, अपनी आप बिचरते।
पिता क्यौं पूत कौं मारै, दादू यौं जन तरते ॥ ४ ॥

(१८)

तौ लगि जिनि मारै तूँ मोहिँ।
जौं लगि मैं देखौं नहिँ तोहिँ ॥ टेक ॥
इब के बिछुरे मिलन कैसे होइ।
इहि बिधि बहुरि न चीन्है कोइ ॥ १ ॥
दीनदयाल दया करि जोइ।
सब सुख आनँद तुम थैं होइ ॥ २ ॥
जनम जनम के बंधन खोइ।
देखण दादू अहि निसि रोइ ॥ ३ ॥

(१९)

संग न छाडौं मेरा पावन पीव।
मैं बलि तेरे जीवन जीव ॥ टेक ॥
संगि तुम्हारे सब सुख होइ।
चरण कँवल मुख देखौं तोहि ॥ १ ॥
अनेक जतन करि पाया सोइ।
देखौं नैनौं तौ सुख होइ ॥ २ ॥
सरणि तुम्हारी अंतरि बास।
चरण कँवल तहँ देहु निवास ॥ ३ ॥

---

* आरा।

अब दादू मन अनत न जाइ ।
अंतरि बेधि रह्यो ल्यौ लाइ ॥ ४ ॥

(२०)*

नहिं मेलूँ राम नहिं मेलूँ ।
मैं शोधि लीधो नहिं मेलूँ ।
चित तूँ सूँ बाँधूँ नहिं मेलूँ ॥टेक॥
हूँ तारे काजे ताला बेली ।
हवे केम मने जाशे मेली ॥ १ ॥
साहसी तूँ न मन सैँ गाढ़ौ ।
चरण समाना केवी पेरे काढ़ौ ॥ २ ॥
राखिश हृदे तूँ मारो स्वामी ।
मैं दुहिले पाम्यौँ अंतरजामी ॥ ३ ॥
हवे न मेलूँ तूँ स्वामी मारो ।
दादू सन्मुख सेवक तारो ॥ ४ ॥

(२१)

राम सुनहु न बिपति हमारी हो ।
तेरी मूरति की बलिहारी हो ॥ टेक ॥
मैं जु चरण चित चाहना । तुम सेवग साधारना ॥ १ ॥
तेरे दिन प्रति चरण दिखावना। करि दया अंतरि आवना ॥२॥
जन दादू बिपति सुनावना। तुम गोबिंद तपति बुझावना ॥३॥

---

*अर्थ शब्द २० गुजराती भाषा—न छोड़ूँ राम को न छोड़ूँ, मैं ने उस को खोज लिया न छोड़ूँ, चित्त को तुम से जोड़े रक्खूँ न छोड़ूँ ॥ टेक ॥

मैं तेरे ही लिये तलफता हूँ अब क्योंकर मुझे छोड़ कर जायगा ॥ १ ॥

तू शूर बीर है पर मन तेरा कठोर नहीं है तो जो तेरे चरन से लगा उसे कैसे हटावेगा ॥ २ ॥

तू मेरा स्वामी है मैं तुझे दिल के अंदर रक्खूँगा, मैं ने कठिनता से अंतरजामी को पाया है ॥ ३ ॥

अब अपने स्वामी को न छोड़ूँ, दादू तेरा सेवक सन्मुख का है ॥ ४ ॥

(२२)

प्रश्न—कौण भाँति भल मानै गुसाईं ।
तुम भावै सो मैं जानत नाहीं ॥ टेक ॥
कै भल मानै नाचैं गायैं ।
कै भल मानै लोक रिझायैं ॥ १ ॥
कै भल मानै तीरथ न्हायैं ।
कै भल मानै मूँड मुडायैं ॥ २ ॥
कै भल मानै सब घर त्यागी ।
कै भल मानै भये बैरागी ॥ ३ ॥
कै भल मानै जटा बधायैं* ।
कै भल मानै भसम लगायैं ॥ ४ ॥
कै भल मानै बन बन डोलैं ।
कै भल मानै मुखहिं न बोलैं ॥ ५ ॥
कै भल मानै जप तप कीयैं ।
कै भल मानै करवत लीयैं ॥ ६ ॥
कै भल मानै ब्रह्म गियानी ।
कै भल मानै अधिक धियानी ॥ ७ ॥
जे तुम भावै सो तुम्ह पै आहि ।
दादू न जाणै कहि समझाइ ॥ ८ ॥

॥ साखी ॥

उत्तर—(दादू) जे तूँ समझै तो कहौं, साचा एक अलेष ।
डाल पान तजि मूल गहि, क्या दिखलावै भेष ॥१॥ (१४-१०)
दादू सचु बिन साईं ना मिलै, भावै भेष बनाइ ।
भावै करवत उरध-मुखि, भावै तीरथ जाइ ॥२॥ (१४-४१)

---

*बढ़ाने से ।

(२३)

अहो गुण तोर औगुण मोर गुसाईं ।
तुम कृत कीन्हा सो मैं जानत नाहीं ॥ टेक ॥
तुम उपगार किये हरि केते, सो हम बिसरि गये ।
आप उपाइ अगिन मुख राखे, तहँ प्रतिपाल भये हो गुसाईं १
नखसिख साजि किये हो सजीवन, उदरि अधार दिये ।
अन्न पान जहँ जाइ भसम है, तहँ तैं राखि लिये हो गुसाईं ॥२
दिन दिन जानि जतन करि पोषे, सदा समीप रहे ।
अगम अपार किये गुण केते, कबहूँ नाहिं कहे हो गुसाईं॥३॥
कबहूँ नाहिंन तुम तन चितवत, माया मोह परे ।
दादू तुम तजि जाइ गुसाईं, बिषिया माहिं जरे हो गुसाईं॥४

(२४)

कैसे जीवियै रे, साईं संग न पास ।
चंचल मन निहचल नहीं, निस दिन फिरै उदास ॥टेक॥
नेह नहीं रे राम का, प्रीति नहीं परकास ।
साहिब का सुमिरण नहीं, करै मिलन की आस ॥ १ ॥
जिस देखे तूं फूलिया रे, पाणी प्यंड बधाना मास ।
सो भी जलि बलि जाइगा, झूठा भोग बिलास ॥ २ ॥
तो जिवने मैं जीवना रे, सुमिरै साँसै साँस ।
दादू परगट पिव मिलै, तो अंतरि होइ उजास ३ ॥

(२५)

जियरा मेरे सुमिर सार, काम क्रोध मद तजि बिकार ॥टेक॥
तूँ जिनि भूलै मन गँवार, सिर भार न लीजै मानि हार ॥१॥
सुणि समझायौ बारबार, अजहुँ न चेतै हो हुसियार ॥२॥
करि तैसैं भव तिरिये पार, दादू इब थैं यहि बिचार ॥ ३ ॥

(२६)

जियरा चेति रे, जिनि जारे।
हेजँ* हरि सौं प्रीति न कीन्ही, जनम अमोलिक हारे। टेक॥
बेर बेर समझायौ रे जियरा, अचेत न होइ गँवारे।
यहु तन है कागद की गुड़िया, कछु एक चेत विचारे॥१॥
तिल तिल तुझ कौं हाणि होत है, जे पल राम बिसारे।
भौ भारी दादू के जिय मैं, कहु कैसे करि डारे॥ २॥

(२७)

जियरा काहे रे मूढ़ डोलै।
बनवासी लाला पुकारै, तुहीं तुहीं करि बोलै॥ टेक॥
साथ सवारी लै न गयौ रे, चालण लागौ बोलै।
तब जाइ जियरा जाणैगो रे, बाँधे ही कोइ खोलै॥ १॥
तिल तिल माहैं चेत चली रे, पंथ हमारा तोलै।
गहिला दादू कछू न जाणै, राखि ले मेरे मौलै† ॥ २॥

(२८)

ना सुख कौं कहौ का कीजै।
जा थैं पल पल यहु तन छीजै॥ टेक॥
आसन कुंजर सिरि छत्र धरीजै।
ना थैं फिरि फिरि दुक्ख सहीजै॥ १॥
सेज सँवारि सुंदरि संगि रमीजै।
खाइ हलाहल भरम मरीजै॥ २॥
बहु बिधि भोजन मानि रुचि लीजै।
स्वाद संकुटि‡ भ्रम पासि परीजै॥ ३॥
ये तजि दादू प्राण पतीजै।
सब सुख रसना राम रमीजै॥ ४॥

---

*प्रेम के साथ। †मालिक। ‡संकट, कष्ट।

(२९)

मन निर्मल तन निर्मल भाई ।
आन उपाइ बिकार न जाई ॥ टेक ॥
जो मन कोइला तौ तन कारा ।
कोटि करै नहिं जाइ बिकारा ॥ १ ॥
जो मन बिसहर तौ तन भुवंगा ।
करै उपाइ बिषै फुनि संगा ॥ २ ॥
मन मैला तन उज्जल नाहीं ।
बहुत पचि हारे बिकार न जाहीं ॥ ३ ॥
मन निर्मल तन निर्मल होई ।
दादू साच बिचारै कोई ॥ ४ ॥

(३०)

मैं मैं करत सबै जग जावै, अज हूँ अंध न चेतै रे ।
यहु दुनिया सब देख दिवानी, भूलि गये हैं केते रे ॥टेक॥
मैं मेरे मैं भूलि रहे रे, साजन सोई बिसारा ।
आया हीरा हाथि अमोलिक, जनम जुवा ज्यूँ हारा ॥१॥
लालच लोभैं लागि रहे रे, जानत मेरी मेरा ।
आपहि आप बिचारत नाहीं, तूँ काको को तेरा ॥ २ ॥
आवत है सब जाता दीसै, इन मैं तेरा नाहीं ।
इन सौं लागि जनम जिन खोवै, सोधि देखु सचु माहीं ॥३॥
निहचल सौं मन मानै मेरा, साईं सौं बनि आई ।
दादू एक तुम्हारा साजन, जिन यहु भुरकी* लाई ॥४॥

३१

का जिवना का मरणा रे भाई ।
जो तैं राम न रमसि अघाई ॥ टेक ॥

*मंत्र।

का सुख संपति छत्र-पति राजा ।
बनखंडि जाइ बसे केहि काजा ॥ १ ॥
का बिद्या गुन पाठ पुराना ।
का मूरिष जो तैं राम न जाना ॥ २ ॥
का आसन करि अहि निसि जागे ।
का परि सोवत राम न लागे ॥ ३ ॥
का मुकता का बंधे होई ।
दादू राम न जाना सोई ॥ ४ ॥

(३२)

मन रे राम बिना तन छीजै ।
जब यहु जाइ मिलै माटी मैं, तब कहु कैसैं कीजै ॥टेक॥
पारस परसि कंचन करि लीजै, सहज सुरति सुखदाई ।
माया बेलि बिषै फल लागे, ता परि भूलि न भाई ॥१॥
जब लग प्राण प्यंड है नीका, तब लग ताहि जिनि भूलै ।
यहु संसार सैंबल* के सुख ज्यूँ, ता पर तूँ जिनि फूलै ॥२॥
औसर येह जानि जग जीवन, समझि देखि सचु पावै ।
अंग अनेक आन मति भूलै, दादू जिनि डहकावै† ॥३॥

(३३)

मोह्यो मृग देखि बन अंधा ।
सूझत नहीं काल के फंधा ॥ टेक ॥
फूल्यौ फिरत सकल बन माहीं ।
सिर साँधे सर सूझत नाहीं ॥ १ ॥

*सेंमर एक वृक्ष होता है जिस के बड़े सुंदर लाल फूल देख कर सुवा मगन होता है पर फल पर चोंच मारने से केवल रुई उसके भीतर से निकलती है।
†ठगावै ।

उदमद मातौ बन के ठाट ।
छाडि चल्यौ सब बारह बाट ॥ २ ॥
फँध्यो न जानै बन के चाइ ।
दादू स्वाद बँधानौ आइ ॥ ३ ॥

(३४)

काहे रे मन राम बिसारे ।
मनिषा जनम जाइ जिय हारे ॥ टेक ॥
मात पिता को बंध न भाई ।
सब ही सुपिना कहा सगाई ॥ १ ॥
तन धन जोबन झूठा जाणी ।
राम हृदै धरि सारँग प्राणी ॥ २ ॥
चंचल चित बित झूठी माया ।
काहे न चेतै सो दिन आया ॥ ३ ॥
दादू तन मन झूठा कहिये ।
राम चरण गहि काहे न रहिये ॥ ४ ॥

(३५)

ऐसा जनम अमोलिक भाई ।
जा मैं आइ मिलै राम राई ॥ टेक ॥
जा मैं प्राण प्रेम रस पीवै ।
सदा सुहाग सेज सुख जीवै ॥ १ ॥
आतम आइ राम सूँ राती ।
अखिल अमर धन पावै थाती ॥ २ ॥
परगट परसन दरसन पावै ।
परम पुरिष मिलि माहिं समावै ॥ ३ ॥
ऐसा जनम नहीं नर आवै ।
सो क्यौं दादू रतन गँवावै ॥ ४ ॥

(३६)

सतसंगति मगन पाइये ।
 गुर परसादैं राम गाइये ॥टेक॥
आकास धरनि धरीजै धरनी आकास कीजै ।
 सुन्नि माहैं निरखि लीजै ॥ १ ॥
निरखि मुकताहल माहैं साइर आयौ ।
 अपने पीया हौं धावत खोजत पायौ ॥ २ ॥
सोच साइर अगोचर लहिये ।
 देव देहरे माहैं कौन कहिये ॥ ३ ॥
हरि कौ हितारथ ऐसौ लखै न कोई ।
 दादू जे पीव पावै अमर होई ॥ ४ ॥

(३७)

कौन जनम कहँ जाता है अरे भाई ।
 राम छाँडि कहाँ राता है ॥ टेक ॥
मैं मैं मेरी इन सौं लागी ।
 स्वाद पतंग न सूझै आगी ॥ १ ॥
बिषिया सौं रत गरब्ब गुमान ।
 कुंजर काम बँधे अभिमान ॥ २ ॥
लोभ मोह मद माया फंध ।
 ज्यौं जल मीन न चेतै अंध ॥ ३ ॥
दादू यहु तन यौंही जाइ ।
 राम बिमुख मरि गये बिलाइ ॥ ४ ॥

(३८)

मन मूरिखा तैं क्या कीया, कुछ पीव कारणि बैराग न लिया ।
रे तैं जप तप साधी क्या किया* ॥ टेक ॥

*दो पुस्तकों में "दिया" है ।

रे तैं करवत कासी कदि सह्या, रे तैं गंगा माहिं ना बह्या।
रे तैं बिरहिण ज्यौं दुख ना सह्या ॥ १ ॥
रे तैं पाले परबत ना गल्या, रे तैं आप हि आपा ना दह्या।
रे तैं पीव पुकारी कदि कह्या ॥ २ ॥
होइ प्यासे हरि जल ना पिया, रे तैं बजर न फाटै रे हिया।
धिृग जीवन दादू ये जिया ॥ ३ ॥

(३९)

क्या कीजे मनिषा जनम कौं, राम न जपै गँवारा।
माया के मद मातौ बहै, भूलि रहा संसारा रे ॥ टेक ॥
हिरदे राम न आवई, आवै बिषै बिकारा रे।
हरि मारग सूझै नहीं, कूप परत नहिं बारा रे ॥ १ ॥
आपा अगिनि जु आप मैं, ता थैं अहि निसि जरै सरीरा रे।
भाव भगति भावै नहीं, पीवै न हरि जल नीरा रे ॥ २ ॥
मैं मेरी सब सूझई, सूझै माया जाला रे।
राम नाम सूझै नहीं, अंध न सूझै काला रे ॥ ३ ॥
ऐसेहिं जनम गँवाइया, जित आया तित जाय रे।
राम रसायण ना पिया, जन दादू हेत लगाय रे ॥ ४ ॥

(४०)

इन मैं क्या लीजे क्या दीजे, जनम अमोलिक छीजे ॥ टेक ॥
सोवत सुपना होई, जागे थैं नहिं कोई।
मृग तृष्णा जल जैसा, चेति देखि जग ऐसा ॥ १ ॥
बाजी भरम दिखावा, बाजीगर डहकावा।
दादू संगी तेरा, कोई नहीं किस केरा ॥ २ ॥

(४१)

खालिक जागे जियरा सोवै। क्यौंकरि मेला होवै ॥टेक॥
सेज एक नहिं मेला। ता थैं प्रेम न खेला ॥ १ ॥

साईं संग न पावा । सोवत जनम गँवावा ॥ २ ॥
गाफिल नींद न कीजै । आव घटै तन छीजै ॥ ३ ॥
दादू जीव अयाना । झूठे भरम भुलाना ॥ ४ ॥

(४२)

॥ पहरा ॥

पहलै पहरै रैणि दै बणिजारिया, तूँ आया इहि संसार वे ।
माया दा रस पीवण लग्गा, बिसर्या सिरजनहार वे ॥
सिरजनहार बिसारा किया पसारा, मात पिता कुल नारि वे ।
झूठी माया आप बँधाया, चेतै नहीं गँवार वे ॥
गँवार न चेते औगुण केते, बंध्या सब परिवार वे ।
दादू दास कहे बणिजारिया, तूँ आया इहि संसार वे ॥१॥
दूजै पहरै रैणि दै बणिजारिया, तूँ रत्ता तरुणी नाल वे ।
माया मोहि फिरै मतवाला, राम न सक्या सँभालि वे ॥
राम न सँभाले रत्ता नाले, अंध न सूझै काल वे ।
हरि नहिं ध्याया जनम गँवाया, दह दिसि फूटा ताल वे ।
दह दिसि फूटा नीर निखूटा, लेखा डेवण साल वे ॥
दादू दास कहै बणिजारिया, तूँ रत्ता तिरुणी नालि वे ॥२॥
तीजै पहिरै रैणि दै बणिजारिया, तैं बहुत उठाया भार वे ।
जो मन भाया सो करि आया, ना कुछ किया बिचार वे ॥
बिचार न कीया नाँव न लीया, क्योंकरि लंघै पार वे ।
पार न पावै फिरि पछितावै, डूबण लग्गा धार वे ॥
डूबण लग्गा भेरा भग्गा, हाथ न आया सार वे ।
दादू दास कहै बणिजारिया, तैं बहुत उठाया भार वे ॥३॥
चौथे पहरै रैणि दै बणिजारिया, तूँ पक्का हूवा पीर वे ।
जोबन गया जुरा बियापी, नाहीं सुद्धि सरीर वे ॥

सुद्धि न पाई रैणि गँवाई , नैनौं आया नीर वे ।
भौजल भेरा डूबण लग्गा , कोई न बंधै धीर वे ॥
कोइ धीर न बंधै जम के फंधै , क्यौंकरि लंघै तीर वे ।
दादूदास कहै बणिजारया , तूँ पक्का हूवा पीर वे ॥ ४ ॥

(४३)

काहे रे नर करौ डफाँड़* । अंति काल घर गोर मसाण ॥टेक॥
पहलै बलवँत गये बिलाइ । ब्रह्मा आदि महेसुर जाइ ॥१॥
आगैं होते मोटे मीर । गये छाडि पैगंबर पीर ॥ २ ॥
काची देह कहा गरबाना । जे उपज्या सो सबै बिलाना ॥३॥
दादू अमर उपावणहार । आपै आप रहै करतार ॥ ४ ॥

(४४)

इत घर चोर न मूसै कोई । अंतरि है जे जानै सोई ॥टेक॥
जागहु रे जन तत्त न जाइ । जागत है सो रह्या समाइ ॥१॥
जतन जतन करि राखहु सार । तसकरि† उपजै कौन बिचार २
इब करि दादू जाणै जे । तौ साहिब सरणागति ले ॥३॥

(४५)

मेरी मेरी करत जग षीन्हा‡ , देखत ही चलि जावै ।
काम क्रोध त्रिसना तन जालै , ता थैं पार न पावै ॥टेक॥
मूरिष ममिता जनम गँवावै , भूलि रहे इहि बाजी ।
बाजीगर कूँ जानत नाहीं , जनम गँवावै बादी ॥ १ ॥
परपँच पंच करै बहुतेरा , काल कुटँब के ताईं ।
बिष के स्वादि सबै ये लागे, ता थैं चीन्हत नाहीं ॥२॥
एता जिय मैं जाणत नाहीं, आइ कहाँ चलि जावै ।
आगैं पीछैं समझै नाहीं , मूरिख यौं डहकावै ॥ ३ ॥

---

*डिम्भ । †चोर । ‡छीन या नाश हुआ ।

(४८)

हुसियार रहो मन मारैगा , साईं सतगुर तारैगा ॥टेक॥
माया का सुख भावै , मूरिष मन बौरावै रे ॥ १ ॥
झूठ साच करि जाना , इन्द्री स्वाद भुलाना रे ॥ २ ॥
दुख कौं सुख करि मानै , काल झाल नहिं जानै रे ॥३॥
दादू कहि समझावै , यह औसर बहुरि न पावै रे ॥४॥

(४९)

साहिब जी सति मेरा रे । लोक झखैं बहुतेरा रे ॥ टेक॥
जीव जनम जब पाया रे । मस्तक लेख लिखाया रे ॥१॥
घटै बधै कुछ नाहीं रे । करम लिख्या उस माहीं रे ॥२॥
बिधाता बिधि कीन्हा रे । सिरजि सबन कौं दीन्हा रे ॥३॥
समरथ सिरजनहारा रे । सो तेरे निकटि गँवारा रे ॥४॥
सकल लोक फिरि आवै रे । तौ दादू दीया पावै रे ॥५॥

(५०)

पूरि रह्या परमेसुर मेरा । अणमाँग्या देवै बहुतेरा ॥टेक॥
सिरजनहार सहज मैं देइ । तौ काहे धाइ माँगि जन लेइ ॥१॥
बिसंभर सब जग कूँ पूरै । उदर काज नर काहे झूरै ॥२॥
पूरिक पूरा है गोपाल । सब की चीत करै दरहाल ॥३॥
समरथ सोई है जगनाथ । दादू देख रहै सँग साथ ॥४॥

(५१)

राम धन खात न खूटै* रे ।
अपरम्पार पार नहिं आवै, आथि† न टूटै रे ॥ टेक ॥
तस्करि लेइ न पावक जालै , प्रेम न छूटै रे ।
चहुँ दिसि पसर्यौ बिन रखवाले, चोर न लूटै रे ॥ १ ॥
हरि हीरा है राम रसाइण , सरस न सूकै रे ।
दादू और आथि† बहुतेरी , तुस‡ नर कूटै रे ॥ २ ॥

*घटै । †थैली । ‡भूसी ।

ये सब भरम भानि भल पावै, सोधि लेहु सो साईं ।
सोई एक तुम्हारा साजन , दादू दूसर नाहीं ॥ ४ ॥

(४६)

गरब न कीजिये रे , गरबैं होइ बिनास ।
गरबैं गोबिंद ना मिलै , गरबैं नरक निवास ॥ टेक ॥
गरबैं रसातलि जाइये , गरबैं घोर अँधार ।
गरबैं भैाजल डूबिये , गरबैं वार न पार ॥ १ ॥
गरबैं पार न पाइये , गरबैं जमपुर जाइ ।
गरबैं को छूटै नहीं , गरबैं बंधे आइ ॥ २ ॥
गरबैं भाव न ऊपजै , गरबैं भगति न होइ ।
गरबैं पिव क्यौं पाइये , गरब करे जिनि कोइ ॥ ३ ॥
गरबैं बहुत बिनास है , गरबैं बहुत बिकार ।
दादू गरब न कीजिये , सनमुख सिरजनहार ॥ ४ ॥

(४७)

तूँ है तूँ है तूँ है तेरा । मैं नहिं मैं नहिं मैं नहिं मेरा ॥ टेक ॥
तूँ है तेरा जगत उपाया , मैं मैं मेरा धंधै लाया ॥ १ ॥
तूँ है तेरा खेल पसारा , मैं मैं मेरा कहै गँवारा ॥ २ ॥
तूँ है तेरा सब संसारा , मैं मैं मेरा तिन सिर भारा ॥३॥
तूँ है तेरा काल न खाइ, मैं मैं मेरा मरि मरि जाइ ॥४॥
तूँ है तेरा रह्या समाइ , मैं मैं मेरा गया बिलाइ ॥ ५ ॥
तूँ है तेरा तुमहीं माहिं , मैं मैं मेरा मैं कुछ नाहिं ॥ ६ ॥
तूँ है तेरा तूँ हीं होइ , मैं मैं मेरा मिल्या न कोइ ।
तूँ है तेरा लंघै पार , दादू पाया ज्ञान बिचार ॥७॥

(४८)

हुसियार रहो मन मारैगा , साइँ सतगुर तारैगा ॥टेक॥
माया का सुख भावै , मूरिष मन बौरावै रे ॥ १ ॥
झूठ साच करि जाना , इन्द्री स्वाद भुलाना रे ॥ २ ॥
दुख कौं सुख करि मानै , काल झाल नहिं जानै रे ॥३॥
दादू कहि समझावै , यह औसर बहुरि न पावै रे ॥४॥

(४९)

साहिब जी सति मेरा रे । लोक झखैं बहुतेरा रे ॥ टेक॥
जीव जनम जब पाया रे । मस्तक लेख लिखाया रे ॥१॥
घटै बधै कुछ नाहीं रे । करम लिख्या उस माहीं रे ॥२॥
बिधाता बिधि कीन्हा रे । सिरजि सबन कौं दीन्हा रे ॥३॥
समरथ सिरजनहारा रे । सो तेरे निकटि गँवारा रे ॥४॥
सकल लोक फिरि आवै रे । तौ दादू दीया पावै रे ॥५॥

(५०)

पूरि रह्या परमेसुर मेरा । अणमाँग्या देवै बहुतेरा ॥टेक॥
सिरजनहार सहज मैं देइ । तौ काहे धाइ माँगि जन लेइ ॥१॥
बिसंभर सब जग कूँ पूरै । उदर काज नर काहे झूरै ॥२॥
पूरिक पूरा है गोपाल । सब की चींत करै दरहाल ॥३॥
समरथ सोई है जगनाथ । दादू देख रहै सँग साथ ॥४॥

(५१)

राम धन खात न खूटै* रे ।
अपरम्पार पार नहिं आवै, आथि† न टूटै रे ॥ टेक ॥
तस्करि लेइ न पावक जालै , प्रेम न छूटै रे ।
चहुँ दिसि पसर्यौ बिन रखवाले, चोर न लूटै रे ॥ १ ॥
हरि हीरा है राम रसाइण , सरस न सूकै रे ।
दादू और आथि† बहुतेरी , तुस‡ नर कूटै रे ॥ २ ॥

*घटै । †थैली । ‡भूसी ।

(५२)

राम बिमुख जग मरि मरि जाइ। जीवै संत रहै ल्यौ लाइ॥टेक
लीन भये जे आतम रामा। सदा सजीवन कीये नामा ॥१॥
अमृत राम रसायण पीया। ता थैं अमर कबीरा कीया ॥२॥
राम राम कहि राम समाना। जन रैदास मिले भगवाना॥३॥
आदि अंति केते कलि जागे। अमर भये अबिनासी लागे ॥४॥
राम रसायण दादू माते। अबिचल भये राम रँग राते ॥५॥

(५३)

निकटि निरंजन लागि रहे। तब हम जीवत मुकत भये ॥टेक
मरि करि मुकति जहाँ जग जाइ। तहाँ न मेरा मन पतियाइ॥१
आगैं जनम लहैं औतारा। तहाँ न मानै मना हमारा ॥२॥
तन छूटे गति जो पद होइ। मिरतक जीव मिलै सब कोइ॥३
जीवत जनम सुफल करि जाना। दादू राम मिले मन माना।४

(५४)

प्रश्न—कादिर* कुदरति लखी न जाइ।
कहँ थैं उपजै कहाँ समाइ ॥ १ ॥
कहँ थैं कीन्ह पवन अरु पाणी।
धरनि गगन गति जाइ न जानी ॥ २ ॥
कहँ थैं काया प्राण प्रकासा।
कहाँ पंच मिलि एक निवासा ॥ ३ ॥
कहँ थैं एक अनेक दिखावा।
कहँ थैं सकल एक ह्वै आवा ॥ ४ ॥
दादू कुदरति बहु हैराना।
कहँ थैं राखि रहे रहिमाना ॥ ५ ॥

*समरथ।

॥ साखी ॥

उत्तर—रहै नियारा सब करै, काहू लिप्त न होइ। (२१-३०)
आदि अंति भानै घड़ै, ऐसा समरथ सोइ॥
सुरम नहीं सब कुछ करै, यौं कलि धरी बणाइ। (२१-३१)
कौतिगहारा ह्वै रह्या, सब कुछ होता जाइ॥
(दादू) सबदैं बंध्या सब रहै, सबदैं ही सब जाइ। (२२-२)
सबदैं ही सब ऊपजै, सबदैं सबै समाइ॥

(५५)

ऐसा राम हमारे आवै।
वार पार कोइ अंत न पावै॥ टेक॥
हलका भारी कह्या न जाइ।
मोल माप नहिं रह्या समाइ॥ १॥
कीमति लेखा नहिं परिमाण।
सब पचि हारे साध सुजाण॥ २॥
आगौ पीछौ परिमित नाहीं।
केते पारिष आवहिं जाहीं॥ ३॥
आदि अंत मधि लखै न कोइ।
दादू देखे अचिरज होइ॥ ४॥

(५६)

प्रश्न—कौण सबद कौण परखणहार।
कौण सुरति कहु कौण बिचार॥ १॥
कौण सुज्ञाता कौण गियान।
कौण उनमनी कौण धियान॥ २॥
कौण सहज कहु कौण समाध।
कौण भगति कहु कौण अराध॥ ३॥
कौण जाप कहु कौण अभ्यास।
कौण प्रेम कहु कौण पियास॥ ४॥

सेवा कौण कहौ गुरदेव ।
दादू पूछै अलष अभेव ॥ ५ ॥

॥ साखी ॥

उत्तर–आपा मेटै हरि भजै, तन मन तजै बिकार। (२९-२)
निरबैरी सब जीव सौं, दादू यह मत सार ॥
आपा गर्ब गुमान तजि, मद मंछर हंकार। (२३-५)
गहै गरीबी बंदगी, सेवा सिरजनहार ॥

(५७)

प्रश्न–मैं नहिं जानूं सिरजनहार ।
ज्यौं है त्यौंही कहौ करतार ॥ १ ॥
मस्तक कहाँ कहाँ कर पाँय ।
अबिगत नाथ कहौ समझाय ॥ २ ॥
कहँ मुख नैनाँ स्रवनाँ साईं ।
जानराय सब कहौ गोसाईं ॥ ३ ॥
पेट पीठ कहाँ है काया ।
पड़दा खोलि कहौ गुर राया ॥ ४ ॥
ज्यौं है त्यौं कहि अंतर जामी ।
दादू पूछै सतगुर स्वामी ॥ ५ ॥

॥ साखी ॥

उत्तर–दादू सबै दिसा सौं सारिखा, सबै दिसा मुख बैन ।
सबै दिसा स्रवनहु सुणै, सबै दिसा कर नैन॥ (४-२१४)
सबै दिसा पग सीस है, सबै दिसा मन चैन ।
सबै दिसा सनमुख रहै, सबै दिसा अँग ऐन॥ (४-२१५)

(५८)

प्रश्न–अलख देव गुर देहु बताय ।
कहाँ रहौ त्रिभुवन पति राय ॥ १ ॥

धरती गगन बसहु कविलास ।
तीन लोक मैं कहाँ निवास ॥ २ ॥
जल थल पावक पवना पूर ।
चंद सूर निकटि कै दूर ॥ ३ ॥
मंदर कौण कौण घरबार ।
आसण कौण कहौ करतार ॥ ४ ॥
अलख देव गति लखी न जाइ ।
दादू पूछै कहि समझाइ ॥ ५ ॥

॥ साखी ॥

उत्तर–(दादू) मुझ ही माहैं मैं रहूँ, मैं मेरा घरबार ।
मुझ ही माहैं मैं बसूँ , आप कहै करतार ॥ (४-२१०)
(दादू) मैं ही मेरा अरस मैं, मैं ही मेरा थान ।
मैं ही मेरी ठौर मैं, आप कहै रहमान ॥ (४-२११)
(दादू) मैं ही मेरे आसरे, मैं मेरे आधार ।
मेरे तकिये मैं रहूँ, कहै सिरजनहार ॥ (४-२१२)
(दादू) मैं ही मेरी जाति मैं, मैं ही मेरा अंग ।
मैं ही मेरा जीव मैं, आप कहै परसंग ॥ (४-२१३)

(५६)

राम रस मीठा रे, कोइ पीवै साधु सुजाण ।
सदा रस पीवे प्रेम सौं, सो अविनासी प्राण ॥ टेक ॥
इहि रस मुनि लागे सबै, ब्रह्मा बिसुन महेस ।
सुर नर साधू संत जन , सो रस पीवै सेस ॥ १ ॥
सिधि साधिक जोगी जती, सती सबै सुखदेव ।
पीवत अंत न आवई, ऐसा अलख अभेव ॥ २ ॥
इहि रस राते नामदेव, पीपा अरु रैदास ।
पिवत कबीरा ना थक्या, अजहूँ प्रेम पियास ॥ ३ ॥

यहु रस मीठा जिन पिया, सो रस ही माहिँ समाइ ।
मीठे मीठा मिलि रह्या, दादू अनत न जाइ ॥ ४ ॥

(६०)

मेरा मन मतिवाला मधु पीवे, पीवे बारम्बारो रे ।
हरि रस राते राम के, सदा रहै इकतारो रे ॥ टेक ॥
भाव भगति भाठी भई, काया कसणी सारो रे ।
पोता मेरे प्रेम का, सदा अखंडित धारो रे ॥ १ ॥
ब्रह्म अगनि जोबन जरै, चेतनि चितहि उजासो रे ।
सुमति कलाली सारवे, कोइ पीवै बिरला दासो रे ॥ २ ॥
आपा धन सब सौंपिया, तब रस पाया सारो रे ।
प्रीति पियाले पीवहीं, छिन छिन बारंबारो रे ॥ ३ ॥
आपा पर नहिँ जाणिया, भूलो माया जालो रे ।
दादू हरि रस जे पिवै, ता कौँ कदे न लागै कालो रे ॥४॥

(६१)

रस के रसिया लीन भये । सकल सिरोमणि तहाँ गये ॥टेक॥
राम रसाइण अमृत माते । अबिचल भये नरक नहिँ जाते ॥१
राम रसाइण भरि भरि पीवै । सदा सजीवनि जुग जुग जीवै ॥२
राम रसाइण त्रिभुवन सार । राम रसिक सब उतरे पार ॥३॥
दादू अमली बहुरि न आये । सुख सागर ता माहिँ समाये ॥४॥

(६२)

भेष न रीझै मेरा निज भरतार ।
ता थैं कीजै प्रीति बिचार ॥ टेक ॥
दुराचारणि रचि भेष बनावै ।
सील साच नहिँ पिव क्यूँ* भावै ॥ १ ॥

---

*पं० चं० प्र० की पुस्तक और एक लिपि में "क्यूँ" की जगह "कौँ" है जो अशुद्ध जान पड़ता है ।

कंत न भावै करै सिँगार ।
डिंभपणैँ रीझै संसार ॥ २ ॥
जो पै पतिब्रता ह्वै है नारी ।
सो धन भावै पिवहिँ पियारी ॥ ३ ॥
पीव पहिचानै आन न कोई ।
दादू सोई सुहागनि होई ॥ ४ ॥

(६३)

सब हम नारी एक भरतार । सब कोई तन करै सिँगार ॥टेक
घरि घरि अपणे सेज सँवारै । कंत पियारे पंथ निहारै ॥१॥
आरति अपणे पिव कौं ध्यावै । मिलै नाह कब अंग लगावै ॥२
अति आतुर ये खोजत डोलैँ । बानि परी बियोगनि बोलैँ ॥३
सब हम नारी दादू दीन । देइ सुहाग काहू सँग लीन ॥४॥

(६४)

सोई सुहागनि साच सिँगार ।
तन मन लाइ भजै भरतार ॥ टेक ॥
भाव भगति प्रेम ल्यौ लावै ।
नारी सोई सार सुख पावै ॥ १ ॥
सहज सँतोष सील जब आया ।
तब नारी नाह अमोलिक पाया ॥ २ ॥
तन मन जोबन सौँपि सब दीन्हा ।
तब कंत रिझाइ आप बसि कीन्हा ॥ ३ ॥
दादू बहुरि बियोग न होई ।
पिव सूँ प्रीति सुहागनि सोई ॥ ४ ॥

(६५)

तब हम एक भये रे भाई ।
मोहन मिलि साची मति आई ॥ टेक ॥
पारस परसि भये सुखदाई ।
तब दुतिया दुरमति दूरि गमाई ॥ १ ॥
मलयागिरी मरम मिलि पाया ।
तब बंस बरण कुल भरम गँवाया ॥ २ ॥
हरि जल नीर निकटि जब आया ।
तब बूँद बूँद मिलि सहज समाया ॥ ३ ॥
नाना भेद भरम सब भागा ।
तब दादू एक रंगै रँग लागा ॥ ४ ॥

(६६)

अलह राम छूटा भ्रम मोरा ।
हिन्दू तुरक भेद कुछ नाहीं, देखौं दरसन तोरा ॥ टेक ॥
सोई प्राण प्यंड पुनि सोई, सोई लोही मासा ।
सोई नैन नासिका सोई , सहजैं* कीन्ह तमासा ॥ १ ॥
स्रवणौ सबद बाजता सुणिये, जिभ्या मीठा लागै ।
सोई भूख सबन कूँ ब्यापै, एक जुगुति सोइ जागै ॥ २॥
सोई संध बंध पुनि सोई, सोई सुख सोइ पीरा ।
सोई हस्त पाँव पुनि सोई, सोई एक सरीरा ॥ ३ ॥
यहु सब खेल खालिक हरि तेरा, तैं ही एक करि लीन्हा ।
दादू जुगुति जानि करि ऐसी, तब यहु प्राण पतीना ॥४॥

---

*दो लिपियों में "सहज" की जगह "माहिँ" है ।

(६७)

भाई रे ऐसा पंथ हमारा ।
द्वै पष रहित पंथ गहि पूरा, अबरण एक अधारा ॥टेक॥
बाद बिबाद काहू सौं नाहीं, माहिं जगत थैं न्यारा ।
समदृष्टी सुभाइ सहज मैं, आपहि आप बिचारा ॥ १ ॥
मैं तैं मेरी यहु मति नाहीं, निरबैरी निरबिकारा ।
पूरण सबै देखि आपा पर, निरालंभ निरधारा ॥ २ ॥
काहू के सँगि मोह न ममिता, संगी सिरजनहारा ।
मनहीं मन सूँ समझि सयाना, आनँद एक अपारा ॥३॥
काम कलपना कदे न कीजै, पूरण ब्रह्म पियारा ।
इहि पंथ पहुँचि पार गहि दादू, सो तत सहजि सँभारा ॥४

(६८)

ऐसो खेल बन्यौ मेरी माई ।
कैसे कहौं कछु जान्यौ न जाई ॥ टेक ॥
सुर नर मुनि जन अचिरज आई ।
राम चरण को भेद न पाई ॥ १ ॥
मंदर माहैं सुरति समाई ।
कोऊ है सो देहु दिखाई ॥ २ ॥
मनहिं बिचार करौ ल्यौ लाई ।
दीवा समाना जोति कहाँ छिपाई ॥ ३ ॥
देह निरंतर सुन्नि ल्यौ लाई ।
तहँ कौण रमै कौण सूता रे भाई ।
दादू न जाणै ये चतुराई ।
सोइ गुर मेरा जिन सुधि पाई ॥ ४ ॥

(६९)

भाई रे घर ही मैं घर पाया ।
सहजि समाइ रह्यौ ता माहीं, सतगुर खोज बताया ॥टेक
ता घर काज सबै फिरि आया, आपै आप लखाया ।
खोलि कपाट महल के दीन्हे, थिर अस्थान दिखाया ॥१॥
भय औ भेद भरम सब भागा, साच सोई मन लाया ।
प्यंड परे जहाँ जिव जावै, ता मैं सहज समाया ॥ २ ॥
निहचल सदा चलै नहिं कबहूँ, देख्या सब मैं सोई ।
ताही सूँ मेरा मन लागा, और न दूजा कोई ॥ ३ ॥
आदि अन्त सोई घर पाया, इब मन अनत न जाई ।
दादू एक रंगै रँग लागा, ता मैं रह्या समाई ॥ ४ ॥

(७०)

इत है नीर नहावन जोग ।
अनतहिं भर्म भूला रे लोग ॥ टेक ॥
तिहि तटि न्हाये निर्मल होइ ।
बस्तु अगोचर लखै रे सोइ ॥ १ ॥
सुघट घाट अरु तिरिबौ तीर ।
बैठे तहाँ जगत गुर पीर ॥ २ ॥
दादू न जाणै तिन का भेव ।
आप लखावै अन्तरि देव ॥ ३ ॥

(७१)

ऐसा ज्ञान कथौ मन* ज्ञानी ।
इहि घर होइ सहज सुख जानी ॥ टेक ॥
गंग जमुन तहँ नीर नहाइ ।
सुषमन नारी रंग लगाइ ॥ १ ॥

*एक लिपि और एक पुस्तक में "मन" की जगह "नर" है ।

आप तेज तन रह्यो समाइ ।
  मैं बलि ता की देखौं अघाइ ॥ २ ॥
बास निरंतर सो समझाइ ।
  बिन नैनहुँ देखि तहँ जाइ ॥ ३ ॥
दादू रे यहु अगम अपार ।
  सो धन मेरे अधर अधार ॥ ४ ॥

(७२)

इब तै। ऐसी बनि आई ।
  राम चरण बिन रह्यौ न जाई ॥ टेक ॥
साईं कूँ मिलिबे के कारण ।
  त्रिकुटी संगम नीर नहाई ।
चरण कँवल की तहँ ल्यौ लागे ।
  जतन जतन करि प्रीति बनाई ॥ १ ॥
जे रस भीना छावरि* जावै ।
  सुन्दरि सहजैं संगि समाई ।
अनहद बाजे बाजण लागे ।
  जिभ्या हीणे कीरति गाई ॥ २ ॥
कहा कहौं कुछ बरणि न जाई ।
  अविगति अंतरि जोति जगाई ।
दादू उन कै। मरम न जाणै ।
  आप सुरंगे बेन बजाई ॥ ३ ॥

*न्योछावर ।

(७३)

नीके राम कहत है बपुरा ।
घर माहैं घर निर्मल राखै, पंचौं धोवै काया कपरा ॥ टेक॥
सहज समरपण सुमिरण सेवा, तिरबेणी तट संजम सपरा।
सुन्दरि सन्मुख जागण लागी, तहँ मोहन मेरा मन पकरा ॥१
बिन रसना मोहन गुण गावै, नाना बाणी अनभै अपरा ।
दादू अनहद ऐसैं कहिये, भगति तत्त यहु मारग सकरा* ॥२॥

(७४)

अवधू कामधेनु गहि राखी ।
बसि कीन्ही तब अमृत सरवै, आगैं चारि† न नाखी ॥टेक॥
पोखंता पहली उठि गरजै, पीछैं हाथि न आवै ।
भूखी भलैं दूध नित दूणाँ, यौं या धेन दुहावै ॥ १ ॥
ज्यौं ज्यौं षीण पड़ै त्यौं दूझै, मुकती मेल्या मारै ।
घाटा रोकि घेरि घर आणै, बाँधी कारज सारै ॥ २ ॥
सहजैं बाँधी कदै न छूटै, करम बंधन छुटि जाई ।
काटै करम सहज सूँ बाँधै, सहजैं रहै समाई ॥ ३ ॥
छिन छिन माहिं मनोरथ पूरै, दिन दिन होइ अनंदा ।
दादू सोई देखताँ पावै, कलि अजरावर कंदा ॥ ४ ॥

(७५)

जब घट परगट राम मिले ।
आतम मंगलचार चहूँ दिसि ।
जनम सुफल करि जीति चले ॥ टेक ॥
भगती मुकति अभै करि राखे,
सकल सरोमणि आप किये ।

---

*तंग । †चारा ।

निरगुण राम निरंजन आपै ,
अजरावर उर लाइ लिये ॥ १ ॥
अपणे अंग संग करि राखे ,
निरभै नाँव निसाण बजावा ।
अबिगत नाथ अमर अबिनासी ,
परम पुरिष निज सो पावा ॥ २ ॥
सोई बड़ भागी सदा सुहागी ,
परगट प्रीतम संगि भये ।
दादू भाग बड़े बरबरि* करि ,
सो अजरावर जीति गये ॥ ३ ॥

(७६)

रमैया यहु दुख सालै मोहिं ।
सेज सुहागनि प्रीति प्रेम रस, दरसन नाहीं तोहिं ॥ टेक ॥
अंग प्रसंग एक रस नाहीं , सदा समीप न पावै ।
ज्योँ रस मैं रस बहुरि न निकसै, ऐसैँ होइ न आवै ॥१॥
आतम लीन नहीं निस बासुर, भगति अखंडित सेवा ।
सनमुष सदा परस्पर नाहीं, ता थैं दुख मोहिं देवा ॥२॥
मगन गलित महा रस माता , तूँ है तब लग पीजै ।
दादू जब लग अंत न आवै , तब लग देखण दीजै ॥३॥

(७७)

गुरमुख पाइये रे, ऐसा ज्ञान बिचार ।
समझि समझि समझ्या नहीं , लागा रंग अपार ॥टेक॥
जाणि जाणि जाण्या नहीं, ऐसी उपजै आइ ।
बूझि बूझि बूझ्या नहीं, ढोरी† लाग्या जाइ ॥ १ ॥

---

*बराबर। †चैाँप।

ले ले ले लीया नहीं, हौंस रही मन माहिं ।
राखि राखि राख्या नहीं, मैं रस पीया नाहिं ॥ २ ॥
पाइ पाइ पाया नहीं, तेजैं तेज समाइ ।
करि करि कुछ कीया नहीं, आतम अंगि लगाइ ॥ ३ ॥
खेलि खेलि खेल्या नहीं , सन्मुख सिरजनहार ।
देखि देखि देख्या नहीं, दादू सेवग सार ॥ ४ ॥

(७८)

बाबा गुरमुख ज्ञाना रे , गुरमुख ध्याना रे ॥ टेक ॥
गुरमुख दाता गुरमुख राता , गुरमुख गवना* रे ।
गुरमुख भवना† गुरमुख छवना‡ , गुरमुख रवना§ रे ॥१॥
गुरमुख पूरा गुरमुख सूरा , गुरमुख बाणी रे ।
गुरमुख देणाँ गुरमुख लेणाँ , गुरमुख जाणी रे ॥२॥
गुरमुख गहिबा गुरमुख रहिबा, गुरमुख न्यारा रे ।
गुरमुख सारा गुरमुख तारा , गुरमुख पारा रे ॥ ३ ॥
गुरमुख राया गुरमुख पाया , गुरमुख मेला रे ।
गुरमुख तेजं गुरमुख सेजं , दादू खेला रे ॥ ४ ॥

(७९)

मैं मेरे मैं हेरा , मधि माहैं पिव नेरा ॥ टेक ॥
जहँ अगम अनूप अवासा , तहँ महा पुरिष का बासा ।
तहँ जानैगा जन कोई , हरि माहिं समाना सोई ॥१॥
अखंड जोति जहँ जागै , तहँ राम नाम ल्यौ लागै ।
तहँ राम रहै भरपूरा , हरि संगि रहै नहिं दूरा ॥२॥
तिरबेणी तटि तीरा , तहँ अमर अमोलिक हीरा ।
उस हीरे सूँ मन लागा , तब भरम गया भौ भागा ॥३॥

---

*चाल । †घर । ‡छप्पर । §रमण ।

दादू देख हरि पावा , हरि सहजैं संग लखावा ।
पूरण परम निधाना , निज निरखत हैाँ भगवाना ॥४॥

(८०)

मेरे मन लागा सकल करा , हम निस दिन हिरदै सो धरा ॥टेक
हम हिरदै माहैं हेरा , पिव परगट पाया नेरा ।
सो नेरे ही निज लीजे , तब सहजैं अमृत पीजै ॥ १ ॥
जब मन ही सूँ मन लागा, तब जाेति सरूपी जागा ।
जब जोति सरूपी पाया , तब अंतर माहिं समाया ॥ २ ॥
जब चित्तहिं चित्त समाना, हम हरि बिन और न जाना ।
जाना जीवनि सोई , इब हरि बिन और न कोई ॥३॥
जब आतम एकै बासा , पर आतम माहिं प्रकासा ।
परकासा पीव पियारा , सो दादू मीत हमारा ॥ ४ ॥

राग माली गौड़ी ।

(८१)

गोब्यंदे नाँउ तेरा जीवन मेरा , तारण भौ पारा ।
आगे इहि नाँइ लागे , संतनि आधारा ॥ टेक ॥
कर बिचार तत सार , पूरण धन पाया ।
अखिल नाँउ अगम ठाँउ , भाग हमारे आया ॥ १ ॥
भगति मूल मुकति मूल , भौजल निसतरणा ।
भरम करम भंजना भै , कलिबिष सब हरणा ॥ २ ॥
सकल सिधि नवै निधि , पूरण सब कामा ।
राम रूप तत अनूप , दादू निज नामा ॥ ३ ॥

(८२)

गोब्यंदे कैसैं तिरिये ।
नाव नाहीं खेव नाहीं , राम बिमुख मरिये ॥ टेक ॥
ज्ञान नाहीं ध्यान नाहीं , लै समाधि नाहीं ।
बिरहा बैराग नाहीं , पाँचौं गुण माहीं ॥ १ ॥
प्रेम नाहीं प्रीति नाहीं , नाँउ नाहीं तेरा ।
भाव नाहीं भगति नाहीं , काइर जिव मेरा ॥ २ ॥
घाट नाहीं बाट नाहीं , कैसे पग धरिये ।
वार नाहीं पार नाहीं , दादू बहु डरिये ॥ ३ ॥

(८३)

पिव आव हमारे रे ।
मिलि प्राण पियारे रे , बलि जाउँ तुम्हारे रे ॥ टेक ॥
सुनि सखी सयानी रे , मैं सेव न जानी रे ।
हौं भई दिवानी रे ॥ १ ॥
सुनि सखी सहेली रे , क्यौं रहूँ अकेली रे ।
हौं खरी दुहेली रे ॥ २ ॥
हौं करूँ पुकारा रे , सुन सिरजनहारा रे ।
दादू दास तुम्हारा रे ॥ ३ ॥

(८४)

बाला सेज हमारी रे , तूँ आव हौं वारी रे ।
हौं दासी तुम्हारी रे ॥ टेक ॥
तेरा पंथ निहारूँ रे , सुन्दर सेज सँवारूँ रे ।
जियरा तुम पर वारूँ रे ॥ १ ॥
तेरा अँगना पेखौं रे , तेरा मुखड़ा देखौं रे ।
तब जीवन लेखौं रे ॥ २ ॥

मिलि सुखड़ा दीजै रे, यह लाहड़ा* लीजै रे।
तुम देखैं जीजै रे ॥ ३ ॥
तेरे प्रेम की माती रे, तेरे रगड़े राती रे।
दादू वारणै जाती रे ॥ ४ ॥

(८५)

दरबार तुम्हारे दरदवंद पिव पीव पुकारै।
दीदार दरूनै दीजिये, सुनि खसम हमारे ॥ टेक ॥
तनहा† केतनि पीर है, सुनि तूँहीं निवारै।
करम करीमा कीजिये, मिलि पीव पियारे ॥ १ ॥
सूल‡ सुलाकौं§ सौ सहूँ, तेग‖ तन मारै।
मिलि साईं सुख दीजिये, तूँहीं तुँ सँभारै ॥ २ ॥
मैं सुहदा¶ तन सोखता**, बिरहा दुख जारै।
जिव तरसै दीदार कूँ, दादू न बिसारै ॥ ३ ॥

(८६)

सइयाँ तूँ है साहिब मेरा, मैं हूँ बंदा तेरा ॥ टेक ॥
बंदा बरदा†† चेरा तेरा, हुकमी मैं बेचारा।
मीराँ मिहरबान गोसाईं, तूँ सिरताज हमारा ॥ १ ॥
गुलाम तुम्हारा मुल्लाजादा‡‡, लौंडा घर का जाया।
राजिक§§ रिजक‖‖ जीव तैं दीया, हुकम तुम्हारे आया ॥२॥
सादिल बै¶¶ हाजिर बंदा, हुकम तुम्हारे माहीं।
जबहिं बुलाया तबहीं आया, मैं मैवासी नाहीं*** ॥ ३ ॥
खसम हमारा सिरजनहारा, साहिब समरथ साईं।
मीराँ मेरा मिहर दया करि, दादू तुम हीं ताईं ॥ ४ ॥

---

*लाभ। †अकेला। ‡दर्द। §सूराख़, ज़ख्म। ‖तलवार। ¶मस्त फ़क़ीर, अवधूत। **बदन जला हुआ। ††गुलाम, दास। ‡‡मुल्ला का जना। §§अन्नदाता। ‖‖जीविका। ¶¶जान दिल से बिका हुआ। ***मुझे कोई दूसरा ठिकाना नहीं है।

(८७)

मुझ थैं कुछ न भया रे, यहु यूँ हीं गया रे।
पछितावा रह्या रे ॥ टेक ॥
मैं सीस न दीया रे, भरि प्रेम न पीया रे।
मैं क्या कीया रे॥ १ ॥
हौं रंग न राता रे, रस प्रेम न माता रे।
नहिं गलित गाता* रे ॥ २ ।
मैं पीव न पाया रे, किया मन का भाया रे ।
कुछ होइ न आया रे ॥ ३ ॥
हौं रहौं उदासा रे, मुझ तेरी आसा रे ।
कहे दादूदासा रे ॥ ४ ॥

(८८)

मेरा मेरा छाडि गँवारा, सिर पर तेरे सिरजनहारा ।
अपने जीव बिचारत नाहीं, क्या ले गइला† बंस तुम्हारा ॥ टेक
तब मेरा कत‡ करता नाहीं, आवत है हँकारा§ ।
काल चक्र सौं खरी परी रे, बिसरि गया घर बारा ॥१॥
जाइ तहाँ का संयम कीजै, बिकट पंथ गिरधारा ।
दादू रे तन अपना नाहीं, तौ कैसैं भया संसारा ॥ २ ॥

(८९)

दादूदास पुकारै रे, सिर काल तुम्हारे रे ।
सर साँधे‖ मारै रे ॥ टेक ॥
जम काल निवारी रे, मन मनसा मारी रे ।
यहु जनम न हारी रे ॥ १ ॥

---

*जिस का शरीर (बिरह से) गल नहीं गया। †एक लिपि में गइला (=गया) की जगह गहिला (=मूर्ख) है। ‡मेरा कृत अर्थात मेरा किया हुआ। §पुकार, आवाज़। ‖तीर साध कर।

सुख नींद न सोई रे, अपणा दुख रोई रे ।
मन मूल न खोई रे ॥ २ ॥

सिरि भार न लीजी रे, जिसका तिस कूँ दीजी रे ।
इब ढील न कीजी रे ॥ ३ ॥

यहु औसर तेरा रे, पंथी जागि सबेरा रे।
सब बाट बसेरा रे ॥ ४ ॥

सब तरवर छाया रे, धन जोबन माया रे ।
यहु काची काया रे ॥ ५ ॥

इस भरम न भूली रे, बाजी देखि न फूली रे ।
सुख सागर झूली रे ॥ ६ ॥

रस अमृत पीजी रे, बिष का नाँउ न लीजी रे ।
कह्या सो कीजी रे ॥ ७ ॥

सब आतम जाणी रे, अपणा पीव पिछाणी रे ।
यहु दादू बाणी रे ॥ ८ ॥

(६०)

पूजौं पहिली गणपति राइ , पड़ि हौं पाँऊँ चरणौं धाइ ।
आगे होइ करि तीर लगावै, सहजौं अपणे बैन सुनाइ ।टेक॥
कहौं कथा कुछ कही न जाइ ,इक तिल मैं ले सबै समाइ ।
गुण हुं गहीर धीर तन देही , ऐसा समरथ सबै सुहाइ ॥१॥
जिसि दिसि देखूँ वोही है रे , आप रह्या गिर तरवर छाइ ।
दादू रे आगे क्या होवै, प्रीति पिया कर जोड़ि लगाइ ॥२॥

(६१)

नीको धन हरि करि मैं जान्यौं, मेरे अषई*ओई ।
आगे पीछे सोई है रे, और न दूजा कोई ॥ टेक ॥
कबहुँ न छाड़ौं संग पिया कौ, हरि के दरसन मोही ।
भाग हमारे जे हौं पाऊँ, सरनै आयौ तोही ॥ १ ॥
आनँद भयौ सखी जिय मेरे, चरण कमल कूँ जोई ।
दादू हरि कौ बावरो रे, बहुरि बियोग न होई ॥ २ ॥

(६२†)

बाबा मरदे मरदाँ गोइ, ए दिल पाक करदः दोइ ॥टेक॥
तर्क दुनियाँ दूर कर दिल, फ़र्ज़ फ़ारिग़ होइ ।
पैवस्त परवरदिगार सूँ, आक़िलाँ सिर सोइ ॥ १ ॥
मनि मुरदः हिर्स फ़ानी, नफ़्स रा पैमाल ।
बदी रा बरतर्फ़ करदः, नाँव नेकी ख़्याल ॥ २ ॥
ज़िन्दगानी मुरदः बाशद, कुंज क़ादिर कार ।
तालिबाँ रा हक़्क़ हासिल, पासबानी यार ॥ ३ ॥
मर्दि मर्दाँ सालिकाँ, सरि आशिक़ाँ सुलतान ।
हज़ूरी हुशियार दादू, इहै गो मैदान ॥ ४ ॥

---

*सर्वस्व । †शब्द ६२-टेक-मर्दों में मर्द उसी को कहना चाहिये जिसने दुई (द्वैत भाव) को निकाल कर अपने मन को शुद्ध कर लिया है ।

कड़ी १—सिद्धान्त बुद्धिमानों का यह है कि संसारी परपंच को दिल से हटाकर और कर्मों का लेखा चुका कर मालिक में लग जाना ।

कड़ी २—और आपा को मार कर, तृष्णा को हटाकर, मन का मर्दन कर, बदी को बहाकर, नेकी पर ध्यान रखना ।

कड़ी ३—और स्वार्थ से मर कर परमार्थ में जीना, ऐसे प्रेमी खोजियों का प्रीतम भाग बढ़ाता और उनकी आप रखवाली करता है ।

कड़ी ४—सतगुर ही मर्दों में मर्द और भक्त जन के सिरताज हैं, वे हर दम भगवंत के समीप गेंद खेलते हैं और सदा सावधान हैं ।

(९३)

ये सब चरित तुम्हारे मोहनाँ, मोहे सब ब्रह्मंड खंडा ।
मोहे पवन पाणी परमेसुर, सब मुनि मोहे रवि चंदा ॥ टेक॥
साइर सप्त मोहे धरणी धरा, अष्ट कुली पर्बत मेर मोहे ।
तीन लोक मोहे जगजीवन, सकल भवन तेरी सेव सोहे ॥१॥
सिव बिरंच नारद मुनि मोहे, मोहे सुर सब सकल देवा ।
मोहे इंद्र फुनिग* फुनि मोहे, मुनि मोहे तेरी करत सेवा ॥२॥
अगम अगोचर अपार अपरंपरा, को यहु तेरा चरित न जाने ।
ये सोभा तुमकौं सोहै सुंदर, बलि बलि जाऊँ दादू न जाने ३

(९४)

ऐसा रे गुर ज्ञान लखाया ।
आवै जाइ सो दृष्टि न आया ॥ टेक ॥
मन थिर करौंगा नाद भरौंगा ।
राम रमौंगा रसमाता ॥ १ ॥
अधर रहौंगा करम दहौंगा ।
एक भजौंगा भगवंता ॥ २ ॥
अलख लखौंगा अकथ कथौंगा ।
मही† मथौंगा गोब्यंदा ॥ ३ ॥
अगह गहौंगा अकह कहौंगा ।
अलह लहौंगा खोजंता ॥ ४ ॥
अचर चरौंगा अजर जरौंगा ।
अतिर तिरौंगा आनंदा ॥ ५ ॥
यहु तन तारौं बिषै निवारौं ।
आप उबारौं साधंता ॥ ६ ॥

---

*साँप । †मट्ठा ।–पं० चं० प्र० की पुस्तक में "मही" की जगह "एक ही" है ।

आऊँ न जाऊँ उनमनि लाऊँ ।
सहज समाऊँ गुणवंता ॥ ७ ॥
नूर पिछाणौँ तेजहि जाणौँ ।
दादू जोतिहि देखंता ॥ ८ ॥

(९५)

बंदे हाज़िराँ हज़ूर वे , अलह आले नूर वे ।
आशिक़ाँ रह सिदक़ स्याबत, तालिबाँ भरपूर वे* ॥टेक॥
औजूद मैँ मौजूद है , पाक परवरदिगार वे ।
देखले दीदार कूँ, गैब गोता मारि वे ॥ १ ॥
मौजूद मालिक तख़्त ख़ालिक, आशिक़ाँ रह ऐन† वे ।
गुज़र कर दिल मग़ूज़ भीतर , अजब है यहु सैन वे ॥२॥
अर्श ऊपर आप बैठा, दोस्त दाना यार वे ।
खोज कर दिल क़ब्ज़ करले, दरूनै दीदार वे ॥ ३ ॥
हुशियार हाज़िर चुस्त करदम, मीराँ मिहरबान वे ।
देखिले दरहाल दादू, आप है दीवान वे ॥ ४ ॥

(९६)

निर्मल तत निर्मल तत , निर्मल तत ऐसा ।
निर्गुण निज निधि निरंजन, जैसा है तैसा ॥ टेक ॥
उत्पति आकार नाहीं , जीव नाहीं काया ।
काल नाहीं कर्म नाहीं , रहिता राम राया ॥ १ ॥
सीत नाहीं घाम नाहीं , धूप नाहीं छाया ।
बाव‡ नाहीं बरन नाहीं , मोह नाहीं माया ॥ २ ॥
धरणी आकास अगम , चंद सूर नाहीं ।
रजनी निस दिवस नाहीं , पवना नाहिं जाहीं ॥ ३ ॥

---

*भक्तौँ का पंथ सत्य और स्थिर है और उन का प्रीतम सर्बसमरथ है। †भक्तौँ की राह नैन नगर हो कर चलती है। ‡एक लिपि और एक पुस्तक में "बान" है।

किरतम घट कला नाहीं, सकल रहित सोई।
दादू निज अगम निगम, दूजा नहिँ कोई ॥ ४ ॥

॥ राग कल्यान ॥

(९७)

मन मेरे कछु भी चेत गँवार।
पीछे फिर पछितावैगा रे, आवै न दूजी बार ॥ टेक ॥
काहे रे मन भूलो फिरत है, काया सोच बिचार।
जिन पंथूँ चलना है तुझ कूँ, सोई पंथ सँवारि ॥ १ ॥
आगैं बाट जु बिषम है मन रे, जैसी खाँडे की धार।
दादू दास तूँ साँईं सौँ सूत करि, कूड़े काम निवार ॥ २ ॥

(९८)

जग सौँ कहा हमारा। जब देख्या नूर तुम्हारा ॥ टेक ॥
परम तेज घर मेरा। सुख सागर माहिँ बसेरा ॥ १ ॥
झिलिमिलि अति आनंदा। पाया परमानंदा ॥ २ ॥
जोति अपार अनंता। खेलैं फाग बसंता ॥ ३ ॥
आदि अंति असथाना। दादू सो पहिचाना ॥ ४ ॥

॥ राग कान्हड़ा ॥

(९९)

दे दरसन देखन तेरा, तौ जिय जक* पावै मेरा ॥ टेक ॥
पिय तूँ मेरी बेदन जानै, हौँ कहा दुराऊँ† छानै‡।
मेरा तुम देखैं मन मानै ॥ १ ॥
पिय करक कलेजे माहीं, सो क्योंहीं निकसै नाहीं।
पिय पकरि हमारो बाँहीं ॥ २ ॥
पिय रोम रोम दुख सालै, इन पीरूँ पिंजर जालै§।
जिय जाता क्यूँहीं वालै ॥ ३ ॥

---

*चैन। †छिपाऊँ। ‡छिपा। §इस दर्द से बदन जला जाता है।

पिय सेज अकेली मेरी , मुझ आरति मिलणै तेरी ।
धन दादू वारी फेरी ॥ ४ ॥

(१००)

आव सलोने देखन दे रे ।
बलि बलि जाउँ बलिहारी तेरे ॥ टेक ॥
आव पिया तूँ सेज हमारी। निसदिन देखौँ बाट तुम्हारी ॥१
सब गुण तेरे औगुण मेरे। पीव हमारो आहि न ले रे ॥२॥
सब गुणवंता साहिब मेरा। लाड गहेला दादू केरा ॥३॥

(१०१)

आव पियारे मीत हमारे। निस दिन देखौँ पाँव तुम्हारे ॥टेक
सेज हमारी पीव सँवारी। दासि तुम्हारी सो धन वारी ॥१॥
जे तुझ पाऊँ अंगि लगाऊँ। क्यूँ समझाऊँ वारण जाऊँ ॥२
पंथ निहारूँ बाट सँवारूँ। दादू तारूँ तन मन वारूँ ॥३॥

(१०२)

आव वे सजणाँ आव, सिर पर धरि पाँव ।
जानी मैँडा जिंद असाडे ।
तूँ रावैँ दा राव वे सजणाँ आव ॥ टेक ॥
इत्थाँ उत्थाँ जित्थाँ कित्थाँ, हैाँ जीवाँ तो नाल वे ।
मीयाँ मैँडा आव असाडे ।
तूँ लालौँ सिर लाल वे सजणाँ आव ॥ १ ॥
तन भी डेवाँ मन भी डेवाँ, डेवाँ प्यंड पराण वे ।
सच्चा साँईँ मिलि इथाँईँ ।
जिन्द कराँ कुरबाण वे सजणाँ आव ॥ २ ॥
तूँ पाकौँ सिर पाक वे सजणाँ तूँ खूबैाँ सिर खूब ।
दादू भावै सजणाँ आवै ।
तूँ मीठा महबूब वे सजणाँ आव ॥ ३ ॥

(१०३)

दयाल अपने चरनन मेरो, चित लगाहु नीकैं ही करी ॥ टेक॥
नखसिख सुरति सरीर, तूँ नाँव रहौं भरी ॥ १ ॥
मैं अजाण मतिहीण, जम की पासी* थैं रहत हैं डरी ॥२॥
सबै दोष दादू के दूर करि, तुमही रहौ हरी ॥ ३ ॥

(१०४)

मनमति हीन धरै मूरिख मन ।
कछु समझत नाहीं ऐसैं जाइ जरै ॥ टेक ॥
नाँव बिसारि और चित राखै, कूड़े काज करै ।
सेवा हरि की मनहुँ न आनै, मूरिख बहुरि मरै ॥ १ ॥
नाँव संगम करि लीजै प्राणी, जम थैं कहा डरै ।
दादू रे जे राम सँभालै, सागर तीर तिरै ॥ २ ॥

(१०५)

पीव तैं अपने काज सँवारे ।
कोई दुष्ट दीन कौं मारण, सोई गहि तैं मारे ॥टेक॥
मेर समान ताप तन व्यापै, सहजैं ही सो टारे ।
संतन कौं सुखदाई माधौ, बिन पावक फँध जारे ॥१॥
तुम थैं होइ सबै बिधि समरथ, आगम सबै बिचारे ।
संत उबारि दुष्ट दुख दीन्हा, अंध कूप मैं डारे ॥ २ ॥
ऐसा है सिर खसम हमारे, तुम जीते खल हारे ।
दादू सौं ऐसैं निर्बाहिये । प्रेम प्रीति पिव प्यारे ॥ ३ ॥

(१०६)

काहू तेरा मरम न जाना रे, सब भये दीवाना रे ॥ टेक ॥
माया के रस राते माते, जगत भुलाना रे ।
को काहू का कह्या न मानै, भये अयाना रे ॥ १ ॥

---

*फाँसी ।

माया मोहे मुदित मगन, खानखानाँ रे ।
बिषिया रस अरस परस, साच ठाना रे ॥ २ ॥
आदि अंत जीव जंत, किया पयाना रे ।
दादू सब भरम भूले, देखि दाना रे ॥ ३ ॥

(१०७)

तूँ हीं तूँ गुरदेव हमारा । सब कुछ मेरे नाँव तुम्हारा ॥टेक॥
तुम हीं पूजा तुम हीं सेवा । तुम हीं पाती तुम हीं देवा ॥१॥
जोग जज्ञ तूँ साधन जापं । तुम हीं मेरे आपै आपं ॥२॥
तप तीरथ तूँ ब्रत असनाना । तुम हीं ज्ञाना तुम हीं ध्याना ॥३॥
बेद भेद तूँ पाठ पुराना । दादू के तुम प्यंड पराना ॥४॥

(१०८)

तूँ हीं तूँ आधार हमारे । सेवग सुत हम राम तुम्हारे ॥टेक॥
माइ बाप तूँ साहिब मेरा । भगति-हीन मैं सेवग तेरा ॥१॥
मात पिता तूँ बंधव भाई । तुम हीं मेरे सजन सहाई ॥२॥
तुम हीं तातं तुम हीं मातं । तुम हीं जातं तुम हीं नातं ॥३॥
कुल कुटंब तूँ सब परिवारा । दादू का तूँ तारणहारा ॥४॥

(१०९)

नूर नैन भरि देखण दीजे । अमी महा रस भरि भरि पीजै ॥टेक॥
अमृत धारा वार न पारा । निर्मल सारा तेज तुम्हारा ॥१॥
अजर जरंता अमी झरंता । तार अनंता बहु गुणवंता ॥२॥
झिलि मिलि साईं जोति गुसाईं । दादू माहीं नूर रहाईं ॥३॥

(११०)

ऐन एक सो मीठा लागै ।
जोति सरूपी ठाढ़ा आगै ॥ टेक ॥
झिलिमिलि करणा अजरा जरणा ।
नीझर झरणा तहँ मन धरणा ॥ १ ॥

निज निरधारं निर्मल सारं ।
तेज अपारं प्राण अधारं ॥ २ ॥
अगहा गहणाँ अकहा कहणाँ ।
अलहा लहणाँ तहाँ मिलि रहणाँ ॥ ३ ॥
निरसँध नूरं सकल भरपूरं ।
सदा हजूरं दादू सूरं ॥ ४ ॥

(१११)

तौ काहे की परवाह हमारे ।
राते माते नाँव तुम्हारे ॥ टेक ॥
झिलिमिलि झिलिमिलि तेज तुम्हारा ।
परगट खेलै प्राण हमारा ॥ १ ॥
नूर तुम्हारा नैनौं माहीं ।
तन मन लागा छूटै नाहीं ॥ २ ॥
सुख का सागर वार न पारा ।
अमी मही रस पीवणहारा ॥ ३ ॥
प्रेम मगन मतवाला माता ।
रंगि तुम्हारे जन दादू राता ॥ ४ ॥

॥ राग अड़ाना ॥

(११२)

भाई रे ऐसा सतगुर कहिये। भगति मुकति फल लहिये ॥टेक
अबिचल अमर अबिनासी। अठ सिधि नौ निधि दासी ॥१॥
ऐसा सतगुर राया । चारि पदारथ पाया ॥ २ ॥
अमी महा रस माता । अमर अभै पद दाता ॥ ३ ॥
सतगुर त्रिभुवन तारै । दादू पार उतारै ॥ ४ ॥

(११३)

भाई रे भानि घड़ै गुर मेरा । मैं सेवग उस केरा ॥ टेक॥
कंचन करिले काया । घड़ि घड़ि घाट निपाया* ॥ १ ॥
मुख दरपण माहिँ दिखावै । पिव परगट आणि मिलावै ॥२॥
सतगुर साचा धोवै, तौ बहुरि न मैला होवै ॥ ३ ॥
तन मन फेरि सँवारै । दादू कर गहि तारै ॥ ४ ॥

(११४)

भाई रे तेन्हैं रूड़ौ† थाये‡ । जे गुरमुख मारग जाये ॥टेक॥
कुसंगति परिहरिये । सत संगति अनुसरिये ॥ १ ॥
काम क्रोध नहिँ आणै । बाणी ब्रह्म बखाणै ॥ २ ॥
बिषिया थैं मन वारै । ते आपणपौ तारै ॥ ३ ॥
बिष मूकी§ अमृत लीधौ, दादू रूड़ौ कीधौ ॥ ४ ॥

(११५)

बाबा मन अपराधी मेरा । कह्या न मानै तेरा ॥ टेक ॥
माया मोह मद माता । कनक कामिनी राता ॥ १ ॥
काम क्रोध अहंकारा । भावै बिषे बिकारा ॥ २ ॥
काल मीच नहिँ सूझै । आतम राम न बूझै ॥ ३ ॥
समरथ सिरजनहारा । दादू करै पुकारा ॥ ४ ॥

(११६)

भाई रे यूँ बिनसै संसारा । काम क्रोध अहंकारा ॥टेक॥
लोभ मोह मैं मेरा । मद मंछर बहुतेरा ॥ १ ॥
आपा पर अभिमाना । केता गरब गुमाना ॥ २ ॥
तीन तिमिर नहिँ जाहीं । पंचौं के गुण माहीं ॥ ३ ॥
आतम राम न जाना । दादू जगत दिवाना ॥ ४ ॥

---

*सुलझाया, शुद्ध किया-पं०चं०प्र० †उत्तम । ‡होता है । §छोड़ कर ।

(११७)

भाई रे तब का कथसि गियाना। जब दूसर नाहीं आना॥टेक
जब तत्त हिं तत्त मिलाना। जहँ की तहँ ले साना ॥ १॥
जहँ का तहाँ मिलावा। ज्यूँ था त्यूँ होइ आवा ॥ २ ॥
संधै संधि मिलाई। जहाँ तहाँ थिति पाई ॥ ३ ॥
सब अँग सब हीं ठाहीं। दादू दूसर नाहीं ॥ ४ ॥

॥ राग केदारा ॥

(११८)*

मारा नाथ जी, तारो नाम लेवाड़ रे।
राम रतन हृदया माँ राखे।
　मारा वाहला जी, बिषया थी वारे॥ टेक ॥
वाहला वाणी ने मन माहैं मारे।
　चिंतवन तारो चित्त राखे।
स्रवण नेत्र आ इंद्री ना गुण।
　मारा माहेला मल ते नाखे ॥ १ ॥
वाहला जीवाड़े तो राम रमाड़े।
　मनैं जीव्याँ नो फल ये आपे।
तारा नाम बिना हूँ ज्याँ ज्याँ बंध्यो।
　जन दादू ना बंधन कापे ॥ २ ॥

*अर्थ शब्द ११८—मेरे नाथ जी, मुझको अपना नाम लेने की बुद्धि दो जिस करके राम रत्न मैं हृदय में रक्खूँ। मेरे प्यारे जी, बिषयों से मुझे बचाये रक्खो ॥टेक॥ प्यारे, मेरी वाणी और मन में मेरा चित्त तेरा ही चिंतवन रक्खे। सुनना देखना तो इन्द्रियों का गुण है, ते (तेरा चिंतवन) मेरे अंदर (मन) का मैल दूर करै॥ १ ॥ प्यारे, जो तू मुझे जिलाये तो राम ही के साथ खेलूँ, मुझे जीने का फल यही दे। तेरे नाम बिना मैं जहाँ २ बाँधा गया तहाँ दादू जैसे जन के (तेरा चिंतवन) बंधन काटे ॥ २ ॥—पं०चं०प्र०

(११९)

अरे मेरा सदा सँगाती रे राम, कारण तेरे ॥टेक॥
कंथा पहरूँ भसम लगाऊँ, बैरागिन ह्वै ढूँढूँ रे राम ॥१॥
गिरवर बासा रहूँ उदासा, चढ़ि सिर मेर पुकारूँ रे राम ॥२
यहु तन जालूँ यहु मन गालूँ, करवत सीस चढ़ाऊँ रे राम॥३
सीस उतारूँ तुम पर वारूँ, दादू बलि बलि जाइ रे राम॥४

(१२०)

अरे मेरा अमर उपावणहार रे।
खालिक आसिक तेरा ॥ टेक ॥
तुम सौं राता तुम सौं माता।
तुम सौं लागा रंग रे खालिक ॥ १ ॥
तुम सौं खेला तुम सौं मेला।
तुम सौं प्रेम सनेह रे खालिक ॥ २ ॥
तुम सौं लेणा तुम सौं देणा।
तुमहीं सौं रत होइ रे खालिक ॥ ३ ॥
खालिक मेरा आसिक तेरा।
दादू अनत न जाइ रे खालिक ॥ ४ ॥

(१२१)

अरे मेरा समरथ साहिब रे अल्ला, नूर तुम्हारा ॥ टेक ॥
सब दिसि देवै सब दिसि लेवै।
सब दिसि वार न पार रे अल्ला ॥ १ ॥
सब दिसि बक्ता सब दिसि सुरता।
सब दिसि देखणहार रे अल्ला ॥ २ ॥
सब दिसि करता सब दिसि हरता।
सब दिसि तारणहार रे अल्ला ॥ ३ ॥

तूँ है तैसा कहिये ऐसा ।
दादू आनँद होइ रे अल्ला ॥ ४ ॥

(१२२)*

हालु असाँ जो लाल रे, तोखे सब मालूम रे ॥ टेक ॥
मंझँ खामाँ मंझँ बराँ अला, मंझँ लागी बाहि रे ।
मंझँ मूँ रे मचु थियो अला, कहिं दरि करियाँ दाहँ रे ॥१॥
बिरह कसाई मूँ घरि अला, मंझँ बरे बाहि रे ।
सीखूँ करे कबाब जियँ अला, इयँ दादू जे हियाँव रे ॥२॥

(१२३)

पीव जी सेतीं नेह नबेला ।
अति मीठा मोहिं भावै रे ।
निस दिन देखौं बाट तुम्हारी ।
कब मेरे घरि आवै रे ॥ टेक ॥
आइ बणी है साहिब सेतीं ।
तिस बिन तिल क्यौं जावै रे ।
दासी कौं दरसन हरि दीजै ।
अब क्यों आप छिपावै रे ॥ १ ॥
तिल तिल देखौं साहिब मेरा ।
त्यौं त्यौं आनँद अंगि न मावै रे ।
दादू ऊपरि दया करी ।
कब नैनहुँ नैन मिलावै रे ॥ २ ॥

---

*अर्थ सिन्धी शब्द नं० १२२—हमारी जो दशा है हे प्यारे तुम सब जानते हो ॥ टेक ॥ हाय [अला] मैं अंतर में [मंझ] जल रहा हूँ [खामाँ] मैं अंतर में बल रहा हूँ [बराँ], मेरे अंतर में आग सुलग रही है । मेरे [मूँ] अंतर में लवर [मचु] उठ रही है [थियो], किस के द्वारे पर पुकार [दाहँ] करूँ ॥ १ ॥ बिरह रूपी कसाई मेरे घर में धसा है, मेरे अंतर में आग लगी है । जैसे [जियँ] कबाब को सीख़चे पर भूनते हैं तैसे [इयँ] दादू के कलेजे [हियाँव] की दशा है ।

(१२४)*

पीव घरि आवै रे, बेदन मारी जाणी रे ।
बिरह सँताप कोण पर कीजै, कहूँ छूँ दुख नी कहाणी रे ॥टेक
अंतरजामी नाथ मारो , तुज बिण हूँ सीदाणी रे ।
मंदिर मारे केम न आवै , रजनी जाइ बिहाणी रे ॥ १ ॥
तारी बाट हूँ जोइ थाकी , नेण निखूटचा पाणी रे ।
दादू तुज बिण दीन दुखी रे , तूँ साथी रह्यो छे ताणी रे ॥२॥

(१२५)†

कब मिलसी पीव गृह छाती, हूँ औराँ संग मिलाती ॥टेक॥
तिसज लागी तिसही केरी , जनम जनम नो साथी ।
मीत हमारा आव पियारा , ताहरा रँग नी राती ॥ १ ॥
पीव बिना मने नींद न आवे, गुण ताहरा लै गाती ।
दादू ऊपर दया मया करि , ताहरे वारणैँ जाती ॥ २ ॥
तलफि मरौँ कै झूरि मरौँ रे, कै हौँ बिरही रोइ मरौँ रे ।
टेरि कह्या मैँ मरण गह्या रे, दादू दुखिया दीन भया रे ॥३॥

---

*अर्थ गुजराती शब्द १२४—मेरी पीड़ा को जान कर पिया मेरे घर आवै तो उस से अपने दुख की कहानी कहूँ और किस से अपनी बिरह बिथा कहूँ ॥टेक॥ हे मेरे अंतर्जामी स्वामी तुझ बिन मैँ मुरझा रही हूँ मेरे घर क्योँ नहीँ आता रात बीती जाती है ॥ १ ॥ तेरा आसरा देखते देखते बिरहिन थक गई, आँखोँ का पानी सूख गया, वह तुझ बिन दीन दुखी हो रही है, और तू उस का साथी तन रहा है ॥ २ ॥

†अर्थ गुजराती शब्द १२५—पिया कब घर मिलैँगे कि औरोँ से भैँटना छोड़ कर उन को गले लगाऊँ ॥ टेक ॥ उसी की प्यास लग रही है जो मेरा जन्म जन्म का सँगाती है, हे मेरे प्यारे मीत आओ मैँ तेरे ही रंग मैँ रँगी हूँ ॥ १ ॥ हे पिया तेरे बिन मुझे नींद नहीँ आती तेरे ही गुन गाती हूँ, मुझ पर प्यार से दया कर मैँ तुझ पर बल बल [वारणे] जाती हूँ ॥ २ ॥ (पं०चं०प्र० के पाठ मैँ "वारणे"= "दरवाज़ा" लिखा है जो यहाँ ठीक नहीँ बैठता)

(१२६)*

माहरा रे वाहला ने काजे , रिदै जोवा ने हूँ ध्यान धरूँ ।
आकुल थाये प्राण माहरा , कोने कही पर करूँ ॥ टेक ॥
सँभाख्यो आवै रे वाहला , वेहला एहौँ जोइ ठरूँ ।
साथी जो साथै थइनि , पेली तीरे पार तरूँ ॥ १ ॥
पीव पाखे दिन दुहेला जाये , घड़ो बरसाँ सौँ केम भरूँ ।
दादू रे जन हरि गुण गाताँ , पूरण स्वामी ते वरूँ ॥२॥

(१२७)

मरिये मीत बिछोहे , जियरा जाइ अँदोहे† ॥ टेक ॥
ज्यौँ जल बिछुरैँ मीना , तलफि तलफि जिव दीन्हा ।
यौँ हरि हम सौँ कीन्हा ॥ १ ॥
चात्रिग मरै पियासा , निस दिन रहै उदासा ।
जीवै किहिँ बेसासा ॥ २ ॥
जल बिन कँवल कुमिलावै , प्यासा नीर न पावै ।
क्यौँकर त्रिषा बुझावै ॥ ३ ॥
मिलि जिनि बिछुरै कोई , बिछुरैँ बहु दुख होई ।
क्यौँ करि जीवै जन सोई ॥ ४ ॥
मरणा मीत सुहेला , बिछुरन खरा दुहेला ।
दादू पीव सौँ मेला ॥ ५ ॥

---

*अर्थ गुजराती शब्द १२६—अपने प्रीतम के दर्शन के लिये हृदय मेँ उस का ध्यान धरती हूँ, मेरा प्राण ब्याकुल होरहा है सो उस ब्याकुलता को किसे कह कर दूर [पर] करूँ ॥ टेक ॥ प्रीतम याद आता है [सँभाख्यो] उस को जल्दी देख कर शांत हूँ, और अपने संगी का संग गहिकर पल्ली पार होजाऊँ ॥ १ ॥ बिना [पाखे] प्रीतम के दिन कठिनता से कटता है घड़ी बरस के समान हो रही है उसे कैसे बिताऊँ, हरि का गुण गाता हुआ पूरे स्वामी ही को ब्याहूँ ॥ २ ॥ [पं०चं०प्र० ने "घड़ी बरसाँ सौँ केम भरूँ" के अर्थ योँ लिखे हैँ—घड़ी २ करके बरसैँ कैसे बिताऊँ]

†कष्ट ।

(१२८)

पीव हौं कहा करौं रे , पाँइ परौं कै प्राण हरौं रे ।
अब हौं मरणै नाहिं डरौं रे ॥ टेक ॥
गालि मरौं कै जालि मरौं रे , कै हौं करवत सीस धरौं रे ॥१
घाइ* मरौं कै खाइ मरौं रे , कै हौं कतहूँ जाइ मरौं रे ॥२॥
तलफि मरौं कै झूरि मरौं रे , कै हौं बिरही रोइ मरौं रे ॥३॥
टेरि कह्या मैं मरण गह्या रे , दादू दुखिया दीन भया रे ॥४॥

(१२९)†

वाहला हूँ जानूँ जे रँग भरि रमिये ,
मारो नाथ निमिष नहिं मेलूँ रे ।
अंतरजामी नाह न आवे , ते दिन आव्यो छेलो रे ॥ टेक॥
वाहला सेज हमारी ऐकलड़ो रे , तहँ तुझ ने केम न पामूँ रे ।
आ दत्त अमारो पूरबलो रे , तेतो आव्यो सामो रे ॥१॥
वाहला मारा रिदया भीतरि केम न आवे, मने चरण
बिलंबन दीजे रे ।
दादू तौ अपराधी तारो , नाथ उधारी लीजे रे ॥ २ ॥

---

*चोट ।

†अथ गुजराती शब्द १२९—प्यारे मैं चाहती हूँ कि तुम से भरपेट खेलूँ , अपने स्वामी को छिन भर भी न छोड़ूँ । जिस दिन अंतरजामी पति न आवे उस दिन को मेरा अंत जानो अर्थात प्रान तज दूँगो ॥टेक॥ [इस कड़ी का अर्थ पं० चन्द्रिका प्रसाद ने यों लगाया है—"अंतर्जामी पीव तो आया नहीं वह आखिरी दिन आगया"] प्यारे मेरी सेज सूनी है वहाँ तुमको क्यों नहीं पाती—यह मेरे पिछले कर्मों का फल है जो सामने आया ॥ १ ॥ प्यारे मेरे हृदय में क्यों नहीं आता मुझे अपने चरनों का सहारा दे [पं० चं० प्र० ने "बिलंबन"=अवलंब या सहारा के बदले "बिलंब न"= देर न लगाइये लिखा है । यदि "दीजे" की जगह "कीजे" होता तो यह अर्थ अधिक बैठता] दादू तुम्हारा गुनहगार है सो हे स्वामी तुमहीं उद्धार करो ॥ २ ॥

(१३०)*

तूँ छे मारो राम गुसाईं, पालवे तारे बाँधी रे ।
तुझ बिना हूँ आँतरे रवल्यो, कीधी कमाई लीधी रे ॥टेक॥
जीऊँ जे तिल हरी बिना रे, देहड़ी दुखैं दाधी रे ।
गुणँ औतारैं काँइ न जाणूँ, माथै टाकर खाधी रे ॥ १ ॥
छुटको मारो केहि परि थाशे, सक्यो न राम अराधी रे ।
दादू ऊपर दया मया करि, हूँ तारो अपराधी रे ॥ २ ॥

(१३१)†

तूँही तूँ तन माहरै गुसाईं, तूँ विना तूँ केनैं कहौं रे ।
तूँ त्याँ तूँही थई रह्यो रे, सरन तुम्हारी जाइ रहौं रे ॥टेक॥
तन मन माहैं जोइये त्याँ तूँ, तुझ दीठाँ हूँ सुख लहौं रे ।
तूँ त्याँ जे तिल तजी रहौं रे, तेम तेम त्याँ हूँ दुख सहौं रे ॥१॥
तुम बिन माहरो कोई नहीं रे, हूँ तो ताहरा विन बहौं रे ।
दादू रे जन हरि गुण गाताँ, मैं मेल्यो माहरो मैं हूँ रे ॥२॥

---

*अर्थ गुजराती शब्द १३०—हे राम तू मेरा मालिक है और मैं तेरे पल्ले बँधा हूँ तुझ बिन मैं ने इधर उधर भटका खाया और अपनी करनी का फल पाया ॥टेक॥ जै घड़ी मैं हरि बिन जीता हूँ मेरा शरीर कष्ट से जलता है [पं० चं० प्र० के पाठ में "जे तिल" की जगह "जेटला" = जितना है] इस जन्म में मैं ने कुछ न जाना और सिर पर चोट खाई ॥ १॥ मैं राम की आराधना न कर सका मेरा छुटकारा कैसे होगा [पं०चं०प्र० के पाठ में "केहि परि" की जगह "क्यारे" = कब है] दादू तेरा गुनहगार है उसपर दया मया कर ॥ २ ॥

†अर्थ गुजराती शब्द १३१—हे स्वामी तूँ ही मेरे तन में है तेरे सिवाय तूँ किसे कहूँ । तूँ जहाँ है वहीं है तेरी शरण में जाकर रहूँगा ॥ टेक ॥ [पं० चं० प्र० ने "सर्व व्यापक" का अर्थ दिया है] तन मन में देखूँ तो वहाँ तूँ है तुझे देखकर मैं सुख पाताहूँ । जै घड़ी मैं तुझसे अलग रहूँ उतनाही मुझे दुख व्यापता है ॥ १ ॥ [पं० चं० प्र० का अर्थ कि "तूँ तहाँ है इतना कहने में जो फ़ासला पड़ता है उतना ही उतना मुझ को दुख सहना पड़ता है" अनूठा है] तेरे सिवाय मेरा कोई नहीं है मैं तेरे बिना बहा जाता हूँ । दादू साहिब कहते हैं कि यह हरि गुण गाते हुए भक्त अपना आपा तज देता है ॥ २ ॥

(१३२)

हमारे तुमहीं हौ रखपाल ।
तुम बिन और नहीं कोइ मेरे, भौ दुख मेटणहार ॥टेक॥
बैरी पंच निमष नहिं न्यारे, रोकि रहे जम काल ।
हा जगदीस दास दुख पावै, स्वामी करो सँभाल ॥ १ ॥
तुम बिन राम दहैं ये दुंदर , दसौं दिसा सब साल ।
देखत दीन दुखी क्योँ कीजे, तुम हौ दीनदयाल ॥ २ ॥
निर्भय नाँव हेत हरि दीजे , दरसन परसन लाल ।
दादू दीन लीन करि लीजै , मेटहु सबै जँजाल ॥ ३ ॥

(१३३)

ये मन माधौ बरजि बरजि ।
अति गति बिषिया सौं रत , उठत जु गरजि गरजि॥टेक॥
बिषै बिलास अधिक अति आतुर,बिलसत संक न मानै।
खाइ हलाहल मगन माया मैं, बिष अमृत करि जानै ॥१॥
पंचन के सँग बहत चहूँ दिसि , उलटि न कबहूँ आवै ।
जहँ जहँ काल जाइ तहाँ तहँ, मृगजल ज्योँ मन धावै ॥२॥
साध कहैं गुर ज्ञान न मानै, भाव भजन न तुम्हारा ।
दादू के तुम सजन सहाई , कछु न बसाइ हमारा ॥ ३ ॥

(१३४)

हाँ हमारे जियरा राम गुण गाइ,येही बचन बिचारी मानि।टेक
केती कहूँ मन कारणे , तूं छाडि रे अभिमान ।
कहि समझाऊँ बेर बेर , तुझ अजहुँ न आवै ज्ञान ॥१॥
ऐसा सँग कहँ पाइये , गुण गावत आवै तान ।
चरनौं सौं चित राखिये , निस दिन हरि कौ ध्यान ॥२॥
वै भी लेखा देहिंगे, आप कहावैं खान ।
जन दादू रे गुण गाइये, पूरण है निरवाण ॥ ३ ॥

(१३५)

बटाऊ रे चलना आजि कि काल्हि ।
समझि न देखै कहा सुख सोवै, रे मन राम सँभालि ॥टेक
जैसैं तरवर बिरष बसेरा, पंखी बैठे आइ ।
ऐसैं यहु सब हाट पसारा, आप आप कौं जाइ ॥ १ ॥
कोइ नहिं तेरा सजन सँगाती, जिनि खोवै मन मूल ।
यहु संसार देखि जिनि भूलै, सब ही सैंबल फूल ॥ २॥
तन नहिं तेरा धन नहिं तेरा, कहा रह्यौ इहिं लागि ।
दादू हरि बिन क्यौं सुख सोवै, काहे न देखै जागि ॥३॥

(१३६)

जात कत मद कौ मातौ रे ।
तन धन जोबन देखि गरबानौ, माया रातौ रे ॥ टेक ॥
अपनौ हीं रूप नैन भरि देखै, कामिन कौ सँग भावै रे ।
बारंबार बिषै रत मानै, मरिबौ चीति न आवै रे ॥१॥
मैं बड़ आगैं और न आवै, करत केत अभिमाना रे ।
मेरी मेरी करि करि भूल्यौ, माया मोह भुलाना रे ॥२॥
मैं मैं करत जनम सब खोयो, काल सिर्हानै आयौ रे ।
दादू देखु मूढ़ नर प्राणी, हरि बिन जनम गमायौ रे ॥३॥

(१३७)

जागत कौं कदे न मूसै कोई ।
जागत जानि जतन करि राखै, चोर न लागू होई ॥टेक॥
सोवत साह बस्तु नहिं पावै, चोर मुसै घर घेरा ।
आसि पासि पहरो कोउ नाहीं, बस्तैं कीन्ह निबेरा ॥१॥
पीछैं कहु क्या जागैं होई, बस्तु हाथ थैं जाई ।
बीती रैनि बहुरि नहिं आवै, तब क्या करिहै भाई ॥ २॥

पहिलै हीं पहरैं जे जागै, बस्तु कछू नहिं छीजै ।
दादू जुगति जानि करि ऐसी, करना है सो कीजै ॥ ३ ॥

(१३८)

सजनी रजनी घटती जाइ ।
पल पल छीजै अवधि दिन आवै, अपनौं लाल मनाइ ॥टेक
अति गति नींद कहा सुख सोवै, यहु औसर चलि जाइ।
यहु तन बिछुरैं बहुरि कहँ पावै, पीछैं ही पछिताइ ॥१॥
प्राणपति जागै सुंदरि क्यौं सोवै, उठि आतुर गहि पाँइ ।
कोमल बचन करुणा करि आगैं, नख सिख रहु लपटाइ ॥२॥
सखी सुहाग सेज सुख पावै, प्रीतम प्रेम बढ़ाइ ।
दादू भाग बड़े पिव पावै, सकल सिरोमणि राइ ॥ ३ ॥

(१३९)

कोई जानै रे मरम माधइया केरौ ।
कैसैं रहै करै का सजनी प्राण मेरौ ॥ टेक ॥
कौण बिनोद करत री सजनी, कौणनि संग बसेरौ ।
संत साध गति आये उनके, करत जु प्रेम घनेरौ॥ १ ॥
कहाँ निवास बास कहँ, सजनी गवन तेरौ ।
घट घट माहैं रहै निरंतर, ये दादू नेरौ ॥ २ ॥

(१४०)

मन बैरागी राम कौ, संगि रहै सुख होइ हो ॥ टेक ॥
हरि कारण मन जोगिया, क्योंही मिलै मुझ सोइ हो।
निरखण का मोहिं चाव है, क्योंही आप दिखावै मोहिं हो १
हिरदै मैं हरि आव तूँ, मुख देखौं मन धोइ हो ।
तन मन मैं तूँही बसै, दया न आवै तोहि हो ॥ २ ॥
निरखण का मोहिं चाव है, ये दुख मेरा खोइ हो ।
दादू तुम्हारा दास है, नैन देखन कौं रोइ हो ॥ ३ ॥

(१४१)*

धरणीधर वाह्या धूता रे, अंग परस नहिं आपै रे ।
कह्यौ अमारौ काँई न मानै, मन भावै ते थापै रे ॥टेक॥
वाहो वाही ने सर्बस लीधौ, अबला काँइ न जाणै रे ।
अलगौ रहै एणी परि तेड़ै, आपनड़े घरि आणे रे ॥ १ ॥
रमी रमी ने राम रजावी, केन्हैँ अंत न दीधो रे ।
गोप्य गुह्य ते कोई न जाणै, एहौ अचरज कीधो रे ॥२॥
माता बालक रुदन करता, वाही वाही ने राखै रे ।
जेवो छे तेवो आपणपो, दादू ते नहिं दाखै रे ॥ ३ ॥

(१४२)

सिरजनहार थैं सब होइ ।
उतपति परलै करै आपै, दूसर नाहीं कोइ ॥ टेक ॥
आप होइ कुलाल करता, बूँद थैं सब लोइ ।
आप करि अगोच† बैठा, दुनी‡ मन कौं मोहि ॥ १ ॥
आप थैं ऊपाइ बाजी, निरखि देखै सोइ ।
बाजीगर कौं यहु भेद आवै, सहजि सौंज§ समोइ ॥ २ ॥
जे कुछ किया सु करै आपै, येह उपजै मोहि ।
दादू रे हरि नाँव सेती, मैल कुसमल धोइ ॥ ३ ॥

---

*अर्थ गुजराती शब्द १४१—परमेश्वर ने हम को बहकाया और धोखा दिया, हम को न अपना अंग छूने देता और न हमारा कुछ कहा मानता है जो जी में आवै सो करता है ॥ टेक॥ फुसला २ कर हमारा सब कुछ लेलिया, मुझ निर्बल को कुछ नहीं समझता, अलग थलग रह कर मुझे अपनी ओर बुलाता है और अपने घर को लेजाता है ॥ १ ॥ राम खेल २ कर रिझाता है पर किसी को भेद नहीं देता, वह आप गुप्त और छिपा है जिसे कोई नहीं जानता, उसी ने ऐसा अचरज किया है ॥ २ ॥ हम को उस ने उसी तरह फुसला २ कर रक्खा है जैसे मा अपने रोते हुए बच्चे को रखती है फिर भी वह जैसा है हमारा ही है इस लिये दादू उस के कौतकों को न ज़ाहिर करेगा ॥ ३ ॥

†अगोचर=जिसे इंद्रियों से नहीं जान सकते । ‡संसार । §सेवा, आचार ।

(१४३)

देहुरे मंझे देव पायौ, बस्तु अगोच लखायौ ॥ टेक ॥
अति अनूप जोति पति, सोई अंतरि आयौ ।
प्यंड ब्रह्मंड सम तुलि दिखायौ ॥ १ ॥
सदा प्रकास निवास निरंतर, सब घट माहिँ समायौ ।
नैन निरखि नेरौ, हिरदै हेत लायौ ॥ २ ॥
पूरब भाग सुहाग सेज सुख, सो हरि लैन पठायौ ।
देव कौ दादू पार न पावै, अहो पैँ उनहीँ चितायौ ॥ ३ ॥

॥ राग मारू ॥

(१४४)

मनाँ भजि राम नाम लीजे ।
साध संगति सुमिरि सुमिरि, रसना रस पीजे ॥ टेक ॥
साधू जन सुमिरण करि, केते जपि जागे ।
अगम निगम अमर किये, काल कोइ न लागे ॥ १ ॥
नीच ऊँच चिंतन करि, सरणागति लीये ।
भगति मुकति अपणी गति, ऐसैं जन कीये ॥ २ ॥
केते तिरि तीर लागे, बंधन भव छूटे ।
कलिमल बिष जुग जुग के, राम नाम खूटे* ॥ ३ ॥
भरम करम सब निवारि, जीवन जपि सोई ।
दादू दुख दूर-करण, दूजा नहिँ कोई ॥ ४ ॥

(१४५)

मनाँ जपि राम नाम कहिये ।
राम नाम मन बिसराम, संगी सो गहिये ॥ टेक ॥
जागि जागि सोवै कहा, काल कंध तेरे ।
बारंबार करि पुकार, आवत दिन नेरे ॥ १ ॥

*घटाये, चुकाये ।

सोवत सोवत जनम बीते , अजहूं न जीव जागै ।
राम सँभालि नींद निवारि , जनम जुरा लागै ॥ २ ॥
आसि पासि भरम बँध्यो , नारी गृह मेरा ।
अंति काल छाडि चल्यो , कोई नहिं तेरा ॥ ३ ॥
तजि काम क्रोध मोह माया , राम राम कहणा ।
जब लग जीव प्राण प्यंड , दादू गहि सरणा ॥ ४ ॥

(१४६)

क्यौं बिसरै मेरा पीव पियारा ।
जीव की जीवन प्राण हमारा ॥ टेक ॥
क्यौंकर जीवै मीन जल बिछुरैं , तुम बिन प्राण सनेही ।
च्यंतामणि जब कर थैं छूटै , तब दुख पावै देही ॥१॥
माता बालक दूध न देवै , सो कैसैं करि पीवै ।
निर्धन का धन अनत भुलाना , सो कैसैं करि जीवै ॥२॥
बरखहु राम सदा सुख अमृत , नीझर निर्मल धारा ।
प्रेम पियाला भरि भरि दीजै , दादू दास तुम्हारा ॥३॥

(१४७)*

कोई कहियो रे मारा नाथ ने, नारी नैण निहारे बाट रे ॥ टेक
दीन दुखिया सुन्दरी , करुणा बचन कहे रे ।
तुम बिन नाह बिरहणी ब्याकुल, किम करि नाथ रहे रे ॥१॥
भूधर बिन भावै नहिं कोई , हरि बिन और न जाणै ।
देह ग्रेह हूँ तेने आपौं , जे कोइ गोबिंद आणै रे ॥ २ ॥
जगपति ने जोवा ने काजे , आतुर थई रही रे ।
दादू ने दिखाडो स्वामी , ब्याकुल होइ गई रे ॥ ३ ॥

---

*अर्थ गुजराती शब्द १४७—कोई मेरे स्वामी से कहो कि तुम्हारी स्त्री तुम्हारा रास्ता देख रही है ॥ टेक ॥ बेचारी दुखिया स्त्री दीन बचन कहती है कि तुम्हारे बिना मैं बिरहिन बेचैन हूँ तुम स्वामी कैसे दूर रहते हो ॥ १ ॥ सिवाय परमेश्वर

(१४८)*

अमे बिरहणिया राम तुम्हारड़ियाँ ।
तुम बिन नाथ अनाथ , काँइ विसारड़ियाँ ॥टेक॥
अमने अंग अनल परजाले , नाथ निकट नहिं आवै रे ।
दरसन कारण बिरहणि व्याकुल , और न कोई भावै रे ॥१॥
आप अपरछन अमने देखे , आपणपा न दिखाड़ै रे ।
प्राणी पिंजर लेइ रह्यौ रे , आड़ा अन्तर पाड़ै रे ॥२॥
देव देव करि दरसन माँगै , अंतरजामी आपै रे ।
दादू बिरहणि बन बन ढूँढै, ये दुख काँइ न कापै रे॥३॥

(१४९)

कबहूँ ऐसा बिरह उपावै रे ।
पिव बिन देखैं जिव जावै रे ॥ टेक ॥
बिपति हमारी सुनौ सहेली ।
पिव बिन चैन न आवै रे ॥
ज्यौँ जल मीन भीन तन तलफै ।
पिव बिन बज्र बिहावै रे ॥ १ ॥

के मुझे कोई नहीँ भाता और हरि बिना मेरे इस मरम को कोई नहीँ जानता । जो कोई गोविन्द को ले आवे उस (बिचवही) को मैँ अपना तन और धन (गृह=घर) अर्पन करदूँ ॥ २ ॥ [पं० चं० प्र० ने इसका अर्थ योँ लिखा है—"अपना देहरूपी घर मैँ गोविन्द को अर्पण करूँ यदि कोई गोविंद को ले आवै"] जगदीश के दर्शनोँ के लिये मैँ बेचैन हो रही हूँ , दादू साहिब कहते हैँ कि स्वामी को दिखलावो मैँ व्याकुल हूँ ॥ ३ ॥

*अर्थ गुजराती शब्द १४८—हे राम हम तुम्हारी बिरहिन हैँ, हे नाथ तुम्हारे बिना हम अनाथ हो रही हैँ हम को क्योँ भूलगये ॥ टेक ॥नाथ पास नहीँ आता इस लिये मेरे शरीर मैँ बिरह अग्नि फुक रही है ; मैँ बिरहिन नाथ के दर्शनोँ को बेचैन हूँ मुझे और कोई नहीँ सुहाता ॥ १ ॥ आप तो छिपा हुआ हम को देखता है और खुद नहीँ दिखलाई देता, जीवदेह धारन करने से बीच मैँ परदा डाले हुए है ॥ २ ॥ जो कोई प्रभू प्रभू पुकार कर दर्शन माँगता है तो उस को अंतरजामी दर्शन देता है; बिरहिन बन बन ढूँढ़ती है इस दुख को क्योँ नहीँ काटता ॥३॥

ऐसी प्रीति प्रेम की लागै ।
  ज्यौं पंखी पीव सुनावै रे ॥
त्यौं मन मेरा रहै निस बासुर ।
  कोइ पीव कूँ आणि मिलावै रे ॥ २ ॥
तौ मन मेरा धीरज धरई ।
  कोइ आगम आणि जणावै रे ॥
तौ सुख जीव दादू का पावै ।
  पल पिवजी आप दिखावै रे ॥ ३ ॥

(१५०)

पंथीड़ा बूझै बिरहणी , कहिनैं पीव की बात ।
कब घर आवै कब मिलै, जोऊँ दिन अरु राति, पंथीड़ा॥टेक
कहँ मेरा प्रीतम कहँ बसै , कहाँ रहै करि बास ।
कहँ ढूँढौं कहँ पाइये, कहाँ रहै किस पास, पंथीड़ा ॥१॥
कौण देस कहँ जाइये , कीजै कौण उपाइ ।
कौण अंग कैसैं रहै , कहा करै समझाइ, पंथीड़ा ॥ २ ॥
परम सनेही प्राण का , सो कत देहु दिखाइ ।
जीवनि मेरे जीव की , सो मुझ आणि मिलाइ, पंथीड़ा॥३॥
नैन न आवै नींदड़ी , निस दिन तलफत जाइ ।
दादू आतुर बिरहणी , क्यौंकरि रैनि बिहाइ, पंथीड़ा ॥४॥

(१५१)

पंथीड़ा पंथ पिछाणी रे पीव का, गहि बिरहे की बाट।
जीवत मिरतक ह्वै चलै, लंघै औघट घाट, पंथीड़ा ॥टेक॥
सतगुर सिर पर राखिये , निर्मल ज्ञान बिचार ।
प्रेम भगति करि प्रीति सौं, सनमुख सिरजनहार, पंथीड़ा॥१
पर आतम सौं आतमा , ज्यौं जल जलहि समाइ ।
मन ही सौं मन लाइये, लै के मारग जाइ, पंथीड़ा ॥२॥

तालाबेली ऊपजै, आतुर पीड़ पुकार।
सुमिर सनेही आपणा, निस दिन बारंबार, पंथीड़ा ॥३॥
देखि देखि पग राखिये, मारग खाँडे धार।
मनसा बाचा कर्मना, दादू लंघे पार, पंथीड़ा ॥ ४ ॥

(१५२)

साध कहैं उपदेस बिरहणी।
तन भूलै तब पाइये, निकट भया परदेस, बिरहणी ॥ टेक ॥
तुमहीं माहैं ते बसैं, तहाँ रहे करि वास।
तहँ ढूँढ़े पिव पाइये, जीवनि जीव के पास, बिरहणी ॥१॥
परम देस तहँ जाइये, आतम लीन उपाइ।
एक अंग ऐसैं रहै, ज्यौं जल जलहि समाइ, बिरहणी ॥२॥
सदा सँगाती आपणा, कबहूँ दूरि न जाइ।
प्राण सनेही पाइये, तन मन लेहु लगाइ, बिरहणी ॥३॥
जागे जगपति देखिये, परगट मिलिहैं आइ।
दादू सन्मुख ह्वै रहै, आनँद अंगि न माइ, बिरहणी ॥४॥

(१५३)

गोबिंदा गाइबा दे रे गाइबा दे, अडड़ौं आणि निवार* रे।
अन दिन† अंतरि आनँद कीजै, भगति प्रेम रस सार रे॥ टेक॥
अनभै आतम अभै एक रस, निर्भय काँइ न कीजै रे।
अमी महा रस अमृत आपै‡, अम्हे रसिक रस पीजै रे ॥१॥
अबिचल अमर अखै अबिनासी, ते रस काँइ न दीजै रे।
आतम राम अधार अम्हारो, जनम सुफल करि लीजै रे ॥२॥
देव दयाल कृपाल दमोदर, प्रेम बिना क्यूँ रहिये रे।
दादू रँग भरि राम रमाड़ो§, भगत बछल तूँ कहिये रे ॥३॥

---

* परदा आकर उठा दे। † प्रति दिन। ‡ दो। § आनन्द दो।

(१५४)

गोबिंदा जोइबा दे रे जोइबा दे, जे बरजैं ते वारि रे*।
आदि पुरिष तूँ अछै अम्हारौ, कंत तुम्हारी नारी रे ॥टेक॥
अंगे संगे रंगे रमिये, देवा† दूरि न कीजे रे।
रस माहैं रस इम थइ‡ रहिये, ये सुख अमने दीजे रे ॥१॥
सेजड़िये सुख रँग भरि रमिये, प्रेम भगति रस लीजे रे।
एकमेक रस केलि करंता, अमे अबला इम जीजे रे ॥२॥
समरथ स्वामी अंतरजामी, बार बार कांइ बाहै§ रे।
आदैं अंतैं तेज तुम्हारौ, दादू देखै गाये‖ रे ॥ ३ ॥

(१५५)¶

तुम सरसी रंग रमाड़ि, आप अपरछन थई करी।
मूनैं मा भरमाड़ि ॥ टेक ॥
मूनैं भोलवे काँइ थई बेगलो, आपणपौ दिखाड़ि।
केम जीवौं हूँ एकली, बिरहणिया नारि ॥ १ ॥
मूँ ने बाहिश मा अलगौ थई, आतमा उधारि।
दादू सौं रमिये सदा, ये णे पैरैं तारि ॥ २ ॥

(१५६)

जागि रे किस नींदड़ी सूता।
रैणि बिहाणी सब गई दिन आइ पहूँता ॥ टेक ॥
सो क्यौं सोवै नींदड़ी, जिस मरणा होवै रे।
जौरा बैरी जागणा, जीव तूँ क्यौं सोवै रे ॥ १ ॥

---

*हे गोविन्द मुझ को देखने दे, अर्थात दर्शन दे, जो विघ्न डालैं उन से बचा कर दर्शन दे। †हे देव। ‡ऐसा होकर। §फैंके। ‖गाता है।

¶अर्थ शब्द १५५—हे परमेश्वर तुम सरीखा रंग का खिलाड़ी आप छिपा रह कर मुझ को न भरमावे ॥ टेक ॥ मुझे लुभा कर क्यों जुदा होगये अपना रूप दिखलाओ; मैं अकेली बिरहिन स्त्री क्योंकर जिऊँ ॥ १ ॥ हे जीव के उद्धार करता मुझे त्याग कर जुदा मत हो जाव; दादू के साथ सदा रमते रहो और उसको पार उतारो ॥ २ ॥

जाके सिर पर जम खड़ा , सर साँधे मारै रे ।
सो क्यौं सोवै नींदड़ी , कहि क्यौं न पुकारै रे ॥ २ ॥
दिन प्रति निस काल झंपै* , जीव न जागै रे ।
दादू सूता नींदड़ी , उस अंगि न लागै रे ॥ ३ ॥

(१५७)

जागि रे सब रैणि बिहाणी ।
जाइ जनम अँजुली कौ पाणी ॥ टेक ॥
घड़ी घड़ी घड़ियाल बजावै ।
जे दिन जाइ सो बहुरि न आवै ॥ १ ॥
सूरज चंद कहैं समझाइ ।
दिन दिन आव घटती जाइ ॥ २ ॥
सरवर पाणी तरवर छाया ।
निस दिन काल गरासै काया ॥ ३ ॥
हंस बटाऊ प्राण पयाना ।
दादू आतम राम न जाना ॥ ४ ॥

(१५८)

आदि काल अंति काल , मधि काल भाई ।
जनम काल जुहा काल , काल सँग सदाई ॥ टेक ॥
जागत काल सोवत काल , काल झंपै आई ।
काल चलत काल फिरत , कबहूँ ले जाई ॥ १ ॥
आवत काल जात काल , काल कठिन खाई ।
लेत काल देत काल , काल ग्रसै धाई ॥ २ ॥
कहत काल सुनत काल , करत काल सगाई ।
काम काल क्रोध काल , काल जाल छाई ॥ ३ ॥

---

*देखै ।

काल आगैं काल पीछैं, काल सँगि समाई ।
काल रहित राम गहित, दादू ल्यौ लाई ॥ ४ ॥

(१५९)

तो कौं केता कह्या मन मेरे ।
षिण इक माहैं जाइ अनेरे, प्राण उधारी ले रे ॥ टेक ॥
आगैं है मन खरी बिमासणि,* लेखा माँगै दे रे ।
काहे सोवै नींद भरी रे, कृत्त बिचारै तेरे ॥ १ ॥
ते परि कीजे मन बिचारे, राखै चरनहुँ नेरे ।
रती इक जीवन मोहिं न सूझै, दादू चेति सवेरे॥ २ ॥

(१६०)

मन वाहला रे कछू बिचारी खेल, पड़सी रे गढ़ भेल† ॥टेक॥
बहु भाँतैं दुख देइगा रे वाहला, ज्यौं तिल माँ लीजै तेल ।
करणी ताहरी सोधिसी, होसी रे सिर हेल‡ ॥ १ ॥
इबहीं थैं करि लीजे रे वाहला, साईं सेती मेल ।
दादू संग न छाडी पीव का, पाई है गुण की बेल§॥ २॥

(१६१)

मन बावरे हो अनत जिनि जाइ ।
तौ तूं जीवै अमी रस पीवै, अमर फल काहे न खाइ ॥टेक॥
रहु चरण सरण सुख पावै, देखहु नैन अघाइ ।
भाग तेरे पीव नेरे, थीर थान बताइ ॥ १ ॥
संग तेरे रहै घेरे, सहजैं अंग समाइ ।
सरीर माहैं सोधि साईं, अनहद ध्यान लगाइ ॥ २ ॥
पीव पासि आवै सुख पावै, तन की तपति बुझाइ ।
दादू रे जहँ नाद ऊपजै, पीव पासि दिखाइ ॥ ३ ॥

---

*कसौटी । †गाढ़े झमेले में । ‡बोझ । §लता अर्थात काया ।

(१६२)

निरंजन अंजन कीन्हा रे, सब आतम लीन्हा रे ।।टेक॥
अंजन माया अंजन काया, अंजन छाया रे ।
अंजन राते अंजन माते, अंजन पाया रे ॥ १ ॥
अंजन मेरा अंजन तेरा, अंजन मेला रे ।
अंजन लीया अंजन दीया, अंजन खेला रे ॥ २ ॥
अंजन देवा अंजन सेवा, अंजन पूजा रे ।
अंजन ध्याना अंजन ज्ञाना, अंजन दूजा रे ।। ३ ॥
अंजन बकता अंजन सुरता, अंजन भावै रे ।
अंजन राम निरंजन कीन्हा, दादू गावै रे ॥ ४ ॥

(१६३)

अैन बैन चैन होवै, सुणताँ सुख लागै रे ।
तीन्यूँ गुण त्रिविध तिमर, भरम करम भागै रे ॥ टेक ॥
होइ प्रकास अति उजास, परम तत्त सूझै ।
परम सार निर्बिकार, बिरला कोइ बूझै रे ॥ १ ॥
परम थान सुख निधान, परम सुन्नि खेलै ।
सहज भाइ सुख समाइ, जीव ब्रह्म मेलै रे ॥ २ ॥
अगम निगम होइ सुगम, दूतर* तिरि आवै ।
आदि पुरिष दरस परस, दादू सो पावै रे ॥ ३ ॥

(१६४)

कोई राम का राता रे, कोई प्रेम का माता रे ॥ टेक ॥
कोई मन कूँ मारै रे, कोई तन कूँ तारै† रे ।
कोई आप उबारै रे ॥ १ ॥
कोई जोग जुगता रे, कोई मोष मुकता रे ।
कोई है भगवंता रे ॥ २ ॥

---

*दूतर=दुस्तर अर्थात जिस के पार जाना अति कठिन है । †ताड़ना दे ।

कोई सदगति सारा रे, कोई तारणहारा रे।
कोई पीव का प्यारा रे ॥ ३ ॥
कोई पार का पाया रे, कोई मिलि करि आया रे।
कोई मन का भाया रे ॥ ४ ॥
कोई है बड़भागी रे, कोई सेज सुहागी रे।
कोई है अनुरागी रे ॥ ५ ॥
कोई सब सुखदाता रे, कोई रूप बिधाता रे।
कोई अमृत खाता रे ॥ ६ ॥
कोई नूर पिछाणै रे, कोई तेज कूँ जाणै रे।
कोई जोति बखाणै रे ॥ ७ ॥
कोई साहिब जैसा रे, कोई साँईं तैसा रे।
कोई दादू ऐसा रे ॥ ८ ॥

(१६५)

सदगति साधवा रे, सन्मुख सिरजनहार।
भौजल आप तिरैं ते तारैं, प्राण उधारणहार ॥ टेक ॥
पूरण ब्रह्म राम रँग राते, निर्मल नाँव अधार।
सुख संतोष सदा सत संजम, मति गति वार न पार ॥१॥
जुगि जुगि राते जुगि जुगि माते, जुगि जुगि संगति सार।
जुगि जुगि मेला जुगि जुगि जीवन, जुगि जुगि ज्ञान बिचार।२
सकल सिरोमणि सब सुखदाता, दुर्लभ इहि संसार।
दादू हंस रहैं सुखसागर, आये परउपगार ॥ ३ ॥

(१६६)

अम्ह घरि पाहुणा ये, आव्या आतम राम ॥ टेक ॥
चहुँ दिसि मंगलचार, आनँद अति घणा ये।
बरत्या जैजैकार, बिरघ बधावणा ये ॥ १ ॥

कनक कलस रस माहिँ, सखी भरि ल्यावज्यौ ये।
आनँद अंगि न माइ, अम्हारै आविज्यौ ये ॥ २ ॥
भावै भगति अपार, सेवा कीजिये ये।
सन्मुख सिरजनहार, सदा सुख लीजिये ये ॥ ३ ॥
धन्य अम्हारा भाग, आव्या अम्ह भणी ये।
दादू सेज सुहाग, तूँ त्रिभुवन धणी ये ॥ ४ ॥

(१६७)

गावहु मंगलचार, आज वधावणा ये।
सुपनौ दख्यौ साच, पीव घरि आवणा ये ॥ टेक ॥
भाव कलस जल प्रेम का, सब सखियन के सीस।
गावत चलीं वधावणा, जै जै जै जगदीस ॥ १ ॥
पदम कोटि रबि झिलमिलै, अँगि अँगि तेज अनंत।
बिगसि बदन बिरहनि मिली, घरि आये हरि कंत ॥२॥
सुंदरि सुरति सिँगार करि, सनमुख परसे पीव।
मो मंदिर मोहन आविया, वारूँ तन मन जीव ॥ ३ ॥
कवल निरंतर नरहरी, प्रगट भये भगवंत।
जहँ बिरहनि गुण बीनवै, खेलै फाग वसंत ॥ ४ ॥
बर आयौ बिरहनि मिली, अरस परस सब अंग।
दादू सुंदरि सुख भया, जुगि जुगि यहु रस रंग ॥ ५ ॥

॥ राग रामकली ॥

(१६८)

सबद समाना जे रहै, गुर बाइक बीधा।
उनहीं लागा एक सौं, सोई जन सीधा ॥ टेक ॥
ऐसी लागी मरम की, तन मन सब भूला।
जीवत मिरतक ह्वै रहै, गहि आतम मूला ॥ १ ॥

चेतनि चितहिं न बीसरै , महा रस मीठा ।
सबद निरंजन गहि रह्या, उनि साहिब दीठा ॥ २ ॥
एक सबद जन ऊधरे , सुनि सहजै जागे ।
अंतरि राते एक सौं , सरस न मुख* लागे ॥ ३ ॥
सबद समाना सन्मुख रहै, पर आतम आगे ।
दादू सीझै देखताँ, अबिनासी लागे ॥ ४ ॥

(१६९)

अहो नर नीका है हरि नाम ।
दूजा नहीं नाँउ बिन नीका, कहिले केवल राम ॥ टेक ॥
निरमल सदा एक अबिनासी, अजर अकल रस ऐसा ।
दिढ़ गहि राखि मूल मन माहीं, निरखि देखि निज कैसा॥१॥
यहु रस मीठा महा अमीरस, अमर अनूपम पीवै ।
राता रहै प्रेम सूँ माता , ऐसैं जुगि जुगि जीवै ॥ २ ॥
दूजा नहीं और को ऐसा, गुर अंजन करि सूझै ।
दादू मोटे भाग हमारे, दास बमेकी† बूझै ॥ ३ ॥

(१७०)

कब आवैगा कब आवैगा ।
पिव परगट आप दिखावैगा, मिठड़ा मुझ कूँ भावैगा ॥टेक॥
कंठड़े लागि रहूँ रे , नैनाँ मैं वाहि धरूँ रे ।
पिव तुझ बिन झूरि मरूँ रे ॥ १ ॥
पाँऊँ मस्तक मेरा रे, तन मन पिवजी तेरा रे ।
हूँ राखूँ नैनाँ नेरा रे ॥ २ ॥
हियड़े हेत लगाऊँ रे, अबके जे पीवै पाऊँ रे ।
तौ बेरि बेरि बलि जाऊँ रे ॥ ३ ॥

---

* छापे की एक पुस्तक में "सर सन्मुख" है और सब लिपियों और पुस्तकों में ऊपर के पाठ अनुसार है । †बिबेकी ।

सेजड़िये पिव आवै रे, तब आनँद अंगि न मावै रे।
जब दादू दरस दिखावै रे ॥ ४ ॥

(१७१)*

पिरी तूँ पाणु पसाइ रे, मूँ तनि लगी वाहि रे॥ टेक ॥
पाँधी वैँदो निकरी अला, असाँ साणु गाल्हाइ रे।
साँईँ सिकाँ सद खे अला, गुझी गाल्हि सुणाइ रे ॥१॥
पसाँ पाक दीदार खे अला, सिक असाँजी लाहि रे।
दादू मंझि कलूब मैँ अला, तोरे वी ना काइ रे ॥ २ ॥

(१७२)†

को मेड़ीदो सजणाँ ,सुँहारी सुरति खे अला,
लगा डीहँ घणाँ ॥ टेक ॥
पिरीयाँ संदी गाल्हड़ी अला , पाँधीअड़ा पुच्छाँ।
कडेहीँ ईँदो मूँ घरेँ अला , डीँदो बाँह असाँ ॥ १ ॥
आहे सिक दीदार जो अला , पिरीँ पूर पसाँ।
ईय दादू जे जियँदे अला , सजणाँ साँणु रहाँ ॥ २ ॥

---

*अर्थ सिंधी शब्द नं० १७१—हे प्रीतम तू आप [पाणु] अपना जलवा दिखला [पसाइ], मेरे शरीर मैँ आग [वाहि] लगी है—॥ टेक ॥ हाय ! [अला] पथिक [पाँधी] निकल जायगा [वैँदो], तू हम से बोल [गाल्हाइ]। साँईँ मैँ तेरे वचन का [सद खे] अनुरागी हूँ [सिकाँ], मुझे गुप्त भेद सुना दे ॥ १ ॥ मैँ तेरे पाक दीदार को देखूँ [पसाँ], हमारी [असाँ जी] तड़प [सिक] दूर कर [लाहि]। दादू के चित्त के अंतर तेरे सिवाय [तो रे] दूसरा [वी] कोई नहीँ है ॥ २ ॥

†अर्थ सिन्धी शब्द नं० १७२— सुंदर [सुहारी] सुरत को सजन से कौन मिलावेगा [को मेड़ीदो] बहुत दिन [डीँह] बीत गये ॥ टेक ॥ प्रीतम [पिरीयाँ] की [संडी] बात [गाल्हड़ी] पथिक [पाँधी] से पूछूँ। वह हमारे घर [मूँ गरे] कब [कडेहीँ] आवेगा [ईँदो] और हम को अपनी बाँह देगा ॥ १ ॥ दीदार की [जी] उमंग [सिक] है कि प्रीतम को अघा कर [पूर] देखूँ [पसाँ]। जनम भर [जियँदे] यही कि दादू अपने सजन के साथ [साँणु] रहे ॥ २ ॥

(यह दोनोँ सिंधी शब्द हर लिपि और पुस्तक मैँ निराली अशुद्धता के साथ छपे हैँ)

(१७३)

हरि हाँ दिखावौ नैना ।
सुंदर मूरति मोहना, बोलि सुनावौ बैना ॥ टेक ॥
प्रगट पुरातन खंडना, मही मान सुख मंडना ॥ १ ॥
अबिनासी अपरंपरा, दीनदयाल गगन धरा ॥ २ ॥
पारब्रह्म पर पूरणा, दरस देहु दुख दूरणा ॥ ३ ॥
कर किरपा करुणामई, तब दादू देखै तुम दई ॥ ४ ॥

(१७४)

राम सुख सेवग जानै रे, दूजा दुख करि मानै रे ॥ टेक ॥
और अगिन की झाला, फँध* रोपे है जम काला ।
सम काल कठिन सर पेखै, ये सिंह रूप सब देखै ॥ १ ॥
बिष सागर लहरि तरंगा, यहु ऐसा कूप भुवंगा ।
भै भीत भयानक भारी, रिप करवत मीच बिचारी ॥२॥
यहु ऐसा रूप छलावा, ठग पासी हारा आवा ।
सब ऐसा देखि बिचारै, ये प्राणघात बटपारे ॥ ३ ॥
ऐसा जन सेवग सोई, मन और न भावै कोई ।
हरि प्रेम मगन रँग राता, दादू राम रमै रसि माता ।४॥

(१७५)

आप निरंजन यौं कहै, कीरति करतार ।
मैं जन सेवग द्वै नहीं, ऐकै अँग सार ॥ टेक ॥
मम कारण सब परिहरै, आपा अभिमान ।
सदा अखंडित उर धरै, बोलै भगवान ॥ १ ॥
अंतर पट जीवै नहीं, तबहीं मरि जाइ ।
बिछुरे तलफै मीन ज्यौं, जीवै जल आइ ॥ २ ॥

---

*फंदा ।

खीर नीर ज्यौं मिलि रहै, जल जलहि समान ।
आतम पाणी लूण ज्यौं, दूजा नहिं आन ॥ ३ ॥
मैं जन सेवग द्वै नहीं, मेरा बिसराम ।
मेरा जन मुझ सारिखा, दादू कहै राम ॥ ४ ॥

(१७६)

सरनि तुम्हारी केसवा, मैं अनंत सुख पाया ।
भाग बड़े तूं भेटिया, हौं चरनौं आया ॥ टेक ॥
मेरी तपति मिटी तुम देखताँ, सीतल भयौ भारी ।
भव बंधन मुकता भया, जब मिले मुरारी ॥ १ ॥
भरम भेद सब भूलिया, चेतनि चित लाया ।
पारस सूँ परचा भया, उन सहजि लखाया ॥ २ ॥
मेरा चंचल चित निहचल भया, इब अनत न जाई ।
मगन भयो सर बेधिया, रस पिया अघाई ॥ ३ ॥
सन्मुख ह्वै तैं सुख दिया, यहु दया तुम्हारी ।
दादू दरसन पावई, पिव प्राण अधारी ॥ ४ ॥

(१७७)

गोव्यँद राखौ अपनी ओट ।
काम किरोध भये बटपारे, तकि मारैं उर चोट ॥ टेक ॥
बैरी पंच सबल सँगि मेरे, मारग रोकि रहे ।
काल अहेड़ी बधिक ह्वै लागे, ज्यूँ जिव बाज गहे ॥ १ ॥
ज्ञान ध्यान हिरदै हरि लीना, सँग ही घेरि रहे ।
समझि न परई बाप रमइया, तुम बिन सूल सहे ॥ २ ॥
सरणि तुम्हारी राखौ गोव्यँद, इन का संग न दीजै ।
इन कै संग बहुत दुख पायौ, दादू कौं गहि लीजै ॥ ३ ॥

(१७८)

राम कृपा करि होहु दयाला ।
दरसन देहु करो प्रतिपाला ॥ टेक ॥
बालक दूध न देई माता ।
तौ वै क्यूँ करि जिवै बिधाता ॥ १ ॥
गुण औगुण हरि कुछ न बिचारै ।
अंतरि हेत प्रीति करि पालै ॥ २ ॥
अपनौ जानि करै प्रतिपाला ।
नैन निकटि उर धरै गोपाला ॥ ३ ॥
दादू कहै नहीं बस मेरा ।
तूँ माता मैं बालक तेरा ॥ ४ ॥

(१७९)

भगति माँगैाँ बाप भगति माँगैाँ ।
मूनैँ ताहरा नाँव नो* प्रेम लागैाँ ॥ टेक ॥
सिवपुर ब्रह्मपुर सरब शूँ† कीजिये ।
अमर थावा‡ नहीं लोक माँगैाँ ॥
आपि§ अवलंबन‖ ताहरा अंग नो ।
भगति सजीवनी रंगि राचैाँ ॥
देह नैँ¶ ग्रेह नो बास बैकुंठ तणौँ** ।
इन्द्र आसण नहीं मुकति जाचैाँ ॥ १ ॥
भगति वाहली†† खरी आप अविचल हरी ।
निरमलौ नाँव रस पान भावै ॥
सिधि नैँ रिधि नैँ, राज रूड़ो नहीं ।
देव पद माहरै काजि न आवै ॥ २ ॥

---

*को । †क्या । ‡होना । §दे । ‖सहारा । ¶और । **का । ††प्यारी ।

आतमा अंतर सदा निरंतर ।
ताहरी बापजी भगति दीजै ॥
कहै दादू हिवैं कोड़ि दत्त आपै ।
तुम बिना ते अम्हे नहीं लीजै* ॥ ३ ॥

(१८०)†

एह्वा एक तूँ रामजी, नाँव रूड़ौ ।
ताहरा नाँव बिना, बीजौ सबै कूड़ौ ॥ टेक ॥
तुम बिना और कोई कलि माँ नहीं,
सुमिरताँ संत नैं साद आपै ।
करम कीधाँ कोटि छोड़वै बाधौ,
नाँव लेताँ षिणतही ये कापै ॥ १ ॥
संत नैं साँकड़ो दुष्ट पीड़ा करै,
वाहरैं वाहलौ बेगि आवै ।
पाप नाँ पुंज पहूाँ कर लीधौं,
भाजिया भय भरम जोनि न आवै ॥ २ ॥

*दादू साहिब कहते हैं कि यदि अब कोई मुझे करोड़ों की संपत्ति भी दे तो तुम्हें छोड़ कर न लूँ ।

†अर्थ गुजराती शब्द १८०—हे रामजी एक तूही ऐसा (एह्वो) है अर्थात तुझ सरीखा दूसरा नहीं है, तेरा नाम उत्तम (रूड़ौ) है ; तेरे नाम के अतिरिक्त दूसरा (बीजौ) सब मिथ्या (कूड़ौ) है ॥ टेक ॥ तुम्हारे सिवाय कोई कलियुग में नहीं है जिस का स्मरण संत को स्वाद दे (साद आपै) ; किये हुए करोड़ों कर्मों के बंधन तेरे नाम लेते ही छिन में छूट और कट जाते हैं (कापै) ॥ १ ॥ जब दुष्ट जन संतों को कड़ी (साँकड़ो) पीड़ा देते हैं तब उन की सहायता को (वाहर) प्रीतम तुर्त आता है ; ऐसे संत जिन्हों ने पाप की ढेरी को दूर (पहूराँ) और भय और भरम को नष्ट और अपने को पुनर्जन्म से परे कर लिया है (योनि न आवै) ॥ २ ॥ जहाँ साध को गाढ़ आन पड़ती है तहाँ तू व्याकुल हो कर "मेरा मेरा" पुकारता आप दौड़ता है और साक्षात प्रगट होकर दुष्ट को मारता और संत को तारता है ॥ ३ ॥ हे नाथ तू नाम लेते ही अकेला करोड़ों कर्मों का नाश करता है; [दादू] अब (हिवैं) तेरे बिना कोई नहीं है और इस की साखी तेरे शरणागत जन देते हैं ॥ ४ ॥

साध नैं दुहेलैं तहाँ तूँ आकुलैं,
माहरौं माहरौं करी नैं धाये ।
दुष्ट नैं मारिवा संत नैं तारिवा,
प्रगट थावा तिहाँ आप जाये ॥ ३ ॥
नाम लेताँ षिण नाथ तैं एकलैं,
कोटिनाँ कर्मनाँ छेद कीधाँ ।
कहै दादू हिवैं तुम बिना को नहीं,
साखि बोलैं जे सरण लीधाँ ॥ ४ ॥

(१८१)

हरि नाम देहु निरंजन तेरा ।
हरि हरखि जपै जिव मेरा ॥ टेक ॥
भाव भगति हेत हरि दीजै, प्रेम उमँगि मन आवै ।
कोमल बचन दीनता दीजै, राम रसायण भावै ॥ १ ॥
बिरह बैराग प्रीति मोहिं दीजै, हिरदै साच सति भाखैं ।
चित चरणौं चिंतामणि दीजै, अंतरि दिढ़ करि राखैं ॥२॥
सहज संतोष सील सब दीजै, मन निहचल तुम लागै ।
चेतनि चिंतनि सदा निवासी, संगि तुम्हारे जागै ॥३॥
ज्ञान ध्यान मोहन मोहिं दीजै, सुरति सदा सँगि तेरे ।
दीनदयाल दादू कूँ दीजै, परम जोति घटि मेरे ॥४॥

(१८२)

जै जै जै जगदीस तूँ, तूँ समरथ साँइँ ।
सकल भवन भानै घड़ै*, दूजा को नाहीं ॥ टेक ॥
काल मीच करुणा करै, जम किंकर माया ।
महा जोध बलवंत बली, भय कंपै राया ॥ १ ॥

---
* तोड़ै और गढ़ै ।

जुरा मरण तुम थैं डरै, मन कौं भय भारो।
काम दलन करुणा मई, तूँ देव मुरारी ॥ २ ॥
सब कंपै करतार थैं, भव बंधन पासा।
अरि रिप* भंजन भय गता, सब विघन विनासा ॥ ३ ॥
सिर ऊपर साँईं खड़ा, सोई हम माहीं।
दादू सेवग राम का, निरभय न डराईं ॥ ४ ॥

(१८३)

हरि के चरण पकरि मन मेरा।
यहु अबिनासी घर तेरा ॥ टेक ॥

जब चरण कवल रज पावै, तब काल ब्याल† बौरावै।
तब त्रिबिधि ताप तन नासै, तब सुख की रासि बिलासै ॥१
जब चरण कवल चित लागै, तब माथैं मीच न जागै।
तब जनम जुरा सब खीना, तब पद पावण उर लीना ॥२
जब चरण कवल रस पीवै, तब माया न ब्यापै जीवै।
तब भरम करम भै भाजै, तब तीन्यौँ लोक बिराजै ॥३
जब चरण कमल रुचि तेरी, तब चारि पदारथ चेरी।
तब दादू और न बाँछै,‡ जब मन लागै साचै ॥४॥

(१८४)

संतो और कहो क्या कहिये।
हम तुम सीख इहै सतगुर की, निकटि राम के रहिये ॥टेक
हम तुम माहिं बसै सो स्वामी, साचे सूँ सच लहिये।
दरसन परसन जुग जुग कीजै, काहे कूँ दुख सहिये ॥१॥
हम तुम संगि निकट रहैं नेरैं, हरि केवल करि गहिये।
चरण कवल छाडि करि ऐसे, अनत काहे कौं बहिये ॥२॥

---

*अंतर और बाहर के शत्रु। †साँप। ‡माँगै।

हम तुम तारण तेज घन सुंदर, नीके सौं निरबहिये।
दादू देखु और दुख सब हीं, ता मैं तन क्यौं दहिये॥३॥

(१८५)

मन रे बहुरि न ऐसैं होई।
पीछैं फिर पछितावैगा रे, नींद भरे जिनि सोई॥टेक॥
आगम सारै संचु करीले,[*] तौ सुख होवै तोही।
प्रीति करी पिव पाइये, चरणौं राखै मोही॥१॥
संसार सागर बिषम अति भारी, जिन राखै मन मोहि।
दादू रे जन राम नाम सौं, कुसमल देही धोइ॥२॥

(१८६)

साथी सावधान ह्वै रहिये।
पलक माँहि परमेसुर जानै, कहा होइ का कहिये॥टेक॥
(बाबा) बाटघाट कुछ समझि न आवै, दूरि गवन हम जानाँ।
परदेसी पंथ चलै अकेला, औघट घाट पयाना॥१॥
(बाबा) संग न साथी कोइ नहिं तेरा, यहु सब हाट पसारा।
तरुवर पंखी सबै सिधाये, तेरा कैाण गँवारा॥२॥
(बाबा) सबै बटाऊ पंथि सिराने, इस्थिर नाहीं कोई।
अंतिकाल को आगैं पीछैं, बिछुरत बार न होई॥३॥
(बाबा) काची काया कैाण भरोसा, रैणि गई क्या सोवै।
दादू संबल[†] सुकिरत लीजै, सावधान किन होवै॥४॥

(१८७)

मेरा मेरा काहे कैाँ कीजे, जे कुछ संग न आवै।
अनिति[‡] करी नैं धन धरिला रे, तेउ तौ रीता[§] जावै॥टेक॥
माया बंधन अंध न चेतै, मेर[‖] माँहि लपटाया।
ते जाणै हौं येह बिलासौं,[¶] अनत बियाधैं[**] खाया॥१॥

---

*संचय करले। †सम्हल कर। ‡अनीति। §ख़ाली। ‖अहं। ¶वह समझता है कि मैं इस को बिलसूँगा। ** दो लिपियों में "बिरोधैं" है।

आप सवारथ येह बिलूधा[*] रे, आगम मरम न जाणै।
जम कर माथैं बाण धरीला[†], ते तो मन नहिं आणै ॥२॥
मन बिचारि सारी ते लीजै, तिल माहैं तन पड़िबा[‡]।
दादू रे तहँ तन ताड़ीजै[§], जेणैं मारग चढ़िबा ॥३॥

(१८८)

सन्मुख भइला रे तब दुख गइला रे, ते मेरे प्राण अधारी।
निराकार निरंजन देवा रे, लेवा तेह बिचारी ॥ टेक ॥
अपरम्पार परम निज सोई, अलख तोरा बिस्तारं।
अंकुर बीजै सहजि समाना रे, ऐसा समरथ सारं ॥ १॥
जे तैं कीन्हा किन्हि इक चीन्हा रे, भइला ते परिमाणं।
अबिगति तोरी बिगति न जाणौं, मैं मूरिख अयानं ॥ २॥
सहजैं तोरा ये मन मोरा, साधन सौं रँग आई।
दादू तोरी गति नहिं जाणै, निरबाहौ कर लाई ॥ ३ ॥

(१८९)

हरि मारग मस्तक दीजिये, तब निकट परम पद
लीजिये ॥ टेक ॥
इस मारग माहैं मरणा, तिल[||] पीछैं पाँव न धरणा।
अब आगैं होइ सो होई, पीछैं सोच न करणा कोई ॥१॥
ज्यौं सूरा रण जूझै, तब आपा पर नहिं बूझै।
सिर साहिब काज सँवारै, घण घावाँ आपा डारै ॥२॥
सती सत गहि साचा बोलै, मन निहचल कदे न डोलै।
वा कै सोच पोच जिय न आवै, जग देखत आप जलावै ॥३॥
इस सिर सौं साटा कीजै, तब अबिनासी पद लीजै।
ता का तब सिर स्याबित होवै, जब दादू आपा खोवै ॥४॥

---

*लालच में पड़ा। †जम अपने हाथ में तेरे सिर पर तीर साधे हुए है। ‡छिन में शरीर पात होगा। §चलाइये। ||छिन भर।

(१६०)

झूठा कलिजुग कह्या न जाइ, अमृत कौँ बिष कहै बणाइ ।टेक
धन कौँ निरधन निरधन कौँ धन, नीति अनीति पुकारै ।
निरमल मैला मैला निरमल, साध चोर करि मारै ॥ १ ॥
कंचन काच काच कौँ कंचन, हीरा कंकर भाखै ।
माणिक मणियाँ मणियाँ माणिक, साच झूठ करि नाखै ॥२॥
पारस पत्थर पत्थर पारस, कामधेन पसु गावै ।
चंदन काठ काठ कौँ चंदन, ऐसी बहुत बनावै ॥ ३ ॥
रस कौँ अणरस अणरस कौँ रस , मीठा खारा होई ।
दादू कलिजुग ऐसा बरतै , साचा बिरला कोई ॥ ४ ॥

(१६१)

दादू मोहिँ भरोसा मोटा ।
तारण तिरण सोई सँग मेरे, कहा करै कलि खोटा ॥ टेक ॥
दौँ लागी दरिया थैँ न्यारी, दरिया मंझि न जाई ।
मच्छ कच्छ रहैँ जल जेते , तिन कूँ काल न खाई ॥१॥
जब सूवै प्यंजर घर पाया, बाज रह्या बन माहीँ ।
जिन का समरथ राखणहारा , तिनकूँ को डर नाहीँ ॥२॥
साचै झूठ न पूजै कबहूँ , सत्ति न लागै काई ।
दादू साचा सहजि समाना, फिरि वै झूठ बिलाई ॥ ३ ॥

(१६२)

साईँ कौँ साच पियारा ।
साचै साच सुहावै देखौ, साचा सिरजनहारा ॥ टेक ॥
ज्यूँ घण घावाँ सार घड़ीजै, झूठ सबै झड़ि जाई ।
घण के घाऊँ सार रहेगा , झूठ न माहिँ समाई ॥ १ ॥

कनक कसौटी अगिनि मुख दीजै, कंप* सबै जलि जाई ।
यौं तौ कसणी साच सहैगा, झूठ सहै नहिं भाई ॥ २ ॥
ज्यूँ घृत कूँ ले ताता कीजै, ताइ ताइ तत कीन्हा ।
तत्तैं तत्त रहैगा भाई, झूठ सबै जलि षीना ॥ ३ ॥
यौं तौ कसणी साच सहैगा, साचा कसि कसि लेवै ।
दादू दरसन साचा पावै, झूठे दरस न देवै ॥ ४ ॥

(१९३)

बातैं बादि जाहिंगी भइये, तुम जिनि जानौ बातनि पइये ॥ टेक ॥
जब लग अपना आप न जाणै, तब लग कथनी काची ।
आपा जाणि साईं कूँ जाणै, तब कथनी सब साची ॥१॥
करणी बिना कंत नहिं पावै, कहे सुने का होई ।
जैसी कहै करै जे तैसी, पावैगा जन सोई ॥ २ ॥
बातनिहीं जे निरमल होवै, तौ काहे कूँ कसि लीजै ।
सोना अगिनि दहै दस बारा, तब यहु प्राण पतीजै ॥ ३॥
यौं हम जाणा मन पतियाना, करणी कठिन अपारा ।
दादू तन का आपा जारै, तौ तिरत न लागै बारा ॥४॥

(१९४)

पंडित राम मिलै सो कीजै,
पढ़ि पढ़ि बेद पुराण बखाने, सोई तत कहि दीजै ॥टेक॥
आतम रोगी बिषम बियाधी, सोई करि औषधि सारा ।
परसत प्राणी होइ परम सुख, छूटै सब संसारा ॥ १ ॥
ये गुण इन्द्री अगिनि अपारा, तासनि जलै सरीरा ।
तन मन सीतल होइ सदा सुख, सो जल नावौ नीरा ॥ २ ॥

*सोने की मैल ।

सोई मारग हमहिं बतावौ, जिहिं पंथि पहुँचैं पारा ।
भूलि न परै उलटि नहिं आवै, सो कुछ करहु बिचारा ॥३॥
गुर उपदेस देहु कर दीपक, तिमर मिटै सब सूझै ।
दादू सोई पंडित ग्याता, राम मिलन की बूझै ॥ ४ ॥

(१६५)

हरि राम बिना सब भरमि गये, कोई जन तेरा
साच गहै ॥ टेक ॥

पीवै नीर तृषा तन भाजै, ज्ञान गुरू बिन कोइ न लहै ।
परगट पूरा समझि न आवै, ता थैं सो जल दूरि रहै ॥१॥
हरष सोक दोउ समि करि राखै, एक एक के सँगि न बहै ।
अनतहि जाइ तहाँ दुख पावै, आपहि आपा आप दहै ॥२॥
आपा पर भरम सब छाड़ै, तीनि लोक परि ताहि धरै ।
सो जन सही साच कौं परसै, अमर मिलै नहिं कबहुँ मरै॥३॥
पारब्रह्म सौं प्रीति निरंतर, राम रसाइण भरि पीवै ।
सदा अनंद सुखी साचे सौं, कहै दादू सो जन जीवै ॥४॥

(१६६)

जग अंधा नैन न सूझै, जिन सिरजे ताहि न बूझै ॥टेक॥
पाहण की पूजा करै, करि आतम घाता ।
निरमल नैन न आवई, दोजग* दिसि जाता ॥ १ ॥
पूजै देव दिहाड़िया†, महामाई मानै ।
परगट देव निरंजना, ता की सेव न जानै ॥ २ ॥
भैरौं भूत सब भरम के, पसु प्राणी ध्यावै ।
सिरजनहारा सबनि का, ता कूँ नहिं पावै ॥ ३ ॥

---

*नर्क । † देहरा ।

आप सुवारथ मेदिनी*, का का नहिं करई ।
दादू साचे राम बिन, मरि मरि दुख भरई ॥ ४ ॥

(१६७)

साचा राम न जाणै रे, सब झूठ बखाणै रे ॥ टेक ॥
झूठे देवा झूठी सेवा, झूठा करै पसारा ।
झूठी पूजा झूठी पाती, झूठा पूजणहारा ॥ १ ॥
झूठा पाक करै रे प्राणी, झूठा भोग लगावै ।
झूठा आड़ा पड़दा देवै, झूठा थाल बजावै ॥ २ ॥
झूठे बकता झूठे सुरता, झूठी कथा सुणावै ।
झूठा कलिजुग सब को मानै, झूठा भरम दिढ़ावै ॥ ३ ॥
थावर जंगम जल थल महियल†, घटि घटि तेज समाना ।
दादू आतम राम हमारा, आदि पुरिष पहिचाना ॥ ४ ॥

(१६८)

मैं पंथि एक अपार के, मन और न भावै ।
सोई पंथि पावै पीव का, जिस आप लखावै ॥ टेक ॥
को पंथि हिंदू तुरक के, को काहू राता ।
को पंथि सोफी सेवड़े, को सन्यासी माता ॥ १ ॥
को पंथि जोगी जंगमा, को सक्ति पंथि धावै ।
को पंथि कमड़े कापड़ी, को बहुत मनावै ॥ २ ॥
को पंथि काहू के चलै, मैं और न जानौं ।
दादू जिन जग सिरजिया, ताही कौं मानौं ॥ ३ ॥

(१६९)

आज हमारे राम जी, साध घरि आये ।
मंगलचार चहुँ दिसि भये, आनंद बधाये ॥ टेक ॥
चौक पुराऊँ मोतियाँ, घसि चंदन लाऊँ ।
पंच पदारथ पोइ करि, यहु माल चढ़ाऊँ ॥ १ ॥

---

*संसार । †पृथ्वी संबंधी ।

तन मन धन करौं वारणैं, परदखिना* दीजै ।
सीस हमारा जीव ले, नौछावर कीजै ॥ २ ॥
भाव भगति करि प्रीति सौं, प्रेम रस पीजै ।
सेवा बंदन आरती, यहु लाहा† लीजै ॥ ३ ॥
भाग हमारा हे सखी, सुख सागर पाया ।
दादू का दरसन किया, मिले त्रिभुवन राया ॥ ४ ॥

(२००)

निरंजन नाँव के रस माते, कोइ पूरे प्राणी राते ॥टेक॥
सदा सनेही राम के, सोई जन साचे ।
तुम बिन और न जानहीं, रँग तेरे हि राचे ॥ १ ॥
आन न भावे एक तूँ, सति साधू सोई ।
प्रेम पियासे पीव के, ऐसा जन कोई ॥ २ ॥
तुम हीं जीवनि उरि रहे, आनँद अनुरागी ।
प्रेम मगन पिव प्रीतड़ी, लै तुम सूँ लागी ॥ ३ ॥
जे जन तेरे रँग रँगे, दूजा रँग नाहीं ।
जनम सुफल करि लीजिये, दादू उन माहीं ॥ ४ ॥

(२०१)

चलु रे मन जहँ अमृत बनाँ ।
निरमल नीके संत जनाँ ॥ टेक ॥
निरगुण नाँव फल अगम अपार ।
संतन जीवनि प्राण-अधार ॥ १ ॥
सीतल छाया सुखी सरीर ।
चरण सरोवर निरमल नीर ॥ २ ॥

*फेरी । †लाभ ।

आप सुवारथ मेदिनी*, का का नहिं करई ।
दादू साचे राम बिन, मरि मरि दुख भरई ॥ ४ ॥

(१६७)

साचा राम न जाणै रे, सब झूठ बखाणै रे ॥ टेक ॥
झूठे देवा झूठी सेवा, झूठा करै पसारा ।
झूठी पूजा झूठी पाती, झूठा पूजणहारा ॥ १ ॥
झूठा पाक करै रे प्राणी, झूठा भोग लगावै ।
झूठा आड़ा पड़दा देवै, झूठा थाल बजावै ॥ २ ॥
झूठे बकता झूठे सुरता, झूठी कथा सुणावै ।
झूठा कलिजुग सब को मानै, झूठा भरम दिढ़ावै ॥ ३ ॥
थावर जंगम जल थल महियल†, घटि घटि तेज समाना ।
दादू आतम राम हमारा, आदि पुरिष पहिचाना ॥ ४ ॥

(१६८)

मैं पंथि एक अपार के, मन और न भावै ।
सोई पंथि पावै पीव का, जिस आप लखावै ॥ टेक ॥
को पंथि हिंदू तुरक के, को काहू राता ।
को पंथि सोफी सेवड़े, को सन्यासी माता ॥ १ ॥
को पंथि जोगी जंगमा, को सक्ति पंथि धावै ।
को पंथि कमड़े कापड़ी, को बहुत मनावै ॥ २ ॥
को पंथि काहू के चलै, मैं और न जानौं ।
दादू जिन जग सिरजिया, ताही कौं मानौं ॥ ३ ॥

(१६९)

आज हमारे राम जी, साध घरि आये ।
मंगलचार चहुँ दिसि भये, आनंद बधाये ॥ टेक ॥
चौक पुराऊँ मोतियाँ, घसि चंदन लाऊँ ।
पंच पदारथ पोइ करि, यहु माल चढ़ाऊँ ॥ १ ॥

---

*संसार । †पृथ्वी संबंधी ।

तन मन धन करौँ वारणैँ, परदखिना* दीजै ।
सीस हमारा जीव ले, नौछावर कीजै ॥ २ ॥
भाव भगति करि प्रीति सौँ, प्रेम रस पीजै ।
सेवा बंदन आरती, यहु लाहा† लीजै ॥ ३ ॥
भाग हमारा हे सखी, सुख सागर पाया ।
दादू का दरसन किया, मिले त्रिभुवन राया ॥ ४ ॥

(२००)

निरंजन नाँव के रस माते, कोइ पूरे प्राणी राते ॥टेक॥
सदा सनेही राम के, सोई जन साचे ।
तुम बिन और न जानहीँ, रँग तेरे हि राचे ॥ १ ॥
आन न भावे एक तूँ, सति साधू सोई ।
प्रेम पियासे पीव के, ऐसा जन कोई ॥ २ ॥
तुम हीँ जीवनि उरि रहे, आनँद अनुरागी ।
प्रेम मगन पिव प्रीतड़ी, लै तुम सूँ लागी ॥ ३ ॥
जे जन तेरे रँग रँगे, दूजा रँग नाहीँ ।
जनम सुफल करि लीजिये, दादू उन माहीँ ॥ ४ ॥

(२०१)

चलु रे मन जहँ अमृत बनाँ ।
निरमल नीके संत जनाँ ॥ टेक ॥
निरगुण नाँव फल अगम अपार ।
संतन जीवनि प्राण-अधार ॥ १ ॥
सीतल छाया सुखी सरीर ।
चरण सरोवर निरमल नीर ॥ २ ॥

---

*फेरी । †लाभ ।

सुफल सदा फल बारह मास ।
नाना बाणी धुनि परकास ॥ ३ ॥
जहाँ बास बसि अमर अनेक ।
तहँ चलि दादू इहै बिबेक ॥ ४ ॥

(२०२)

चलो मन माहरा जहँ मिंत्र अम्हारा ।
जहँ जामण मरण नहिं जाणिये नहिं जाणिये ॥टेक॥
जहँ मोह न माया मेरा न तेरा ।
आवा गमन नहीं जम फेरा ॥ १ ॥
प्यंड पड़ै नहिं प्राण न छूटै ।
काल न लागै आव न खूटै* ॥ २ ॥
अमर लोक तहँ अखिल† सरीरा ।
ब्याधि बिकार न ब्यापै पीरा ॥ ३ ॥
राम राज कोइ भिड़ै न भाजै ।
इसथिर रहणा बैठा छाजै‡ ॥ ४ ॥
अलख निरंजन और न कोई ।
मिंत्र हमारा दादू सोई ॥ ५ ॥

(२०३)

बेली आनँद प्रेम समाइ ।
सहजैं मगन राम रस सींचै, दिन दिन बधती जाइ ॥टेक॥
सतगुर सहजैं बाही§ बेली, सहजि गगन घर छाया ।
सहजैं सहजैं कूँ पल मेल्है, जाणै अवधू राया ॥ १ ॥
आतम बेली सहजैं फूलै, सदा फूल फल होई ।
काया बाड़ी सहजैं निपजै, जाणै बिरला कोई ॥ २ ॥

---

*घटै । †अमर । ‡शोभा दे । §सींची ।

मन हठ बेली सूकण लागी, सहजैं जुगि जुगि जीवै ।
दादू बेलि अमर फल लागै, सहजि सदा रस पीवै ॥ ४ ॥

(२०४)

संतो राम बाण मोहिं लागे ।
मारत मिरग मरम तब पायौ, सब संगी मिलि जागे ॥टेक॥
चित चेतनि च्यंतामणि चीन्हे, उलटि अपूठा आया ।
मंदिर पैसि बहुरि नहिं निकसै, परम तत्त घर पाया ॥१॥
आवै न जाइ जाइ नहिं आवै, तिहि रसि मनवाँ माता ।
पान करत परमानँद पायौ, थकित भयौ चलि जाता ॥२॥
भयौ अपंग पंक* नहिं लागै, निरमल संगि सहाई ।
पूरण ब्रह्म अखिल अबिनासी, तिहि तजि अनत न जाई ॥३॥
सो सर† लागि प्रेम परकासा, प्रगटी प्रीतम बाणी ।
दादू दीनदयालहि जाणै, सुख मैं सुरति समाणी ॥ ४ ॥

(२०५)

मधि नैन निरखौं सदा, सो सहज सरूप ।
देखत ही मन मोहिया, सो तत्त अनूप ॥ टेक ॥
तिरबेणी तट पाइया, मूरति अबिनासी ।
जुग जुग मेरा भावता, सोई सुख रासी ॥ १ ॥
तारुणी तटि देखिहौं, तहाँ असथाना ।
सेवग स्वामी सँगि रहै, बैठे भगवाना ॥ २ ॥
निरभय थान सुहात सो, तहँ सेवग स्वामी ।
अनेक जतन करि पाइया, मैं अंतरजामी ॥ ३ ॥
तेज तार परमिति नहीं, ऐसा उजियारा ।
दादू पार न पावई, सो सरूप सँभारा ॥ ४ ॥

---

*कीचड़ । †बान ।

(२०६)

निकटि निरंजन देखिहौं, छिन दूरि न जाई।
बाहिर भीतर एक सा, सब रह्या समाई ॥ टेक ॥
सतगुर भेद बताइया, तब पूरा पाया।
नैनन हीं निरखौं सदा, घरि सहजैं आया ॥ १ ॥
पूरे सौं परचा भया, पूरी मति जागी।
जीव जानि जीवनि मिल्यो, ऐसे बड़ भागी ॥ २ ॥
रोम रोम मैं रमि रह्या, सो जीवनि मेरा।
जीव पीव न्यारा नहीं, सब संगि बसेरा ॥ ३ ॥
सुंदर सो सहजैं रहै, घट अंतरजामी।
दादू सोई देखिहौं, सारौं सँगि स्वामी ॥ ४ ॥

(२०७)

सहज सहेलड़ी हे, तूँ निरमल नैन निहारि।
रूप अरूप निरगुण आगुण मैं, त्रिभुवन देव मुरारि ॥ टेक ॥
बारम्बार निरखि जगजीवन, इहि घरि हरि अविनासी।
सुन्दरि जाइ सेज सुख बिलसै, पूरण परम निवासी ॥ १ ॥
सहजैं संगि परसि जगजीवन, आसणि अमर अकेला।
सुन्दरि जाइ सेज सुख सोवै, ब्रह्म जीव का मेला ॥ २ ॥
मिलि आनंद प्रीति करि पावन, अगम निगम जहँ राजा।
जाइ तहाँ परसि पावन कौं, सुन्दरि सारै काजा ॥ ३ ॥
मंगलचार चहूँ दिसि रोपै, जब सुन्दरि पिव पावै।
परम जोति पूरे सौं मिलि करि, दादू रंग लगावै ॥ ४ ॥

(२०८)

तहँ आपै आप निरंजना, तहँ निस बासर नहिं संजमा ॥ टेक
तहँ धरती अम्बर नाहीं, तहँ धूप न दीसै छाहीं।
तहँ पवन न चालै पाणी, तहँ आपै एक बिनानी ॥ १ ॥

तहँ चन्द न ऊगै सूरा , मुख काल न बाजै तूरा ।
तहँ सुख दुख का गमि नाहीं, वो तौ अगम अगोचर माहीं ।२
तहँ काल काया नहिं लागै , तहँ को सोवै को जागै ।
तहँ पाप पुण्य नहिं कोई , तहँ अलख निरंजन सोई ॥३॥
तहँ सहजि रहै सो स्वामी , सब घटि अंतरजामी ।
सकल निरंतर बासा, रटि दादू संगम पासा ॥ ४ ॥

(२०९)

अवधू बोलि निरंजन बाणी, तहँ एकै अनहद जाणी ॥टेक॥
तहँ बसुधा* का बल नाहीं, तहँ गगन घाम नहिं छाँहीं ।
तहँ चंद सूर नहिं जाई, तहँ काल काया नहिं भाई ॥१॥
तहँ रैणि दिवस नहिं छाया, तहँ बाव बरण नहिं माया ।
तहँ उदय अस्त नहिं होई, तहँ मरै न जीवै कोई ॥२॥
तहँ नाहीं पाठ पुराना, तहँ अगम निगम नहिं जाना ।
तहँ बिद्या बाद नहिं ज्ञाना, नहिं तहाँ जोग अरु ध्याना ॥३
तहँ निराकार निज ऐसा, तहँ जान्या जाइ न तैसा ।
तहँ सब गुण रहिता गहिये, तहँ दादू अनहद कहिये ॥४॥

(२१०)

बाबा को ऐसा जन जोगी ।
अंजन छाड़ै रहै निरंजन, सहज सदा रस भोगी ॥टेक॥
छाया माया रहै बिबरजित, प्यंड ब्रह्मंड नियारे ।
चंद सूर थैं अगम अगोचर, सो गहि तत्त बिचारे ॥१॥
पाप पुण्य लिपै नहिं कबहूँ, दोइ पख रहिता सोई ।
धरनि अकास ताहि थैं ऊपरि, तहाँ जाइ रत होई ॥२॥
जीवण मरण न बाँछै† कबहूँ, आवागवन न फेरा ।
पाणी पवन परस नहिं लागै, तिहि सँगि करै बसेरा ॥३॥

---

*पृथ्वी । †माँगै ।

गुण आकार जहाँ गमि नाहीं, आपै आप अकेला ।
दादू जाइ तहाँ जन जोगी, परम पुरिष सौं मेला ॥ ४ ॥

(२११)

जोगी जानि जानि जन जीवै ।
बिनहीं मनसा मनहिं बिचारै, बिन रसना रस पीवै ॥टेक॥
बिनहीं लोचन निरखि नैन बिन, स्रवण रहित सुनि सोई ।
ऐसैं आतम रहै एक रस, तौ दूसर नाँव न होई ॥ १ ॥
बिनहीं मारग चलै चरण बिन, निहचल बैठा जाई ।
बिनहीं काया मिलै परस्पर, ज्यौं जल जलहि समाई ॥२॥
बिनहीं ठाहर आसण पूरै, बिन कर बेनु बजावै ।
बिनहीं पाँऊँ नाचै निस दिन, बिन जिभ्या गुण गावै ॥३॥
सब गुण रहिता सकल बियापी, बिन इंद्री रस भोगी ।
दादू ऐसा गुरू हमारा, आप निरंजन जोगी ॥ ४ ॥

(२१२)

इहै परम गुर जोगं, अमी महा रस भोगं ॥ टेक ॥
मन पवना थिर साधं, अविगत नाथ अराधं ।
तहँ सबद अनाहद नादं ॥ १ ॥
पंच सखी परमोधं , अगम ज्ञान गुर बोधं ।
तहँ नाथ निरंजन सोधं ॥ २ ॥
सतगुर माहिं बतावा, निराधार घर छावा ।
तहँ जोति सरूपी पावा ॥ ३ ॥
सहजैं सदा प्रकासं, पूरण ब्रह्म बिलासं ।
तहँ सेवग दादू दासं ॥ ४ ॥

(२१३)

मूनैँ* येह अचंम्भौ थाये† ।
कीड़ी‡ ये हस्ती बिडाख्यो, तेन्हैँ बैठी खाये ॥ टेक ॥
जाण§ हुतौ ते बैठौ हारे, अजाण‖ तेन्हैँ ता वाहे¶ ।
पाँगुलै उजाबा लाग्यौ**, तेन्हैँ कर को साहै†† ॥ १ ॥
नान्हौ‡‡ हुतौ ते मोटो थयौ, गगन मँडल नहिँ माये ।
मोटेरो बिस्तार भणीजै, तेतौ केन्हे जाये§§ ॥ २ ॥
ते जाणै जे निरखी जोवै‖‖, खोजी ने बलि माहैँ ।
दादू तेन्हौँ मरम न जाणैँ, जे जिभ्या बिहूणौ गाये¶¶ ॥३॥

॥ राग आसावरी ॥

(२१४)

तूँहीँ मेरे रसना तूँहीँ मेरे बैना ।
तूँहीँ मेरे स्रवना तूँही मेरे नैना ॥ टेक ॥
तूँहीँ मेरे आतम कँवल मँझारी ।
तूँहीँ मेरे मनसा तुम्ह परिवारी ॥ १ ॥

---

*मूनैँ=मुझे । †थाये=होता है । ‡कीड़ी=चींटी अर्थात सुरत या जीवात्मा जो यहाँ अति दुर्बल हो रही है परंतु सतगुरु प्रताप से पुष्ट हो कर हस्ती रूपी मन को मार लेती है—(पंडित चंद्रिका प्रसाद ने कीड़ी का अभिप्राय "मन्सा" लिखा है जो ठीक नहीँ हो सकता क्योँकि मनसा तो मनकी जाई इच्छा है वह उसे क्या मारेगी !) । § चतुरा अर्थात मन । ‖भोली सुरत । ¶बहका लिया । **ऐसा मन जो चंचलता छोड़ कर पंगुल होगया वही ऊँचे पर पहुँचा । ††उस के हाथ [कर] को कौन रोकै [साहै] । ‡‡वही नन्ही सुरत जो गुरु बल ले कर आत्मा से महात्मा पद को प्राप्त हुई यहाँ तक कि अब त्रिकुटी मेँ भी नहीँ अटती । §§अब मन को अकुलाहट हुई कि सुरत की उन्नति को रोकना चाहिये जिस मेँ वह और आगे न बढ़ै । ‖‖निरख परख कर देखता है । ¶¶मनमुख जीव वह मर्म नहीँ जानते जिस का बिना जीभ के उच्चारन होता है ।

तूँहीं मेरे मनहीं, तूँहीं मेरे साँसा ।
तूँहीं मेरे सुरतैं प्राण निवासा ॥ २ ॥
तूँहीं मेरे नखसिख सकल सरीरा ।
तूँहीं मेरे जियरे ज्यौं जल नीरा ॥ ३ ॥
तुम्ह बिन मेरे और कोइ नाहीं ।
तूँहीं मेरी जीवनि दादू माहीं ॥ ४ ॥

(२१५)

तुम्हरे नाँइ लागि हरि जीवनि मेरा ।
मेरे साधन सकल नाँव निज तेरा ॥ टेक ॥
दान पुन्न तप तीरथ मेरे, केवल नाँव तुम्हारा ।
ये सब मेरे सेवा पूजा, ऐसा बरत हमारा ॥ १ ॥
ये सब मेरे बेद पुराणा, सुचि संजम है सोई ।
ज्ञान ध्यान येई सब मेरे, और न दूजा कोई ॥ २ ॥
काम क्रोध काया बसि करणा, ये सब मेरे नामा ।
मुकता गुपता परगट कहिये, मेरे केवल रामा ॥ ३ ॥
तारण तिरण नाँव निज तेरा, तुम्ह हीं एक अधारा ।
दादू अंग एक रस लागा, नाँव गहै भौ पारा ॥ ४ ॥

(२१६)

हरि केवल एक अधारा, सोइ तारण तिरण हमारा ॥टेक॥
ना मैं पंडित पढ़ि गुणि जाणौं, ना कुछ ज्ञान विचारा ।
ना मैं अगमी जोतिग जाँणौं, ना मुझ रूप सिंगारा ॥१॥
ना तप मेरे इंद्री निग्रह, ना कुछ तीरथ फिरणा ।
देवल पूजा मेरे नाहीं, ध्यान कछू नहिं धरणा ॥ २ ॥

जोग जुगति कछू नहिं मेरे, ना मैं साधन जाणौं ।
औषधि मूली मेरे नाहीं, ना मैं देस बखानौं* ॥ ३ ॥
मैं तौ और कछू नहिं जानौं, कहौ और क्या कीजे ।
दादू एक गलित गोबिंद सौं, इहि बिधि प्राण पतीजै ॥४॥

(२१७)

पीव घरि आवनौं ये, अहो मोहिं भावनौं ते ॥ टेक ॥
मोहन नीकौ री हरी, देखौंगी अँखियाँ भरी ।
राखौं हौं उर धरी प्रीति खरी, मोहन मेरौ री माई ।
रहौं हौं चरणौं धाई, आनँद बधाई, हरि के गुण गाई ॥१॥
दादू रे चरण गहिये, जाइ नैं तिहाँ तौ रहिये ।
तन मन सुख लहिये, बीनती कहिये ॥ २ ॥

(२१८)

अहा माई मेरौ राम बैरागी, तजि जिनि जाइ ॥ टेक ॥
राम बिनोद करत उर अंतरि, मिलिहौं बैरागनि धाइ ॥१॥
जोगनि ह्वै करि फिरौंगी बिदेसा, राम नाम ल्यौ लाइ ॥२॥
दादू को स्वामी है रे उदासी, रहिहौं नैन दोइ लाइ ॥३॥

(२१९)

रे मन गोबिंद गाइ रे गाइ, जनम अबिरथा जाइ रे जाइ ॥टेक
ऐसा जनम न बारंबारा, ता थैं जपि ले राम पियारा ॥१॥
यहु तन ऐसा बहुरि न पावै, ता थैं गोबिंद काहे न गावै ॥२
बहुरि न पावै मनिषा देही, ता थैं करि ले राम सनेही ॥३॥
अब कै दादू किया निहाला, गाइ निरंजन दीनदयाला ॥४॥

---

*न मेरा देश में बखान अर्थात महिमा है ।

(२२०)

मन रे सोवत रैनि बिहानी, तैं अजहूँ जात न जानी ॥टेक॥
बीती रैनि बहुरि नहिं आवै, जीव जागि जिनि सोवै ।
चारयूँ दिसा चोर घर लागे, जागि देख क्या होवै ॥१॥
भोर भये पछितावन लागौ, माहिं महल कुछ नाहीं ।
जब जाइ काल काया करि लागै, तब सोधै घर नाहीं ॥२॥
जागि जतन करि राखौ सोई, तब तन तत्त न जाई ।
चेतनि पहरै* चेतत नाहीं, कहि दादू समझाई ॥ ३ ॥

(२२१)

देखत ही दिन आइ गये ।
पलटि केस सब सेत भये ॥ टेक ॥
आई जुरा मीच अरु मरणा ।
आया काल अबै क्या करणा ॥ १ ॥
स्रवणौं सुरति गई नैन न सूझै ।
सुधि बुधि नाठी† कह्या न बूझै ॥ २ ॥
मुख तैं सबद बिकल भइ बाणी ।
जनम गया सब रैनि विहाणी ॥ ३ ॥
प्राण पुरिस पछितावण लागा ।
दादू औसर काहे न जागा ॥ ४ ॥

(२२२)

हरि बिन हाँ हो कहूँ सचु नाहीं ।
देखत जाइ बिषै फल खाहीं ॥ टेक ॥
रस रसना के मीन मन भौरा‡ ।
जल थैं जाइ यौं दहै सरीरा ॥ १ ॥

---

*समय । †नष्ट हुई । ‡साथ, पच्छ ।

गज के ज्ञान मगन मदि माता ।
अंकुस डोरि गहै फँद गाता ॥ २ ॥
मरकट मूठी माहिं मन लागा ।
दुख की रासि भ्रमै भ्रम भागा ॥ ३ ॥
दादू देखु हरी सुखदाता ।
ता कौं छाड़ि कहाँ मन राता ॥ ४ ॥

(२२३)

साँई बिना संतोष न पावै ।
भावै घर तजि बन बन धावै ॥ टेक ॥
भावै पढ़ि गुनि बेद उचारै ।
आगम नीगम सबै बिचारै ॥ १ ॥
भावै नव खँड सब फिरि आवै ।
अजहूँ आगैं काहे न जावै ॥ २ ॥
भावै सब तजि रहै अकेला ।
भाई बंध न काहू मेला ॥ ३ ॥
दादू देखै साँई सोई ।
साच बिना संतोष न होई ॥ ४ ॥

(२२४)

मन माया रातौ भूले ।
मेरी मेरी करि करि बौरे, कहा मुगध नर फूले ॥टेक॥
माया कारणि मूल गँवावै, समझि देखि मन मेरा ।
अंत काल जब आइ पहूँता, कोई नहीं तब तेरा ॥ १ ॥
मेरी मेरी करि नर जाणै, मन मेरी करि रहिया ।
तब यहु मेरी कामि न आवै, प्राण पुरिस जब गहिया ॥ २ ॥
राव रंक सब राजा राणा, सबहिन कौं बौरावै ।
छत्रपति भूपति तिनहूँ के सँगि, चलती बेर न आवै ॥३॥

चेति बिचारि जानि जिय अपने, माया संगि न जाई ।
दादू हरि भज समझि सयाना, रहौ राम ल्यौ लाई ॥४॥

(२२५)

रहसी एक उपावणहारा, और चलसी सब संसारा ॥टेक॥
चलसी गगन धरणि सब चलसी, चलसी पवन अरु पाणी ।
चलसी चंद सूर पुनि चलसी, चलसी सबै उपाणी ॥ १॥
चलसी दिवस रैणि भी चलसी, चलसी जुग जमवारा ।
चलसी कालब्याल पुनि चलसी, चलसी सबै पसारा ॥२॥
चलसी सरग नरक भी चलसी, चलसी भूचणहारा* ।
चलसी सुक्ख दुक्ख भी चलसी, चलसी करम बिचारा ॥३॥
चलसी चंचल निहचल रहसी, चलसी जे कुछ कीन्हा ।
दादू देखु रहै अबिनासी, और सबै घट षीना† ॥ ४ ॥

(२२६)

इहि कलि हम मरणे कूँ आये ।
मरण मीत उन संगि पठाये ॥ टेक ॥
जब थैं यहु हम मरण बिचारा ।
तब थैं आगम पंथ सँवारा ॥ १ ॥
मरण देखि हम गर्ब न कीन्हा ।
मरण पठाये सो हम लीन्हा ॥ २ ॥
मरणा मीठा लागै मोहीं ।
इहि मरणे मीठा सुख होई ॥ ३ ॥
मरणे पहिली मरै जे कोई ।
दादू सो अजरावर होई ॥ ४ ॥

---

*चाहने वाला । †क्षीण, नष्ट ।

(२२७)

रे मन मरणे कहा डराई ।
आगैं पीछैं मरणा रे भाई ॥ टेक ॥
जे कुछ आवै थिर न रहाई ।
देखत सबै चल्या जग जाई ॥ १ ॥
पीर पैगम्बर किया पयाना ।
सेख मसाइख सबै समाना ॥ २ ॥
ब्रह्मा बिसुन महेस महाबलि ।
मोटे मुनि जन गये सबै चलि ॥ ३ ॥
निहचल सदा सोई मन लाइ ।
दादू हरखि राम गुण गाइ ॥ ४ ॥

(२२८)

ऐसा तत्त अनूपम भाई, मरै न जीवै काल न खाई ॥टेक॥
पावकि जरै न मार्‍यौ मरई, काट्यौ कटै न टार्‍यौ टरई ॥१॥
आखिर खिरै नहिं लागै काई, सीत घाम जल डूबि न जाई ।२
माटी मिलै न गगन बिलाई, अघट एक रस रह्या समाई ॥३
ऐसा तत्त अनूपम कहिये, सो गहि दादू काहे न रहिये ॥४

(२२९)

मन रे सेवि निरंजनराई, ता कौं सेवौ रे चित लाई ।टेक।
आदि अंतैं सोई उपावै, परलै लेइ छिपाई ।
बिन थंभा जिन गगन रहाया, सो रह्या सबनि मैं समाई ।१।
पाताल माहिं जे आराधै, बासिग* रे गुण गाई ।
सहस मुख जिभ्या द्वै ता के, सोभी पार न पाई ॥ २ ॥
सुर नर जा कौ पार न पावै, कोटि मुनी जन ध्याई ।
दादू रे तन ता कौ है रे, जा कौ सकल लोक आराही† ॥३॥

---

*बासुकि नाग । †आराधता या पूजता है ।

॥ जीव उपदेश ॥

(२३०)

निरंजन जोगी जानि ले चेला ।
सकल बियापी रहै अकेला ॥ टेक ॥
खपर न झोली डंड अधारी ।
मठी न माया लेहु बिचारी ॥ १ ॥
सींगी मुद्रा विभूति न कंथा ।
जटा जाप आसण नहिं पंथा ॥ २ ॥
तीरथ बरत न बनखँड़ बासा ।
माँगि न खाइ नहीं जग आसा ॥ ३ ॥
अमर गुरू अबिनासी जोगी ।
दादू चेला महारस भोगी ॥ ४ ॥

(२३१)

जोगिया बैरागी बाबा, रहै अकेला उनमनि लागा ॥टेक॥
आतमा जोगी धीरज कंथा, निहचल आसण आगम पंथा ।१
सहजैं मुद्रा अलख अधारी, अनहद सींगी रहणि हमारी ।२
काया बनखँड पाँचौं चेला, ज्ञान गुफा मैं रहै अकेला ॥३॥
दादू दरसन कारनि जागै, निरंजन नगरी भिष्या माँगै ॥४॥

(२३२)

बाबा कहु दूजा क्यौं कहिये, ता थैं इहि संसय दुख सहिये ॥टेक
यहु मति ऐसी पसुवा जैसी, काहे चेतत नाहीं ।
अपना अंग आप नहिं जानै, देखै दर्पण माहीं ॥ १ ॥
इहि मति मीच मरण के ताईं, कूप सिंघ तहँ आया ।
डूबि मुवा मन मरम न जान्या, देखि आपनी छाया ॥२॥

मद के माते समझत नाहीं, मैगल* की मति आई ।
आपै आप आप दुख दीन्हा, देखि आपणी झाँई ॥ ३ ॥
मन समझै तौ दूजा नाहीं, बिन समझैं दुख पावै ।
दादू ज्ञान गुरू का नाहीं, समझि कहाँ थैं आवै ॥ ४ ॥

(२३३)

बाबा नाहीं दूजा कोई,
एक अनेक नाँउ तुम्हारे, मो पैं और न होई ॥ टेक ॥
अलख इलाही एक तूँ, तूँ हीं राम रहीम ।
तूँ हीं मालिक मोहना, केसो नाँउ करीम ॥ १ ॥
साँईं सिरजनहार तूँ, तूँ पावन तूँ पाक ।
तूँ काइम करतार तूँ, तूँ हरि हाजिर आप ॥ २ ॥
रमिता राजिक एक तूँ, तूँ सारँग सुबहान ।
कादिर करता एक तूँ, तूँ साहिब सुलतान ॥ ३ ॥
अविगत अल्लह एक तूँ, गनी‡ गुसाईं एक ।
अजब अनूपम आप है, दादू नाँउ अनेक ॥ ४ ॥

(२३४)

जीवत मारे मुए जिलाये । बोलत गूँगे गूँग बुलाये ॥टेक॥
जागत निस भरि सोई सुलाये । सोवत रैनी सोई जगाये।१
सूझत नैनहुँ लोय† न लीये। अंध बिचारे ता मुखि दीये।२
चलते भारी ते बिठलाये। अपंग बिचारे सोई चलाये।३
ऐसा अद्भुत हम कुछ पाया। दादू सतगुर कहि समझाया।४

---

*मस्त हाथी । †लोक में । ‡धनी ।

(२३५)

क्यौंकरि यहु जग रच्यौ गुसाईं ।
तेरे कौन बिनोद बन्यौ मन माहीं ॥ टेक ॥

कै तुम्ह आपा परगट करणा ।
कै यहु रचि ले जीव उधरणा ॥ १ ॥

कै यहु तुम्ह कौं सेवग जानै ।
कै यहु रचि ले मन के मानै ॥ २ ॥

कै यहु तुम्ह कौं सेवग भावै ।
कै यहु रचि लै खेल दिखावै ॥ ३ ॥

कै यहु तुम्ह कौं खेल पियारा ।
कै यहु भावै कीन्ह पसारा ॥ ४ ॥

यहु सब दादू अकथ कहानी ।
कहि समझावौ सारँग प्रानी* ॥ ५ ॥

॥ साखी ज्वाब की ॥

परमारथ कौं सब किया, आप सवारथ नाहिं ।
परमेसुर परमारथी, कै साधू कल माहिं ॥ (१५-५०)
खालिक खेलै खेल करि, बूझै बिरला कोइ ।
ले करि सुखिया ना भया, देकरि सुखिया होइ ॥ (२१-४१)

(२३६)

हरे हरे सकल भवन भरे, जुगि जुगि सब करे।
जुगि जुगि सब धरे, अकल सकल जरै, हरे हरे ॥ टेक ॥
सकल भवन छाजै, सकल भुवन राजै, सकल कहै ।
धरती अंबर गहै, चंद सूर सुधि लहै, पवन प्रगट बहै ॥१

---

*एक लिपि और एक पुस्तक के पाठ में "पानी" है ।

घट घट आप देवै, घट घट आप लेवै, मंडित माया ।
जहाँ तहाँ आप राया, जहाँ तहाँ आप छाया, अगम अगम
पाया ॥ २ ॥
रस माहैं रस राता, रस माहैं रस माता, अमृत पीया ।
नूर माहैं नूर लीया, तेज माहैं तेज कीया, दादू दरस दीया ॥ ३

(२३७)

पीव पीव आदि अंत पीव ।
परसि परसि अंग संग, पीव तहाँ जीव ॥ टेक ॥
मन पवन भवन गवन, प्राण कँवल माहिं ।
निधि निवास बिधि बिलास, राति दिवस नाहिं ॥ १ ॥
साँस बास आस पास, आत्म अँगि लगाइ ।
ऐन बैन निरखि नैन, गाइ गाइ रिझाइ ॥ २ ॥
आदि तेज अंति तेज, सहजि सहजि आइ ।
आदि नूर अंति नूर, दादू बलि बलि जाइ ॥ ३ ॥

(२३८)

नूर नूर अव्वल आखिर नूर,
दाइम काइम, काइम दाइम, हाजिर है भरपूर ॥ टेक ॥
असमान नूर जिमीं नूर, पाक परवरदिगार ।
आब नूर, बाद नूर, खूब खूबाँ यार ॥ १ ॥
जाहिर बातिन, हाजिर नाजिर, दाना तूँ दीवान ।
अजब अजाइब नूर दीदम, दादू है हैरान ॥ २ ॥

(२३९)

मैं अमली मतिवाला माता ।
प्रेम मगन मेरा मन राता ॥ टेक ॥
अमी महारस भरि भरि पीवै ।
मन मतिवाला जोगी जीवै ॥ १ ॥

चंद सूर दोइ दीपक कीन्हा, राति दिवस करि लीन्हा।
राजिक रिजक सबनि कौं दीन्हा, दीन्हा लीन्हा कीन्हा ॥३
परम गुरू सो प्राण हमारा, सब सुख देवै सारा।
दादू खेलै अनत अपारा, अपारा सारा हमारा ॥ ४ ॥

(२४४)

थकित भयौ मन कह्यौ न जाई। सहजि समाधि रह्यौ ल्यौ लाई ॥ टेक ॥
जे कुछ कहिये सोचि बिचारा। ज्ञान अगोचर अगम अपारा ॥ १ ॥
साइर बूँद कैसैँ करि तोलै*। आप अबोल कहा कहि बोलै।२
अनल पंख परै परि दूरि। ऐसैँ राम रह्या भरपूरि ॥३॥
इब मन मेरा ऐसैँ रे भाई। दादू कहिबा कहण न जाई ॥४॥

(२४५)

अबिगत की गति कोइ न लहै। सब अपना उनमान कहै।टेक
केते ब्रह्मा बेद बिचारैँ, केते पंडित पाठ पढ़ैँ।
केते अनभै आतम खोजैँ, केते सुर नर नाँव रटैँ ॥ १ ॥
केते ईसुर आसणि बैठे, केते जोगी ध्यान धरैँ।
केते मुनियर मन कूँ मारैँ, केते ज्ञानी ज्ञान करैँ ॥ २ ॥
केते पीर केते पैगंबर, केते पढ़ैँ कुराना।
केते काजी केते मुल्ला, केते सेख सयाना ॥ ३ ॥
केते पारिख अंत न पावैँ, वार पार कुछ नाहीँ।
दादू कीमति कोइ न जानै, केते आवैँ जाहीँ ॥ ४ ॥

---

*बूँद समुद्र की तौल क्या कर सकती है।

(२४६)

ये हैँ बूझि रही पिव जैसा, तैसा कोइ न कहै रे ।
अगम अगाध अपार अगोचर, सुधि बुधि कोइ न
लहै रे ॥ टेक ॥
वार पार कोइ अंत न पावै, आदि अंत मधि नाहीं रे ।
खरे सयाने भये दिवाने, कैसा कहाँ रहावै रे ॥ १ ॥
ब्रह्मा बिसुन महेसुर बूझै, केता कोई बतावै रे ।
सेख मसाइख पीर पैगंबर, है कोइ अगह गहै रे ॥ २ ॥
अंबर धरती सूर ससि बूझै, बाव बरण सब सोधै रे ।
दादू चकित है हैराना, को है करम दहै रे ॥ ३ ॥

(२४७)

॥ राग सौंधड़ी ॥

हंस सरोवर तहँ रमैं, सूभर हरि जल नीर ।
प्राणी आप पखालिये, निर्मल सदा हो सरीर ॥ टेक ॥
मुकताहल मन मानिया, चूगै हंस सुजान ।
मढ़ि निरंतर झूलिये, मधुर बिमल रस पान ॥ १ ॥
भँवर कँवल रस बासना, रातौ राम पीवंत ।
अरस परस आनँद करै, तहँ मन सदा होइ जीवंत ॥२॥
मीन मगन माहैँ रहै, मुदित सरोवर माहिँ ।
सुख सागर क्रीला* करै, पूरण परमिति नाहिँ ॥ ३ ॥
निरभय तहँ भय को नहीं, बिलसै बारंबार ।
दादू दरसन कीजिये, सनमुख सिरजनहार ॥ ४ ॥

*क्रीड़ा ।

(२४८)

सुख सागर मैं झूलिबौ, कुसमल झड़ै हो अपार ।
निर्मल प्राणी होइबौ, मिलिबौ सिरजनहार ॥ टेक ॥
तिहि संजमि पावन सदा, पंक न लागै प्रान ।
कँवल बिगासै तिहिँ तणौँ, उपजै ब्रह्म गियान ॥ १ ॥
अगम निगम तहँ गमि करै, तत्तैँ तत्त मिलान ।
आसणि गुर कै आइबौ, मुकतैँ महल समान ॥ २ ॥
प्राणी परिपूजा करै, पूरे प्रेम बिलास ।
सहजैँ सुंदर सेवियै, लागी लै कविलास ॥ ३ ॥
रैणि दिवस दीसै नहीं, सहजैँ पुंज प्रकास ।
दादू दरसन देखियै, इहि रस रातौ हो दास ॥ ४ ॥

(२४९)

अबिनासी सँगि आतमा, रमै हो रैणि दिन राम ।
एक निरंतर ते भजै, हरि हरि प्राणी नाम ॥ टेक ॥
सदा अखंडित पुरि बसै, सो मन जाणी ले ।
सकल निरंतर पूरि सब, आतम रातौ ते ॥ १ ॥
निराधार निज बैसणौ, जिहि तति आसण पूरि ।
गुर सिष आनँद ऊपजै, सनमुख सदा हजूरि ॥ २ ॥
निहचल ते चालै नहीं, प्राणी ते परिमाण ।
साथी साथैँ ते रहैँ, जाणैँ जाण सुजाण ॥ ३ ॥
ते निरगुण आगुण धरो, माहैँ कौतिगहार ।
देह अछत अलगौ रहै, दादू सेवि अपार ॥ ४ ॥

(२५०)

पारब्रह्म भजि प्राणिया, अविगत एक अपार ।
अबिनासी गुर सेविये, सहजैं प्राण अधार ॥ टेक ॥
ते पुर प्राणी तेहनौ, अबिचल सदा रहंत ।
आदि पुरिस ते आपणौ, पूरण परम अनंत ॥ १ ॥
अविगत आसण कीजिये, आपैं आप निधान ।
निरालंब भजि तेहनौ, आनंद आतम राम ॥ २ ॥
निरगुण निहचल थिर रहै, निराकार निज सोइ ।
ते सति प्राणी सेविये, लै समाधि रति होइ ॥ ३ ॥
अमर आप रमिता रमै, घटि घटि सिरजनहार ।
गुण अतीत भजि प्राणिया, दादू येहु बिचार ॥ ४ ॥

(२५१)

क्यौँ भाजै सेवग तेरा, ऐसा सिरि साहिब मेरा ॥ टेक ॥
जाके धरती गगन आकासा, जाके चंद सूर कविलासा ।
जाके तेज पवन जल साजा, जाके पंच तत्त के बाजा ॥१॥
जाके अठार भार बनमाला, गिरि पर्बत दीनदयाला ।
जाके साइर अनँत तरंगा, जाके चौरासी लख संगा ॥२॥
जाके ऐसे लोक अनंता, रचि राखे बिधि बहु भंता ।
जाके ऐसा खेल पसारा, सब देखै कौतिगहारा ॥ ३ ॥
जाके काल मीच डर नाहीं, सो बरति रह्या सब माहीं ।
मनि भावै खेलै खेला, ऐसा है आप अकेला ॥ ४ ॥
जाके ब्रह्मा ईसुर बंदा, सब मुनिजन लागे अंगा ।
जाके साध सिद्ध सब माहीं, परिपूरण परिमित नाहीं ॥५॥

सोइ भानै घड़ै सँवारै, जुग केते कबहुँ न हारै ।
ऐसा हरि साहिब पूरा, सब जीवन आतम मूरा ॥ ६ ॥
सो सबहिन की सुधि जानै, जो जैसा तैसी बानै ।
सर्बंगी राम सयाना, हरि करै सो होइ निदाना ॥ ७ ॥
जे हरिजन सेवग भाजै, तौ ऐसा साहिब लाजै ।
अब मरण माँडि हरि आगै, तौ दादू बाण न लागै ॥८॥

(२५२)

हरि भजताँ किमि भाजिये, भाजैं भल नाहीं ।
भागैं भल क्यूँ पाइये, पछितावै माहीं ॥ टेक ॥
सूरो सो सहजैं भिड़ै, सार उर झेलै ।
रण रोकै भाजै नहीं, ते मान* न मेलै ॥ १ ॥
सती सत्त साचा गहै, मरणै न डराई ।
प्राण तजै जग देखताँ, पियड़ौ† उर लाई ॥ २ ॥
प्राण पतंगा यौं तजै, वो अंग न मोड़ै ।
जोबन जारै जोति सूँ, नैना भल जोड़ै ॥ ३ ॥
सेवग सो स्वामी भजै, तन मन तजि आसा ।
दादू दरसन ते लहै, सुख संगम पासा ॥ ४ ॥

(२५३)

सुणि तूँ मना रे, मूरिख मूढ़ बिचार ॥ टेक ॥
आवै लहरि बिहावणी, दवै देह अपार ॥ १ ॥
करिबौ है तिमि कीजिये रे, सुमिरि सो आधार ॥ २ ॥
चरण बिहूणौ चालिबौ रे, संभारी ले सार ॥ ३ ॥
दादू ते हजि‡ लीजिये रे, साचौ सिरजनहार ॥ ४ ॥

---

*एक पुस्तक में "बान" है—"मेलै" का अर्थ त्यागै है इस लिये "मान" ही का पाठ ठीक जान पड़ता है । †प्रति । ‡भजि ।

(२५४)

रे मन साथी माहरा, तूँ समझायौ कइ बारो* रे।
रातै रंग कसुंभ कै, तैं बीसाऱ्यो आधारो रे॥ टेक॥
सुपिना सुख के कारणे, फिरि पीछैं दुख होई रे।
दीपक दृष्टि पतंग ज्यूँ, यूँ भर्मि जलै जिनि कोई रे॥१॥
जिभ्या स्वारथि आपणे, ज्यूँ मीन मरै तजि नीरो रे।
माहैं जाल न जाणियौ, ता थैं उपनौ† दुक्ख सरीरो रे॥२॥
स्वादैंही संकुटि‡ पड्यौ देखत हीं नर अंधो रे।
मूरिख मूठी छाड़ि दे, होइ रहो निरबंधो रे॥ ३॥
मानि सिखावणि माहरी, तूँ हरि भज मूल न हारी रे।
सुख सागर सेइ सेवियै, जन दादू राम सँभारी रे॥४॥

॥ राग देवगंधार॥

(२५५)

सरणि तुम्हारी आइ परे।
जहाँ तहाँ हम सब फिरि आये,
राखि राखि§ हम दुखित खरे॥ टेक॥
कसि कसि काया तप ब्रत करि करि,
भ्रमत भ्रमत हम भूलि परे।
कहुँ सीतल कहुँ तपति देह तन,
कहुँ हम करवत‖ सीस धरे॥ १॥
कहुँ बन तीरथ फिरि फिरि थाके,
कहुँ गिरि परबत जाइ चढ़े।
कहूँ सिखिर चढ़ि परे धरणि पर,
कहुँ हति आपा प्राण हरे॥ २॥

*कई बार। †उत्पन्न हुआ। ‡कष्ट। §रक्षा कर। ‖आरा।

अंध भये हम निकटि न सूझै,
ता थैं तुम्ह तजि जाइ जरे ।
हाहा हरि अब दीन लीन करि,
दादू बहु अपराध भरे ॥ ३ ॥

(२५६)

बौरी तूं बार बार बौरानी ।
सखी सुहाग न पावै ऐसैं, कैसैं भरमि भुलानी ॥ टेक ॥
चरनौं चेरी चित नहिं राख्यौ, पतिब्रत नाहिन जान्यौ ।
सुंदर सेज संगि नहिं जाने, पिव सूं मन नहिं मान्यौ ॥१॥
तन मन सबै सरीर न सौंप्यौ, सीस नाइ नहिं ठाढ़ी ।
इकरस प्रीति रही नहिं कबहूं, प्रेम उमँग नहिं बाढ़ी ॥२॥
प्रीतम अपनौ परम सनेही, नैन निरखि न अघानी ।
निसबासुर आनि उर अंतर, परम पूजि नहिं जानी ॥ ३ ॥
पतिब्रत आगैं जिनि जिनि पाल्यो, सुंदरि तिनि सब छाजै ।
दादू पिव बिन और न जानै, ताहि सुहाग बिराजै ॥४॥

(२५७)

मन मूरिखा तैं यौंहीं जनम गँवायौ ।
साँईं केरी सेवा न कीन्ही, इहि कलि काहे कूँ आयौ ॥ टेक ॥
जिन बातन तेरौ छूटिक नाहीं, सोई मन तेरे भायौ ।
कामी ह्वै बिषिया सँग लाग्यौ, रोम रोम लपटायौ ॥१॥
कुछ इक चेति बिचारी देखौ, कहा पाप जिय लायौ ।
दादूदास भजन करि लीजै, सुपिने जग डहकायौ ॥ २ ॥

॥ राग कान्हरा ॥

(२५८)

वाल्हा हूँ थारी, तूँ म्हारो नाथ ।
तुम सूँ पहली प्रीतड़ी, पूरिबलौ साथ ॥ टेक ॥
वाल्हा मैं हूँ थारो ओलसियौ* रे,
राखिस† तूँनैं रिदा मँझारि ।
हूँ पामूँ‡ पीव आपणों रे ,
त्रिभुवन दाता देव मुरारि ॥ १ ॥
वाल्हा मन म्हारे मन माहैं राखिस,
आतम एक निरंजन देव ।
चित माहैं चित सदा निरंतर,
येणी पेरैं§ थारी सेव ॥ २ ॥
वाल्हा भाव भगति हरि भजन तिहारो ।
प्रेमैं पूरिसि कँवल विगास ।
अभि अंतरि आनंद अबिनासी ।
दादू नी एवैं‖ पुरवी आस ॥ ३ ॥

(२५९)

बार बार कहूँ रे घेला, राम नाम काँइ बिसार्‌यौ रे ।
जनम अमोलिक पामियो¶, एह्वे** रतन काँ†† हार्‌यौ रे ॥टेक
बिषिया बाह्यौ‡‡ नैं तहँ धायौ, कीधूँ§§ नहिँम्हारूँ वार्‌यूँ‖‖ रे ।
माया धन जोई¶¶ नैं भूल्यौ, सर्बथ*** येणैं††† हार्‌यूँ रे ॥१॥

---

*इहसानमंद । †रक्खूँगा । ‡पाऊँ । §इस रीति से । ‖ऐसे । ¶पाया ।
**ऐसा । ††काहे । ‡‡सींचा । §§किया । ‖‖ मने किया हुआ । ¶¶देख कर ।
***सर्वस्व । †††इस ने ।

गर्भबास देह हवै पामी, आस्रम तेह सँभास्यौ रे।
दादू रे जन राम भणीजै, नहिं तो जथा बिधि हास्यौ रे ॥२*॥

॥ राग परज ॥

(२६०)

नूर रह्या भरपूर, अमी रस पीजिये ।
रस माहैं रस होइ, लाहा लीजिये ॥ टेक ॥
परगट तेज अनंत, पार नहिं पाइये ।
झिलिमिलि झिलिमिलि होइ, तहाँ मन लाइये ॥ १ ॥
सहजैं सदा प्रकास, जोति जल पूरिया ।
तहाँ रहै निजदास, सेवग सूरिया ॥ २ ॥
सुख-सागर वार न पार, हमारा बास है ।
हंस रहैं ता माहिं, दादू दास है ॥ ३ ॥

॥ राग भाँणमली ॥

(२६१)

म्हारा वाल्हा रे थारे सरण रहीस ।
बिनंतड़ी वाल्हानैं कहताँ, अनंत सुक्ख लहीस ॥ टेक ॥
स्वामी तणौं† हूँ संग न मेलूँ,‡ बीनंतडी§ कहीस ।
हूँ अबला तूँ बलिवंत राजा, थारा विना वहीस‖ ॥ १ ॥
संग रहूँ ताँ¶ सब सुख पामूँ, अंतर थई दहीस** ।
दादू ऊपर दया करीनै, आवो आणी वेस†† ॥ २ ॥

(२६२)

चरण देखाड़ तो परमाण ।
स्वामी म्हारै नैणौं निरखूँ, माँगूँ येज‡‡ मान ॥ टेक ॥

---

*गर्भ बास करके देह अब पाई उसी आश्रम को सम्हालो दादू कहते हैं कि हे जन राम को भजो नहीं तो सब प्रकार से हारे हो ।

†का । ‡छोड़ूँ । §बिनती । ‖बहजाऊँगी । ¶वहाँ । **जुदा होकर जल जाऊँगी । ††आओ इस तरफ़ । ‡‡यही ।

जोवूँ* तुभ नैं आसा मुभ नैं, लागूँ येज ध्यान।
वाल्हो म्हारो मला रे रहिये, आवै केवल ज्ञान ॥ १ ॥
जेणी पेरैं हूँ देखूँ तुभ नैं, मुभ नैं आलौ† जाण‡।
पीव तणीं हूँ पर नहिं जाणूँ,§ दादू रे अजाण ॥ २ ॥

(२६३)

ते हरि मलूँ|| म्हारो नाथ, जोवा नैं¶ म्हारो तन तपै।
केवी पेरैं** पामूँ साथ ॥ टेक ॥
ते कारणि हूँ आकुल व्याकुल, ऊभी†† करूँ बिलाप।
स्वामी म्हारो नैणौं निरखूँ, ते तणों‡‡ मने ताप ॥ १ ॥
एक बार घर आवै वाल्हा, नव मेलूँ कर हाथ§§।
ये बिनती साँभल|||| स्वामी, दादू थारो दास ॥ २ ॥

(२६४)

ते केम पामिये रे, दुर्लभ जे आधार।
ते बिना तारण को नहीं, केम उतरिये पार ॥ टेक ॥
केवी पेरैं** कीजे आपणो रे, तत्व ते छे सार।
मन मनोरथ पूरे म्हारा, तन नौं ताप निवार ॥ १ ॥
संभारयो¶¶ आवे रे वाल्हा, वेलाये अवार***।
बिरहणी बिलाप करे, तेम††† दादू मने बिचार ॥ २ ॥

॥ राग सारँग ॥

(२६५)

हो ऐसा ज्ञान ध्यान, गुर बिना क्यौं पावै।
वार पार पार वार, दूतर‡‡‡ तिरि आवै हो ॥ टेक ॥

---

*राह देखूँ। †देय। ‡ ज्ञान। §मैं पीव ही की हूँ और को नहीं जानती। ||मिलूँ। ¶दर्शन को। **किस रीति से। ††खड़ी। ‡‡तिसका। §§हाथ से हाथ न छोड़ूँ। ||||सुन। ¶¶सँभाल। ***देर सवेर। †††वैसे। ‡‡‡जो तैरने योग्य नहीं है; भारी।

भवन गवन गवन भवन, मनहीं मन लावै।
रवन छवन छवन रवन, सतगुर समझावै हो ॥ १ ॥
खीर नीर नीर खीर, प्रेम भगति भावै।
प्राण कँवल बिगसि बिगसि, गोविंद गुण गावै हो ॥२॥
जोति जुगति बाट घाट, लै समाधि धावै।
परम नूर परम तेज, दादू दिखलावै हो ॥ ३ ॥

(२६६)

तौ निबहै जन सेवग तेरा, ऐसैं दया करि साहिब मेरा।टेक।
ज्यूँ हम तोरैं त्यूँ तूँ जोरै, हम तोरैं पै तूँ नहिं तोरै ॥१॥
हम बिसरैं पै तूँ न बिसारै, हम बिगरैं पै तूँ न बिगारै ॥२॥
हम भूलैं तूँ आनि मिलावै, हम बिछुरैं तूँ अंगि लगावै ॥३॥
तुम भावै सो हम पै नाहीं, दादू दरसन देहु गुसाईं ॥४॥

(२६७)

माया संसार की सब झूठी।
मात पिता सब ऊभे* भाई, तिनहिं देखताँ लूटी ॥ टेक ॥
जब लग जीव काया मैं था रे, खिण बैठी खिण ऊठी।
हंस जु था सो खेलि गया रे, तब थैं संगति छूटी ॥ १ ॥
ये दिन पूगे† आव घटानी, तब निच्यंत होइ सूती।
दादूदास कहै ऐसि काया, जैसि गगरिया फूटी ॥ २ ॥

(२६८)

ऐसैं ग्रह मैं क्यूं न रहै, मनसा बाचा राम कहै ॥टेक॥
संपति बिपति नहीं मैं मेरा, हरिष सोक दोइ नाहीं।
राग दोष रहित सुख दुख थैं, बैठा हरि पद माहीं ॥१॥

*खड़े। † पहुँचे।

तन धन माया मोह न बाँधै, बैरी मीत न कोई ।
आपा पर समि रहै निरंतर, निज जन सेवग सोई ॥२॥
सरवर कवल रहै जल जैसैं, दधि मथि घृत करि लीन्हा ।
जैसैं बन मैं रहै बटाऊ, काहू हेत न कीन्हा ॥ ३ ॥
भाव भगति रहै रसि माता, प्रेम मगन गुन गावै ।
जीवत मुकत होइ जन दादू, अमर अभै पद पावै ॥४॥

(२६९)

चल चल रे मन तहाँ जाइये ।
चरण बिन चलिबौ, स्रवण बिन सुनिबौ,
बिन कर बैन बजाइये ॥ टेक ॥
तन नाहीं जहँ, मन नाहीं तहँ, प्राण नहीं तहँ आइये ।
सबद नहीं जहँ, जीव नहीं तहँ, बिन रसना मुख गाइये ॥१॥
पवन पावक नहीं, धरणि अंबर नहीं, उभै नहीं तहँ लाइये ।
चंद नहीं जहँ, सूर नहीं तहँ, परम जोति सुख पाइये ॥२॥
तेज पुंज सो सुख का सागर, झिलिमिलि नूर नहाइये ।
तहँ चलि दादू अगम अगोचर, ता मैं सहज समाइये ॥३॥

॥ राग टोडी ॥

(२७०)

सो तत सहजैं सुखमण कहणा,
साच पकड़ि मन जुगि जुगि रहणा ॥ टेक ॥
प्रेम प्रीति करि नीका राखै, बारंबार सहजि नर भाखै ॥१॥
मुखि हिरदै सो सहजि सँभारै, तिहिं तत रहणा कदे न बिसारै२
अंतरि सोई नीका जाणै, निमिष न बिसरै ब्रह्म बखाणै॥३॥
सोई सुजाण सुधा रस पीवै, दादू देखु जुगि जुगि जीवै ॥४॥

(२७१)

नाँउ रे नाँउ रे, सकल सिरोमणि नाँउ रे,
मैं बलिहारी जाउँ रे ॥ टेक ॥

दूतर तारै पार उतारै, नरक निवारै नाँउ रे ॥ १ ॥
तारणहारा भौजल पारा, निर्मल सारा नाँउ रे ॥ २ ॥
नूर दिखावै तेज मिलावै, जोति जगावै नाँउ रे ॥ ३ ॥
सब सुख दाता अमृत राता, दादू माता नाँउ रे ॥ ४ ॥

(२७२)

राइ रे राइ रे सकल भुवनपति राइ रे,
अमृत देहु अघाइ रे राइ ॥ टेक ॥

परगट राता परगट माता,
परगट नूर दिखाइ रे राइ ॥ १ ॥

इस्थिर ज्ञाना इस्थिर ध्याना,
इस्थिर तेज मिलाइ रे राइ ॥ २ ॥

अविचल मेला अबिचल खेला,
अविचल जोति समाइ रे राइ ॥ ३ ॥

निहचल बैना निहचल नैना,
दादू बलि बलि जाइ रे राइ ॥ ४ ॥

(२७३)

हरि रस माते मगन भये।
सुमिरि सुमिरि भये मतवाले, जामण मरण सब भूलि गये। टेक

निर्मल भगति प्रेम रस पीवैं, आन न दूजा भाव धरैं।
सहजैं सदा राम रँगि राते, मुकति बैकुंठैं कहा करैं ॥१॥

गाइ गाइ रस लीन भये हैं, कछू न माँगैं संत जनाँ।
और अनेक देहु दत आगैं, आन न भावै राम बिनाँ ॥२॥

इकटग ध्यान रहैं ल्यौ लागे, छाकि परे हरि रस पीवैं।
दादू मगन रहैं रसिमाते, ऐसैं हरि के जन जीवैं ॥ ३ ॥

(२७४)

ते मैं कीधला* रामजी, जे तैं वास्या† ते ।
मारग मेल्हि‡ अमारग अणसरि§, अकरम करम हरे‖ ॥टेक
साधू कौ सँग छाड़ीनैं, असंगति अणसरियैं ।
सुकिरत मूकी¶ अविद्या साधो, बिषिया बिस्तरियैं ॥१॥
आन** कह्यौ आन साँभलियौ,†† नैणाँ आन दीठौ ।
अमृत कड़वो बिष इम लागौ, खाताँ अति मीठौ ॥ २॥
राम रिदा थैं बिसारी, मैं माया मन दीधौ ।
पाँचे प्राणी‡‡ गुरमुखि बरज्या, ते दादू कीधौ ॥ ३ ॥

(२७५)

कहौ क्यौं जन जीवै साँइयाँ,दे चरण कँवल आधार हो ।
डूबत है भौसागरा, कारी§§ करौ करतार हो ॥ टेक ॥
मीन मरै बिन पाणियाँ, तुम बिन येह बिचार हो ।
जल बिन कैसैं जीवहीं, इब तौ किती इक बार हो ॥१॥
ज्यौं परै पतंगा जोति माँ, देखि देखि निज सार हो ।
प्यासा बूँद न पावई, तब बनि बनि करै पुकार हो ॥२॥
निस दिन पीर पुकारही, तन की ताप निवारि हो ।
दादू बिपति सुनावही, करि लोचन सनमुख चारि हो ॥३॥

(२७६)

तूँ साचा साहिब मेरा ।
कर्म करीम कृपाल निहारौ, मैं जन बंदा तेरा ॥ टेक ॥

---

*किया । †बरजा । ‡छोड़ कर । §अंगीकार किया । ‖कुकर्म लेकर सुकर्म छोड़े । ¶छोड़ कर । **दूसरा, और । ††सुना । ‡‡पंच दूत । §§कार्य ।

तुम दीवान सबहिन की जानौ, दीनानाथ दयाला।
दिखाइ दीदार मौज* बंदे कौं, काइम करौ निहाला ॥१॥
मालिक सबै मुलिक के साँईं, समरथ सिरजनहारा।
खैर खुदाइ खलक मैं खेलत, दे दीदार तुम्हारा ॥ २ ॥
मैं सिकस्ता† दरगह तेरी, हरि हजूर तूँ कहिये।
दादू द्वारे दीन पुकारै, काहे न दरसन लहिये ॥ ३ ॥

(२७७)

कुछ चेति रे कहि क्या आया।
इन मैं बैठा फूलि करि, तैं देखी माया ॥ टेक ॥
तूँ जिनि जानै तन धन मेरा, मूरिख देखि भुलाया।
आज कालि चलि जावै देहो, ऐसी सुंदर काया ॥ १ ॥
राम नाम निज लीजिये, मैं कहि समझाया।
दादू हरि की सेवा कीजै, सुंदर साज मिलाया ॥ २ ॥

(२७८)

नेटि‡ रे माटी मैं मिलना।
मोड़ि मोड़ि देही काहे कौं चलना ॥ टेक ॥
काहे कौं अपना मन डुलावै, यहु तन अपना नीका धरना।
कोटि बरस तूँ काहे न जीवै, बिचारि देखि आगैं है मरना ॥१॥
काहे न अपनी बाट सँवारै, संजमि रहना सुमिरण करणा।
गहिला दादू गर्ब न कीजै, यहु संसार पंच दिन भरणा ॥२॥

(२७९)

जाइ रे तन जाइ रे, जनम सुफल करि लेहु राम रमि।
सुमिरि सुमिरि गुन गाइ रे ॥ टेक ॥

---

*दया। †टूटा हुआ, ख़स्ता-हाल। ‡निश्चय करके।

नर नारायण सकल सिरोमणि, जनम अमोलिक आहि रे।
सो तन जाइ जगत नहिं जानै, सकहि त ठाहर लाइ रे ॥१॥
जुरा काल दिन जाइ गरासै, ता सौं कुछ न बसाइ रे।
छिन छिन छीजत जाइ मुगध नर, अंत काल दिन आइ रे॥२
प्रेम भगति साध की संगति, नाँव निरंतर गाइ रे।
जे सिरि भाग तौ सौंज* सुफल करि, दादू बिलँब न लाइ रे ॥३

(२८०)

काहे रे बकि मूल गँवावै। राम के नाँइ भलैं सचु पावै।टेक
बाद बिबाद न कीजै लोई। बाद बिबाद न हरि रस होई।१
मैं तैं मेरी मानै नाहीं। मैं तैं मेटि मिलै हरि माहीं ॥२॥
हारि जीति सौं हरि रस जाई। समझि देखि मेरे मन भाई ३
मूल न छाड़ी दादू बौरे। जिनि भूलै तूँ बकिबे औरे ॥४॥

(२८१)

हुसियार हाकिम न्याव है, साइँ के दीवान।
कुल का हसेब होइगा, समझि मुसलमान ॥ टेक ॥
नीयत नेकी सालिहाँ†, रास्ताँ‡ ईमान।
इखलास अंदर आपणे, रखणा सुबहान ॥ १ ॥
हुक्म हाजिर होइ बाबा, मुसलम मिहरबान।
अकल सेती आप माँ, सोधि लेहु सुजान ॥ २ ॥
हक सौं हजूरी होणा, देखणा करि ज्ञान।
दोस्त दाना दीन का, मनना फुरमान ॥ ३ ॥
गुस्सा हैवानी दूरि कर, छाड़ि दे अभिमान।
दुई दरोगाँ§ नाहिं खुसियाँ, दादू लेहु पिछान ॥ ४ ॥

(२८२)

निर्पख रहणा राम राम कहणा।
काम क्रोध मैं देह न दहणा ॥ टेक ॥

---

*सेवा। †सज्जन। ‡सत्यवादी। §झूठ।

जेणैं मारग संसार जाइला ।
तेणैं प्राणी आप बहाइला ॥ १ ॥
जे जे करणी जगत करीला ।
सो करणी संत दूरि धरीला ॥ २ ॥
जेणैं पंथैं लोक राता ।
तेणैं पंथैं साध न जाता ॥ ३ ॥
राम राम दादू ऐसैं कहिये ।
राम रमत रामहिं मिलि रहिये ॥ ४ ॥

(२८३)

हम पाया हम पाया रे भाई ।
भेष बनाइ ऐसी मनि आई ॥ टेक ॥
भीतर का यहु भेद न जानै ।
कहै सुहागनि क्यूँ मन मानै ॥ १ ॥
अंतर पीव सौं परचा नाहीं ।
भई सुहागनि लोगन माहीं ॥ २ ॥
साँईं सुपिनै कबहुं न आवै ।
कहिबा ऐसैं महल बुलावै ॥ ३ ॥
इन बातन मोहिं अचिरज आवै ।
पटम* कियैं पिव कैसैं पावै ॥ ४ ॥
दादू सुहागनि ऐसैं कोई ।
आपा मेटि राम रत होई ॥ ५ ॥

(२८४)

ऐसैं बाबा राम रमीजै, आतम सौं अंतर नहिं कीजै ॥टेक
जैसैं आतम आपा लेखै, जीव जंत ऐसैं करि पेखै ॥ १ ।

---

*पाखंड ।

एक राम ऐसैं करि जानै, आपा पर अंतर नहिं आनै ॥२॥
सब घटि आतम एक बिचारै, राम सनेही प्राण हमारै ॥३॥
दादू साची राम सगाई, ऐसा भाव हमारे भाई ॥ ४ ॥

(२८५)

माधइयौ माधइयौ मीठौ री माइ ।
माहवौ माहवौ भेटियौ आइ ॥ टेक ॥
कान्हइयौ कान्हइयौ करताँ जाइ ।
केसवौ केसवौ केसवौ धाइ ॥ १ ॥
भूधरौ भूधरौ भूधरौ भाइ ।
रामइयौ रामइयौ रह्यौ समाइ ॥ २ ॥
नरहरि नरहरि नरहरि राइ ।
गोबिंदौ गोबिंदौ दादू गाइ ॥ ३ ॥

(२८६)

एकहि एकैं भया अनंद, एकहि एकैं भागे दंद ॥ टेक ॥
एकहि एकैं एक समान, एकहि एकैं पद निर्बान ॥ १ ॥
एकहि एकैं त्रिभुवन सार, एकहि एकैं अगम अपार ॥२॥
एकहि एकैं निर्भै होइ, एकहि एकैं काल न कोइ ॥ ३ ॥
एकहि एकैं घट परकास, एकहि एक निरंजन बास ॥४॥
एकहि एकैं आपहि आप, एकहि एकैं माइ न बाप ॥५॥
एकहि एकैं सहज सरूप, एकहि एकैं भये अनूप ॥ ६ ॥
एकहि एकैं अनत न जाइ, एकहि एकैं रह्या समाइ ॥७॥
एकहि एकैं भये लैलीन, एकहि एकैं दादू दीन ॥ ८ ॥

(२८७)

आदि है आदि अनादि मेरा ।
संसार सागर भगति भेरा* ।
आदि है अंति है अंति है आदि है, विड़द तेरा ॥टेक
काल है भाल है भाल है काल है ।
राखि ले राखि ले प्राण घेरा ॥
जीव का जनम का, जनम का जीव का ।
आपही आप ले भानि भेरा† ॥ १ ॥
भर्म का कर्म का कर्म का भर्म का ।
आइबा जाइबा मेटि फेरा ॥
तारिले पारिले पारिले तारिले ।
जीव सौं सीव है निकटि नेरा ॥ २ ॥
आतमा राम है, राम है आतमा ।
जोति है जुगति सौं करै मेला ॥
तेज है सेज है, सेज है तेज है ।
एक रस दादू खेल खेला ॥ ३ ॥

(२८८)

सुंदर राम राया परम ज्ञान परम ध्यान ,
परम प्राण आया ॥ टेक ॥
अकल सकल अति अनूप, छाया नहिं माया ।
निराकार निराधार, वार पार न पाया ॥ १ ॥
गंभीर धीर निधि सरीर, निर्गुण निराकारा ।
अखिल अमर परम पुरिष, निर्मल निज सारा ॥ २ ॥
परम नूर परम तेज, परम जोति परकासा ।
परम पुंज परापरं, दादू निज दासा ॥ ३ ॥

---

*बेड़ा, नाव। †झगड़ा तोड़ दे।

(२८९)

अखिल भाव अखिल भगति, अखिल नाँव देवा ।
अखिल प्रेम अखिल प्रीति, अखिल सुरति सेवा ॥टेक॥
अखिल अंग अखिल संग, अखिल रंग रामा ।
अखिला रत अखिला मत, अखिला निज नामा ॥ १ ॥
अखिल ज्ञान अखिल ध्यान, अखिल आनँद कीजे ।
अखिला लय अखिला मय, अखिला रस पीजे ॥ २ ॥
अखिल मगन अखिल मुदित, अखिल गलित साँईं ।
अखिल दरस अखिल परस, दादू तुम माहीं ॥ ३ ॥

॥ राग हुसेनी बंगालौ ॥

(२९०)

है दाना है दाना, दिलदार मेरे कान्हा ।
तूँही मेरे जान जिगर यार मेरे खाना* ॥ टेक ॥
तूँही मेरे मादर पिदर,† आलम‡ बेगाना ।
साहिब सिरताज मेरे, तूँही सुलताना ॥ १ ॥
दोस्त दिल तूँही मेरे, किस का खिलखाना§ ।
नूर चसम जिंद‖ मेरे, तूँहीं रहमाना ॥ २ ॥
एकै असनाव¶ मेरे, तूँही हम जानाँ** ।
जान वा अजीज मेरे, खूब खजाना ॥ ३ ॥
नेक नजर मिहर मीराँ, बंदा मैं तेरा ।
दादू दरबार तेरे, खूब साहिब मेरा ॥ ४ ॥

---

*सरदार । †माता पिता । ‡संसार । §खिलवत-खाना=एकान्त स्थान । ‖जीवन । ¶आशना । **प्रीतम ।

(२६१)

तूँ घरि आव सुलच्छन पीव ।
हिक[*] तिल[†] मुख दिखलावहु तेरा, क्या तरसावे जीव ॥टेक॥
निस दिन तेरा पंथ निहारौं, तूँ घरि मेरे आव ।
हिरदा भीतरि हेत सौं रे वाल्हा, तेरा मुख दिखलाव ॥१॥
वारी फेरी बलि गई रे, सोभित सोई कपोल ।
दादू ऊपर दया करीनै, सुनाइ सुहावे[‡] बोल ॥ २ ॥

॥ राग नट नारायण ॥

(२६२)

ता कौं काहे न प्राण सँभाले ।
कोटि अपराध कलप के लागे, माहिं महूरत टाले ॥टेक॥
अनेक जनम के बंधन बाढ़े, बिन पावक फँध जाले ।
ऐसो है मन नाँव हरी कैा, कबहूँ दुक्ख न साले ॥ १ ॥
च्यंतामणि जुगति सौं राखै, ज्यूँ जननी सुत पाले ।
दादू देखु दया करै ऐसी, जन कैाँ जाल नराले[§] ॥ २ ॥

(२६३)

गोबिंद कबहुँ मिलै पिव मेरा ।
चरण कँवल क्यूँ हीँ करि देखैाँ, राखैाँ नैनहुँ नेरा ॥टेक॥
निरखण का मोहिं चाव घणेरा, कब मुख देखैाँ तेरा ।
प्राण मिलण कैाँ भये उदासी, मिलि तूँ मती सवेरा ॥१॥
ब्याकुल ता थैं भइ तन देही, सिर परि जम का हेरा ।
दादू रे जन राम मिलन कूँ, तपई तन बहुतेरा ॥ २ ॥

---

*एक । †छिन । ‡सुहावने । §काटै ।

(२६४)

कब देखौं नैनहुं रेख* रती†, प्राण मिलन कौं भई मती ।
हरि सौं खेलौं हरी गती, कब मिलिहैं मोहिं प्राणपती ॥टेक
बलि कीती क्यूँ देखौंगी रे, मुझ माँहैं अति बात अनेरी‡ ।
सुणि साहिब इक बिनती मेरी, जनम जनम हूँ दासी तेरी १
कहु दादू सो सुनसी साईं, हौं अबला बल मुझ मैं नाहीं ।
करम करी घरि मेरे आई, तो सोभा पिव तेरे ताईं ॥२॥

(२६५)

नीके मोहन सौं प्रीति लाई ।
तन मन प्राण देत बजाई, रंग रस के बनाई ॥ टेक ॥
येही जियरे वेही पिव रे, छोड्यौ न जाई माई ।
बाण भेद के देत लगाई, देखत ही मुरझाई ॥ १ ॥
निर्मल नेह पिया सौं लाग्यौ, रती न राखी काई ।
दादू रे तिल मैं तन जावै, संग न छाडौं माई ॥ २ ॥

(२६६)

तुम बिन ऐसौं कौन करै ।
गरीब-निवाज गुसाईं मेरौ, माथैं मुकट धरै ॥ टेक ॥
नीच ऊँच ले करै गुसाईं, टार्‌यौ हूँ न टरै ।
हस्त कँवल की छाया राखै, काहू थैं न डरै ॥ १ ॥
जा की छोति जगत कौं लागै, ता परि तूँ हीं ढरै ।
अमर आप ले करै गुसाईं, मार्‌यो हूँ न मरै ॥ २ ॥
नामदेव कबीर जुलाहौ, जन रैदास तिरै ।
दादू बेगि बार नहिं लागै, हरि सौं सबै सरै ॥ ३ ॥

---

*रेखा, चिन्ह । †तनिक सा भी । ‡बेहूदा ।

(२६७)

नमो नमो हरि नमो नमो ।
ताहि गुसाईँ नमो नमो, अकल निरंजन नमो नमो ।
सकल बियापी जिहि जग कीन्हा, नारायण निज नमो
नमो ॥ टेक ॥
जिन सिरजे जल सीस चरण कर, अविगत जीव दियौ ।
स्रवण सँवारि नैन रसना मुख, ऐसौ चित्र कियौ ॥ १ ॥
आप उपाइ किये जग जीवन, सुर नर संकर साजे ।
पीर पैगंबर सिध अरु साधिक, अपने नाँइ निवाजे ॥२॥
धरती अंबर चंद सूर जिन, पाणी पवन किये ।
भानन घड़न पलक मैँ केते, सकल सँवारि लिये ॥ ३ ॥
आप अखंडित खंडित नाहीं, सब समि पूरि रहे ।
दादू दीन ताहि नइ वंदति*, अगम अगाध कहे ॥ ४ ॥

(२६८)

हम थैँ दूरि रही गति तेरी ।
तुम हौ तैसे तुमहीं जानौ, कहा बपुरी मति मेरी ॥ टेक ॥
मन थैँ अगम दृष्टि अगोचर, मनसा की गमि नाहीं ।
सुरति समाइ बुद्धि बल थाके, बचन न पहुँचै ताहीं ॥१॥
जोग न ध्यान ज्ञान गमि नाहीं, समझि समझि सब हारे ।
उनमनि रहत प्राण घट साधे, पार न गहत तुम्हारे ॥२॥
खोजि परे गति जाइ न जानी, अगह गहन कैसैँ आवै ।
दादू अविगति देइ दया करि, भाग बड़े सो पावै ॥ ३ ॥

---

*झुक कर प्रणाम करता है।

॥ राग सोरठ ॥

(२९९)

कोली साल* न छाडै रे, सब घावर† काढ़ै रे ॥ टेक ॥
प्रेम प्राण लगाइ धागै, तत्त तेल निज दीया ।
एक मना इस आरँभ‡ लागा, ज्ञान राछ§ भरि लीया ॥१॥
नाँव नली भरि बुणकर लागा, अंतर-गति रँग राता ।
ताणै बाणै जीव जुलाहा, परम तत्त सौं माता ॥ २ ॥
सकल सिरोमणि बुनै बिचारा, सान्हा‖ सूत न तोड़ै ।
सदा सचेत रहै ल्यौ लागा, ज्यौं टूटै त्यौं जोड़ै ॥ ३ ॥
ऐसैं तनि बुनि गहर गजीना¶, साँईं के मन भावै ।
दादू कोली करता के सँगि, बहुरि न इहि जुगि आवै ॥४॥

(३००)

बिरहणी बपु** न सँभारै ।
निस दिन तलफै राम के कारण , अंतरि एक बिचारै ॥टेक
आतुर भई मिलन के कारण, कहि कहि राम पुकारै ।
सास उसास निमिख नहिं बिसरै, जित तित पंथ निहारै ॥१
फिरै उदास चहूँ दिसि चितवत, नैन नीर भरि आवै ।
राम बियोग बिरह की जारी, और न कोई भावै ॥ २ ॥
ब्याकुल भई सरीर न समझै, बिषम बाण हरि मारै ।
दादू दरसन बिन क्यूँ जीवै, राम सनेही हमारे ॥ ३ ॥

(३०१)

मन रे राम रटत क्यूँ रहिये, यहु तत बार बार क्यूँ
न कहिये ॥ टेक ॥

---

*करगह । †बिकारी बस्तु, कचरा । ‡नया काम । §कंघा की सूरत का बुनने का औज़ार । ‖जोड़ा या मिलाया हुआ । ¶गाढ़ी गज़ी । **शरीर ।

जब लग जिभ्या बाणी, तौ लैाँ जपि ले सारँग-पाणी* ।
जब पवना चलि जावै, तब प्राणी पछितावै ॥ १ ॥
जब लग स्रवण सुणीजै, तौ लैाँ साध सबद सुणि लीजै ।
स्रवणौं सुरति जब जाई, ये तब का सुणि है भाई ॥२॥
जब लग नैनहुँ पेखै, तौ लैाँ चरन कँवल क्यूँ न देखै ।
जब नैनहुँ कछू न सूझै, ये तब मूरिख क्या बूझै ॥ ३ ॥
जब लग तन मन नीका, तौ लैाँ जपि ले जीवनि जी का ।
जब दादू जिव आवै, तब हरि के मनि भावै ॥ ४ ॥

(३०२)

मन रे तेरा कैान गँवारा, जपि जीवनि प्राण-अधारा ॥टेक॥
रे मात पिता कुल जाती, धन जोबन सजन सँगाती ।
रे गृह दारा सुत भाई, हरि बिन सब झूठा है जाई ॥१॥
रे तूँ अंति अकेला जावै, काहू के संगि न आवै ।
रे तूँ ना करि मेरी मेरा, हरि राम बिना को तेरा ॥२॥
रे तूँ चेत न देखै अंधा, यहु माया मोह सब धंधा ।
रे काल मीच सिरि जागै, हरि सुमिरण काहे न लागै ॥३॥
यहु औसर बहुरि न आवै, फिरि मनिषा जनम न पावै ।
अब दादू ढील न कीजै, हरि राम भजन करि लीजै ॥४॥

(३०३)

मन रे देखत जनम गयो, ताथैं काज न कोई भयो ॥टेक॥
मन इंद्री ज्ञान बिचारा, ता थैं जनम जुवा ज्यूँ हारा ।
मन झूठ साच करि जानै, हरि साध कहैं नहिं मानै ॥१॥

---

*सारँग = धनुष, पाणी = हाथ, अर्थात धनुषधारी (राम)—"पाणी" = हाथ "के बदले" सब लिपियोँ और छापोँ मेँ सिवाय एक के प्राणी दिया है ।

मन रे बादि गहै चतुराई, ता थैं मनमुख बात बनाई।
मन आप आप कौं थापै, करता होइ बैठा आपै ॥२॥
मन स्वादी बहुत बनावै, मैं जान्या बिषै बतावै ।
मन माँगै सोई दीजै, हमहीं राम दुखी क्यूँ कीजै ॥ ३ ॥
मन सबहीं छाड़ि बिकारा, प्राणी होइ गुनन थैं न्यारा।
निर्गुण निज गहि रहिये, दादू साध कहै ते कहिये ॥४॥

(३०४)

मन रे अंतिकाल दिन आया, ता थैं यहु सब भया पराया॥टेक
स्रवनौं सुनै न नैनौं सूझै, रसना कह्या न जाई ।
सीस चरण कर कंपन लागे, सो दिन पहुँच्या आई ॥ १ ॥
काले धौले बरन पलटिया, तन मन का बल भागा ।
जोबन गया जुरा चलि आई, तब पछितावन लागा ॥२॥
आव घटै घटि छीजै काया, यहु तन भया पुराना ।
पाँचौं थाके कह्या न मानैं, ता का मरम न जाना ॥३॥
हंस बटाऊ प्राण पयाना, समझि देखि मन माहीं ।
दिन दिन काल गरासै जियरा, दादू चेतै नाहीं ॥ ४ ॥

(३०५)

मन रे तूँ देखै सो नाहीं, है सो अगम अगोचर माहीं ॥टेक॥
निस अँधियारी कछू न सूझै, संसै सरप दिखावा ।
ऐसैं अंध जगत नहिं जानै, जीव जेवड़ी* खावा ॥ १ ॥
मृग-जल देखि तहाँ मन धावै, दिन दिन झूठी आसा ।
जहँ जहँ जाइ तहाँ जल नाहीं, निहचै मरै पियासा ॥२॥
भरम बिलास बहुत बिधि कीन्हा, ज्यौं सुपिनैं सुख पावै ।
जागत झूठ तहाँ कुछ नाहीं, फिरि पीछैं पछितावै ॥३॥

*रस्सी।

जब लग सूता तब लग देखै, जागत भरम बिलाना ।
दादू अंति इहाँ कुछ नाहीं, है सो सोधि सयाना ॥ ४ ॥

(३०६)

भाई रे बाजीगर नट खेला, ऐसैं आपै रहै अकेला ॥टेक॥
यहु बाजी खेल पसारा, सब मोहे कौतिगहारा ।
यहु बाजी खेल दिखावा, बाजीगर किनहुँ न पावा ॥१॥
इहि बाजी जगत भुलाना, बाजीगर किनहुँ न जाना ।
कुछ नाहीं सो पेखा, है सो किनहुँ न देखा ॥ २ ॥
कुछ ऐसा चेटक कीन्हा, तन मन सब हरि लीन्हा ।
बाजीगर भुरकी बाही*, काहू पै लखी न जाई ॥ ३ ॥
बाजीगर परकासा, यहु बाजी झूठ तमासा ।
दादू पावा सोई, जो इहि बाजी लिपत न होई ॥ ४ ॥

(३०७)

भाई रे ऐसा एक बिचारा, यूँ हरि गुर कहै हमारा ॥टेक॥
जागत सूते सोवत सूते, जब लग राम न जाना ।
जागत जागे सोवत जागे, जब राम नाम मन माना ॥१॥
देखत अंधे अंध भी अंधे, जब लग सत्त न सूझै ।
देखत देखै अंध भी देखै, जब राम सनेही बूझै ॥ २ ॥
बोलत गूँगे गुंग भी गूँगे, जब लग तत्त न चीन्हा ।
बोलत बोले गुंग भी बोले, जब राम नाम कहि दीन्हा ॥३॥
जीवत मूए मुए भी मूए, जब लग नाँहिं परकासा ।
जीवत जीये मुए भी जीये, दादू राम निवासा ॥ ४ ॥

---

*चुटकी डाली या जादू किया ।

(३०८)

रामजी नाँव बिना दुख भारी, तेरे साधन कही बिचारी ॥टेक
केई जोग ध्यान गहि रहिया, केई कुल के मारग बहिया।
केई सकल देव कौं ध्यावैं, केई रिधि सिधि चाहैं पावैं ॥१
केई बेद पुरानौं माते, केई माया के सँगि राते।
केई देस दिसंतर डोलैं, केई ज्ञानी ह्वै बहु बोलैं ॥ २ ॥
केई काया कसैं अपारा, केई मरैं खड़ग की धारा।
केई अनँत जिवन की आसा, केई करैं गुफा मैं बासा ॥ ३ ॥
आदि अंति जे जागे, सो तौ राम नाम ल्यौ लागे।
इब दादू इहै बिचारा, हरि लागा प्राण हमारा ॥ ४ ॥

(३०९)

साधौ हरि सौं हेत हमारा, जिन यहु कीन्ह पसारा ॥टेक॥
जा कारण ब्रत कीजै, तिल तिल यहु तन छीजै।
सहजैं ही सो जाना, हरि जानत ही मन माना ॥ १ ॥
जा कारण तप जइये, धूप सीत सिर सहिये।
सहजैं ही सो आवा, हरि आवत ही सचु पावा ॥ २ ॥
जा कारण बहु फिरिये, करि तीरथ भ्रमि भ्रमि मरिये।
सहजैं ही सो चीन्हा, हरि चीन्हि सबै सुख लीन्हा ॥३।
प्रेम भगति जिन जानी, सो काहे भरमै प्रानी।
हरि सहजैं ही भल मानै, ता थैं दादू और न जानै ॥४॥

(३१०)

रामजी जिनि भरमावै हम कौं।
ता थैं करौं बीनती तुम्ह कौं ॥ टेक ॥
चरण तुम्हारे सबही देखौं, तप तीरथ ब्रत दाना।
गंग जमुन पासि पाँइन के, तहाँ देहु अस्नाना ॥ १ ॥

संग तुम्हारे सबही लागे, जोग जग्गि जे कीजै ।
साधन सकल येई सब मेरे, संग आपणौं दीजै ॥ २ ॥
पूजा पाती देवी देवल, सब देखौं तुम माहीं ।
मो कौं ओट आपणी दीजे, चरण कँवल की छाहीं ॥३॥
ये अरदास दास की सुणिये, दूरि करौ भ्रम मेरा ।
दादू तुम्ह बिन और न जाणै, राखौ चरनौं नेरा ॥ ४ ॥

(३११)

सोई देव पूजैाँ जे टाँकी नहिँ घड़िया ।
गरभ बास नाहीं औतरिया ॥ टेक ॥
बिन जल संजम सदा सोइ देवा, भाव भगति करौँ हरि सेवा१
पाती प्राण हरिदेव चढ़ाऊँ, सहज समाधि प्रेम ल्यौ लाऊँ ॥२
इहि बिधि सेवा सदा तहँ होई, अलख निरंजन लखै न कोई३
ये पूजा मेरे मन मानै, जिहि बिधि होइ सु दादू न जानै ॥४॥

(३१२)

राम राइ मो कौं अचिरज आवै, तेरा पार न कोई पावै ॥टेक
ब्रह्मादिक सनकादिक नारद, नेति नेति जे गावै ।
सरणि तुम्हारी रहैं निस बासुरि, तिन कौं तूँ न लखावै ॥१॥
संकर सेस सबै सुर मुनि जन, तिन कौं तूँ न जनावै ।
तीनि लोक रटै रसना भरि, तिन कौं तूँ न दिखावै ॥ २ ॥
दीन लीन राम रँग राते, तिन कौं तूँ सँगि लावै ।
अपने अंग की जुगति न जानै, सो मन तेरे भावै ॥ ३ ॥
सेवा संजम करैं जप पूजा, सबद न तिन कौं सुनावै ।
मैं अछोप* हीन मति मेरी, दादू कौं दिखलावै ॥ ४ ॥

---

* अशौच, अपवित्र ।

॥ राग गुंड ॥

(३१३)

दरसन दे दरसन दे, हौं तौ तेरी मुकति न माँगौं रे ॥टेक॥
सिद्धि न माँगौं रिद्धि न माँगौं, तुमहीं माँगौं गोविंदा ॥१
जोग न माँगौं भोग न माँगौं, तुमहीं माँगौं रामजी ॥२॥
घर नहिं माँगौं बन नहिं माँगौं, तुमहीं माँगौं देवजी ॥३॥
दादू तुम बिन और न माँगौं, दरसन माँगौं देहुजी ॥४॥

(३१४)

तूँ आपैं ही बिचारि, तुझ बिन क्यूँ रहौं।
मेरे और न दूजा कोइ, दुख किस कौं कहौं ॥ टेक ॥
मीत हमारा सोइ, आदैं जे पीया।
मुझे मिलावै कोइ, वै जीवनि जीया ॥ १ ॥
तेरे नैन दिखाइ, जीऊँ जिस आसि रे।
सो धन जीवै क्युँ, नहीं जिस पासि रे ॥ २ ॥
पिंजर माहैं प्राण, तुझ बिन जाइसी।
जन दादू माँगै मान, कब घरि आइसी ॥ ३ ॥

(३१५)

हूँ जोइ रही रे बाट, तूँ घरि आवि नैं।
थाँरा दरसन थैं सुख होइ, ते तूँ ल्यावि नैं ॥ टेक ॥
चरण जोवानी खाँति, ते तूँ दिखाड़ि नैं।
तुझ बिना जिव देइ, दुहेली कामिनी ॥ १ ॥
नैन निहारूँ बाट, ऊभी* चावनी†।
तूँ अंतर थैं उरौ आवै, देही जावनी ॥ २ ॥
तूँ दया करी घरि आव, दासी गावनी।
जण दादू राम सँभालि, बैन सुनावनी ॥ ३ ॥

---

*खड़ी। †चाहवाली।

(३१६)

पिव देखे बिन क्यूँ रहौँ, जिय तलफै मेरा ।
सब सुख आनँद पाइये, मुख देखौँ तेरा ॥ टेक ॥
पिव बिन कैसा जीवना, मोहिं चैन न आवै ।
निर्धन ज्यूँ धन पाइये, जब दरस दिखावै ॥ १ ॥
तुम बिन क्यूँ धीरज धरौँ, जौ लौँ तोहि न पाऊँ ।
सन्मुख ह्वै सुख दीजिये, बलिहारी जाऊँ ॥ २ ॥
बिरह बियोग न सहि सकौँ, काइर घट काचा ।
पावन परसन पाइये, सुनि साहिब साचा ॥ ३ ॥
सुनिये मेरी बीनती, इब दरसन दीजे ।
दादू देखन पावही, तैसैँ कुछ कीजै ॥ ४ ॥

(३१७)

इहि बिधि बेध्यौ मोर मना, ज्यूँ लै भृंगी कीट तना ॥टेक
चात्रिग रटतैं रैनि बिहाइ, प्यंड परै* पै बानि न जाइ ॥१॥
मरै मीन बिसरै नहिं पानी, प्राण तजे उन और न जानी ॥२
जलै सरीर न मोड़ै अंगा, जोति न छाड़ै पड़ै पतंगा ॥३॥
दादू इब थैं ऐसैं होइ, प्यंड परै नहिं छाड़ौं तोहि ॥४॥

(३१८)

आवो राम दया करि मेरे, बार बार बलिहारी तेरे ॥टेक॥
बिरहनि आतुर पंथ निहारै, राम राम कहि पीव पुकारै ॥१॥
पंथी बूझै मारग जोवै, नैन नीर जल भरि भरि रोवै॥२॥
निस दिन तलफै रहै उदास, आतम राम तुम्हारे पास ॥३॥
बप† बिसरै तन की सुधि नाहीँ, दादू बिरहनि मिरतक माहीँ‡ ॥४

*शरीर का पतन हो जाय । †शरीर । ‡मन की तरंगेँ मर गई हैँ ।

(३१९)

निरंजन क्यूँ रहै, मोनि गह बैराग, केते जुग गये ॥टेक॥
जागै जगपति राइ, हँसि बोलै नहीं ।
परगट घूँघट माहिँ, पट खोलै नहीं ॥ १ ॥
सदिकै* करौँ संसार, सब जग वारणे ।
छाड़ौँ सब परिवार, तेरे कारणे ॥ २ ॥
वारौँ प्यंड पराण, पाँऊ सिर धरूँ ।
ज्यूँ ज्यूँ भावै राम, सो सेवा करूँ ॥ ३ ॥
दीनानाथ दयाउ, बिलँब न कीजिये ।
दादू बलि बलि जाइ, सेज सुख दीजिये ॥ ४ ॥

(३२०)

निरंजन यूँ रहै, काहू लिपत न होइ ।
जल थल थावर जंगमा, गुण नहिँ लागै कोइ ॥ टेक ॥
धर अंबर लागै नहीं, नहिँ लागै ससिहर† सूर ।
पाणी पवन लागै नहीं, जहाँ तहाँ भरपूर ॥ १ ॥
निस बासरि लागै नहीं, नहिँ लागै सीतल घाम ।
छुध्या त्रिषा लागै नहीं, घटि घटि आतम राम ॥ २ ॥
माया मोह लागै नहीं, नहिँ लागै काया जीव ।
काल करम लागै नहीं, परगट मेरा पीव ॥ ३ ॥
इकलस‡ एकै नूर है, इकलस एकै तेज ।
इकलस एकै जोति है, दादू खेलै सेज ॥ ४ ॥

(३२१)

जग जीवन प्राण अधार, बाचा पालना ।
हौँ कहाँ पुकारौँ जाइ, मेरे लालना ॥ टेक ॥

---

*न्यौछावर । †चंद्रमा । ‡एक रस ।

मेरे बेदन अंगि अपार, सो दुख टालना ।
सागर ये निस्तारि, गहरा अति घना ॥ १ ॥
अंतर है सो टालि, कीजै आपना ।
मेरे तुम बिन और न कोइ, इहै विचारना ॥ २ ॥
ता थैं करौं पुकार, यहु तन चालना ।
दादू कौं दरसन देहु, जाइ दुख सालना ॥ ३ ॥

(३२२)

मेरे तुमहीं राखणहार, दूजा को नहीं ।
ये चंचल चहुँ दिसि जाइ, काल तहीं तहीं ॥ टेक ॥
मैं केते किये उपाइ, निहचल ना रहै ।
जहँ बरजौं तहँ जाइ, मदमातौ बहै ॥ १ ॥
जहँ जाणै तहँ जाइ, तुम थैं ना डरै ।
तास्यौं कहा बसाइ, भावै त्यूँ करै ॥ २ ॥
सकल पुकारैं साध, मैं केता कह्या ।
गुर अंकुस मानै नाहिं, निरभै ह्वै रह्या ॥ ३ ॥
तुम बिन और न कोइ, इस मन को गहै ।
तूँ राखै राखणहार, दादू तौ रहै ॥ ४ ॥

(३२३)

निरंजन काइर कंपै प्राणिया, देखि यहु दरिया ।
वार पार सूझै नहीं, मन मेरा डरिया ॥ टेक ॥
अति अथाह ये भौजला, आसँघ* नहिं आवै ।
देखि देखि डरपै घणा, प्राणी दुख पावै ॥ १ ॥
बिष जल भरिया सागरा, सब थके सयाना ।
तुम बिन कहु कैसैं तिरौं, मैं मूढ़ अयाना ॥ २ ॥

*हिम्मत ।

आगैंही डरपै घणा, मेरी का कहिये ।
कर गहि काढ़ौ केसवा, पार तौ लहिये ॥ ३ ॥
एक भरोसा तौ रहै, जे तुम होहु दयाला ।
दादू कहु कैसैं तिरै, तूँ तारि गुपाला ॥ ४ ॥

(३२४)

समरथ मेरा साँइयाँ, सकल अघ जारै ।
सुखदाता मेरे प्राण का, संकोच निवारै ॥ टेक ॥
त्रिबिधि ताप तन की हरै, चौथै जन राखै ।
आप समागम सेवगा, साधू यूँ भाखै ॥ १ ॥
आप करै प्रतिपालना, दारुन दुख टारै ।
इच्छा जन की पूरवै, सबै कारिज सारै ॥ २ ॥
करम कोटि भय भंजना, सुख-मंडन सोई ।
मन मनोरथ पूरणा, ऐसा और न कोई ॥ ३ ॥
ऐसा और न देखिहौं, सब पूरण कामा ।
दादू साध संगी किये, उन्ह आतम रामा ॥ ४ ॥

(३२५)

तुम बिन राम कवन कलि माहीं, बिषिया थैं कोइ बारै रे ।
मुनियर मोटा मनवै बाह्या, येन्हा कौन मनोरथ मारै रे ।टेक
छिन एकैं मनवौं मरकट माहरौ, घर घरबार नचावै रे ।
छिन एकैं मनवौं चंचल माहरौ, छिन एकैं घर माँ आवै रे ।१
छिन एकैं मनवौं मीन अम्हारौ, सचराचर माँ धावै रे ।
छिन एकैं मनवौं उदमादि मातौ, स्वादैं लागौ खावै रे ॥२॥
छिन एकैं मनवौं जोति पतंगा, भ्रमि भ्रमि स्वादैं दाझै रे ।
छिन एकैं मनवौं लोभैं लागौ, आपा पर मैं बाझै रे ॥३॥

छिन एकैं मनवौं कुंजर माहरौ, बन बन माहिं भ्रमाड़े रे।
छिन एकैं मनवौं कामी माहरौ, विपिया रंग रमाड़े रे ॥४॥
छिन एकैं मनवौं मिरग अम्हारौ, नादैं मोह्यौ जाये रे।
छिन एकैं मनवौं माया रातौ, छिन एकैं अम्हनैं बाहै रे ॥५॥
छिन एकैं मनवौं भँवर अम्हारौ, बासैं कँवल बँधाणौ रे।
छिन एकैं मनवौं चहुँ दिसि जाये, मनवाँ नैं कोइ आणै रे ॥६॥
तुम बिन राखै कौण बिधाता, मुनियर साखी आणै रे।
दादू मिरतक छिन माँ जीवै, मनवाँ चरित* न जाणै रे ॥७॥

(३२६)

करणी पोच सोच सुख करई।
लोह की नाव कैसैं भौजल तिरई ॥ टेक ॥
दखिन जात पछिम कैसैं आवै।
नैन बिन भूलि बाट कत पावै ॥ १ ॥
बिष बन बेलि अमृत फल चाहै।
खाइ हलाहल अमर उमाहै ॥ २ ॥
अग्नि गृह पैसि करि सुख क्यूँ सोवै।
जलणि जागी घणी सीत क्यूँ होवै ॥ ३ ॥
पाप पाखँड कियैं पुनि क्यूँ पाइये।
कूप खनि पड़िबा गगन क्यूँ जाइये ॥ ४ ॥
कहै दादू मोहिं अचिरज भारी।
हृदै कपट क्यूँ मिलै मुरारी ॥ ५ ॥

(३२७)

मेरा मन के मन सौं मन लागा।
सबद के सबद सौं नाद बागा ॥ टेक ॥

---

*चरित्र।

स्रवण के स्रवण सुणि सुख पाया ।
नैन के नैन सौं निरखि राया ॥ १ ॥
प्राण के प्राण सौं खेलि प्राणी ।
मुख के मुख सौं बोलि बाणी ॥ २ ॥
जीव के जीव सौं रंगि राता ।
चित्त के चित्त सौं प्रेम माता ॥ ३ ॥
सीस के सीस सौं सीस मेरा ।
देखि रे दादू वा भाग तेरा ॥ ४ ॥

(३२८)

मेर सिखर चढ़ि बोलि मन मेरा ।
राम जल बरिखै सबद सुनि तेरा ॥ टेक ॥
आरति आतुर पीव पुकारै ।
सोवत जागत पंथ निहारै ॥ १ ॥
निस बासुरि कहि अमृत बाणी ।
राम नाम ल्यौ लाइ लै प्राणी ॥ २ ॥
टेरि मन भाई जब लग जीवै ।
प्रीति करि गाढ़ी प्रेम रस पीवै ॥ ३ ॥
दादू औसरि जे जन जागै ।
राम घटा जल बरिखन लागै ॥ ४ ॥

(३२९)

नारी नेह न कीजिये, जे तुझ राम पियारा ।
माया मोह न बंधिये, तजिये संसारा ॥ टेक ॥
बिषिया रँगि राचै नहीं, नहिं करै पसारा ।
देह ग्रेह परिवार मैं, सब थैं रहै न्यारा ॥ १ ॥

आपा पर उरझै नहीं, नाहीं मैं मेरा ।
मनसा बाचा कर्मना, साँईं सब तेरा ॥ २ ॥
मन इंद्री इस्थिर करै, कतहूँ नहिं डोलै ।
जग बिकार सब परिहरै, मिथ्या नहिं बोलै ॥ ३ ॥
रहै निरंतर राम सौं, अंतर गति राता ।
गावै गुण गोबिंद का, दादू रसि माता ॥ ४ ॥

(३३०)

तू राखै त्यूँ ही रहै, तेई जन तेरा ।
तुम बिन और न जानही, सो सेवग नेरा ॥ टेक ॥
अंबर आपैंही धरया, अजहूँ उपगारी ।
धरती धारी आप थैं, सबही सुखकारी ॥ १ ॥
पवन पासि सब के चलै, जैसैं तुम कीन्हा ।
पानी परगट देखिहैाँ, सब सैाँ रहै भीना ॥ २ ॥
चंद चिराकी* चहुँ दिसा, सब सीतल जानै ।
सूरज भी सेवा करै, जैसैं भल मानै ॥ ३ ॥
ये निज सेवग तेरड़े, सब आज्ञाकारी ।
मो कैाँ ऐसैं कीजिये, दादू बलिहारी ॥ ४ ॥

(३३१)

न्यंदक बाबा बीर हमारा। बिनहीं कैाड़े बहै बिचारा† ॥टेक
कर्म कोटि के कुसमल काटै। काज सँवारै बिनहीं साटै‡ ॥१
आपण डूबै और कैाँ तारै । ऐसा प्रीतम पार उतारै ॥२॥
जुगि जुगि जीवौ न्यंदक मोरा। राम देव तुम करौ निहोरा ३
न्यंदक बपुरा पर-उपगारी। दादू न्यंद्या करै हमारी ॥ ४॥

---

*चाँदनी । †बेचारा बिना पैसे (कैाड़े) के काम करता रहता (बहै) । ‡बदला, मुआवज़ा

(३३२)

देहुजी देहुजी, प्रेम पियाला देहुजी। देकरि बहुरि न लेहुजी ॥ टेक ॥

ज्यूँ ज्यूँ नूर न देखौं तेरा। त्यूँ त्यूँ जियरा तलफै मेरा ॥१॥

अमी महारस नाँव न आवै। त्यूँ त्यूँ प्राण बहुत दुख पावै ॥२

प्रेम भगति रस पावै नाहीं। त्यूँ त्यूँ सालै मनहीं माहीं ॥३

सेज सुहाग सदा सुख दीजै। दादू दुखिया बिलँब न कीजै ॥४

(३३३)

बरिखहु राम अमृत धारा।

झिलिमिलि झिलिमिलि सींचनहारा ॥ टेक ॥

प्राण बेलि निज नीर न पावै। जलहर बिना कँवल कुम्हिलावै १

सूकै* बेलि सकल बनराइ। रामदेव जल बरिखहु आइ ॥२॥

आतम बेली मरै पियास। नीर न पावै दादू दास ॥ ३ ॥

॥ राग बिलावल ॥

(३३४)

दया तुम्हारी दरसन पइये।

तुम सौं कहा चतुराई कीजै,

कौन करम करि तुम पाये।

को नहिं मिलै प्राण बल अपने,

दया तुम्हारी तुम आये ॥ १ ॥

जानतहौ तुम अंतरजामी, जानराइ तुम सौं कहा कहिये ॥ टेक ॥

कहा हमारौ आनि तुम्ह आगैं,

कौन कला करि बसि कीये।

---

*सूखै।

जीतैं कौण बुद्धि बल पौरिप,
रुचि अपनी तैं सरनि लिये ॥ २ ॥
तुमहीं आदि अंति पुनि तुमहीं,
तुम करता तिरलोक मँझारि ।
कुछ नाहीं थैं कहा होत है,
दादू बलि पावै दीदार ॥ ३ ॥

(३३५)

मालिक मिहरबान करीम ।
गुनहगार हर रोज़ हर दम, पनह[*] राखि रहीम[†] ॥ टेक ॥
अव्वल आखिर बन्दा गुनही[‡], अमल बद बिसियार[§] ।
ग़रक़[||] दुनिया सतार[¶] साहिब, दरदवंद पुकार ॥ १ ॥
फ़रामोश नेकी बदी, करदम[**] बुराई बद फ़ेल ।
बख़शिंदा[††] तूँ अज़ाब आखिर, हुक्म हाज़िर सैल[‡‡] ॥२॥
नाम नेक रहीम राज़िक़,[§§] पाक परवरदिगार ।
गुनह फ़िल[‡‡] करि देहु दादू, तलब दर दीदार ॥ ३ ॥

(३३६)

कौन आदमी कमीन बिचारा, किसकूँ पूजै गरीब पियारा ॥ टेक ॥
मैं जन एक अनेक पसारा, भौजल भरिया अधिक अपारा १
एक होइ तौ कहि समझाऊँ, अनेक अरुझे क्यूँ सुरझाऊँ २

*पनाह=रक्षा । †दयाल पुरुष । ‡अपराधी । §अनेक [बिसियार] खोटे कर्म । ||डूबा हुआ । ¶परदा डालने वाला, ऐब-पोश । **मैं ने किया । ††बख़शनेवाला । ‡‡पं० चंद्रिका प्रसाद ने "सैल" के मानी हाकिम के और "फ़िल" के मानी क्षमा के लिखे हैं पर हमारी समझ में "सैल" साइल का अपभ्रंश है जिसका अर्थ याचक या मँगता है। "फ़िल" का शब्द फ़ारसी, सिन्धी, पंजाबी, गुजराती, आदि भाषा में नहीं पाया जाता, ऐसा जान पड़ता है कि यह अरबी शब्द "फ़िलनार" का संक्षेप है जिसका अर्थ आग में डालना याने नाश करना होता है। §§अन्न-दाता ।

मैं हौं निबल सबल ये सारे, क्यूँ करि पूजौं बहुत पसारे ३
पीव पुकारैं समझत नाहीं, दादू देखु दसौं दिसि जाहीं ४

(३३७)

जागहु जियरा काहे सोवै। सेइ* करीमा तौ सुख होवै ॥टेक
जा थैं जीवन सो तैं बिसारा। पछिम जाना पंथ न सँवारा ॥
मैं मेरी करि बहुत भुलाना। अजहूँ न चेतै दूरि पयाना ॥१॥
साँईं केरी सेवा नाहीं। फिरि फिरि डूबै दरिया माहीं ॥
ओर न आवै पार न पावा। झूठा जीवन बहुत भुलावा ॥२
मूल न राख्या लाह† न लीया। कौड़ी बदलै हीरा दीया ॥
फिर पछिताना संबलु‡ नाहीं। हारि चल्या क्यूँ पावै साँईं ३
इब सुख कारण फिर दुख पावै। अजहूँ न चेतै क्यूँ डहकावै ॥
दादू कहै सीख सुणि मेरी। कहहु करीम सँभालि सवेरी ४

(३३८)

बार बार तन नहीं बावरे, काहे कौं बादि गँवावै रे।
बिनसत बार कछू नहिं लागै, बहुरि कहाँ कौं पावै रे ॥टेक
तेरे भाग बड़े भाव धरि कीन्हा, क्यूँ करि चित्र बनावै रे।
सो तूँ लेइ बिषै मैं डारै, कंचन छार मिलावै रे ॥ १ ॥
तूँ मति जानै बहुरि पाइये, अब के जिनि डहकावै रे।
तीनि लोक की पूँजी तेरी, बनिज बेगि सो आवै रे ॥२॥
जब लग घट मैं साँस बास है, तब लग काहे न धावै रे।
दादू तन धरि नाँउ न लीन्हा, सो प्राणी पछितावै रे ॥३॥

(३३९)

राम बिसार्‍यो रे जगनाथ।
हीरा हार्‍यो देखतही रे, कौड़ी कीन्ही हाथ ॥ टेक ॥

*सेवा करो। †लाभ। ‡सम्हलना, सावधान होना।

जीतैं कैाण बुद्धि बल पैारिप,
रुचि अपनी तैं सरनि लिये ॥ २ ॥
तुमहीं आदि अंति पुनि तुमहीं,
तुम करता तिरलोक मँझारि ।
कुछ नाहीं थैं कहा होत है,
दादू बलि पावै दीदार ॥ ३ ॥

(३३५)

मालिक मिहरबान करीम ।
गुनहगार हर रोज़ हर दम, पनह* राखि रहीम† ॥ टेक ॥
अव्वल आख़िर बन्दा गुनही‡, अमल बद बिसियार§ ।
ग़रक़‖ दुनिया सतार¶ साहिब, दरदवंद पुकार ॥ १ ॥
फ़रामोश नेकी बदी, करदम** बुराई बद फ़ेल ।
बख़शिंदा†† तूँ अज़ाब आख़िर, हुक्म हाज़िर सैल‡‡ ॥२॥
नाम नेक रहीम राज़िक़,§§ पाक परवरदिगार ।
गुनह फ़िल‡‡ करि देहु दादू, तलब दर दीदार ॥ ३ ॥

(३३६)

कैान आदमी कमीन बिचारा, किसकूँ पूजै गरीब पियारा
॥ टेक ॥
मैं जन एक अनेक पसारा, भैाजल भरिया अधिक अपारा १
एक होइ तैा कहि समझाऊँ, अनेक अरुझे क्यूँ सुरझाऊँ २

---

*पनाह=रक्षा। †दयाल पुरुष। ‡अपराधी। §अनेक [बिसियार] खोटे कर्म। ‖डूबा हुआ। ¶परदा डालने वाला, ऐब-पोश। **मैं ने किया। ††बख़शनेवाला। ‡‡पं० चंद्रिका प्रसाद ने "सैल" के मानी हाकिम के और "फ़िल" के मानी क्षमा के लिखे हैं पर हमारी समझ में "सैल" साइल का अपभ्रंश है जिसका अर्थ याचक या मँगता है। "फ़िल" का शब्द फ़ारसी, सिन्धी, पंजाबी, गुजराती, आदि भाषा में नहीं पाया जाता, ऐसा जान पड़ता है कि यह अरबी शब्द "फ़िलनार" का संक्षेप है जिसका अर्थ आग में डालना याने नाश करना होता है। §§अन्न-दाता।

मैं हौं निबल सबल ये सारे, क्यूँ करि पूजौं बहुत पसारे ३
पीव पुकारौं समझत नाहीं, दादू देखु दसौं दिसि जाहीं ४

(३३७)

जागहु जियरा काहे सोवै। सेइ* करीमा तौ सुख होवै ॥टेक
जा थैं जीवन सो तैं बिसारा। पछिम जाना पंथ न सँवारा ॥
मैं मेरी करि बहुत भुलाना। अजहूँ न चेतै दूरि पयाना ॥१॥
साँईं केरी सेवा नाहीं। फिरि फिरि डूबै दरिया माहीं ॥
ओर न आवै पार न पावा। झूठा जीवन बहुत भुलावा ॥२
मूल न राख्या लाह† न लीया। कौड़ी बदलै हीरा दीया ॥
फिर पछिताना संबलु‡ नाहीं। हारि चल्या क्यूँ पावै साँईं ३
इब सुख कारण फिर दुख पावै। अजहुँ न चेतै क्यूँ डहकावै ॥
दादू कहै सीख सुणि मेरी। कहहु करीम सँभालि सवेरी ४

(३३८)

बार बार तन नहीं बावरे, काहे कौं बादि गँवावै रे।
बिनसत बार कछू नहिं लागै, बहुरि कहाँ कौं पावै रे ॥टेक
तेरे भाग बड़े भाव धरि कीन्हा, क्यूँ करि चित्र बनावै रे।
सो तूँ लेइ बिषै मैं डारै, कंचन छार मिलावै रे ॥ १ ॥
तूँ मति जानै बहुरि पाइये, अब के जिनि डहकावै रे।
तीनि लोक की पूँजी तेरी, बनिज बेगि सो आवै रे ॥२॥
जब लग घट मैं साँस बास है, तब लग काहे न धावै रे।
दादू तन धरि नाँउ न लीन्हा, सो प्राणी पछितावै रे ॥३॥

(३३९)

राम बिसार्‌यो रे जगनाथ।
हीरा हार्‌यो देखतही रे, कौड़ी कीन्ही हाथ ॥ टेक ॥

---

*सेवा करो। †लाभ। ‡सम्हलना, सावधान होना।

काच हुता कंचन करि जानै, भूल्यौ रे भ्रम पास ।
साचे सौं पल परचा नाहीं, करि काचे की आस ॥ १ ॥
विष ता कौं अमृत करि जानै, सो संग न आवै साथ ।
सँबल के फूलन पर फूल्यौ, चूक्यौ अब की घात ॥ २ ॥
हरि भजि रे मन सहज पिछानी, ये सुनि साची बात ।
दादू रे इब थैं करि लीजै, आव घटै दिन जात ॥ ३ ॥

(३४०)

मन चंचल मेरो कह्यौ न मानै, दसौं दिसा दौरावै रे ।
आवत जात बार नहिं लागै, बहुत भाँति बौरावै रे ॥ टेक ॥
बेर बेर बरजत या मन कौं, किंचित सीख न मानै रे ।
ऐसैं निकसि जात या तन थैं, जैसैं जीव न जानै रे ॥१॥
कोटिक जतन करत या मन कौं, निहचल निमिष न होई रे ।
चंचल चपल चहूँ दिसि भरमै, कहा करै जन कोई रे ॥२
सदा सोच रहत घट भीतरि, मन थिर कैसैं कीजै रे ।
सहजैं सहज साध की संगति, दादू हरि भजि लीजै रे ॥३

(३४१)

इन कामनि घर घाले रे ।
प्रीति लगाइ प्राण सब सोखै, बिन पावक जिय जालै रे ॥टेक
अंगि लगाइ सार सब लेवै, इन थैं कोई न बाचै रे ।
यहु संसार जीति सब लीया, मिलन न देई साचै रे ॥१॥
हेत लगाइ सबै धन लेवै, बाकी कछू न राखै रे ।
माखण माँहिं सोधि सब लेवै, छाछ छिया करि नाखै रे* ॥२॥
जे जन जानि जुगति सौं त्यागै, तिन कौं निज पद परसै रे ।
काल न खाइ मरै नहिं कबहूँ, दादू तिन कौं दरसै रे ॥ ३ ॥

---

*छाछ और फोक कर के डाल देता है ।

(३४२)

जिनि सत छाड़ै बावरे, पूरिक है पूरा ।
सिरजे की सब चिंत है,* देबे कौं सूरा ॥ टेक ॥
गर्भ बास जिन राखिया, पावक थैं न्यारा ।
जुगति जतन करि सींचिया, दे प्राण अधारा ॥ १ ॥
कुंज कहाँ धरि संचरै,† तहँ को रखवारा ।
हेम हरत जिन राखिया,‡ सो खसम हमारा ॥ २ ॥
जल थल जीव जिते रह, सो सब कौं पूरै ।
संपट सिला मैं देत है, काहे नर झूरै§ ॥ ३ ॥
जिन यहु भार उठाइया, निरबाहै सोई ।
दादू छिन न बिसारिये, ता थैं जीवन होई ॥ ४ ॥

(३४३)

सोई राम सँभालि जियरा, प्राण प्यंड जिन दीन्हा रे ।
अंबर आप उपावनहारा, माहिं चित्र जिन कीन्हा रे ॥टेक
चंद सूर जिन किये चिराका,‖ चरनौं बिना चलावै रे ।
इक सीतल इक ताता डोलै, अनँत कला दिखलावै रे ॥१॥
धरती धरनि बरन बहु बाणी, रचि ले सप्त समंदा रे ।
जल थल जीव सँभालनहारा, पूरि रह्या सब संगा रे ॥२॥
प्रगट पवन पानी जिन कीन्हा, बरिखावै बहु धारा रे ।
अठारह भार बिरख¶ बहु बिधि के, सब का सींचनहारा रे॥३

*उसे सारी रचना की चिंता है। †अंडे को सेवै। कहते हैं कि कुंज चिड़िया दूर रह कर सुरत से अंडे को सेती है। ‡श्री कृष्ण ने युधिष्ठिर को हिमालय पर्वत पर बर्फ़ में गलने से बचा लिया था। §मालिक दो पत्थरों की संधि में बंद जीव जंतु की ख़बर लेता है तो हे नर तू क्यों सोच करता है। ‖चराग़ाँ=प्रकाशित। ¶वृत्त, पेड़।

पंच तत्त जिन किये पसारा, सब करि देखन लागा रे ।
निहचल राम जपी मेरे जियरा, दादू ता थैं जागा रे ॥४॥

(३४४)

जब मैं रहते की रह जानी* ।
काल काया के निकटि न आवै, पावत है सुख प्राणी ॥ टेक॥
सोग संताप नैन नहिं देखौं, राग दोष नहिं आवै ।
जागत है जा सौं रुचि मेरी, सुपिनैं सोई दिखावै ॥१॥
भरम करम मोह नहिं ममता, बाद बिबाद न जानौं ।
मोहन सौं मेरी बनि आई, रसना सोई बखानौं ॥ २ ॥
निस बासुर मोहन तन मेरे, चरन कँवल मन मानै ।
सोइ निधि निरखि देखि सचु पाऊँ, दादू और न जानै ॥३॥

(३४५)

जब मैं साचे की सुधि पाई ।
तब थैं अंगि और नहिं आवै, देखत हूँ सुखदाई ॥टेक॥
ता दिन थैं तन ताप न ब्यापै, सुख दुख संगि न जाऊँ ।
पावन† पीव परसि पद लीन्हा, आनँद भरि गुन गाऊँ ॥१
सब सौं संगि नहीं पुनि मेरे, अरस परस कुछ नाहीं ।
एक अनंत सोई सँगि मेरे, निरखत हौं निज माहीं ॥२॥
तन मन माहिं सोधि सो लीन्हा, निरखत हौं निज सारा ।
सोई संगि सबै सुखदाई, दादू भाग हमारा ॥ ३ ॥

(३४६)

हरि बिन निहचल कहीं न देखौं, तीनि लोक फिरि सोधा रे ।
जे दीसै सो बिनसि जाइगा, ऐसा गुर परमोधा रे ॥टेक॥

---

*जब मैं ने अमर पुरुष से मिलने का रास्ता जाना । †पवित्र ।

धरती गगन पवन अरु पानी, चंद सूर थिर नाहीं रे।
रैनि दिवस रहत नहिं दीसैं, एक रहै कलि माहीं रे॥१॥
पीर पैगंबर सेख मसाइख, सिव बिरंच सब देवा रे।
कलि आया सो कोइ न रहसी, रहसी अलख अभेवा रे॥२॥
सवालाख मेरु गिरि पर्बत, समँद न रहसी थीरा रे।
नदी निवान* कछू नहिं दीसै, रहसी अकल सरीरा रे॥३॥
अबिनासी वो एक रहैगा, जिन यहु सब कुछ कीन्हा रे।
दादू जाता सब जग देखैं, एक रहत सो चीन्हा रे॥४॥

(३४७)

मूल सींचि बधै† ज्यूँ बेला, सो तत तरवर रहै अकेला॥टेक
देबी देखत फिरैं ज्यूँ भूले, खाइ हलाहल बिष कैाँ फूले।
सुख कैाँ चाहै पड़ै गल पासी‡, देखत हीरा हाथ थैं जासी॥१
केइ पूजा रचि ध्यान लगावैं, देवल देखैं खबरि न पावैं।
तोरैं पाती जुगति न जानी, इहि भ्रमि रहे भूलि अभिमानी२
तीरथ बरत न पूजै§ आसा, बनखँडि जाहीं रहैं उदासा।
यूँ तप करि करि देह जलावैं, भरमत डोलैं जनम गँवावैं॥३
सतगुर मिलैं न संसा जाई, ये बंधन सब देइँ छुड़ाई।
तब दादू परम गति पावै, सो निज मूरति माहिं लखावै॥४

(३४८)

सोई साध सिरोमणी, गोबिंद गुण गावै।
राम भजै बिषिया तजै, आपा न जनावै॥ टेक॥
मिथ्या मुखि बोलै नहीं, पर-निंदा नाहीं।
औगुण छाड़ै गुण गहै, मन हरि पद माहीं॥ १॥

*नीची ज़मीन, नाला। †बढ़ै। ‡फाँसी। §पूरन होय।

निर्बैरी सब आतमा, पर आतम जानै ।
सुखदाई समिता गहै, आपा नहिं आनै ॥ २ ॥
आपा पर अंतर नहीं, निर्मल निज सारा ।
सतबादी साचा कहै, लैलीन बिचारा ॥ ३ ॥
निर्भै भजि न्यारा रहै, काहू लिपत न होई ।
दादू सब संसार मैं, ऐसा जन कोई ॥ ४ ॥

(३४६)

राम मिल्या यूँ जानिये, जो काल न ब्यापै ।
जुरा मरण ता कौं नहीं, अरु मेटै आपै ॥ टेक ॥
सुख दुख कबहूँ न ऊपजै, अरु सब जग सूझै ।
करम को बाँधै नहीं, सब आगम बूझै* ॥ १ ॥
जागत है सो जन रहै, अरु जुगि जुगि जागै ।
अंतरजामी सौं रहै, कुछ काई न लागै ॥ २ ॥
काम दहै सहजैं रहै, अरु सुन्न बिचारै ।
दादू सो सब की लहै, अरु कबहुँ न हारै ॥ ३ ॥

(३५०)

इन बातनि मेरो मन मानै ।
दुतिया दोइ नहीं उर अंतरि, एक एक करि पिव कौं जानै टेक
पूरण ब्रह्म देखै सबहिन मैं, भ्रम न जीव काहू थैं आनै ।
होइ दयाल दीनता सब सौं, अरि पंचनि कौं करै किसानै† १
आपा पर सम सब तत चीन्है, हरी भजै केवल जस गानै ।
दादू सोई सहजि घरि आनै, संकुट‡ सबै जीव के भानै ॥२॥

---

*किसी कर्म मैं चित्त का बंधन न हो और सब भविष्य दरसै। †पाँचों इन्द्रियों का जो शत्रु समान हैं दमन करै। ‡कष्ट।

(३५१)

ये मन मेरा पीव सैं, औरन सैं नाहीं ।
पिव बिन पलहि न जीव सैं, ये उपजै माहीं ॥ टेक ॥
देखि देखि सुख जीव सौं, तहँ धूप न छाहीं ।
अजरावर मन बंधिया, ता थैं अनत न जाहीं ॥ १ ॥
तेज पुंज फल पाइया, तहाँ रस खाहीं ।
अमर बेलि अमृत झरै, पिव पीव* अघाहीं ॥ २ ॥
प्राणपती तहँ पाइया, जहँ उलटि समाहीं ।
दादू पिव परचा भया, हियरे हित लाहीं ॥ ३ ॥

(३५२)

आज प्रभाति मिले हरि लाल ।
दिल की बिथा पीड़ सब भागी, मिट्यौ जीव कौ साल ॥टेक
देखत नैन सँतोष भयो है, इहै तुम्हारौ ख्याल ।
दादू जन सैं हिलि मिलि रहिबौ, तुम्ह हौ दीनदयाल ॥१॥

(३५३)†

अरस इलाही रबदा, इथाँईं रहिमान वे ।
मका बिचि मुसाफरीला, मदीना मुलतान वे ॥ टेक ॥
नबी नाल पैकंबरे, पीरौं हंदा थान वे ।
जन तहुँ ले हिकसाँ, लाइ इथाँ भिस्त मुकाम वे ॥ १ ॥
इथाँ आब ज़मज़मा, इथाँईं सुबहान वे ।
तख़्त रबानी कँगुरेला, इथाँईं सुलतान वे ॥ २ ॥

---

*पीपी कर। †इस शब्द का अर्थ यह है कि इसी काया मैं साहिब, मक्का, मदीना, नबी, पैग़म्बर, पीर, सुबहान, बिहिश्त, आबि ज़म्ज़म्, मालिक का सिंहासन, सच्चा बादशाह और ईमान सब मौजूद हैं—दादू आपे का छोड़ना [वंजाइ] काया ही मैं सहज रीत से बन सकता है।

सब इथाँ अंदरि आव वे, इथाँईं ईमान वे ।
दादू आप वंजाइ वे ला, इथाँईं आसान वे ॥ ३ ॥

(३५४)

आसण रमिदा रामदा, हरि इथाँ अविगत आप वे ।
काया कासी वंजणा, हरि इथैँ पूजा जाप वे ॥ टेक ॥
महादेव मुनिदेव ते, सिधौंदा विसराम वे ।
सर्ग सुखासण हुलणे, हरि इथैँ आतमराम वे ॥ १ ॥
अमी सरोवर आतमा, इथाँईं आधार वे ।
अमर थान अविगत रहै, हरि इथैँ सिरजनहार वे ॥ २
सब कुछ इथैँ आवबे, इथाँ परमानंद वे ।
दादू आपा दूरि करि, हरि इथाँईं आनंद वे ॥ ३ ॥

(३५५)
॥ राग सूहौ ॥

तुम्ह बिचि अंतर जिनि परै माधव, भावै तन धन लेहु
भावै सरग नरक रसातल, भावै करवत देहु ॥ टेक ॥
भावै बिपति देहु दुख संकुट,* भावै संपति सुख सरीर ।
भावै घर बन राव रंक करि, भावै सागर तीर ॥ १ ॥
भावै बंध मुकत करि माधव, भावै त्रिभवन सार ।
भावै सकल दोष धरि माधव, भावै सकल निवारि ॥ २ ॥
भावै धरणि गगन धरि माधव, भावै सीतल सूर ।
दादू निकटि सदा सँगि माधव, तूँ जिनि होवै दूर ॥ ३ ॥

---

*कष्ट ।

(३५६)

इब हम राम सनेही पाया ।
आगम अनहद सौं चित लाया ॥ टेक ॥
तन मन आतम ता कौं दीन्हा ।
तब हरि हम अपना करि लीन्हा ॥ १ ॥
बाणी बिमल पंच पराना ।
पहिली सीस* मिले भगवाना ॥ २ ॥
जीवत जनम सुफल करि लीन्हा ।
पहिली चेते तिन भल कीन्हा ॥ ३ ॥
औसरि आपा ठौर लगावा ।
दादू जीवत ले पहुँचावा ॥ ४ ॥

(३५७)

॥ ग्रंथ कायाबेली ॥

साचा सतगुर राम मिलावै ।
सब कुछ काया माहिं दिखावै ॥ टेक ॥
काया माहैं सिरजनहार । काया माहैं औंकार ॥ १ ॥
काया माहैं है आकास । काया माहैं धरती पास ॥ २ ॥
काया माहैं पवन प्रकास । काया माहैं नीर निवास ॥३॥
काया माहैं ससिहर† सूर । काया माहैं बाजै तूर ॥ ४ ॥
काया माहैं तीन्यूँ देव । काया माहैं अलख अभेव ॥५॥
काया माहैं चार्‍यूँ वेद । काया माहैं पाया भेद ॥ ६ ॥
काया माहैं चार्‍यूँ खाणी । काया माहैं चार्‍यूँ बाणी ॥७॥
काया माहैं उपजै आइ । काया माहैं मरि मरि जाय ॥८॥
काया माहैं जामै मरै । काया माहैं चौरासी फिरै ॥९॥
काया माहैं ले अवतार । काया माहैं बारम्बार ॥ १० ॥

---

*"सीस" अर्थात आपा—पहिले आपा को भेंट किया तब भगवान मिले । †चंद्र ।

काया माहैं राति दिन , उदै अस्त इकतार ।
दादू पाया परम गुर , कीया एकंकार ॥ ११ ॥

(३५८)

काया माहैं खेल पसारा । काया माहैं प्राण अधारा ॥१२॥
काया माहैं अठारह भारा* । काया माहैं उपावणहारा† ॥१३॥
काया माहैं सब बनराइ । काया माहैं रहै घर छाइ ॥१४॥
काया माहैं कंदलि‡ बास । काया माहैं है कविलास ॥१५॥
काया माहैं तरवर छाया । काया माहैं पंखी माया ॥१६॥
काया माहैं आदि अनन्त । काया माहैं है भगवन्त ॥१७॥
काया माहैं त्रिभुवन राइ । काया माहैं रह्या समाइ ॥१८॥
काया माहैं सरग पयाल । काया माहैं आप दयाल ॥१९॥
काया माहैं चौदह भवन । काया माहैं आवागवन ॥२०॥
काया माहैं सब ब्रह्मंड । काया माहैं है नौखंड ॥२१॥

काया माहैं लोक सब , दादू दिये दिखाइ ।
मनसा बाचा कर्मना , गुर बिन लख्या न जाइ ॥२२॥

(३५९)

काया माहैं सागर सात । काया माहैं अविगत§ नाथ ॥२३॥
काया माहैं नदिया नीर । काया माहैं गहर गँभीर ॥२४॥
काया माहैं सरवर पाणी । काया माहैं बसैं बिनाणी‖ ॥२५॥
काया माहैं नीर निवान¶ । काया माहैं हंस सुजान ॥२६॥

---

*अट्ठारह प्रपंच सृष्टि के ब्रह्मंड में और अट्ठारह पिंड में कहे हैं । †पैदा करनेवाला । ‡गुफा । §जिस की गति कोई नहीं जानता । ‖विज्ञानी । ¶नीचा

काया माहैँ गंग तरंग । काया माहैँ जमना संग ॥२७॥
काया माहैँ है सुरसती । काया माहैँ द्वारामती ॥ २८ ॥
काया माहैँ कासी थान । काया माहैँ करै सनान ॥२९॥
काया माहैँ पूजा पाती । काया माहैँ तीरथ जाती ॥३०॥
काया माहैँ मुनियर मेला । काया माहैँ आप अकेला ॥३१
काया माहैँ जपिये जाप । काया माहैँ आपै आप ॥३२॥

काया नगर निधान है, माहैँ कौतिग होइ ।
दादू सतगुर संगि ले, भूलि पड़ै जिनि कोइ ॥३३॥

(३६०)

काया माहैँ बिषमी बाट । काया माहैँ औघट घाट ॥३४
काया माहैँ पट्टण गाँव । काया माहैँ उत्तिम ठाँव ॥३५
काया माहैँ मंडप छाजे । काया माहैँ आप बिराजै ॥३६॥
काया माहैँ महल अवास । काया माहैँ निहचल बास ॥३७
काया माहैँ राज दुवार । काया माहैँ बोलणहार ॥३८॥
काया माहैँ भरे भँडार । काया माहैँ बस्तु अपार ॥३९॥
काया माहैँ नौ निधि होइ । काया माहैँ अठ सिधि सोइ४०
काया माहैँ हीरा साल* । काया माहैँ निपजै लाल ॥४१॥
काया माहैँ माणिक भरे । काया माहैँ ले ले धरे ॥ ४२ ॥
काया माहैँ रतन अमोल । काया माहैँ मोल न तोल ॥४३॥

काया महँ करतार है, सो निधि जाणै नाहिँ ।
दादू गुरमुख पाइये, सब कुछ काया माहिँ ॥ ४४ ॥

---

*सार ।

(३६१)

काया माहैं सब कुछ जाणि । काया माहैं लेहु पिछाणि ॥४५॥
काया माहैं बहु बिस्तार । काया माहैं अनन्त अपार ४६
काया माहैं अगम अगाध । काया माहैं निपजै साध ॥४७
काया माहैं कह्या न जाइ । काया माहैं रहै ल्यौ लाइ ॥४८
काया माहैं साधन सार । काया माहैं करै बिचार ॥४९॥
काया माहैं अमृत बाणी । काया माहैं सारँग प्राणी ॥५०॥
काया माहैं खेलै प्राण । काया माहैं पद निर्बाण ॥५१॥
काया माहैं मूल गहि रहै । काया माहैं सब कुछ लहै ॥५२॥
काया माहैं निज निरधार । काया माहैं अपरम्पार ॥५३॥
काया माहैं सेवा करै । काया माहैं नीझर झरै ॥ ५४ ॥

काया माहैं बास करि, रहै निरन्तर छाइ ।
दादू पाया आदि घर, सतगुर दिया दिखाइ ॥ ५५ ॥

(३६२)

काया माहैं अनभै सार । काया माहैं करै बिचार ॥५६॥
काया माहैं उपजै ज्ञान । काया माहैं लागै ध्यान ॥५७॥
काया माहैं अमर अस्थान । काया माहैं आतम राम ॥५८
काया माहैं कला अनेक । काया माहैं करता एक ॥५९॥
काया माहैं लागै रंग । काया माहैं साँईं संग ॥ ६० ॥
काया माहैं सरवर तीर । काया माहैं कोकिल कीर* ॥६१॥
काया माहैं कच्छब नैन । काया माहैं कुंजी बैन ॥६२॥
काया माहैं कँवल प्रकास । काया माहैं मधुकर बास ॥६३

*कोइल और तोता अर्थात मनसा और मन ।

काया माहैं नाद कुरंग* । काया माहैं जोति पतंग ॥६४
काया माहैं चातृग मोर । माया माहैं चंद चकोर ॥६५॥
काया माहैं प्रीति करि, काया माहिं सनेह ।
काया माहैं प्रेम रस, दादू गुरमुख येह ॥ ६६ ॥

(३६३)

काया माहैं तारणहार । काया माहैं उतरै पार ॥ ६७ ॥
काया माहैं दूतर† तारै । काया माहैं आप उबारै ॥६८॥
काया माहैं दूतरि तिरै । काया माहैं होइ उधरै ॥६९॥
काया माहैं निपजै आइ । काया माहैं रहै समाइ॥ ७०॥
काया माहैं खुलै कपाट । काया माहैं निरंजन हाट ॥७१॥
काया माहैं है दीदार । काया माहैं देखणहार ॥ ७२ ॥
काया माहैं राम रँग राते । काया माहैं प्रेम रस माते ॥७३
काया माहैं अबिचल भये । काया माहैं निहचल रहे ॥७४॥
काया माहैं जीवै जीव । काया माहैं पाया पीव ॥७५॥
काया माहैं सदा अनंद । काया माहैं परमानंद ॥ ७६ ॥
काया माहैं कुसल है, सो हम देखा आइ ।
दादू गुरमुख पाइये, साध कहैं समझाइ ॥ ७७ ॥

(३६४)

काया माहैं देख्या नूर । काया माहैं रह्या भरपूर ॥७८॥
काया माहैं पाया तेज । काया माहैं सुंदर सेज ॥७९॥
काया माहैं पुंज प्रकास । काया माहैं सदा उजास ॥८०॥
काया माहैं झिलिमिलि सारा। कायामाहैंसब थैं न्यारा८१
काया माहैं जोति अनंत । काया माहैं सदा बसंत ॥८२॥
काया माहैं खेलै फाग । काया माहैं सब बन बाग ॥८३॥

---

*हिरन । †कठिन, जो तरने के योग्य नहीं है ।

काया माँहैं खेलै रास। काया माँहैं विविध विलास ॥८४॥
काया माँहैं बाजैं बाजे। काया माँहैं नाद धुनि साजे ॥८५
काया माँहैं सेज सुहाग। काया माँहैं मोटे भाग ॥ ८६ ॥
काया माँहैं मंगलचार। काया माँहैं जैजैकार ॥ ८७ ॥
काया अगम अगाध है, माँहैं तूर बजाइ।
दादू परगट पिव मिल्या, गुरमुखि रहे समाइ ॥ ८८ ॥

॥ राग बसंत ॥

(३६५)

निर्मल नाउँ न लीया जाइ। जा के भाग बड़े सोई फल खाइ ॥ टेक ॥
मन माया मोह मद माते, कर्म कठिन ता माँहिं परे।
बिषै बिकार मान मन माहीं, सकल मनोरथ स्वाद खरे ॥१
काम क्रोध ये काल कलपना, मैं मैं मेरी अति अहंकार।
तृष्णा तृपति न मानैं कबहूँ, सदा कुसंगी पंच बिकार ॥२
अनेक जोध रहैं रखवाले, दुर्लभ दूरि फल अगम अपार।
जा के भाग बड़े सोई फल पावै, दादू दाता सिरजनहार ॥३

(३६६)

तूँ घरि आवने म्हारे रे, हूँ जाऊँ वारणे त्हारे रे ॥टेक
रैनि दिवस मूनै निरखताँ जाये।
वेलो थई* घरि आवै वाल्हा आकुल थाये ॥१॥
तिल तिल हूँ तो त्हारी बाटड़ी जोऊँ।
एणी रे आँसूड़े वाल्हा मुखड़ो धोऊँ ॥ २ ॥

---

* देर हुई।

म्हारी दया करि घरि आवे रे वाल्हा ।
दादू तो म्हारो छे रे मा कर टालो* ॥ ३ ॥

(३६७)

मोहन दुख दीरघ तूँ निवार,
मोहिं सतावै बारंबार ॥ टेक ॥
काम कठिन घट रहै माहिं,
ता थैं ज्ञान ध्यान दोउ उदै नाहिं ।
गति मति मोहन बिकल मोर,
ता थैं चीति न आवै नाँव तोर ॥ १ ॥
पाँचौं द्वंदर† देह पूरि;
ता थैं सहज सील सत रहैं दूरि ।
सुधि बुधि मेरी गई भाज,
ता थैं तुम बिसरे महराज ॥ २ ॥
क्रोध न कबहूँ तजै संग,
ता थैं भाव भजन का होइ भंग ।
समझि न काई‡ मन मँझारि,
ता थैं चरण बिमुख भये श्रीमुरारि ॥ ३ ॥
अंतरजामी करि सहाइ,
तेरो दीन दुखित भयो जनम जाइ ।
त्राहि त्राहि प्रभु तूँ दयाल,
कहै दादू हरि करि सँभाल ॥ ४ ॥

(३६८)

मेरे मोहन मूरति राखि मोहिं, निस बासुरि गुन रमौं तोहिं ।टेक
मन मीन होइ ज्यूँ स्वाद खाइ, लालच लाग्यौ जल थैं जाइ ।
मन हस्ती मातौ अपार, काम अंध गज लहै न सार ॥१॥

---

*उसे हटाव मत । †द्वंद । ‡कोई ।

मन पतंग पावग* परै, अग्नि न देखै ज्यूँ जरै ।
मन मिरगा ज्यूँ सुनै नाद, प्राण तजै यूँ जाइ बाद ॥२
मन मधुकर जैसैं लुबधि बास, कँवल बँधावै होइ नास
मनसा वाचा सरण तोर, दादू कौं राखौ गोब्यंद मोर ॥३

(३६९)

बहुरि न कीजै कपट काम, हिरदै जपिये राम नाम ॥टेक
हरि पाषैं† नहिं कहूँ ठाम, पिव बिन खड़भड़‡ गाँव गाँव
तुम राखौ जियरा अपनी माम§, अनत जिनि जाय रहो बिस्राम ॥१॥
कपट काम नहिं कीजै हाम||, रहु चरन कँवल कहु राम नाम
जब अंतरजामी रहै जाम, तब अखै पद जन दादू प्राम¶ ॥२

(३७०)

तहँ खेलौं नितहीं पिव सूँ फाग। देखि सखी री मेरे भाग ॥टेक
तहँ दिन दिन अति आनंद होइ, प्रेम पिलावै आप सोइ ।
सँगियन सेती रमौं रास, तहँ पूजा अरचा चरन पास ॥१
तहँ बचन अमोलिक सबहिं सार, तहँ बरतै लीला अति अपार ।
उमँगि देइ तब मेरे भाग, तिहि तरवर फल अमर लाग ॥२
अलख देव कोइ जाणै भेव, तहँ अलख देव की कीजै सेव ।
दादू बलि बलि बारबार, तहँ आप निरंजन निराधार ॥३

(३७१)

मोहन माली सहजि समाना । कोई जाणै साध सुजाना ॥टेक
काया बाड़ी माहैं माली, तहाँ रास बनाया ।
सेवग सौं स्वामी खेलन कौं, आप दया करि आया ॥१॥

---

*आग । †बिना । ‡खड़बड़ । §सहारा । ||हिम्मत । ¶जब अंतरजामी आठ पहर हृदय में रहै तब, हे दादू, अक्षय पद मिलै ।

बाहरि भीतरि सर्ब निरंतरि, सब मैं रह्या समाई।
परगट गुप्त गुप्त पुनि परगट, अविगत लख्या न जाई ॥२॥
ता माली की अकथ कहाणी, कहत कही नहिं आवै।
अगम अगोचर करै अनंदा, दादू ये जस गावै ॥ ३ ॥

(३७२)

मन मोहन मेरे मन हिं माहिं। कीजै सेवा अति तहाँ ॥टेक
तहँ पायो देव निरंजना, परगट भयो हरि ये तनाँ।
नैन नहीं निरखौं अघाइ, प्रगट्यौ है हरि मेरे भाइ ॥१॥
मोहिं कर नैनन की सैन देइ, प्राण मूसि हरि मोर लेइ।
तब उपजै मोकौं इहै बाणि, निज निरखतहौं सारंग पाणि २
अंकुर आदैं प्रगट्यौ सोइ, बैन बान ता थैं लागे मोहिं।
सरणैं दादू रह्यौ जाइ, हरि चरण दिखावै आप आइ ॥३॥

(३७३)

मतवाले पंचूँ प्रेम पूरि, निमख न इत उत जाहिं दूरि। टेक
हरि रस माते दया दीन, राम रमत ह्वै रहे लीन।
उलटि अपूठे भये थीर, अमृत धारा पिवहिं नीर ॥ १ ॥
सहजि समाधी तजि बिकार, अविनासी रस पिवहिं सार।
थकित भये मिलि महल माहिं, मनसा बाचा आन नाहिं ॥२
मन मतवाला राम रंगि, मिलि आसणि बैठे एक संगि।
इस्थिर दादू एक अंग, प्राणनाथ तहँ परमानंद ॥ ३ ॥

॥ राग भैरो ॥

(३७४)

सतगुर चरणा मस्तक धरणा,
राम नाम कहि दूतर तिरणा ॥ टेक ॥
अठ सिधि नव निधि सहजैं पावै,
अमर अभै पद सुख मैं आवै ॥ १ ॥

भगति मुकति बैकुंठाँ जाइ,
अमर लोक फल लेवै आइ ॥ २ ॥
परम पदारथ मंगलचार,
साहिब के सब भरे भँडार ॥ ३ ॥
नूर तेज है जोति अपार,
दादू राता सिरजनहार ॥ ४ ॥

(३७५)

तन हीं राम मन हीं राम, राम रिदै रमि राखी ले ॥टेक
मनसा राम सकल परिपूरण, सहज सदा रस चाखी ले।
नैना राम बैना राम, रसना राम सँभारी ले।
स्रवणाँ राम सन्मुख राम, रमिता राम बिचारी ले ॥१॥
साँसै राम सुरतै राम, सबदै राम समाई ले।
अंतरि राम निरंतरि राम, आतम राम ध्याई ले ॥ २ ॥
सर्वै राम संगै राम, राम नाम ल्यौ लाई ले।
बाहरि राम भीतरि राम, दादू गोबिंद गाई ले ॥ ३ ॥

(३७६)

ऐसी सुरति राम ल्यौ लाइ, हरि हिरदै जिनि बीसरि जाइ ॥ टेक ॥
छिन छिन मात सँभारै पूत, बिंद राखै जोगी औधूत*।
त्रिया कुरूप रूप कौं रटै, नटनी निरखि बाँस ब्रत† चढ़ै ॥१
कच्छिब दृष्टी धरै धियान, चात्रिग नीर प्रेम की बान।
कुंजी कुरलि सँभालै सोइ, भृंगी ध्यान कीट कौं होइ ॥२॥
स्रवणौं सबद ज्यूँ सुनै कुरंग,‡ जोति पतंग न मोड़ै अंग।
जल बिन मीन तलफि ज्यौं मरै, दादू सेवग ऐसैं करै ॥३॥

---

*जोगी अवधूत बीर्य को पात नहीँ होने देते। †रस्सी। ‡हिरन।

(३७७)

निर्गुण राम रहै ल्यौ लाइ ।
सहजैं सहज मिलै हरि जाइ ॥ टेक ॥
भौजल ब्याधि लिपै नहिं कबहूँ ।
करम न कोई लागै आइ ॥
तीन्यूँ ताप जरै नहिं जियरा ।
सो पद परसै सहज सुभाइ ॥ १ ॥
जनम जुरा जोनि नहिँ आवै ।
माया मोह न लागै ताहि ॥
पाँचौँ पीड़ प्राण नहिं ब्यापै ।
सकल सोधि सब इहै उपाइ ॥ २ ॥
संकुट संसा नरक न नैनहुँ ।
ता कौं कबहूँ काल न खाइ ॥
कंप* न काई भै भ्रम भागै ।
सब बिधि ऐसी एक लगाइ ॥ ३ ॥
सहज समाधि गहौ जे डिढ़ करि ।
जा सौँ लागै सोई आइ ।
भृंगी होइ कीट की न्याईं ।
हरि जन दादू एक दिखाइ ॥ ४ ॥

(३७८)

धनि धनि तूँ धनि धणी, तुम्ह सौँ मेरी आइ बणी ॥टेक॥
धनि धनि तूँ तारै जगदीस, सुर नर मुनि जन सेवैं ईस ।
धनि धनि तूँ केवल राम, सेस सहस मुख ले हरि नाम ॥१
धनि धनि तूँ सिरजनहार, तेरा कोइ न पावै पार ।
धनि धनि तूँ निरंजन देव, दादू तेरा लखै न भेव ॥२॥

*मैल ।

(३७६)

का जाणौं मोहिं का ले करसी ।
तजहिं ताप मोहिं छिन न बिसरसी ॥ टेक ॥
आगम मो पैं जान्यूँ न जाइ । इहै बिमासण* जियरे माहिं१
मैं नहिं जाणौं क्या सिरि होइ । ता थैं जियरा डरपै रोइ ॥२॥
काहू थैं ले कछू करै । ता थैं मइया जीव डरै ॥ ३ ॥
दादू न जाणे कैसैं कहै । तुम सरणागति आइ रहै ॥४॥

(३८०)

का जाणौं राम को गति मेरी ।
मैं बिषयी मनसा नहिं फेरी ॥ टेक ॥
जे मन माँगै सोई दीन्हा ।
जाता देखि फेरि नहिं लीन्हा ॥ १ ॥
देवा ढुंढर अधिक पसारे ।
पंचौं पकरि पटकि नहिं मारे ॥ २ ॥
इन बातनि घट भरे बिकारा ।
तृष्णा तेज मोह नहिं हारा ॥ ३ ॥
इनहिं लागि मैं सेव न जाणी ।
कहे दादू सो कर्म कहाणी ॥ ४ ॥

(३८१)

डरिये रे डरिये । ता थैं राम नाम चित धरिये ॥ टेक ॥
जिन ये पंच पसारे रे । मारे रे ते मारे रे ॥ १ ॥
जिन ये पंच समेटे रे । भेटे रे ते भेटे रे ॥ २ ॥
कच्छिब ज्यूँ करि लीये रे । जीये रे ते जीये रे ॥ ३ ॥
भृंगी कीट समाना रे । ध्याना रे यहु ध्याना रे ॥ ४ ॥
अज्या† सिंह ज्यूँ रहिये रे । दादू दरसन लहिये रे ॥५॥

*पछतावा । †बकरी ।

(३८२)

तहँ मुझ कमीन की कौण चलावै।
  जा कौ अजहूँ मुनि जन महल न पावै ॥टेक॥
सिव बिरंच नारद जस* गावै।
  कौन भाँति करि निकटि बुलावै ॥ १ ॥
देवा सकल तैंतीसौं कोरि†।
  रहे दरबार ठाढ़े कर जोरि ॥ २ ॥
सिध साधिक रहे ल्यौ लाइ।
  अजहूँ मोटे‡ महल न पाइ ॥ ३ ॥
सब थैं नीच मैं नाँव न जाना।
  कहै दादू क्यूँ मिलै सयाना ॥ ४ ॥

(३८३)

तुम्ह बिन कहु क्यौं जीवन मेरा।
  अजहुँ न देख्या दरसन तेरा ॥ टेक ॥
होहु दयाल दीन के दाता।
  तुम पति पूरण सब बिधि साचा ॥ १ ॥
जो तुम्ह करौ सोई तुम्ह छाजै।
  अपणे जन कौं काहे न निवाजै ॥ २ ॥
अकरन करन ऐसैं अब कीजै।
  अपनौ जानि करि दरसन दीजै ॥ ३ ॥
दादू कहै सुनहु हरि साँईं।
  दरसन दीजै मिलौ गुसाँईं ॥ ४ ॥

(३८४)

कागा रे करंक परि बोलै।
  खाइ माँस अरु लगहीं§ डोलै ॥ टेक ॥

---

* कीर्त्ति। †करोड़। ‡बड़ा। §पास, निकट।

जा तन कौं रचि अधिक सँवारा ।
सो तन ले माटी मैं डारा ॥ १ ॥
जा तन देखि अधिक नर फूले ।
सो तन छाड़ि चल्या रे भूले ॥ २ ॥
जा तन देखि मन मैं गरवाना ।
मिलि गया माटी तजि अभिमाना ॥ ३ ॥
दादू तन की कहा बड़ाई ।
निमख माहिँ माटी मिलि जाई ॥ ४ ॥

(३८५)

जपि गोबिंद बिसरि जिनि जाइ ।
जनम सुफल करिये लै लाइ ॥ टेक ॥
हरि सुमिरण स्यूँ हेत लगाइ ।
भजन प्रेम जस गोबिंद गाइ ॥
मनिषा देह मुकति का द्वारा ।
राम सुमिरि जग सिरजनहारा ॥ १ ॥
जब लग बिषम ब्यांधि नहिँ आई ।
जब लग काल काया नहिँ खाई ॥
जब लग सब्द पलटि नहिँ जाई ।
तब लग सेवा करि राम राई ॥ २ ॥
औसरि राम कहसि नहिँ लोई ।
जनम गया तब कहै न कोई ॥
जब लग जीवै तब लग सोई ।
पीछे फिरि पछितावा होई ॥ ३ ॥
साँईं सेवा सेवग लागे ।
सोई पावै जे कोइ जागे ॥

गुरमुखि तिमर भर्म सब भागे ।
बहुरि न उलटे मारगि लागे ॥ ४ ॥
ऐसा औसर बहुरि न तेरा ।
देखि बिचारि समझि जिय मेरा ।
दादू हारि जीति जगि आया ।
बहुत भाँति कहि कहि समझाया ॥ ५ ॥

(३८६)

राम नाम तत काहे न बोलै ।
रे मन मूढ़ अनत जिनि डोलै ॥ टेक ॥
भूला भरमत जनम गमावै ।
यहु रस रसना काहे न गावै ॥ १ ॥
क्या झखि* औरै परत जँजालै ।
बाणी बिमल हरि काहे न सँभालै ॥ २ ॥
राम बिसारि जनम जिनि खोवै ।
जपि ले जीवनि साफल होवै ॥ ३ ॥
सार सुधा सदा रस पीजै ।
दादू तन धरि लाहा लीजै ॥ ४ ॥

(३८७)

आप आपण मैं खोजौ रे भाई ।
बस्तु अगोचर गुरू लखाई ॥ टेक ॥
ज्यूँ मही बिलोयैं माखण आवै ।
त्यूँ मन मथियाँ तैं तत पावै ॥ १ ॥
काठ हुतासन† रह्या समाइ ।
त्यूँ मन माहिं निरंजन राइ ॥ २ ॥

---

*झाँकना । †आग ।

ज्यूँ अवनी* मैँ नीर समाना ।
त्यूँ मन माहैँ साच सयाना ॥ ३ ॥
ज्यूँ दर्पन के नहिँ लागै काई ।
त्यूँ मूरति माहैँ निरखि लखाई ॥ ४ ॥
सहजैँ मन मथियाँ तैँ तत पाया ।
दादू उन तौ आप लखाया ॥ ५ ॥

(३८८)

मन मैला मनहीँ स्यूँ धोइ ।
उनमनि लागै निर्मल होइ ॥ टेक ॥
मनहीँ उपजै बिषै बिकार ।
मनहीँ निर्मल त्रिभुवन सार ॥ १ ॥
मनहीँ दुबिधा नाना भेद ।
मन हीँ समझै द्वै पष छेद ॥ २ ॥
मनहीँ चंचल चहुँ दिसि जाइ ।
मन हीँ निहचल रह्या समाइ ॥ ३ ॥
मनहीँ उपजै अगिनि सरीर ।
मनहीँ सीतल निर्मल नीर ॥ ४ ॥
मन उपदेस मनहिँ समझाइ ।
दादू यहु मन उनमनि लाइ ॥ ५ ॥

(३८९)

रहु रे रहु मन मारौँगा । रती रती करि डारौँगा ॥टेक॥
खंड खंड करि नाखौँगा† । जहाँ राम तहँ राखौँगा ॥१॥
कह्या न मानै मेरा । सिर भानौँगा तेरा ॥ २ ॥
घर मैँ कदे न आवै । बाहरि कौँ उठि धावै ॥ ३ ॥

---

*पृथ्वी । †डालूँगा ।

आतम राम न जानै। मेरा कह्या न मानै ॥ ४ ॥
दादू गुरमुखि पूरा। मन सौं जूझै सूरा ॥ ५ ॥

(३६०)

निर्भै नाँव निरंजन लीजै। इन लोगन का भय नहिं कीजै।टेक
सेवग सूर संक नहिं मानै। राणा राव रंक करि जानै ॥१
नाँव निसंक मगन मतवाला। राम रसाइन पिवे पियाला॥२
सहजैं सदा राम रँगि राता। पूरण ब्रह्म प्रेम रस माता ॥३
हरि बलवन्त सकल सिरि गाजै। दादू सेवग कैसैं भाजै ॥४

(३६१)

ऐसो अलख अनंत अपारा, तीनि लोक जा को बिस्तारा॥टेक
निर्मल सदा सहजि घरि रहै, ता को पार न कोई लहै।
निर्गुण निकटि सब रह्यो समाइ, निहचल सदा न आवै जाइ१
अबिनासी है अपरंपार, आदि अनंत रहै निरधार।
पावन सदा निरंतर आप, कला अतीत लिपत नहिं पाप॥२
समरथ सोई सकल भरपूरि, बाहरि भीतरि नेड़ा न दूरि।
अकल* आप कलै† नहिं कोई, सब घट रह्यौ निरंजन होई ॥३
अबरण आपैं अजर अलेख, अगम अगाध रूप नहिं रेख।
अविगत की गति लखी न जाइ, दादू दीन ताहि चित लाइ४

(३६२)

ऐसौ राजा सेऊँ ताहि। और अनेक सब लागे जाहि ॥टेक
तीनि लोक गृह धरे रचाइ, चंद सूर दोउ दीपक लाइ।
पवन बुहारै गृह आँगणा, छपन कोटि जल जा के घराँ ॥१
राते सेवा संकर देव, ब्रह्म कुलाल‡ न जानै भेव।
कीरति करणा चार्यूँ बेद, नेति नेति नवि§ जाणै भेद ॥२

*अकाल। †मारै। ‡कुम्हार। §नहीं।

सकल देव-पति सेवा करैं, मुनि अनेक एक चित धरैं।
चित्र बिचित्र लिखैं दरबार, धर्मराइ ठाढ़े गुणसार ॥३॥
रिधि सिधि दासी आगैं रहैं, चारि पदारथ जी जी कहैं।
सकल सिद्धि रहे ल्यौ लाइ, सब परिपूरण ऐसौ राइ ॥४॥
खलक खजीना भरे भँडार, ता घरि बरतै सब संसार।
पूरि दिवान सहजि सब दे, सदा निरंजन ऐसौ है ॥ ५ ॥
नारद गाइण गुण गोबिंद, सारदा करै सब छंद।
नटवर नाचै कला अनेक, आपण देखै चरित अलेख ॥ ६ ॥
सकल साध बाजे नीसान, जै जै कार न मेटै आन।
मालिनि पहुप अठारह भार, आपण दाता सिरजनहार॥७
ऐसौ राजा सोई आहि, चौदह भुवन मैं रह्यौ समाइ।
दादू ता की सेवा करै, जिन यहु रचि ले अधर धरै ॥८॥

(३६३)

जब यहु मैं मैं मेरी जाइ।तब देखत बेगि मिलै राम राइ ॥टेक
मैं मैं मेरी तब लग दूरि। मैं मैं मेटि मिलै भरपूरि ॥१॥
मैं मैं मेरी तब लग नाहिं। मैं मैं मेटि मिलै मन माहिं॥ २
मैं मैं मेरी न पावै कोइ। मैं मैं मेटि मिलै जन सोइ ॥३॥
दादू मैं मैं मेरी मेटि। तब तूँ जाणि राम सौं भेटि॥ ४ ॥

(३६४)

नाहीं रे हम नाहीं रे,सत्ति राम सब माहीं रे ॥ टेक ॥
नाहीं धरणि अकासा रे, नाहीं पवन प्रकासा रे।
नाहीं रवि ससि तारा रे, नहिं पावक परजारा रे ॥ १॥
नाहीं पंच पसारा रे, नाहीं सब संसारा रे।
नहिं काया जीव हमारा रे, नहिं बाजी कौतिगहारा रे ॥२॥
नाहीं तरवर छाया रे, नहिं पंखी नहिं माया रे।
नाहीं गिरवर बासा रे, नाहीं समँद निवासा रे ॥ ३ ॥

ाहीं जल थल खंडा रे, नाहीं सब ब्रह्मंडा रे।
ाहीं आदि अनंता रे, दादू राम रहंता रे ॥ ४ ॥

(३९५)

ालह कहौ भावै राम कहौ। डाल तजौ सब मूल गहौ॥टेक॥
ालह राम कहि कर्म दहौ। झूठे मारगि कहा बहौ ॥१॥
ाधू संगति तौ निबहौ। आइ परै सो सीसि सहौ॥२॥
ाया कँवल दिल लाइ रहौ। अलख अलह दीदार लहौ॥३
ातगुर की सुणि सीख अहौ। दादू पहुँचै पार पहौ ॥४॥

(३९६)

ंदू तुरक न जाणौं दोइ।
ाँई सबनि का सोई है रे, और न दूजा देखौं कोइ ॥टेक॥
ीट पतंग सबै जोनिन मैं, जल थल संगि समाना सोइ।
ोर पैगंबर देवा दानव, मीर मलिक मुनि जन कौं मोहि॥१
र्ता है रे सोई चीन्हौं, जिनि वै क्रोध करै रे कोइ।
ैसैं आरसी मंजन कीजै, राम रहीम देही तन धोइ ॥२॥
ाँई केरी सेवा कीजै, पायौ धन काहे कौं खोइ।
ादू रे जन हरि भजि लीजै, जनमि जनमि जे सुरजन होइ॥३

(३९७)

कोइ स्वामी कोइ सेख कहै।
इस दुनयिा का मर्म न कोई लहै ॥ टेक ॥
कोई राम कोइ अलह सुनावै।
पुनि अलह राम का भेद न पावै ॥ १ ॥
कोइ हिंदू कोइ तुरक करि मानै।
पुनि हिंदू तुरक की खबरि न जानै ॥ २ ॥

यहु सब करणी दून्यूँ वेद[*] ।
समझ परी तब पाया भेद ॥ ३ ॥
दादू देखै आतम एक ।
कहिबा सुनिबा अनंत अनेक ॥ ४ ॥

(३६८)

निन्दत है सब लोक बिचारा। हम कौं भावै राम पियारा॥टेक
निरसंसै निरदोष लगावै। ता थैं मो कौं अचिरज आवै ॥१
दुबिधा द्वै पष रहिता जे। ता सनि कहत गये रे ये॥२॥
निरबैरी निहकामी साध। ता सिरि देत बहुत अपराध॥३
लोहा कंचन एक समान। ता सनि कहत करत अभिमान॥४
निन्द्या अस्तुति एकै तोलै। तासु कहैं अपवादहि बोलै॥५
दादू निन्द्या ता कौं भावै। जा के हिरदै राम न आवै॥६

(३६९)

माहरूँ स्यूँ जेहूँ आपूँ। ताहरूँ छै तूँनै थापूँ॥ टेक ॥[†]
सर्ब जीव नै तूँ दातार। तैं सिरज्या नै तूँ प्रतिपाल॥१॥
तन धन ताहरो तैं दीधो। हूँ ताहरो नै तैं कीधो॥२॥
सहुवै[‡] ताहरो साचो ये। मैं नै माहरो झूठो ते ॥ ३ ॥
दादू नै मनि और न आवै। तूँ कर्ता नै तूँहि जु भावै॥४

(४००)

ऐसा अवधू राम पियारा, प्राण प्यंड थैं रहै नियारा॥टेक॥
जब लग काया तब लग माया, रहै निरंतर अवधू राया॥१
अठ सिधि भाई नौ निधि आई, निकटि न जाई राम दुहाई
अमर अभै पद बैकुंठ बास, छाया माया रहै उदास ॥३।
साँईं सेवग सब दिखलावै, दादू दूजा दिष्टि न आवै॥४।

---

[*]मत। [†]मेरा क्या है जो तुझे दूँ सब तेरा ही है सो तुझे भेंट करता हूँ।
[‡]सब।

(४०१)

तूँ साहिब मैं सेवग तेरा। भावै सिर दे सूली मेरा ॥टेक
भावै करवत सिर पर सारि। भावै लेकर गरदन मारि ॥१॥
भावै चहुँ दिसि अगिन लगाइ। भावै काल दसौ दिसि खाइ॥२
भावै गिरवर गगन गिराइ। भावै दरिया माहिँ बहाइ ॥३
भावै कनक कसौटी देहु। दादू सेवग कसि कसि लेहु॥४॥

(४०२)

काम क्रोध नहिँ आवै मेरे। ताथैं गोबिंद पाया नेरे ॥टेक॥
भर्म कर्म जालि सब दीन्हा। रमिता राम सबनि मैं चीन्हा १
दुबिधा दुरमति दूरि गँवाई। राम रमति साची मनि आई २
नीच ऊँच मद्धिम को नाहीं। देखौं राम सबन के माहीं॥३
दादू साच सबनि मैं सोई। पैंड* पकरि जन निर्भय होई॥४

(४०३)

हाजिरा हजूर साँईं। है हरि नेड़ा दूरि नाहीं ॥ टेक ॥
मनी मेटि महल में पावै। काहे खोजन दूरि जावै ॥१॥
हिरस न होइ गुसा सब खाइ। ता थैं सँइयाँ दूरि न जाइ।२
दुई दूरि दरोग न होइ। मालिक मन मैं देखै सोइ ॥ ३ ॥
अरि† ये पंच सोधि सब मारै। तब दादू देखै निकटि बिचारै४

(४०४)

राम रमत देखै नहिँ कोई। जो देखै सो पावन होई ॥टेक॥
बाहरि भीतरि नेड़ा न दूरि। स्वामी सकल रह्या भरपूरि ॥१॥
जहँ देखौं तहँ दूसर नाहिँ। सब घटि राम समाना माहिँ ॥२॥
जहाँ जाउँ तहँ सोई साथ। पूरि रह्या हरि त्रिभुवन नाथ ॥३
दादू हरि देखैं सुख होइ। निस दिन निरखन दीजै मोहिँ ॥४

---

*पैंड़ी, डाल। †शत्रु।

(४०५)

मन पवना ले उनमन रहै, अगम निगम मूल सो लहै॥टेक
पंच बाइ जे सहजि समावै, ससिहर[*] के घरि आणै सूर।
सीतल सदा मिलै सुखदाई, अनहद सबद वजावै तूर ॥१
बंक नालि सदा रस पीवै, तब यहु मनवाँ कहीं न जाइ।
बिगसै कँवल प्रेम जब उपजै, ब्रह्म जीव की करै सहाइ ॥२
बैसि गुफा मैं जोति बिचारै, तब तेहिं सूझै त्रिभुवन राइ।
अंतरि आप मिलै अबिनासी, पद आनंद काल नहिं खाइ ३
जामण मरण जाइ भव भाजै, अवरण के घरि वरण समाइ।
दादू जाय मिलै जग-जीवन, तब यहु आवागवन बिलाइ॥४

(४०६)

जीवनमूरि मेरे आतमराम। भाग बड़े पायो निज ठाम ॥टेक
सबद अनाहद उपजै जहाँ, सुखमन रंग लगावै तहाँ।
तहँ रँग लागै निर्मल होइ, ये तत उपजै जानै सोइ ॥१॥
सरवर[†] तहाँ हंसा रहै, करि असनान सबै सुख लहै।
सुखदाई कौं नैनहुं जोइ, त्यूँ त्यूँ मन अति आनँद होइ॥२॥
सो हंसा सरनागति जाइ, सुंदरि तहाँ पखालै पाँइ।
पीवै अमृत नीझर नीर, बैठे तहाँ जगत-गुर पीर ॥३॥
तहँ भाव प्रेम की पूजा होइ, जा परि किरपा जानै सोइ।
किरपा करि हरि देइ उमंग, ता जन पायौ निर्भय संग ॥४॥
तब हंसा मन आनंद होइ, बस्त अगोचर लखै रे सोइ।
जा कौं हरी लखावै आप, ताहि न लेपै पुन्य न पाप ॥५॥
तहँ अनहद बाजे अद्भुत खेल, दीपक जलै बाती बिन तेल।
अखंड जोति तहँ भयौ प्रकास, फाग बसंत जो बारह मास॥६

---

[*]चाँद। [†]मानसरोवर।

त्री-अस्थान* निरंतरि निरधार, तहँ प्रभु बैठे समरथ सार ।
नैनहुँ निरखौं तौ सुख होइ, ताहि पुरिस कौं लखै न कोइ ॥७
ऐसा है हरि दीन-दयाल, सेवग की जानै प्रतिपाल।
चलु हंसा तहँ चरण समान, तहँ दादू पहुँचे परिवान ॥८

(४०७)

घटि घटि गोपी घटि घटि कान्ह, घटि घटि राम अमर
अस्थान ॥ टेक ॥
गंगा जमुना† अंतरबेद‡। सुरसती§ नीर बहै परसेद|| ॥ १ ॥
कुंज केलि तहँ परम बिलास। सब संगी मिलि खेलैं रास ॥२॥
तहँ बिन बेना बाजै तूर। बिगसै कँवल चंद अरु सूर ॥३॥
पूरण ब्रह्म परम परकास । तहँ निज देखै दादू दास ॥४॥

---

(४०८)

॥ राग ललित ॥

राम तूँ मेरा हूँ तेरा । पाँइन परत निहोरा ॥ टेक ॥
एकै संगैं बासा । तुम ठाकुर हम दासा ॥ १ ॥
तन मन तुम कौं देबा । तेज पुंज हम लेबा ॥ २ ॥
रस माहैं रस होइबा । जोति सरूपी जोइबा ॥ ३ ॥
ब्रह्म जीव का मेला । दादू नूर अकेला ॥ ४ ॥

(४०९)

मेरे गृह आवहु गुर मेरा । मैं बालक सेवग तेरा ॥टेक॥
मात पिता तूँ अम्हचा¶ स्वामी । देव हमारे अंतरजामी॥१
अम्हचा सज्जन अम्हचा बंधू। प्राण हमारे अम्हचा जिंदू २

---

*त्रिकुटी। † पिंगला और इड़ा अथवा दहिना और बायाँ स्वर। ‡मध्य स्थान। § सुखमना। || पसीना अर्थात प्रेम धारा। ¶हमारा।

अम्हचा प्रीतम अम्हचा मेला। अम्हची जीवनि आप अकेला॥३
अम्हचा साथी संग सनेही। राम बिना दुख दादू देही॥४

(४१०)

वाल्हा म्हारा, प्रेम भगति रस पीजिये,
रमिये रमिता राम, म्हारा वाल्हा रे।
हिरदा कँवल मैं राखिये, उत्तिम एहज ठाम,
म्हारा वाल्हा रे॥ टेक॥

वाल्हा म्हारा, सतगुर सरणै अणसरै*,
साध समागम थाइ, म्हारा वाल्हा रे।
बाणी ब्रह्म बखाणिये, आनँद मैं दिन जाइ,
म्हारा वाल्हा रे॥ १॥

वाल्हा म्हारा आतम अनभै ऊपजै,
उपजै ब्रह्म गियान म्हारा वाल्हा रे।
सुख सागर मैं झूलिये, साचौ ये असनान,
म्हारा वाल्हा रे॥ २॥

वाल्हा म्हारा, भै बंधन सब छूटिये,
कर्म न लागै कोइ, म्हारा वाल्हा रे।
जीवनि मुकति फल पामिये, अमर अमय पद होइ,
म्हारा वाल्हा रे॥ ३॥

वाल्हा म्हारा, अठ सिधि नौ निधि आँगणै,
परम पदारथ चार, म्हारा वाल्हा रे।
दादू जन देखै नहीं, रातौ सिरजनहार,
म्हारा वाल्हा रे॥ ४॥

*अनुसार चलै।

(४११)

हमारौ मन माई, राम नाम रँगि रातौ।
पिव पिव करै पीव कौं जानै, मगन रहै रस मातौ ॥टेक॥
सदा सील संतोष सु भावत, चरण कँवल मन बाँधौ।
हिरदा माहिं जतन करि राखौं, मानौं रंक धन लाधौ* ॥१
प्रेम भगित प्रीति हरि जानौं, हरि सेवा सुखदाई।
ज्ञान ध्यान मोहन कौ मेरे, कंप† न लागै काई ॥ २ ॥
संगि सदा हेत हरि लागौ, अंगि और नहिं आवै।
दादू दीनदयाल दमोदर, सार सुधा रस भावै ॥ ३ ॥

(४१२)

मिहरबान मिहरबान, आब बाद खाक आतस,
आदम नीसान ॥ टेक ॥
सीस पाँव हाथ कीये, नैन कीये कान।
मुख कीया जीव दीया, राजिक रहमान ॥ १ ॥
मादर पिदर परदा-पोस, साँईं सुबहान।
संग रहै दस्त गहै, साहिब सुलतान ॥ २ ॥
या करीम या रहीम, दाना तू दीवान।
पाक नूर है हजूर, दादू है हैरान ॥ ३ ॥

॥ राग जैतश्री ॥

(४१३)

तेरे नाँउ की बलि जाऊँ, जहाँ रहौं जिस ठाऊँ ॥ टेक ॥
तेरे बैनौं की बलिहारी, तेरे नैनहुँ ऊपरि वारी।
तेरि मूरति की बलि कीती, वारि वारि हौं दीती ॥१॥

---

*पाया। †सोने की मैल।

सोभित नूर तुम्हारा, सुंदर जोति उजारा ।
मीठा प्राण-पियारा, तूं है पीव हमारा ॥ २ ॥
तेज तुम्हारा कहिये, निर्मल काहे न लहिये ।
दादू बलि बलि तेरे, आव पिया तूं मेरे ॥ ३ ॥

(४२४)

मेरे जिय की जाणै जाणराइ, तुम थैं सेवग कहा दुराइ ॥टेक
जल बिन जैसैं जाइ जिय तलफत, तुम बिन तैसैं हमहुं बिहाइ।
तन मन व्याकुल होइ बिरहनी, दरस पियासी प्रान जाइ ॥१
जैसें चित्त चकोर चंदमनि, ऐसैं मोहन हमहिं आहि ।
बिरह अगिनि दहन दादू कौं, दर्सन परसन तन सिराइ* ॥२॥

॥ राग धनाश्री ॥

(४२५)

रंग लागौ रे राम कौ, सो रँग कदे न जाई रे ।
हरि रंग मेरौ मन रंग्यौ, और न रंग सुहाई रे ॥टेक ॥
अबिनासी रँग ऊपनौ, रचि मचि लागौ चौलौ रे ।
सो रँग सदा सुहावणौ, ऐसौ रंग अमोलौ रे ॥ १ ॥
हरि रंग कदे न ऊतरै, दिन दिन होइ सुरंगौ रे ।
नित्त नवौ निरवाण है, कदे न होइला भंगौ रे ॥ २ ॥
साचौ रँग सहजैं मिल्यौ, सुंदर रंग अपारौ रे ।
भाग बिना क्यूं पाइये, सब रँग माहैं सारौ रे ॥ ३ ॥
अबरण कौ का बरणिये, सो रँग सहज सरूपौ रे ।
बलिहारी उस रंग की, जन दादू देखि अनूपौ रे ॥४॥

*शीतल होय ।

(४१६)

लागि रह्यौ मन राम सौं, अब अनतैं नहिं जाये रे।
अचला सौं थिर ह्वै रह्यौ, सकै न चीत डुलाये रे ॥टेक॥
ज्यूँ फुनिंग* चंदन रहै, परिमल† रहै लुभाये रे।
त्यूँ मन मेरा राम सौं, अबकी बेर अघाये रे ॥ १ ॥
भँवर न छाड़ै बास कूँ, कँवलिहिं रह्यौ बँधाये रे।
त्यूँ मन मेरा राम सौं, बेधि रह्यौ चित लाये रे ॥ २ ॥
जल बिन मीन न जीवई, बिछुरत हीं मरि जाये रे।
त्यूँ मन मेरा राम सौं, ऐसी प्रीति बनाये रे ॥ ३ ॥
ज्यूँ चात्रिग जल कौं रटै, पिव पिव करत बिहाये रे।
त्यूँ मन मेरा राम सौं, जन दादू हेत लगाये रे ॥ ४ ॥

(४१७)

मन मोहन हो, कठिन बिरह की पीर।
सुंदर दरस दिखाइये ॥ टेक ॥
सुनहु न दीनदयाल। तव मुख बैन सुनाइये ॥ १ ॥
करुणामय किरपाल। सकल सिरोमणि आइये ॥ २ ॥
मम जीवन प्राण-अधार। अबिनासी उर लाइये ॥ ३ ॥
इब हरि दरसन देहु। दादू प्रेम बढ़ाइये ॥ ४ ॥

(४१८)

कतहूँ रहे हो बिदेस, हरि नहिं आये हो।
जनम सिरानौ जाइ, पिव नहिं पाये हो ॥ टेक ॥
बिपति हमारी जाइ, हरि सौं को कहै हो।
तुम्ह बिन नाथ अनाथ, बिरहनि क्यूँ रहै हो ॥ १ ॥
पिव के बिरह बियोग, तन की सुधि नहिं हो।
तलफि तलफि जिव जाइ, मिरतक ह्वै रही हो ॥ २ ॥

*नाग। †सुगंधि।

दुखित भई हम नारि, कब हरि आवैं हो ।
तुम्ह बिन प्राण-अधार, जिव दुख पावै हो ॥ ३ ॥
प्रगटहु दीनदयाल, बिलम न कीजै हो ।
दादू दुखी बेहाल, दरसन दीजै हो ॥ ४ ॥

(४१९)

मोहन माधो कब मिलै, सकल सिरोमणि राइ ।
तन मन ब्याकुल होत है, दरस दिखावै आइ ॥ टेक ॥
नैन रहे पंथ जोवताँ, रोवन रैणि बिहाइ ।
बाल-सनेही कब मिलै, मो पैं रह्या न जाइ ॥ १ ॥
छिन छिन अंगि अनल दहै, हरिजी कब मिलिहैं आइ ।
अंतरजामी जाणि करि, मेरे तन की तपति बुझाइ ॥२॥
तुम दाता सुख देत हौ, हाँ हो सुणि दीनदयाल ।
चाहैं नैन उतावले*, हाँ हो कब देखौं लाल ॥ ३ ॥
चरन कँवल कब देखिहौं, सन्मुख सिरजनहार ।
साँईं संग सदा रहौं, हाँ हो तब भाग हमार ॥ ४ ॥
जीवनि मेरी जब मिलै, हाँ हो तबहीं सुख होइ ।
तन मन मैं तूँही बसै, हाँ हो कब देखौं सोइ ॥ ५ ॥
तन मन की तूँही लखै, हाँ हो सुणि चतुर सुजाण ।
तुम देखे बिन क्यूँ रहौं, हाँ हो मोहिं लागे बाण ॥६॥
बिन देखैं दुख पाइये, हाँ हो इब बिलँब न लाइ ।
दादू दरसन कारनै, हाँ हो सुख दीजै आइ ॥ ७ ॥

---

*जलदी ।

(४२०)

सुरजन* मेरा वे कीहँ पार लहाउँ ।
जे सुरजन घरि आवै वे, हिक कहाण कहाउँ† ॥ टेक ॥
तो बाझैं‡ मे कैाँ चैन न आवै, ये दुख कीह कहाउँ ।
तो बाझैं मे कैाँ निंदु न आवै, अँखियाँ नीर भराउँ ॥१॥
जे तूँ मे कैाँ सुरजन डेवै§, सो हैाँ सीस सहाउँ ।
ये जन दादू सुरजन आवै, दरगह सेव कराउँ ॥ २ ॥

(४२१)

ये खुहि पये‖ सब भोग बिलासन, तैसहु वा कैा छत्र
सिंघासन ॥ टेक ॥
जनत¶हु राम भिस्त नहिँ भावै, लाल पलिँग क्या कीजै ।
भाहि** लगै इहि सेज सुखासण, मे कैाँ देखण†† दीजै ॥१॥
बैकुंठ मुकति सरग क्या कीजै, सकल भवन नहिँ भावै ।
भठी पये‡‡ सब मंडप छाजे, जे घरि कंत न आवै ॥ २ ॥
लोक अनंत अभय क्या कीजै, मैँ बिरही जन तेरा ।
दादू दरसन देखण दीजै, ये सुनि साहिब मेरा ॥ ३ ॥

॥ राग काफी ॥

(४२२§§)

अल्लह आसिकाँ ईमान ।
भिस्त दोजख दीन दुनिया, चिकारे रहमान ॥ टेक ॥

---

*सिरजनहार, भगवंत । †एक बात कहूँ । ‡सिंध की गँवारी भाषा मेँ बाझैं के अर्थ बिना या बग़ैर के हैँ । §दे । ‖कुए मेँ पड़ेँ । ¶जन्नत या स्वर्ग । **आग । ††दर्शन । ‡‡भाड़ मेँ पड़ेँ । §§अल्लाह ही आशिक़ोँ का ईमान है, उस दयाल के मुक़ाबले मेँ स्वर्ग नर्क दीन दुनिया सब किस काम के ॥ टेक ॥ ऐसे ही मीर की मीरी, पीर की पीरी, फ़रिश्ते का लाया हुकम, पानी, आग, ऊँचे आस्मानी

मीर मीरी पीर पीरी, फिरिस्ताँ फुरमान ।
आब आतिस अरस कुर्सी, दीदनी दीवान ॥ १ ॥
हर दो आलम खलक खाना, मोमिनाँ इसलाम ।
हजाँ हाजी कजा काजी, खान तू सुलतान ॥ २ ॥
इल्म आलिम मुल्क मालुम, हाजते हैरान ।
अजब याराँ खबरदाराँ, सूरते सुबहान ॥ ३ ॥
अवल आखिर एक तूँही, जिंद है कुरबान ।
आसिकाँ दीदार दादू, नूर का नीसान ॥ ४ ॥

(४२३)

अल्ला तेरा जिकर[*] फिकर[†] करते हैं ।
आसिकाँ मुस्ताक तेरे, तर्स तर्स मरते हैं ॥ टेक ॥
खलक खेस दिगर नेस, बैठे दिन भरते हैं ।
दायम दरबार तेरे, गैर महल डरते हैं ॥ १[‡] ॥
तन सहीद[§] मन सहीद, रात दिवस लड़ते हैं ।
ज्ञान तेरा ध्यान तेरा, इस्क आग जलते हैं ॥ २ ॥
जान तेरा जिंद तेरा, पावौं सिर धरते हैं ।
दादू दीवान तेरा, जरखरीद[||] घर के हैं ॥ ३ ॥

मुक़ामात, उस मालिक के दीदार के सामने तुच्छ हैं ॥ १ ॥ दोनों जहान में, रचना में, सत मत में, हाजियों के हज [यात्रा] में, क़ाज़ियों के न्याव में तू ही सुलतान है ॥ २ ॥ विद्वानों की विद्या, सृष्टि मात्र का ज्ञान, खोजी की जिज्ञासा, भक्तों का भेद, इन सब में तेरा ही रूप प्रकाशित है ॥ ३ ॥ तूही आदि है तूही अंत है तुझी पर अवधूत न्योछावर है, आशिक़ों को अपना जलवा जो प्रकाश का पुंज है दिखला ॥ (४) ॥

*सुमिरन । †ध्यान, चिन्तवन । ‡सृष्टि तेराही रूप है और कुछ नहीं है इस समझौती को दृढ़ किये हुए सदा तेरे दरबार में भक्त जन डटे रहते हैं और दूसरी ओर जाने से डरते हैं । §धर्म के लिये सिर देने वाला । ||मोल लिया हुआ ।

(४२४)

मुखि बोलि स्वामी, तूँ अंतरजामी,
तेरा सबद सुहावै रामजी ॥ टेक ॥
धेन चरावन बेन बजावन, दरस दिखावन कामिनी ॥१॥
बिरह उपावन तपति बुझावन, अंगि लगावन भामिनी ॥२॥
संगि खिलावन रास बनावन, गोपी भावन भूधरा ॥३॥
दादू तारण दुरित निवारण, संत सुधारण रामजी ॥ ४ ॥

(४२५)

हाथ दे हो रामा, तुम पूरण सब कामा ।
हौं तो उरझि रह्यौ संसार ॥ टेक ॥
अंध कूप गृह मैं पस्यो, मेरी करहु सँभार ।
तुम बिन दूजा को नहीं, मेरे दीनानाथ दयार ॥ १ ॥
मारग को सूझै नहीं, दह दिसि माया जार ।
काल पासि कसि बाँधियौ, मेरो कोइ न छुड़ावनहार॥२॥
राम बिना छूटै नहीं, कीजै बहुत उपाइ ।
कोटि किया सुरझै नहीं, अधिक अरूझत जाइ ॥ ३ ॥
दीन दुखी तुम देखताँ, भय दुख भंजन राम ।
दादू कहै कर हाथ दे हो, तुम सब पूरण काम ॥ ४ ॥

(४२६)

जिनि छाड़ै राम जिनि छाड़ै, हमहिं बिसारि जिनि छाड़ै,
जीव जात न लागै बार जिनि छाड़ै ॥ टेक ॥
माता क्यूँ बालक तजै, सुत अपराधी होइ ।
कबहुँ न छाड़ै जीव थैं, जिनि दुख पावै सोइ ॥ १ ॥

ठाकुर दीनदयाल है, सेवग सदा अचेत ।
गुण औगुण हरि ना गिणै, अंतरि ता सौं हेत ॥ २ ॥
अपराधी सुत सेवगा, तुम्ह हौ दीनदयाल ।
हम थैं औगुण होत हैं, तुम्ह पूरण प्रतिपाल ॥ ३ ॥
जब मोहन प्राणी चलै, तब देही किहि काम ।
तुम्ह जानत दादू का कहै, अब जिनि छाड़ौ राम ॥४॥

(४२७)

बिषम बार हरि अधार, करुणा वहु नामी ।
भगति भाइ बेगि आइ, भीड़-भँजन स्वामी ॥ टेक ॥
अंत अधार संत सधार, सुंदर सुखदाई ।
काम क्रोध काल ग्रसत, प्रगट्यौ हरि आई ॥ १ ॥
पूरण प्रतिपाल कहिये, सुमिर्‌याँ थैं आवै ।
भर्म कर्म मोह लागे, काहे न छुड़ावै ॥ २ ॥
दीनदयाल होहु कृपाल, अंतरजामी कहिये ।
एक जीव अनेक लागे, कैसैं दुख सहिये ॥ ३ ॥
पावन पीव चरण सरण, जुगि जुगि तैं तारे ।
अनाथ नाथ दादू के, हरि जी हमारे ॥ ४ ॥

(४२८)

साजनिया नेह न तोरी रे ।
जे हम तोरैं महा अपराधी, तौ तूँ जोरी रे ॥टेक॥
प्रेम बिना रस फीका लागै, मीठा मधुर न होई ।
सकल सिरोमणि सब थैं नीका, कड़वा लागै सोई ॥१॥
जब लगि प्रीति प्रेम रस नाहीं, त्रिषा बिना जल ऐसा ।
सब थैं सुंदर एक अमीरस, होइ हलाहल जैसा ॥ २ ॥
सुंदरि साँईं खरा पियारा, नेह नवा नित होवै ।
दादू मेरा तब मन मानै, सेज सदा सुख सोवै ॥ ३ ॥

(४२९)

काइमा[*] कीरति करौंली रे। तूँ मोटौ[†] दातार।
सब तैं सिरजीला[‡] साहिबजी, तूँ मोटौ कर्तार ॥टेक॥
चौदह भवन भानै घड़ै, घड़त न लागै बार।
थापै उथपै तूँ धणी, धनि धनि सिरजनहार ॥ १ ॥
धरती अंबर तैं धस्या, पाणी पवन अपार।
चंद सूर दीपक रच्या, रैण दिवस बिस्तार ॥ २ ॥
ब्रह्मा संकर तैं किया, बिस्नु दिया अवतार।
सुर नर साधू सिरजिया, करि ले जीव बिचार ॥ ३ ॥
आप निरंजन ह्वै रह्यो, काइमौं कौतिगहार।
दादू निर्गुण गुण कहै, जाउँली हौं बलिहार ॥ ४ ॥

(४३०)

जियरा राम भजन करि लीजै।
साहिब लेखा माँगैगा रे, ऊंतर[§] कैसैं दीजै ॥ टेक ॥
आगैं जाइ पछितावन लागौ, पल पल यहु तन छीजै।
ता थैं जिय समझाइ कहूँ रे, सुकिरत अब थैं कीजै ॥१॥
राम जपत जम काल न लागै, संगि रहै जन जीजै।
दादू दास भजन करि लीजै, हरिजी की रासि रमीजै ॥२॥

(४३१)

काल काया गढ़ भेलिसो[‖], छीजै दसौं दुवारो रे।
देखतड़ाँ ते लूटसी, होसी हाहाकारो रे ॥ टेक ॥
नाइक नगर न मीलसी, एकलड़ो ते जाई रे[¶]।
संग न साथी कोइ न आवसो, तहँ को जाणै किम थाई रे॥१॥

*हे अडोल। †बड़ा। ‡सजीला, रूपवान। §जवाब। ‖मटिया मेल करता है। ¶शरीर का नायक जीवात्मा शरीर में न मिलैगा अर्थात उस को छोड़कर अकेला जायगा।

संतजन साधौ म्हारा भाईड़ा, काईं सुकिरत लीजै सारो रे।
मारग बिषमैं चालिबौ, काईं लीजै प्राण अधारो रे ॥२॥
जिमि नीर निवाणा ठाहरै, तिमि साजी बाँधौ पालो रे।
समथ सोई सेविये, तौ काया न लागै कालो रे ॥ ३ ॥
दादू थिर मन आणिये, तौ निहचल थिर थाये रे ।
प्राणी नैं पूरो मिलौ, तौ काया न मेली जाये रे ॥४॥

(४३२)

डरिये रे डरिये, परमेसुर थैं डरिये रे ।
लेखा लेवै भरि भरि देवै, ता थैं बुरा न करिये रे । टेक।
साचा लीजी साचा दीजी, साचा सौदा कीजो रे ।
साचा राखी झूठा नाखी, बिष ना पीजी रे ॥ १ ॥
निर्मल गहिये निर्मल रहिये, निर्मल कहिये रे ।
निर्मल लीजी निर्मल दीजो, अनत न बहिये रे ॥ २ ॥
साह पठाया बनिज न आया, जिनि डहकावै रे ।
झूठ न भावै फेरि पठावै, कीया पावै रे ॥ ३ ॥
पंथ दुहेला जाइ अकेला, भार न लीजी रे ।
दादू मेला होइ सुहेला, सो कुछ कीजी रे ॥ ४ ॥

(४३३)

डरिये रे डरिये, देखि देखि पग धरिये ।
तारे तरिये मारे मरिये, ता थैं गर्ब न करिये रे डरिये ॥टेक
देवै लेवै समथ दाता, सब कुछ छाजै रे ।
तारै मारै गर्ब निवारै, बैठा गाजै रे ॥ १ ॥
राखैं रहिये बाहैं बहिये, अनत न लहिये रे ।
भानै घड़ै सँवारै आपै, ऐसा कहिये रे ॥ २ ॥

निकटि बुलावै दूरि पठावै, सब बनि आवै रे।
पाके काचे काचे पाके, ज्यूँ मन भावै रे ॥ ३ ॥
पावक पाणी पाणी पावक, करि दिखलावै रे।
लोहा कंचन कंचन लोहा, कहि समझावै रे ॥ ४ ॥
ससिहर सूर सूर थैं ससिहर, परगट खेलै रे।
धरती अंबर अंबर धरती, दादू मेलै रे ॥ ५ ॥

(४३४)

मनसा मन सबद सुरति, पंचौं थिर कीजे।
एक अंग सदा संग, सहजैं रस पीजे ॥ टेक ॥
सकल रहित मूल गहित, आपा नहिं जानै।
अंतरगति निर्मल रति, एकै मन मानै ॥ १ ॥
हृदय सुद्धि बिमल बुद्धि, पूरण परकासै।
रसना निज नाँउ निरखि, अंतरगति बासै ॥ २ ॥
आतम मति पूरण गति, प्रेम भगति राता।
मगन गलित अरस परस, दादू रस माता ॥ ३ ॥

(४३५)

गोब्यँद के चरनौं ही ल्यौ लाऊँ।
जैसैं चात्रिग बन मैं बोलै, पीव पीव करि ध्याऊँ ॥टेक॥
सुरजन मेरी सुनहु बीनती, मैं बलि तेरे जाऊँ।
बिपति हमारी तोहि सुनाऊँ, दे दरसन क्यूँ ही पाऊँ ॥१॥
जात दुक्ख सुख उपजत तन कौं, तुम सरनागति आऊँ।
दादू कौं दया करि दीजे, नाँउ तुम्हारौ गाऊँ ॥ २ ॥

(४३६)

ये प्रेम भगति बिन रह्यौ न जाई। परगट दरसन देहु अघाई॥
तालाबेली तलफै माहीं। तुम बिन राम जियरे जक नाहीं॥१

निसबासुरि मन रहै उदासा । मैं जन ब्याकुल साँस उसाँसा॥
एकमेक रस होइ न आवै । तातैं प्राण बहुत दुख पावै ॥ ३ ॥
अंग संग मिलि यहु सुख दीजै । दादू राम रसाइन पीजै ॥४॥

(४३७)

तिस घरि जाना वे, जहाँ वे अकल सरूप ।
सो इब ध्याइये रे, सब देवनि का भूप ॥ टेक ॥
अकल सरूप पीव का, बान बरन न पाइये ।
अखंड मंडल माहिँ रहै, सोई प्रीतम गाइये ॥ २ ॥
गावहु मन बिचारा वे, मन बिचारा सोई सारा ,
प्रगट पीव ते पाइये ।
साँईं सेती संग साचा, जीवत तिस घरि जाइये ॥ ३ ॥
अकल सरूप पीव का, कैसैं करि आलेखिये ।
सुन्य मंडल माहिँ साचा, नैन भरि सो देखिये ॥ ४ ॥
देखौं लोचन सार वे, देखौं लोचन सारा सोई,
प्रगट होइ यह अचंभा पेखिये ।
दयावंत दयाल ऐसौ, बरण अति बसेखिये ॥ ५ ॥
अकल सरूप पीव का, प्राण जीव का सोई जन जे पावई ।
दयावंत दयाल ऐसौ, सहजैं आप लखावई ॥ ६ ॥
लखै सुलखणहार वे, लखै सोई सँग होई, अगम बैन सुनावही
सब दुख भागा रंग लागा, काहे न मंगल गावही ॥ ७ ।
अकल सरूपी पीव का, कर कैसैं करि आणिये ।
निरंतर निर्धार आपै, अंतरि सोई जाणिये ॥ ८ ॥
जाणहु मन बिचारा वे, मनि बिचारा सोई सारा ।
सुमिरि सोई बखानिये ।
स्रीरंग सेती रंग लागा, दादू तै सुख मानिये ॥ ९ ॥

(४३८)

राम तहाँ प्रगट रहे भरपूर, आतमा कँवल जहाँ।
परम पुरिष तहाँ, झिलिमिलि झिलिमिलि नूर ॥ टेक ॥
चंद सूर मधि भाइ, तहाँ बसै राम राइ ।
गंग जमन के तीर, तिरबेणी संगम जहाँ।
निर्मल बिमल तहाँ, निरखि निरखि निज नीर ॥ १ ॥
आतमा उलटि जहाँ, तेज पुंज रहै तहाँ सहजि समाइ।
अगम निगम अति, तहाँ बसै प्राणपति,
परसि परसि निज आइ ॥ २ ॥
कोमल कुसम दल, निराकार जोति जल वार पार ।
सुन्य सरोवर जहाँ, दादू हंसा रहै तहाँ,
बिलसि बिलसि निज सार ॥ ३ ॥

(४३९)

गोब्यंद पाया मनि भाया, अमर कीये संग लीये।
अखै अभय दान दीये, छाया नहीं माया ॥ टेक ॥
अगम गगन अगम तूर, अगम चंद अगम सूर ।
काल झाल रहै दूर, जीव नहीं काया ॥ १ ॥
आदि अंति नहीं कोइ, राति दिवस नहीं होइ ।
उदै अस्त नहीं दोइ, मनहीं मन लाया ॥ २ ॥
अमर गुरू अमर ज्ञान, अमर पुरिष अमर ध्यान ।
अमर ब्रह्म अमर थान, सहज सुन्य आया ॥ ३ ॥
अमर नूर अमर बास, अमर तेज सुख निवास ।
अमर जोति दादू दास, सकल भुवन राया ॥ ४ ॥

(४४०)

राम की राती भई माती, लोक बेद बिधि निषेध ।
भागे सब भरम भेद, अमृत रस पीवै ॥ टेक ॥

भागे सब काल झाल, छूटे सब जग जँजाल ।
बिसरे सब हाल चाल, हरि की सुधि पाई ॥ १ ॥
प्रान पवन जहाँ जाइ, अगम निगम मिले आइ ।
प्रेम मगन रहे समाइ, बिलसै बपु* नाहीं ॥ २ ॥
परम नूर परम तेज, परम पुंज परम सेज ।
परम जोति परम हेज, सुंदरि सुख पावै ॥ ३ ॥
परम पुरिष परम रास, परम लाल सुख बिलास ।
परम मंगल दादू दास, पीव सौं मिलि खेलै ॥ ४ ॥

॥ आरती ॥

(४४१)

इहि बिधि आरती राम की कीजै ।
आत्मा अंतरि वारणा लीजै ॥ टेक ॥
तन मन चंदन प्रेम की माला । अनहद घंटा दीनदयाला ॥१
ज्ञान का दीपक पवन की बाती। देव निरंजन पाँचौ पाती॥
आनँद मंगल भाव की सेवा । मनसा मंदिर आतम देवा ॥३॥
भगति निरंतर मैं बलिहारी। दादू न जानै सेव तुम्हारी ॥४॥

(४४२)

आरती जग जीवन तेरी। तेरे चरन कँवल पर वारी फेरी॥टेक
चित चाँवरी हेत हरि ढारै । दीपक ज्ञान जोति बिचारै ॥१
घंटा सबद अनाहद बाजै । आनँद आरति गगना गाजै॥२
धूप ध्यान हरि सेती कीजै। पुहुप प्रीति हरि भाँवरि लीजै॥
सेवा सार आत्मा पूजा । देव निरंजन और न दूजा ॥४
भाव भगति सौं आरति कीजै। इहि बिधि दादू जुगि जुगि जीजै ॥ ५

---

*शरीर।

(४४३)

अबिचल आरति देव तुम्हारी । जुगि जुगि जीवनि राम हमारी ॥ टेक ॥
मरण मीच जम काल न लागै । आवागवन सकल भ्रम भागै १
जोनी जीव जनमि नहिं आवै । निर्भय नाँउ अमर पद पावै २
कलि बिष कुसमल बंधन कापै*। पारि पहूँते थिर करि थापै ३
अनेक उधारे तैं जन तारे । दादू आरति नरक निवारे ॥४॥

(४४४)

निराकार तेरी आरती, बलि जाउँ अनंत भवन के राइ ।टेक।
सुर नर सब सेवा करैं, ब्रह्मा बिस्नु महेस ।
देव तुम्हारा भेव न जानैं, पार न पावै सेस ॥ १ ॥
चंद सूर आरति करैं, नमो निरंजन देव ।
धरनि पवन आकास अराधैं, सबै तुम्हारी सेव ॥ २ ॥
सकल भवन सेवा करैं, मुनियर सिद्ध समाध ।
दीन लीन ह्वै रहे संत जन, अविगत के आराध ॥ ३ ॥
जै जै जीवनि राम हमारी, भगति करै ल्यौ लाइ ।
निराकार की आरति कीजै, दादू बलि बलि जाइ ॥ ४ ॥

(४४५)

तेरी आरती ए, जुगि जुगि जैजैकार ॥ टेक ॥
जुगि जुगि आतम राम । जुगि जुगि सेवा कीजिये ॥१॥
जुगि जुगि लंघे पार । जुगि जुगि जगपति कौं मिलै ॥२॥
जुगि जुगि तारणहार । जुगि जुगि दरसन देखिये ॥३॥
जुगि जुगि मंगलचार । जुगि जुगि दादू गाइये ॥ ४ ॥

---

*काटै ।

अंत समय का पद ।

(४४६)

जेते गुण व्यापै, ते ते तैँ तजि रे मन ।
साहिब अपणे कारणे ॥ १ ॥

बाणी दीन-दयाल, सब सास्तर की सार ।
पढ़ै बिचारै प्रीति सौँ, सो जन उतरै पार ॥२

॥ इति ॥

संतबानी पुस्तकमाला

[जीवन-चरित्र हर महात्मा के उन की बानी के आदि में दिया है]

चरनदास जी की बानी, पहला भाग ... ... ॥।-)
चरनदास जी की बानी, दूसरा भाग ... ... ॥)
ग़रीबदास जी की बानी ... ... १।-)
रैदास जी की बानी ... ... ॥)
दरिया साहिब (बिहार) का दरिया सागर ... ... ।≡)॥
दरिया साहिब के चुने हुए पद और साखी ... ... ।-)
दरिया साहिब मारवाड़ वाले की बानी ... ... ।≡)
भीखा साहिब की शब्दावली ... ... ॥=)॥
गुलाल साहिब की बानी ... ... ॥=)
बाबा मलूकदास जी की बानी ... ... ।)॥
गुसाईं तुलसीदास जी की बारहमासी ... ... -)
यारी साहिब की रत्नावली ... ... =)
बुल्ला साहिब का शब्दसागर ... ... ।)
केशवदास जी की अमीघूँट ... ... -)॥
धरनी दास जी की बानी ... ... ।=)
मीरा बाई की शब्दावली ... ... ॥)
सहजो बाई का सहज-प्रकाश ... ... ।≡)॥
दया बाई की बानी ... ... ।)
संतबानी संग्रह, भाग १ साखी ... ... १॥)

प्रत्येक महात्माओं के संक्षिप्त जीवन-चरित्र सहित

संतबानी संग्रह, भाग २ (शब्द) ... ... १॥)

[ऐसे महात्माओं के संक्षिप्त जीवन-चरित्र सहित जो भाग १ में नहीं है]

कुल ३३।-)

अहिल्या बाई ... ... ≡)

दाम में डाक महसूल व रजिस्टरी शामिल नहीं है वह इसके ऊपर लिया जायगा—

मिलने का पता—

मैनेजर, बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद ।

हिन्दी पुस्तकमाला ।

नवकुसुम—(प्रथम गुच्छ) इस पुस्तक में कई छोटी बड़ी कहानियाँ जो बड़ी रोचक और शिक्षाप्रद हैं संग्रहीत हैं। पढ़िये और और घरेलू ज़िन्दगी का आनन्द लूटिये । मूल्य ॥।)

सचित्र विनय पत्रिका—यह पुस्तक भी हिन्दी संसार में एक अमूल्य वस्तु है। इसकी टीका पं० महावीर प्रसाद मालवीय "बीर" ने बड़ी ही सरल भाषा में की है। इसमें ५ चित्र भी हैं। छपाई बड़े अक्षरों में बहुत ही सुन्दर हुई है । गोस्वामीजी की इस दुर्लभ पुस्तक का दाम मय टीका के सिर्फ़ २॥) है सजिल्द ३)

करुणा देवी—औरतों को पढ़ाइये, बहुत ही रोचक और शिक्षाप्रद उपन्यास है। मूल्य ॥=)

हिन्दी कवितावली—यह उत्तम कविताओं का संग्रह बालक बालिकाओं के लिये अत्यन्त उपयोगी है। मूल्य ~)

हिन्दी महाभारत—सरल शुद्ध हिन्दी में रंग बिरंगे चित्रों के साथ अभी प्रकाशित हुआ है। सुन्दर कथा कथानकों के अतिरिक्त अन्त में इन्द्रप्रस्थ और हस्तिनोपूर के राजाओं की एक विस्तृत वंशावली भी दी गई है। पढ़ने पर आप स्वयं प्रशंसा करने लगेंगे। सर्व साधारण को इस धार्मिक एवं ऐतिहासिक। ग्रन्थ का प्रचार होने के लिये, केवल लागत मात्र मूल्य ३)

गीता—(पाकेट एडिशन) श्लोक और उनका सरल हिन्दी में अनुवाद है। अन्त में गूढ़ शब्दों का कोश भी है। मूल्य ॥।=)

उतर ध्रुव की भयानक यात्रा—(सचित्र) इस उपन्यास को पढ़ कर देखिये कैसी अच्छी सैर है। मूल्य ॥)

सिद्धि—यथा नाम तथा गुणः। पढ़िये और अपने अनमोल जीवन को सुधारिये। ॥)

महारानी शशिप्रभा देवी—क्या ही विचित्र उपन्यास है; स्त्रियों के लिये तो यह एक आदर्श है । इसमें यह दिखलाया गया है कि पति के सुख के लिये पत्नी ने किस तरह आत्म त्याग किया है। स्त्रियों को यह किताब १ दफ़े अवश्य पढ़नी चाहिये यह किताब एक बार हाथ में लेने से फिर रखने की इच्छा नहीं होती। मूल्य १।)

सचित्र द्रौपदी—पुस्तक में देवी द्रौपदी के जीवन चरित्र का अति उमत्त चित्र खींचा गया है। पुस्तक प्रत्येक भारतीय के लिये उपयोगी है। मूल्य ॥।)

कर्मफल—नया छपा है और क्या ही उत्तम उपन्यास है। मूल्य ॥।)

दुःख का मीठा फल—नाम ही से समझ लीजिये। मूल्य ॥)